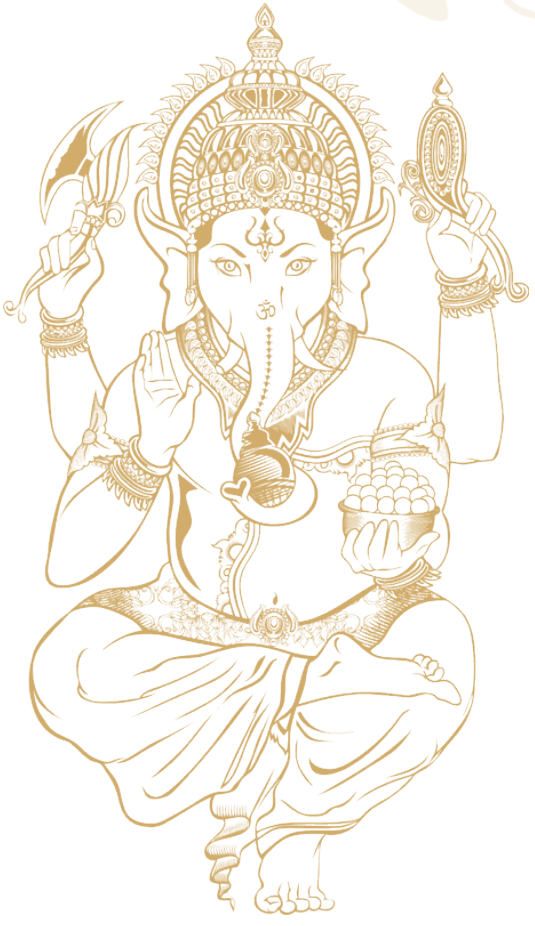

Vita bhagchanda

03 Nov 2010

05:18 AM

Mumbai

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 121876901

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**2-03/11/2010**
दिन	मंगल-बुधवार
जन्म समय	**05:18:00 घंटे**
इष्ट	56:36:08 घटी
स्थान	**Mumbai**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	18:58:00 उत्तर
रेखांश	72:50:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:38:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	04:39:20 घंटे
वेलान्तर	00:16:28 घंटे
साम्पातिक काल	07:27:53 घंटे
सूर्योदय	06:39:32 घंटे
सूर्यास्त	18:04:56 घंटे
दिनमान	11:25:24 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	हेमन्त
सूर्य के अंश	16:26:13 तुला
लग्न के अंश	26:44:24 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	कन्या - बुध
राशि-स्वामी	**कन्या - बुध**
नक्षत्र-चरण	**उ०फाल्गुनी - 2**
नक्षत्र स्वामी	सूर्य
योग	वैधृति
करण	कौलव
गण	मनुष्य
योनि	गौ
नाड़ी	आद्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	मानव
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	टो-टोनी
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	वृश्चिक

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1932	कार्तिक	12
पंजाबी	संवत : 2067	कार्तिक	18
बंगाली	सन् : 1417	कार्तिक	17
तमिल	संवत : 2067	आइपसी	18
केरल	कोल्लम : 1186	तुलम	17
नेपाली	संवत : 2067	कार्तिक	18
चैत्रादि	संवत : 2067	कार्तिक	कृष्ण 12
कार्तिकादि	संवत : 2067	आश्विन	कृष्ण 12

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ___: 11
तिथि समाप्ति काल _____: 21:58:20
जन्म तिथि _____: 12
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ___: पू०फाल्गुनी
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 19:34:21 घंटे
जन्म योग _____: उ०फाल्गुनी
सूर्योदय कालीन योग ___: ऐन्द्र
योग समाप्ति काल _____: 25:39:20 घंटे
जन्म योग _____: वैधृति
सूर्योदय कालीन करण ___: बव
करण समाप्ति काल _____: 11:23:53 घंटे
जन्म करण _____: कौलव
भयात _____: 24:19:11
भभोग _____: 54:27:03
भोग्य दशा काल _____: सूर्य 3 वर्ष 3 मा 27 दि

घात चक्र

मास _____: भाद्रपद
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: श्रवण
योग _____: शुक्ल
करण _____: कौलव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मेष
लग्न _____: मीन
सूर्य _____: मेष
चन्द्र _____: वृश्चिक
मंगल _____: वृष
बुध _____: मीन
गुरु _____: मिथुन
शुक्र _____: कर्क
शनि _____: मीन
राहु _____: सिंह

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

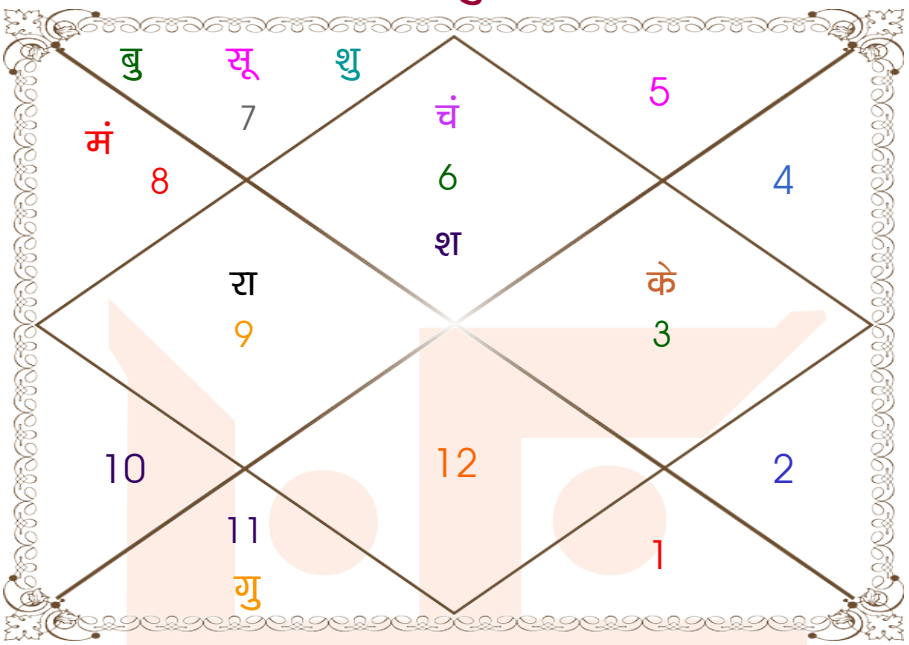

चन्द्र कुंडली

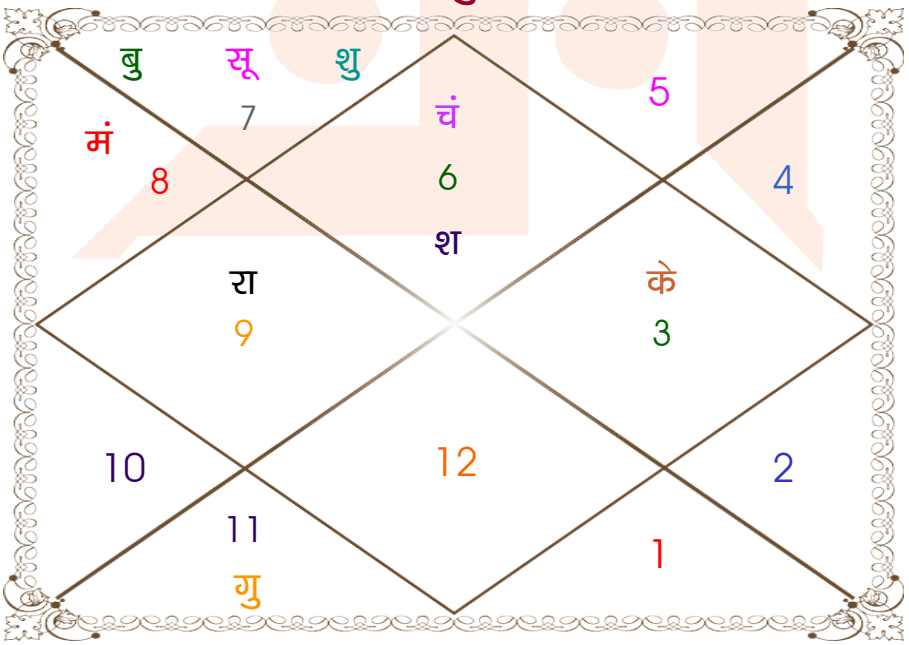

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

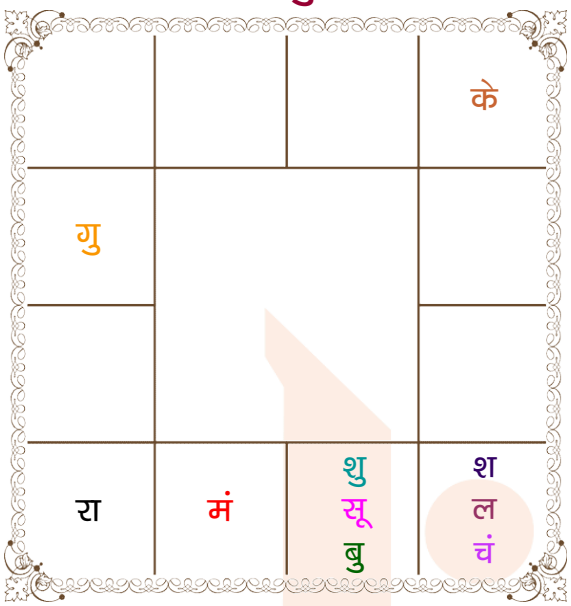

लग्न कुंडली

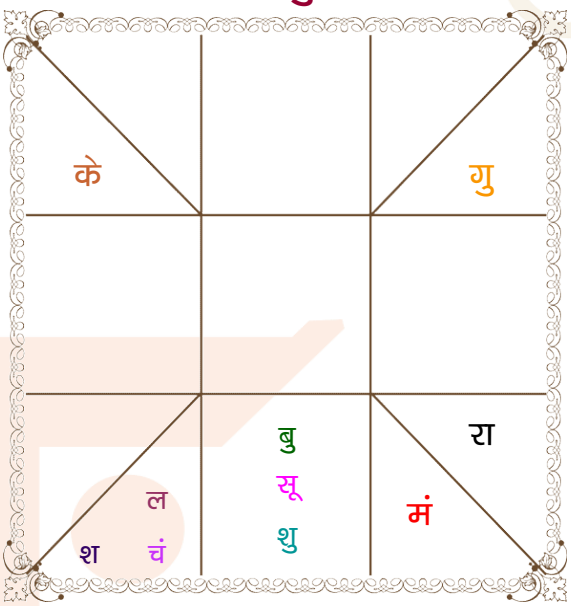

विंशोत्तरी
सूर्य 3वर्ष 3मा 27दि

सूर्य

03/11/2010

02/03/2128

सूर्य	01/03/2014
चन्द्र	01/03/2024
मंगल	01/03/2031
राहु	01/03/2049
गुरु	01/03/2065
शनि	01/03/2084
बुध	02/03/2101
केतु	02/03/2108
शुक्र	02/03/2128

योगिनी
सिद्धा 3वर्ष 10मा 16दि

धान्या

19/09/2025

19/09/2028

धान्या	20/12/2025
भ्रामरी	20/04/2026
भद्रिका	20/09/2026
उल्का	21/03/2027
सिद्धा	20/10/2027
संकटा	20/06/2028
मंगला	20/07/2028
पिंगला	19/09/2028

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कन्या	26:44:24	337:56:26	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	गुरु	---
सूर्य			तुला	16:26:13	01:00:05	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	शुक्र	नीच राशि
चंद्र			कन्या	02:36:40	14:41:27	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	गुरु	मित्र राशि
मंगल			वृश्चि	10:05:37	00:43:21	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	शुक्र	स्वराशि
बुध		अ	तुला	26:52:18	01:32:27	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	शुक्र	मित्र राशि
गुरु	व		कुंभ	29:54:20	00:03:12	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	चंद्र	सम राशि
शुक्र	व		तुला	08:33:12	00:33:46	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	राहु	मूलत्रिकोण
शनि			कन्या	17:41:23	00:06:48	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	शनि	मित्र राशि
राहु	व		धनु	10:14:10	00:06:54	मूल	4	19	गुरु	केतु	शनि	नीच राशि
केतु	व		मिथु	10:14:10	00:06:54	आर्द्रा	2	6	बुध	राहु	गुरु	नीच राशि
हर्ष	व		मीन	03:06:18	00:01:33	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	---
नेप	व		कुंभ	01:54:23	00:00:09	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	केतु	---
प्लूटो			धनु	09:24:25	00:01:28	मूल	3	19	गुरु	केतु	शनि	---
दशम भाव			मिथु	26:18:09	--	पुनर्वसु	--	7	बुध	गुरु	केतु	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:00:46

लग्न-चलित

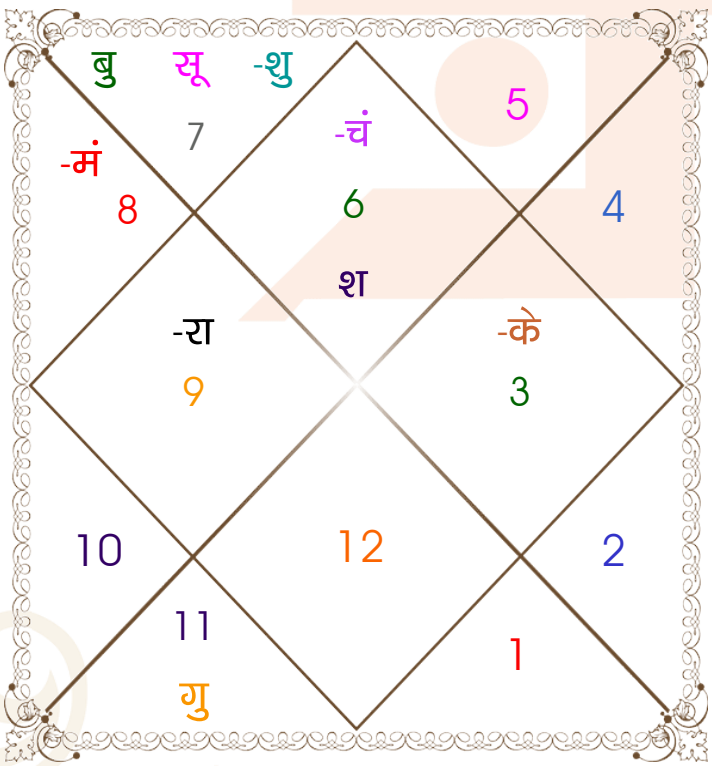

चन्द्र कुंडली

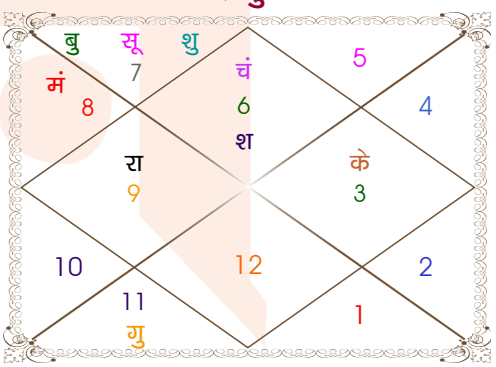

नवमांश कुंडली

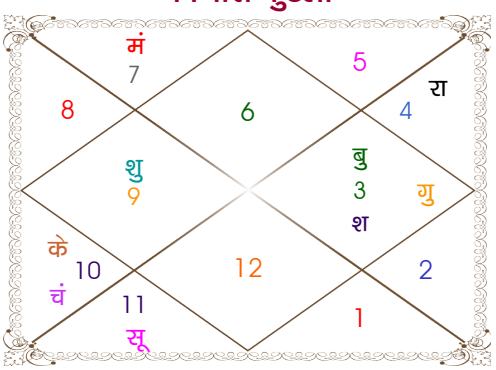

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कन्या	11:40:02	कन्या	26:44:24
2	तुला	11:40:02	तुला	26:35:39
3	वृश्चिक	11:31:17	वृश्चिक	26:26:54
4	धनु	11:22:31	धनु	26:18:09
5	मकर	11:22:31	मकर	26:26:54
6	कुम्भ	11:31:17	कुम्भ	26:35:39
7	मीन	11:40:02	मीन	26:44:24
8	मेष	11:40:02	मेष	26:35:39
9	वृष	11:31:17	वृष	26:26:54
10	मिथुन	11:22:31	मिथुन	26:18:09
11	कर्क	11:22:31	कर्क	26:26:54
12	सिंह	11:31:17	सिंह	26:35:39

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या	26:44:24
2	तुला	26:10:59
3	वृश्चिक	26:01:55
4	धनु	26:18:09
5	मकर	27:16:02
6	कुम्भ	28:02:12
7	मीन	26:44:24
8	मेष	26:10:59
9	वृष	26:01:55
10	मिथुन	26:18:09
11	कर्क	27:16:02
12	सिंह	28:02:12

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी

चलित कुंडली

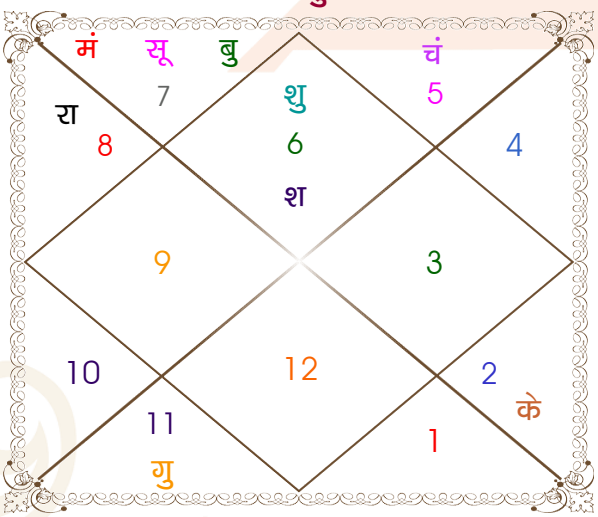

भाव कुंडली

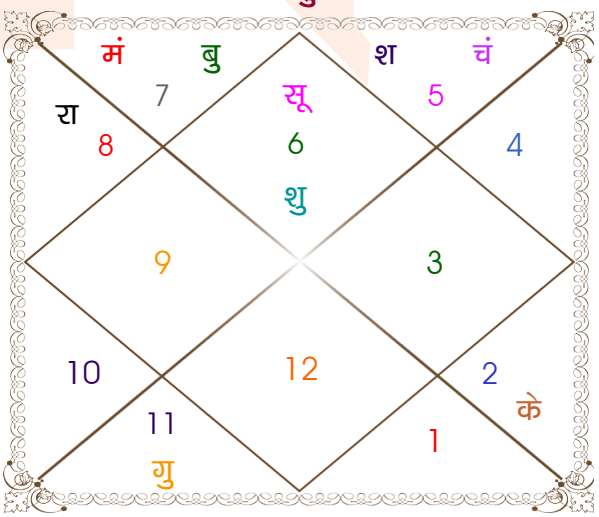

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	मातृ	पितृ	युवा	भीत	गमन	0.14	53 %
चंद्र	कलत्र	मातृ	मृत	मुदित	उपवेशन	4.03	33 %
मंगल	पुत्र	भ्रातृ	वृद्ध	स्वस्थ	उपवेशन	4.25	32 %
बुध	अमात्य	ज्ञाति	मृत	विकल	उपवेशन	0.00	79 %
गुरु	आत्मा	धन	मृत	शक्त	कौतुक	1.07	42 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	कुमार	स्वस्थ	आगम	1.03	32 %
शनि	भ्रातृ	आयु	युवा	मुदित	आगम	5.47	50 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	भीत	नृत्यलिप्सा	0.00	7 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	भीत	उपवेशन	0.00	7 %
कुल						15.99	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी

चलित कुंडली

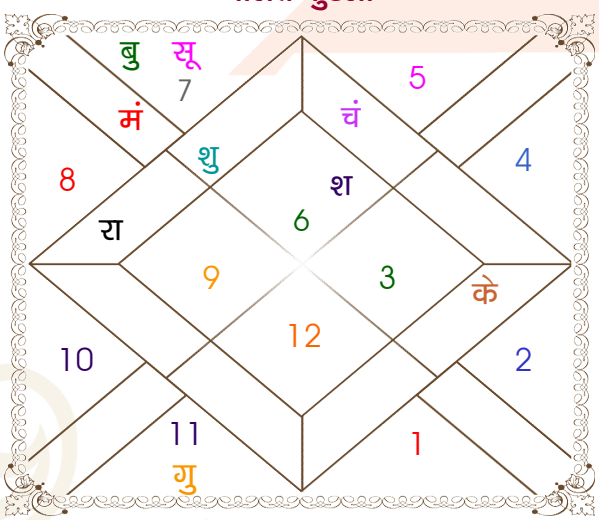

लग्न-चलित

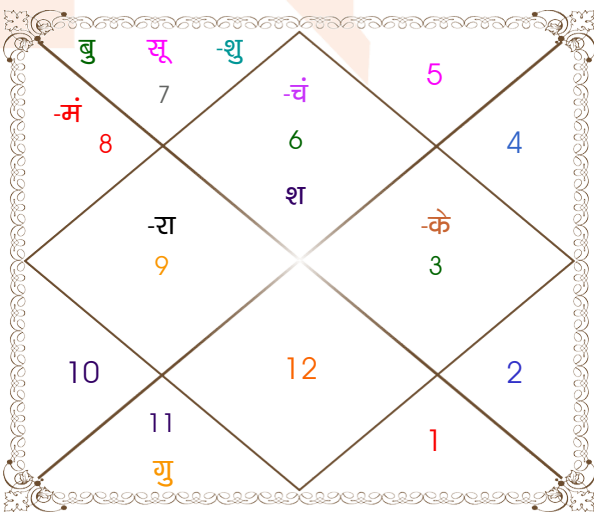

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

सुदर्शन चक्र

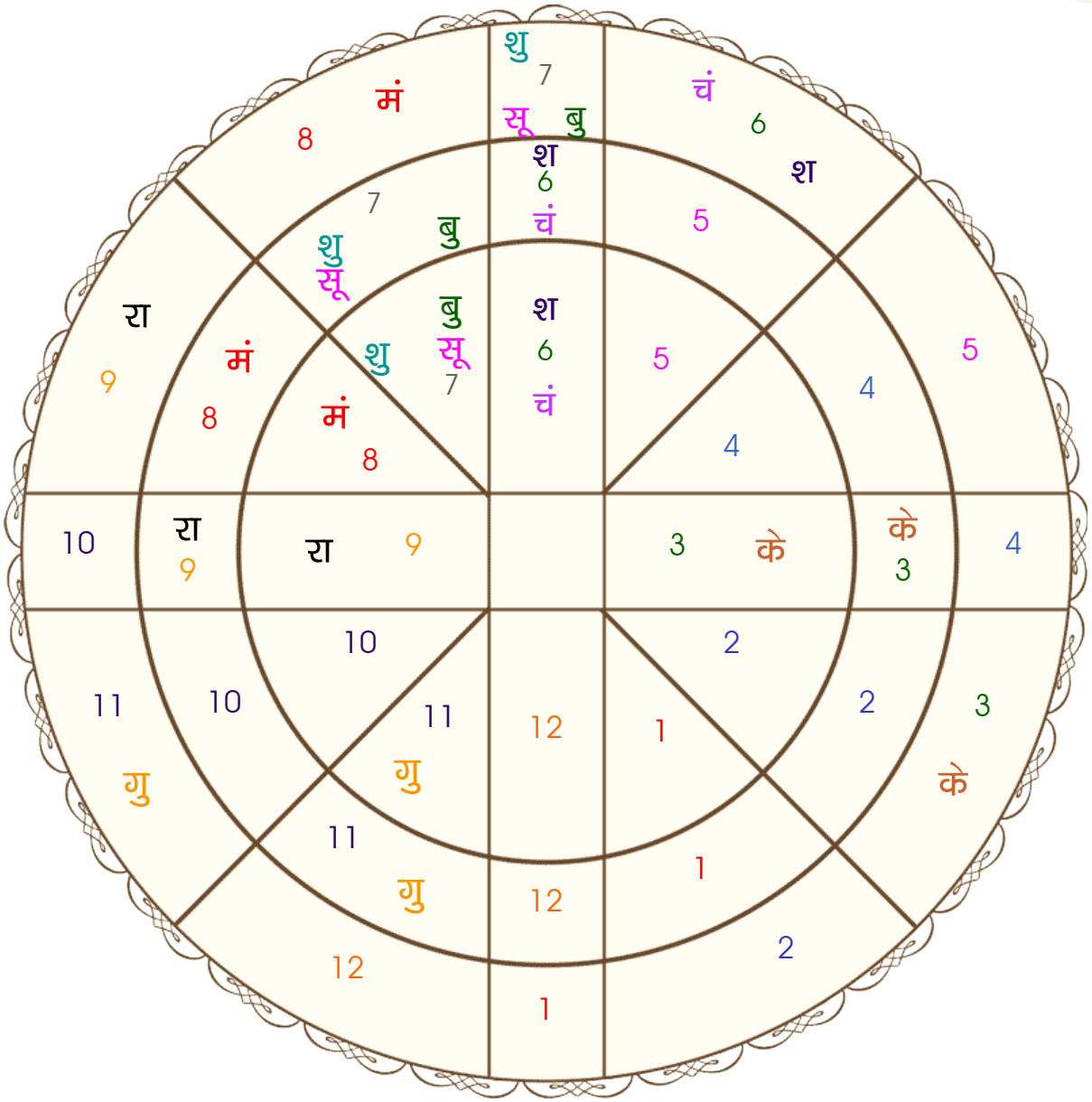

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : सूर्य 3 वर्ष 3 मास 9 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		तुला	16:32:47	शुक्र	राहु	शुक्र	गुरु
चंद्र		कन्या	02:43:14	बुध	सूर्य	गुरु	मंगल
मंगल		वृश्चि	10:12:11	मंगल	शनि	शुक्र	बुध
बुध		तुला	26:58:51	शुक्र	गुरु	शुक्र	सूर्य
गुरु	व	मीन	00:00:54	गुरु	गुरु	चंद्र	शनि
शुक्र	व	तुला	08:39:46	शुक्र	राहु	राहु	मंगल
शनि		कन्या	17:47:57	बुध	चंद्र	बुध	बुध
राहु	व	धनु	10:20:44	गुरु	केतु	शनि	शुक्र
केतु	व	मिथु	10:20:44	बुध	राहु	गुरु	राहु
हर्ष	व	मीन	03:12:52	गुरु	गुरु	राहु	चंद्र
नेप	व	कुंभ	02:00:57	शनि	मंगल	केतु	शुक्र
प्लूटो		धनु	09:30:59	गुरु	केतु	शनि	शनि

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	कन्या	26:50:58	बुध	मंगल	गुरु	बुध
2	तुला	26:17:33	शुक्र	गुरु	केतु	गुरु
3	वृश्चि	26:08:29	मंगल	बुध	गुरु	गुरु
4	धनु	26:24:43	गुरु	शुक्र	केतु	गुरु
5	मक	27:22:36	शनि	मंगल	गुरु	चंद्र
6	कुंभ	28:08:46	शनि	गुरु	शुक्र	शनि
7	मीन	26:50:58	गुरु	बुध	गुरु	बुध
8	मेष	26:17:33	मंगल	शुक्र	केतु	राहु
9	वृष	26:08:29	शुक्र	मंगल	गुरु	गुरु
10	मिथु	26:24:43	बुध	गुरु	केतु	शनि
11	कर्क	27:22:36	चंद्र	बुध	गुरु	चंद्र
12	सिंह	28:08:46	सूर्य	सूर्य	चंद्र	केतु

के.पी. अयनांश : 23:54:12

फॉरच्युना : सिंह 13:01:25

लग्न कुंडली

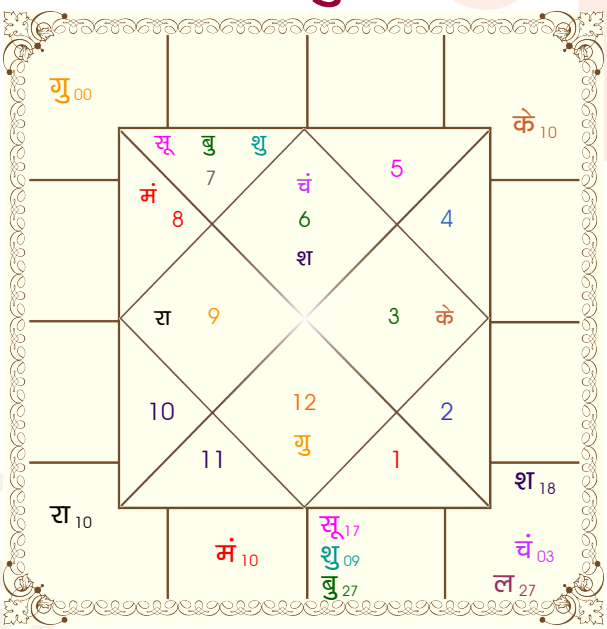

भाव कुंडली

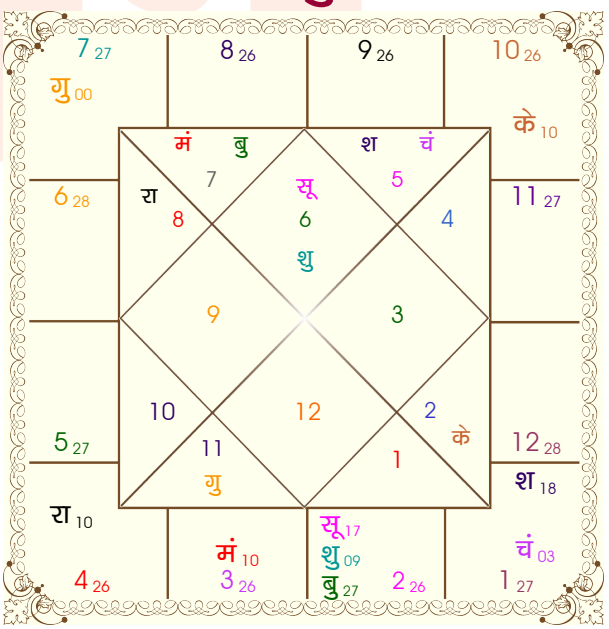

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य, चंद्र, बुध- शुक्र,
2	मंगल, बुध, शुक्र-
3	सूर्य, मंगल- शुक्र, राहु, केतु,
4	बुध- गुरु,
5	मंगल- शनि-
6	मंगल- बुध, गुरु+ शनि-
7	बुध- गुरु,
8	मंगल-
9	शुक्र- राहु, केतु,
10	बुध-
11	चंद्र- शनि-
12	सूर्य- चंद्र+ मंगल, शनि+

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1, 3, 12-
चंद्र	1, 11- 12+
मंगल	2, 3- 5- 6- 8- 12,
बुध	1- 2, 4- 6, 7- 10-
गुरु	4, 6+ 7,
शुक्र	1, 2- 3, 9-
शनि	5- 6- 11- 12+
राहु	3, 9,
केतु	3, 9,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगल
लग्न राशि स्वामी	बुध
राशि नक्षत्र स्वामी	सूर्य
राशि स्वामी	बुध
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	गुरु
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	चं	सू शु	--	बु
2	--	मं बु	--	शु
3	सू शु के	रा	--	मं
4	--	--	बु गु	गु
5	--	--	मं	श
6	बु गु	गु	मं	श
7	--	--	बु गु	गु
8	--	--	--	मं
9	रा	के	--	शु
10	--	--	--	बु
11	--	--	श	चं
12	मं श	चं श	चं	सू

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	12	12	तुला	1
चंद्र	11	---	कन्या	12
मंगल	3,8	1,5,9	वृश्चिक	2
बुध	1,10	3,7,11	तुला	2
गुरु	4,7	2,6,10	मीन	6
शुक्र	2,9	4,8	तुला	1
शनि	5,6	---	कन्या	12
राहु	---	---	धनु	3
केतु	---	---	मिथुन	9

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	---	---	3	2,9	4,8	1
चंद्र	12	12	1	4,7	2,6,10	6
मंगल	5,6	---	12	2,9	4,8	1
बुध	4,7	2,6,10	6	2,9	4,8	1
गुरु	4,7	2,6,10	6	11	---	12
शुक्र	---	---	3	---	---	3
शनि	11	---	12	1,10	3,7,11	2
राहु	---	---	9	5,6	---	12
केतु	---	---	3	4,7	2,6,10	6

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	196.44	152.61	220.09	206.87	329.91	188.55	167.69	250.24	70.24	333.11	301.91	249.41
सूर्य	--	--	--	युति	--	युति	--	--	--	--	--	--
196.44	0.00	0.00	0.00	4.60	0.00	6.78	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	तृती	सप्त	--	--	--	--	सप्त	षष्ठ	--
152.61	0.00	0.00	0.00	0.20	9.60	0.00	0.00	0.00	0.00	9.99	0.45	0.00
मंगल	--	--	--	युति	--	--	--	--	8वां	--	4था	--
220.09	0.00	0.00	0.00	1.85	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	6.54	0.00
बुध	युति	--	युति	--	पंच	--	--	--	--	--	चतु	--
206.87	4.60	0.00	1.85	0.00	2.10	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.75	0.00
गुरु	9वां	सप्त	9वां	9वां	--	--	--	--	--	युति	--	--
329.91	1.60	9.60	4.83	9.50	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.44	0.00	0.00
शुक्र	युति	--	--	--	--	--	--	तृती	--	--	--	तृती
188.55	6.78	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.71	0.00	0.00	0.00	2.93
शनि	--	--	3रा	नवां	--	--	--	--	10वा	सप्त	अष्टां	--
167.69	0.00	0.00	7.00	0.28	0.00	0.00	0.00	0.00	7.11	0.43	0.33	0.00
राहु	--	--	--	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	युति
250.24	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	9.96
केतु	--	--	षष्ठ	--	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	सप्त
70.24	0.00	0.00	0.98	0.00	0.00	2.71	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	9.96
हर्ष	--	सप्त	--	--	युति	--	सप्त	--	--	--	--	--
333.11	0.00	9.99	0.00	0.00	9.44	0.00	0.43	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
301.91	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	--	--	--	युति	सप्त	--	--	--
249.41	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.96	9.96	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	176.74	206.59	236.45	266.30	296.45	326.59	356.74	26.59	56.45	86.30	116.45	146.59
सूर्य	--	युति	नवां	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--
196.44	0.00	4.86	1.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.86	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
152.61	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.08	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.08
मंगल	--	युति	--	--	4था	--	--	सप्त	8वां	--	--	--
220.09	0.00	1.56	0.00	0.00	1.41	0.00	0.00	1.56	1.41	0.00	0.00	0.00
बुध	--	युति	--	--	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--	--
206.87	0.00	10.00	0.00	0.00	2.98	2.99	0.98	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	9वां	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	5वां	--	सप्त
329.91	0.00	9.40	0.00	0.00	0.00	9.40	0.00	1.94	1.85	9.30	0.00	9.40
शुक्र	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
188.55	3.28	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.28	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	युति	--	3रा	--	--	--	--	--	--	10वा	--	--
167.69	5.84	0.00	6.08	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.20	0.00	0.00
राहु	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--
250.24	0.00	0.00	1.27	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.27	0.00	0.00	0.00
केतु	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	--	--	--	--
70.24	0.00	0.00	1.27	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त
333.11	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.76	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.76
नेप	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	--	--
301.91	0.00	0.00	0.00	0.00	8.41	0.00	0.65	0.54	0.42	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--
249.41	0.00	0.00	2.12	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.12	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	176.74	206.18	236.03	266.30	297.27	328.04	356.74	26.18	56.03	86.30	117.27	148.04
सूर्य	--	युति	नवां	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--
196.44	0.00	5.23	0.80	0.00	0.00	0.00	0.00	5.23	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
152.61	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.87	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.87
मंगल	--	युति	--	--	4था	--	--	सप्त	8वां	--	--	--
220.09	0.00	1.14	0.00	0.00	2.26	0.00	0.00	1.14	0.98	0.00	0.00	0.00
बुध	--	युति	--	--	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--	--
206.87	0.00	9.97	0.00	0.00	2.98	2.86	0.98	9.97	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	9वां	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	5वां	--	सप्त
329.91	0.00	9.25	0.00	0.00	0.00	9.81	0.00	1.68	1.59	9.30	0.00	9.81
शुक्र	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
188.55	3.28	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.28	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	युति	--	3रा	--	--	--	--	--	--	10वा	--	--
167.69	5.84	0.00	6.42	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.20	0.00	0.00
राहु	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--
250.24	0.00	0.00	0.83	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.83	0.00	0.00	0.00
केतु	--	अष्टां	सप्त	--	--	--	--	--	--	--	--	--
70.24	0.00	0.08	0.83	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त
333.11	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.62	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.62
नेप	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	--	--
301.91	0.00	0.00	0.00	0.00	8.84	0.00	0.65	0.22	0.10	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--
249.41	0.00	0.00	1.69	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.69	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

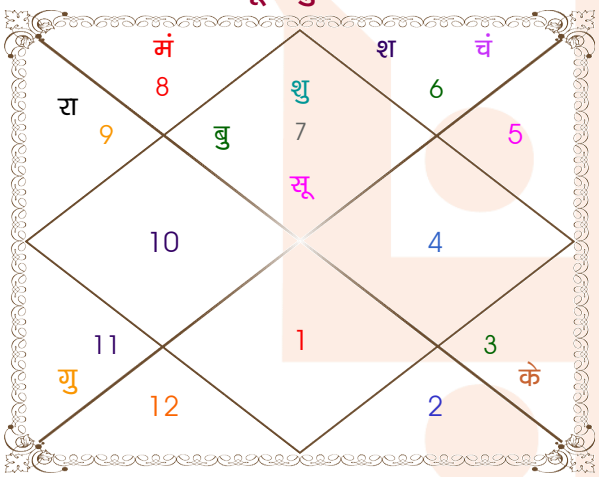

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

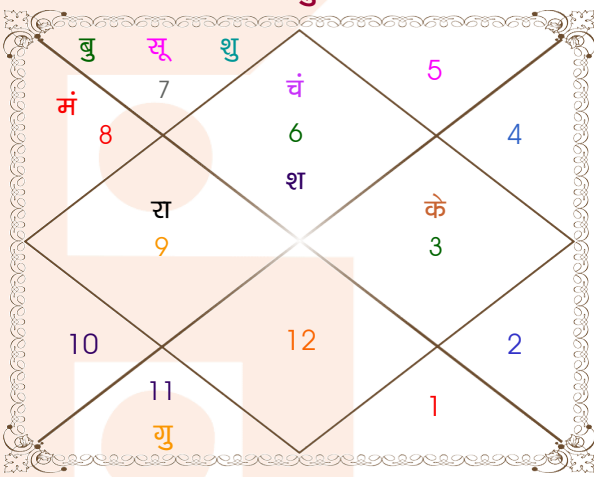

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

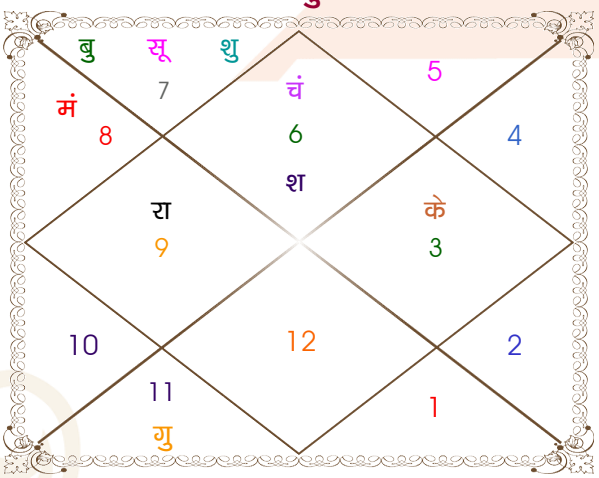

देह विचारः

होरा कुंडली

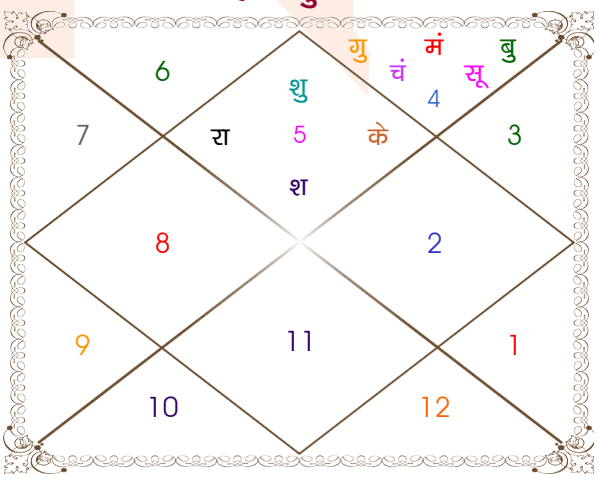

सम्पदाविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

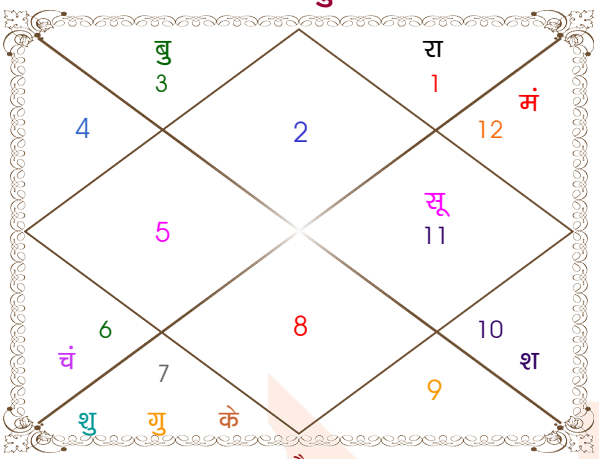

भातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

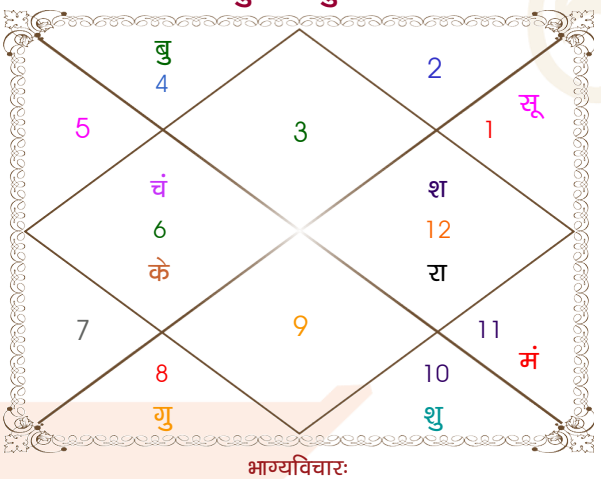

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

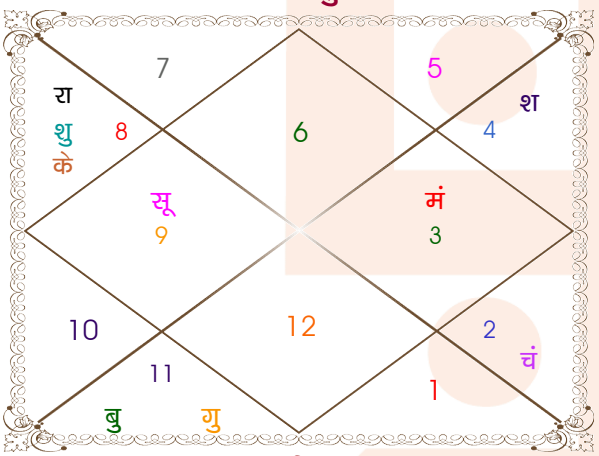

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

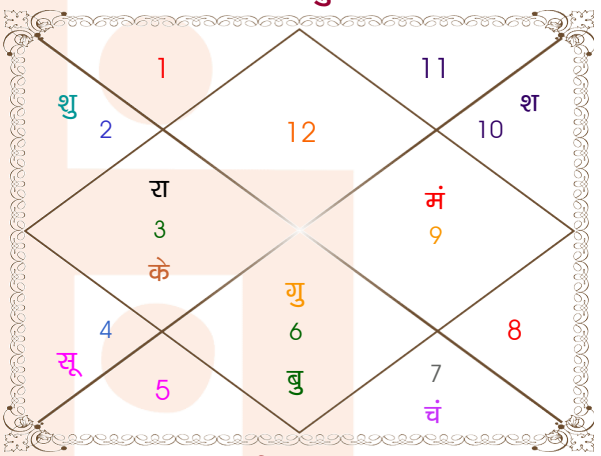

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

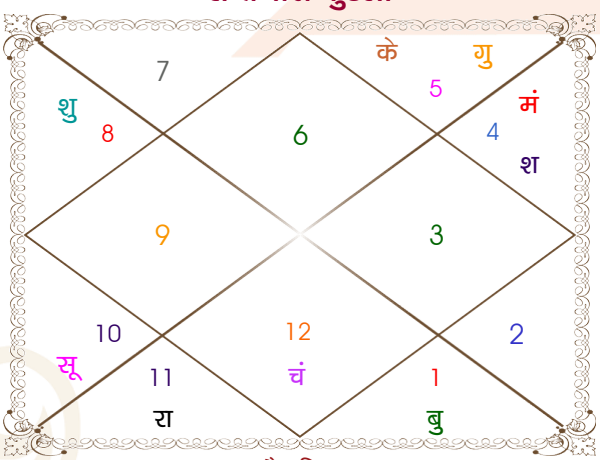

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

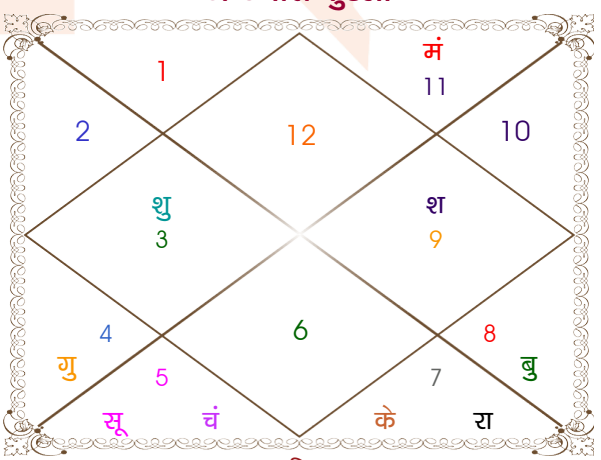

आयुविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

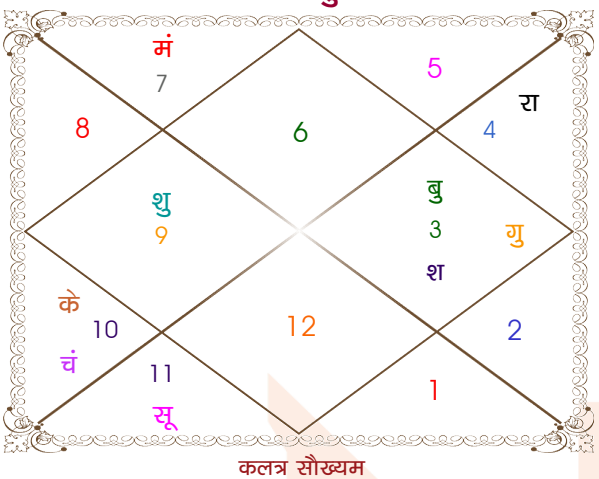

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

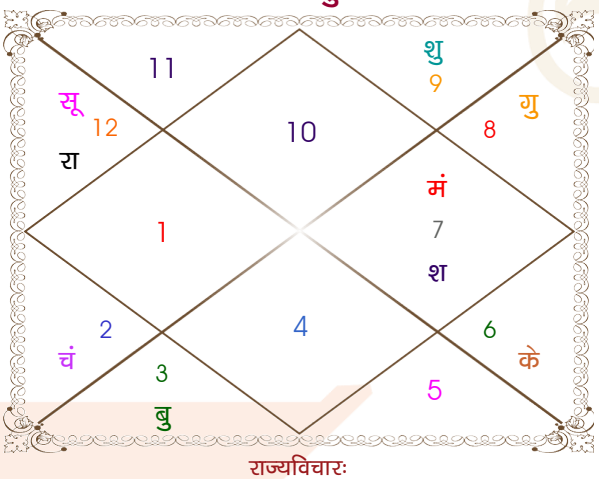

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

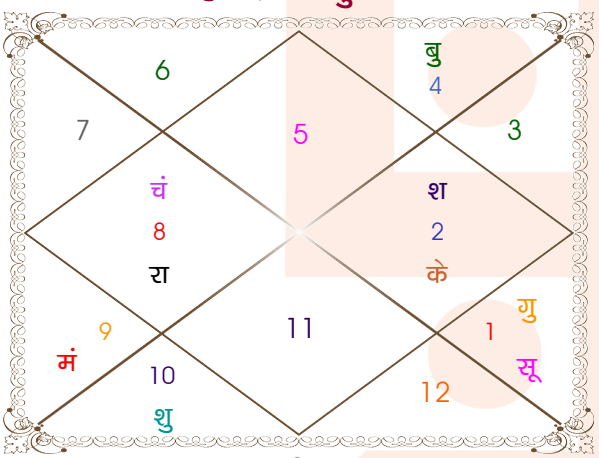

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

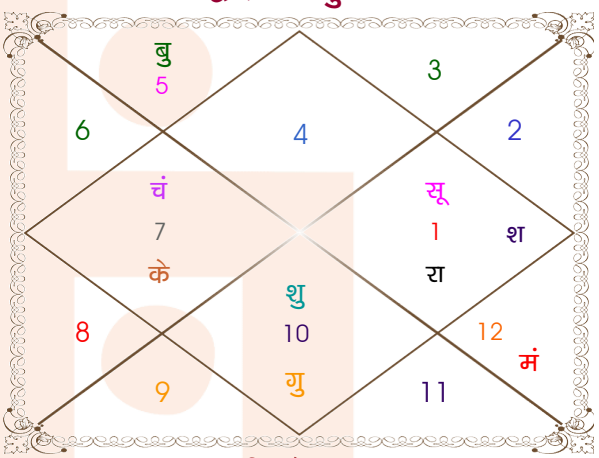

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

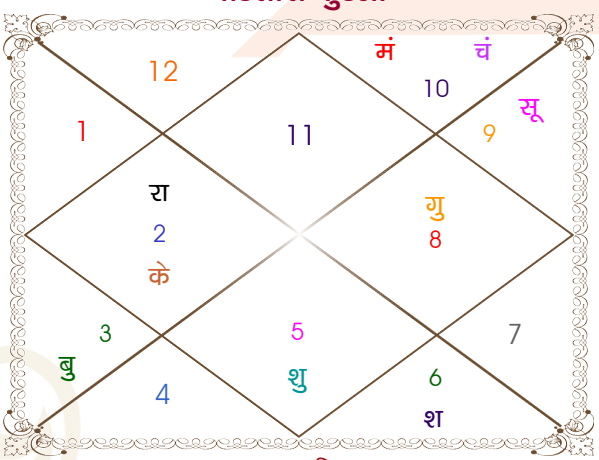

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

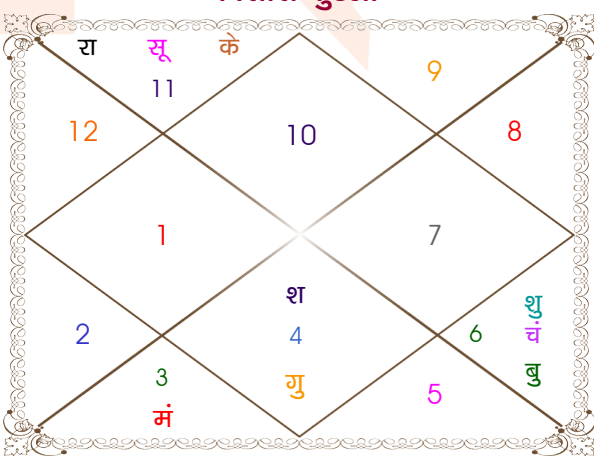

उपासनाज्ञानम्

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

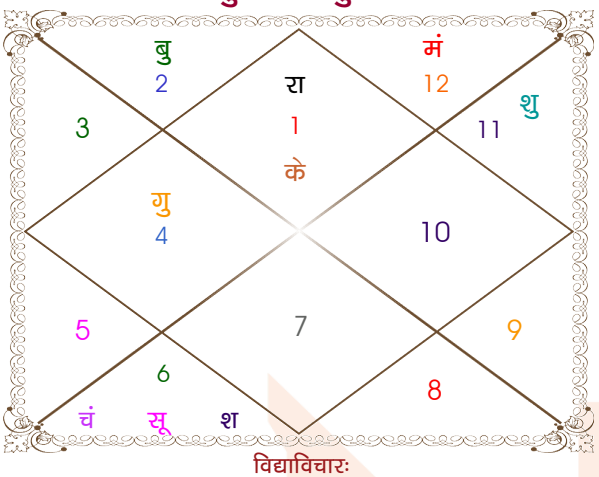

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

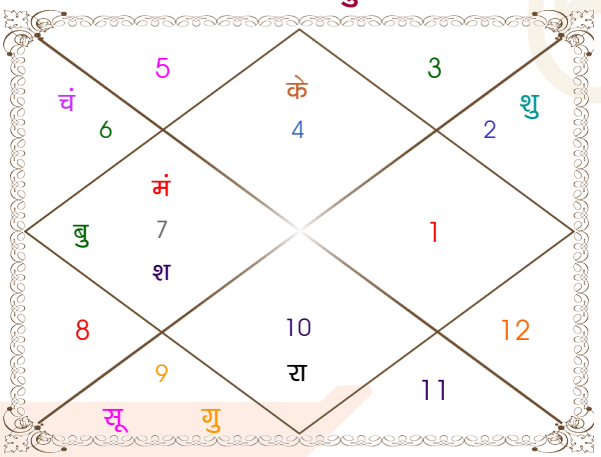

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

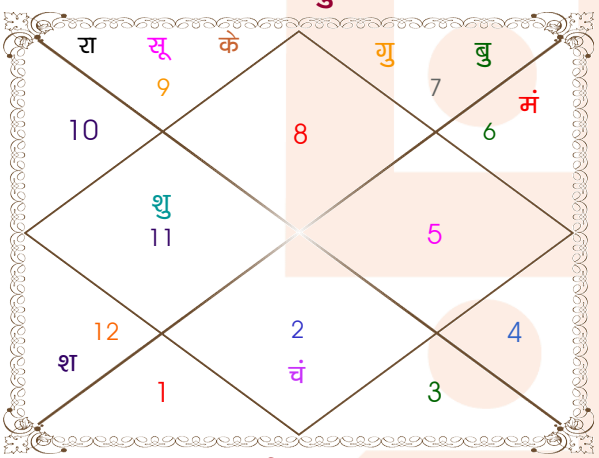

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

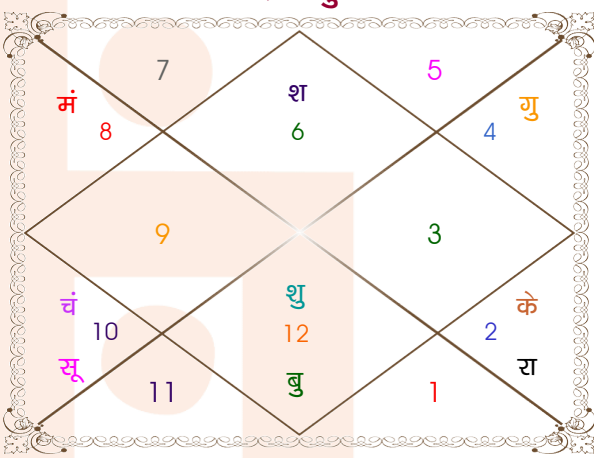

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

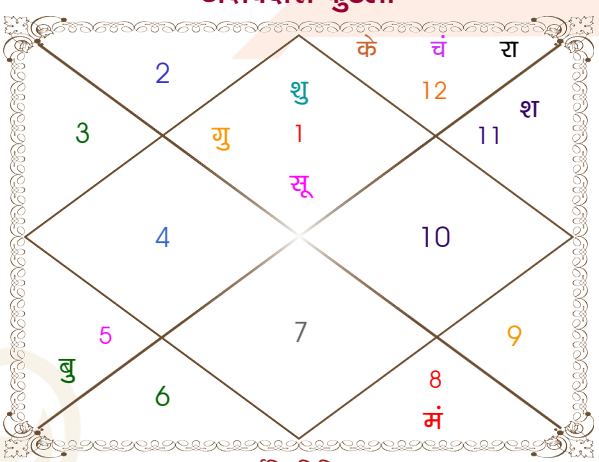

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

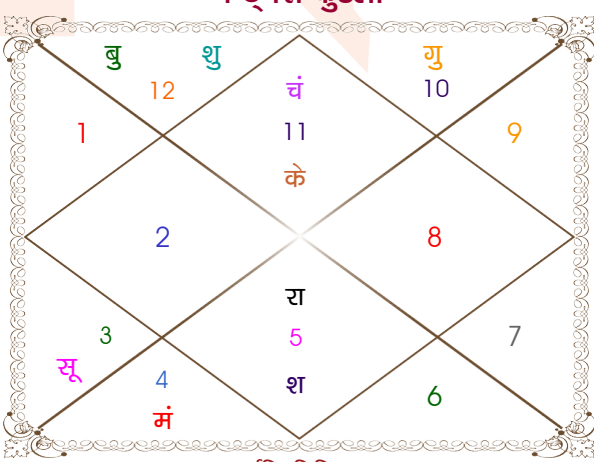

सर्वास्थितिविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	कन्या	तुला	कन्या	वृश्चि	तुला	कुंभ	तुला	कन्या	धनु	मिथु
होरा	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	वृष	कुंभ	कन्या	मीन	मिथु	तुला	तुला	मक	मेष	तुला
चतुर्थांश	मिथु	मेष	कन्या	कुंभ	कर्क	वृश्चि	मक	मीन	मीन	कन्या
सप्तमांश	कन्या	मक	मीन	कर्क	मेष	सिंह	वृश्चि	कर्क	कुंभ	सिंह
नवमांश	कन्या	कुंभ	मक	तुला	मिथु	मिथु	धनु	मिथु	कर्क	मक
दशमांश	मक	मीन	वृष	तुला	मिथु	वृश्चि	धनु	तुला	मीन	कन्या
द्वादशांश	कर्क	मेष	तुला	मीन	सिंह	मक	मक	मेष	मेष	तुला
षोडशांश	कुंभ	धनु	मक	मक	मिथु	वृश्चि	सिंह	कन्या	वृष	वृष
विंशांश	मक	कुंभ	कन्या	मिथु	कन्या	कर्क	कन्या	कर्क	कुंभ	कुंभ
चतुर्विंशांश	मेष	कन्या	कन्या	मीन	वृष	कर्क	कुंभ	कन्या	मेष	मेष
सप्तविंशांश	कर्क	धनु	कन्या	तुला	तुला	धनु	वृष	तुला	मक	कर्क
त्रिंशांश	वृश्चि	धनु	वृष	कन्या	तुला	तुला	कुंभ	मीन	धनु	धनु
खवेदांश	कन्या	मक	मक	वृश्चि	मीन	कर्क	मीन	कन्या	वृष	वृष
अक्षवेदांश	मेष	मेष	मीन	वृश्चि	सिंह	मेष	मेष	कुंभ	मीन	मीन
षष्ट्यंश	कुंभ	मिथु	कुंभ	कर्क	मीन	मक	मीन	सिंह	सिंह	कुंभ

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	1 ---	1 ---	3 कुसुम
चन्द्र	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	3 कुसुम
मंगल	1 ---	1 ---	2 पारिजात	4 नागपुष्प
बुध	2 किंसुक	2 किंसुक	4 गोपुर	5 कन्दुक
गुरु	1 ---	1 ---	1 ---	5 कन्दुक
शुक्र	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	5 कन्दुक
शनि	1 ---	1 ---	2 पारिजात	4 नागपुष्प
राहु	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---
केतु	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	10.10	15.00	17.45	14.50	6.30	14.95	16.25	11.75	8.45
सप्तवर्ग	10.35	13.90	17.43	14.38	6.83	14.65	14.53	12.50	7.98
दशवर्ग	9.70	12.25	17.03	12.63	8.65	11.88	13.15	12.70	8.35
षोडशवर्ग	9.45	12.03	16.88	12.95	9.20	11.80	14.48	13.10	8.73

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
मंगल	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
बुध	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	मित्र	शत्रु
शनि	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	---	मित्र	मित्र
राहु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	सम	अधिशत्रु	सम	सम	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	सम
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र	सम	सम
बुध	सम	सम	मित्र	---	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	सम	सम	अतिमित्र	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	अधिशत्रु	सम	मित्र	सम	शत्रु	---	अतिमित्र	अतिमित्र	सम
शनि	सम	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	---	अतिमित्र	सम
राहु	सम	सम	सम	मित्र	मित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	2	20	34	46	18	4	49
सप्तवर्गज बल	77	113	143	105	28	141	96
ओजयुग्मक बल	30	30	15	30	30	0	15
केन्द्र बल	30	60	15	30	15	30	60
द्रेष्काण बल	0	0	0	0	0	0	15
कुल स्थान बल	139	223	207	211	91	174	235
कुल दिग्बल	23	22	15	50	9	34	3
नतोन्नत बल	25	35	35	60	25	25	35
पक्ष बल	45	91	45	45	15	15	45
त्रिभाग बल	0	0	60	0	60	0	0
अब्द बल	0	15	0	0	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	30	0
वार बल	0	0	45	0	0	0	0
होरा बल	60	0	0	0	0	0	0
अयन बल	21	28	3	53	27	14	36
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	151	169	189	159	126	83	117
कुल चेष्टाबल	0	0	11	13	46	57	12
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	7	14	5	4	-41	9	13
कुल षट्बल	381	479	445	462	265	401	388
रूप षट्बल	6.3	8.0	7.4	7.7	4.4	6.7	6.5
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.3	1.3	1.5	1.1	0.7	1.2	1.3
संबंधित पद	4	2	1	6	7	5	3

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	5.95	17.15	19.55	24.53	28.92	14.82	24.50
कष्ट फल	50.16	42.54	35.59	25.59	24.43	12.89	22.69

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	462	401	445	265	388	388	265	445	401	462	479	381
भावदिग्बल	60	50	20	0	50	10	30	40	50	30	10	40
भावदृष्टि बल	47	28	21	-2	29	-1	-25	45	62	33	42	52
कुल भाव बल	569	479	485	263	467	397	270	530	513	526	531	473
रूप भाव बल	9.5	8.0	8.1	4.4	7.8	6.6	4.5	8.8	8.5	8.8	8.9	7.9
संबंधित पद	1	7	6	12	9	10	11	3	5	4	2	8

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

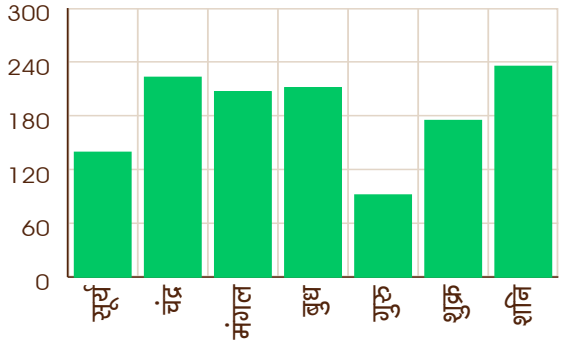

दिग्बल

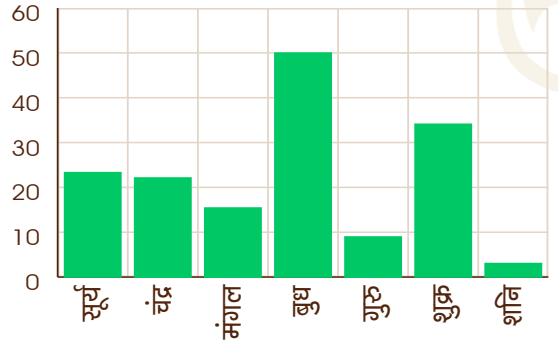

कालबल

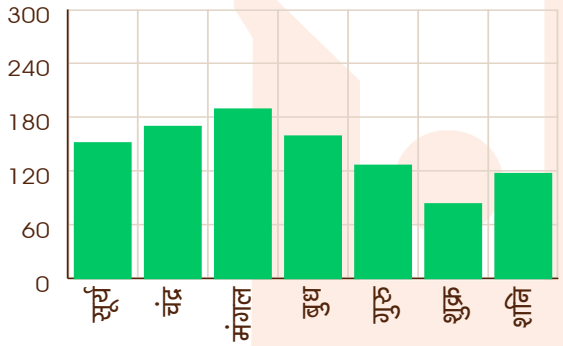

चेष्टाबल

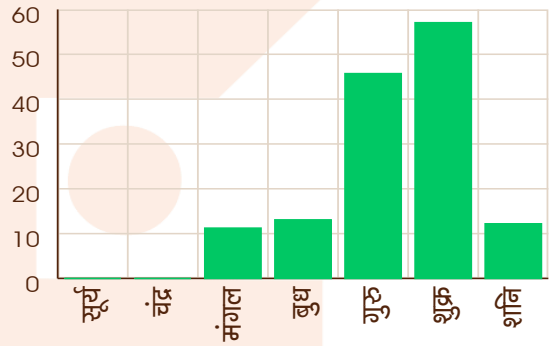

नैसर्गिक बल

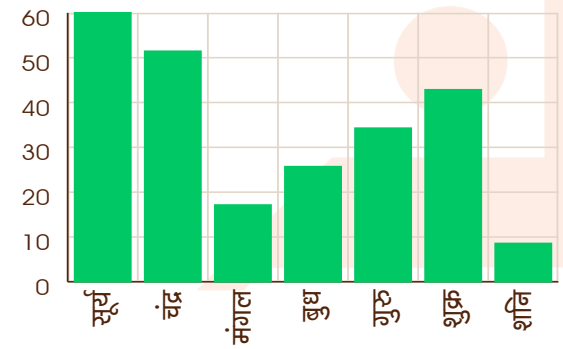

दृग्बल

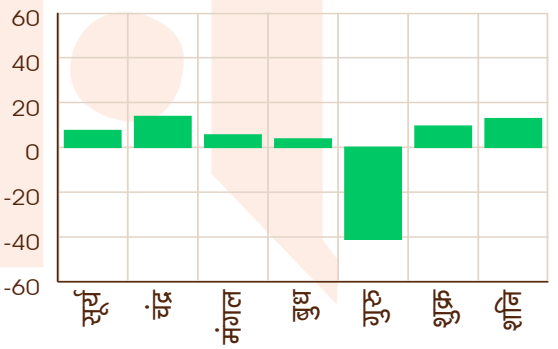

रूप षट्बल

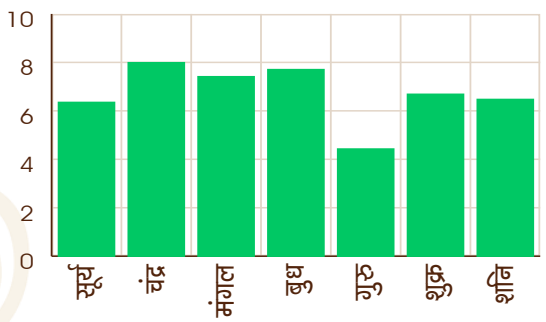

न्यूनतम षट्बल

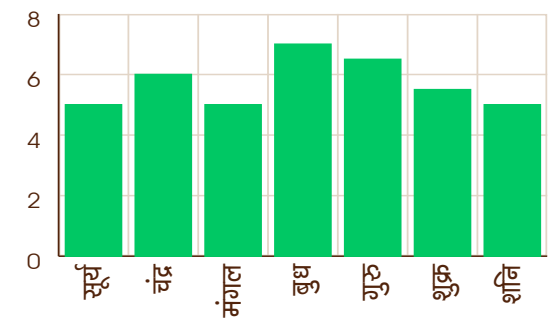

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

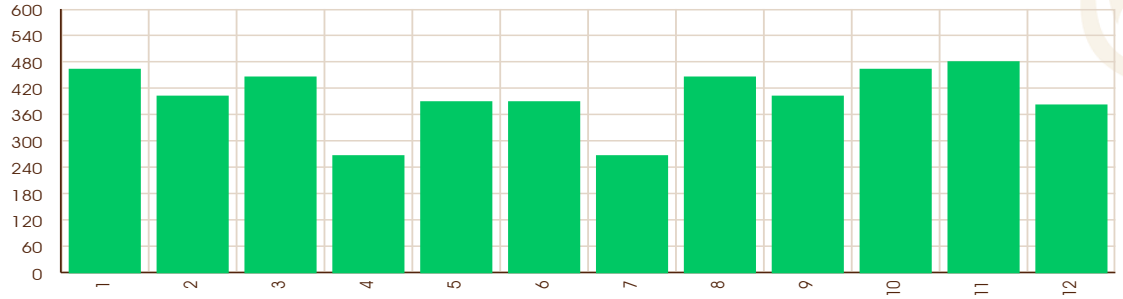

भावदिग्बल

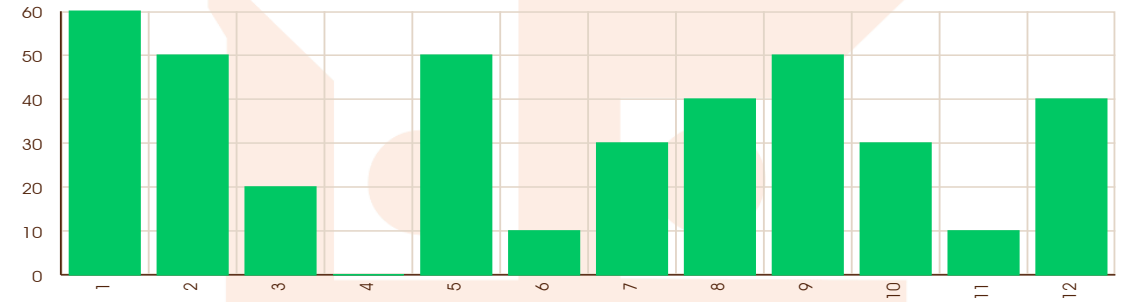

भावदृष्टि बल

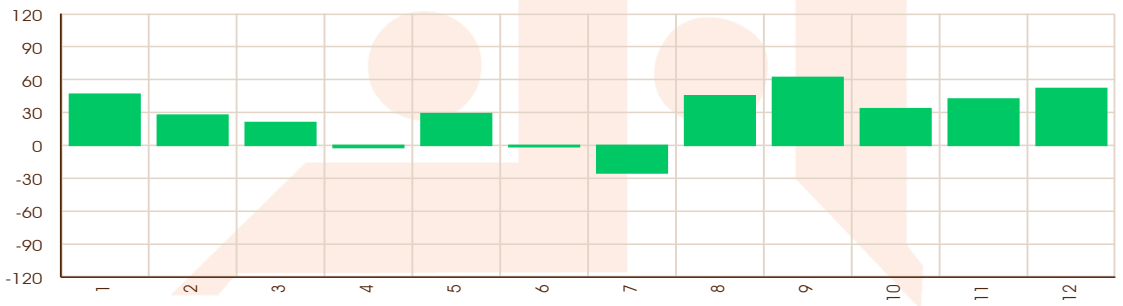

भाव बल

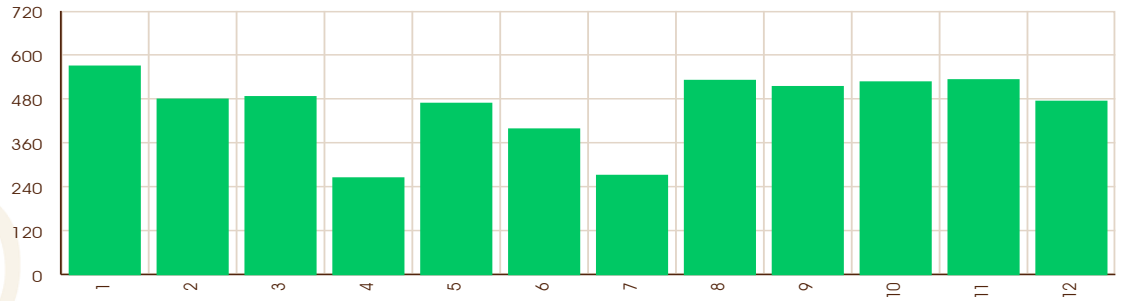

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

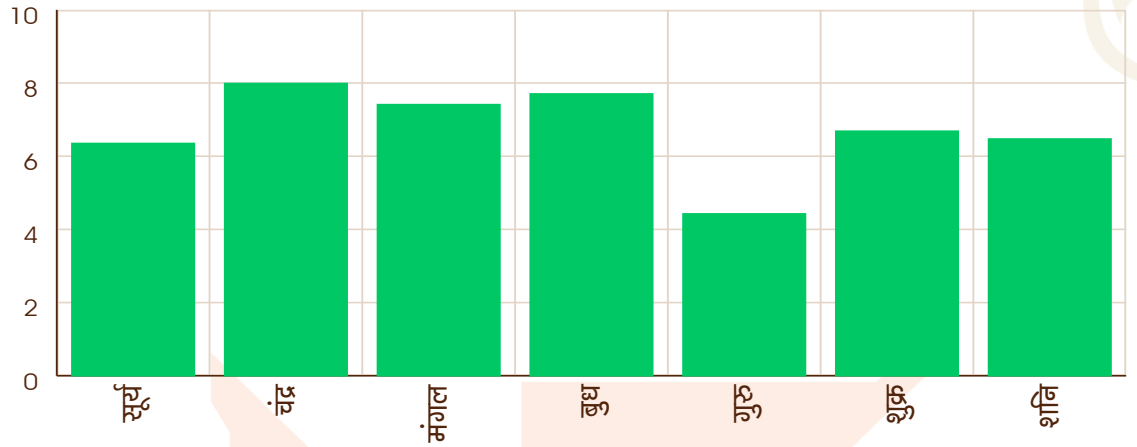

इष्ट - कष्ट फल

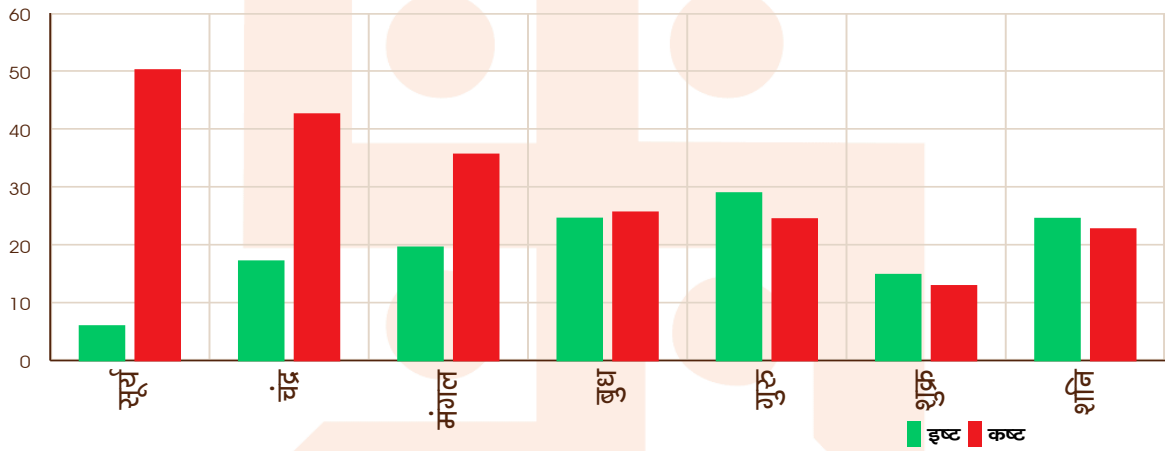

रूप भाव बल

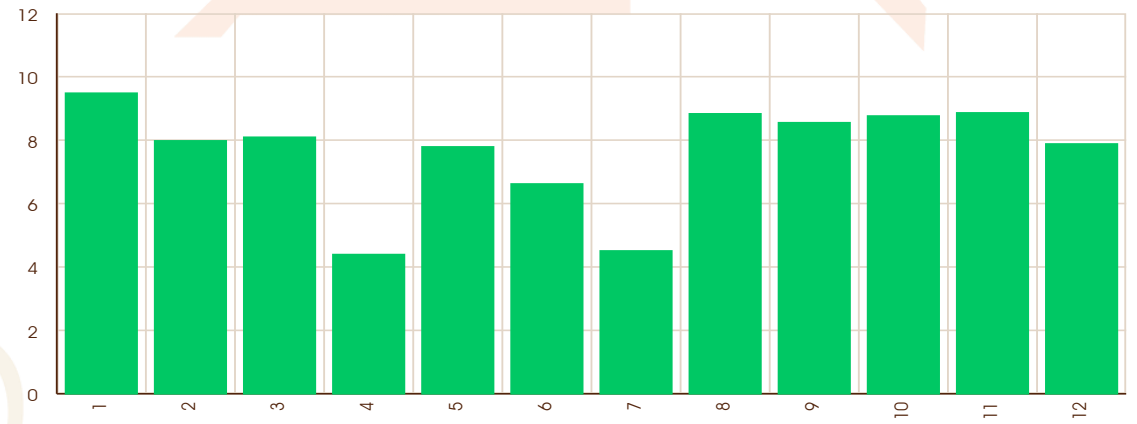

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	कन्या	26:44:24	--	--	चित्रा	2	14
गुलिक	गु	कन्या	24:39:35	--	--	चित्रा	1	14
काल	का	वृष	13:28:13	--	--	रोहिणी	2	4
मृत्यु	मृ	मिथु	27:32:16	--	--	पुनर्वसु	3	7
यमघंटक	यम	सिंह	10:16:39	--	--	मघा	4	10
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कर्क	18:24:03	--	--	आश्लेषा	1	9
धूम	धू	कुंभ	29:46:13	नीच	--	पू०भाद्रपद	3	25
व्यतिपात	व्य	वृष	00:13:47	नीच	--	कृतिका	2	3
परिवेश	परि	वृश्चि	00:13:47	--	--	विशाखा	4	16
इन्द्रचाप	इ	सिंह	29:46:13	--	--	उ०फाल्गुनी	1	12
उपकेतु	उप	कन्या	16:26:13	--	--	हस्त	2	13

प्राणपद	:	सिंह	28:42:51	कारकाँश लग्न	:	मिथु	29:08:58
भाव लग्न	:	कन्या	06:21:14	होरा लग्न	:	सिंह	15:58:04
घटी लग्न	:	कर्क	04:30:23	वर्णद लग्न	:	कुंभ	12:42:28

उपग्रह कुंडली

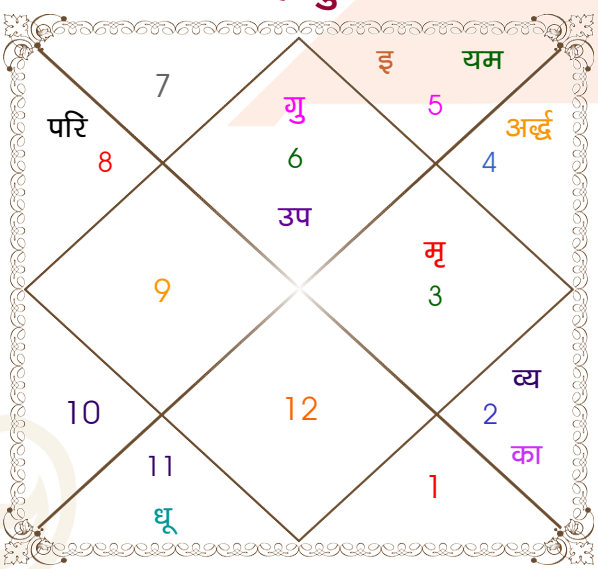

आरूढ़ कुंडली

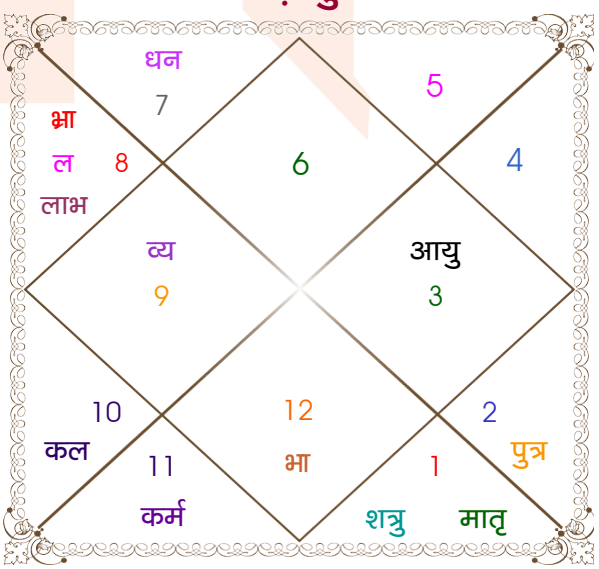

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षन्नाडी चक्र

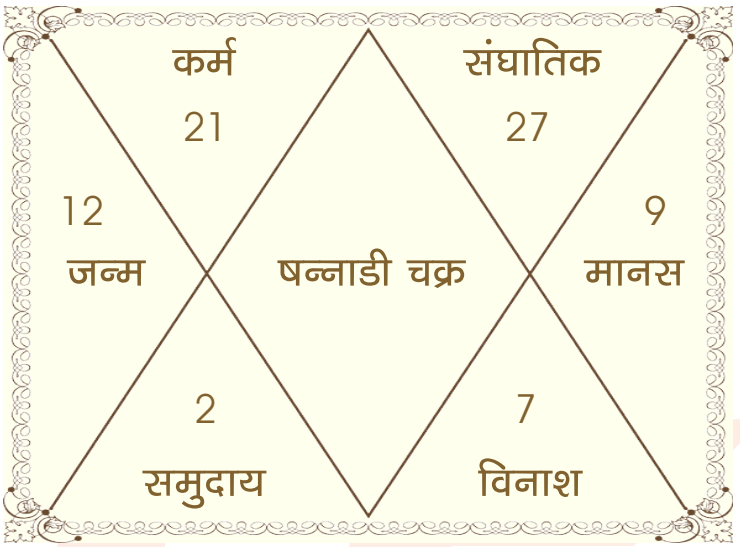

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
केतु कुंडली	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु
गुरु कुंडली	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु
केतु कुंडली	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु
गुरु कुंडली	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र
केतु कुंडली	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु
गुरु कुंडली	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	कुल
शनि	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
गुरु	1	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	4
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	4
लग्न	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	6
कुल	3	4	5	1	4	3	3	3	7	7	4	4	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	7
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	1	0	0	0	1	6
सूर्य	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	1	6
शुक्र	0	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	7
बुध	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	3	1	4	5	4	6	4	4	4	3	6	5	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	कुल
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	7
गुरु	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	5
शुक्र	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
बुध	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	4
चंद्र	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	3
लग्न	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	5
कुल	4	5	1	5	4	1	3	3	5	4	4	0	39

बुध का अष्टकवर्ग

	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	कुल
शनि	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
गुरु	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	4
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	0	6
लग्न	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	7
कुल	5	2	7	2	6	3	3	3	7	6	4	6	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुल
शनि	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	9
शुक्र	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	6
बुध	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	5
लग्न	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	9
कुल	6	5	2	5	5	5	6	3	4	6	4	5	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	कुल
शनि	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	7
गुरु	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	5
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	5
चंद्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1	9
लग्न	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
कुल	5	5	6	5	3	1	4	5	4	5	4	5	52

शनि का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	4
मंगल	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	6
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	3
बुध	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	6
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
लग्न	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	6
कुल	4	2	4	2	4	3	3	2	2	3	6	4	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कुल
शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	6
गुरु	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
मंगल	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
सूर्य	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
शुक्र	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	0	7
बुध	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	7
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	3	3	7	4	4	5	3	1	3	5	6	5	49

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	2	3	6	4	4	2	4	2	4	3	3	39
गुरु	2	5	5	5	6	3	4	6	4	5	6	5	56
मंगल	1	3	3	5	4	4	0	4	5	1	5	4	39
सूर्य	3	3	7	7	4	4	3	4	5	1	4	3	48
शुक्र	4	5	4	5	4	5	5	5	6	5	3	1	52
बुध	3	3	7	6	4	6	5	2	7	2	6	3	54
चंद्र	4	4	3	6	5	3	1	4	5	4	6	4	49
बिन्दु	19	25	32	40	31	29	20	29	34	22	33	23	337
रेखा	37	31	24	16	25	27	36	27	22	34	23	33	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	1	3	2	2	0	1	0	2	1	0	12
गुरु	0	2	1	0	4	0	0	1	2	2	2	0	14
मंगल	0	2	3	1	3	3	0	0	4	0	5	0	21
सूर्य	0	2	4	4	1	3	0	1	2	0	1	0	18
शुक्र	0	0	1	4	0	0	2	4	2	0	0	0	13
बुध	0	1	2	4	1	4	0	0	4	0	1	1	18
चंद्र	0	1	2	2	1	0	0	0	1	1	5	0	13
रेखा	0	8	14	18	12	12	2	7	15	5	15	1	109

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	3	2	2	0	1	0	1	1	0	10
गुरु	0	2	1	0	4	0	0	1	2	0	2	0	12
मंगल	0	2	0	1	3	3	0	0	4	0	5	0	18
सूर्य	0	2	1	4	1	3	0	1	2	0	1	0	15
शुक्र	0	0	1	4	0	0	2	4	2	0	0	0	13
बुध	0	1	0	4	1	4	0	0	3	0	1	1	15
चंद्र	0	1	2	2	1	0	0	0	1	0	5	0	12
रेखा	0	8	5	18	12	12	2	7	14	1	15	1	95

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	106	108	160	106	116	88	66
ग्रह पिंड	48	50	80	50	28	66	38
शोध्य पिंड	154	158	240	156	144	154	104

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

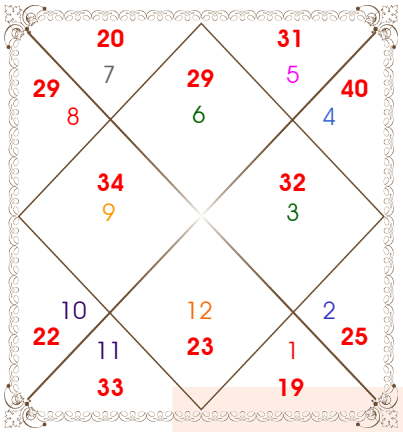

सूर्य का अष्टकवर्ग

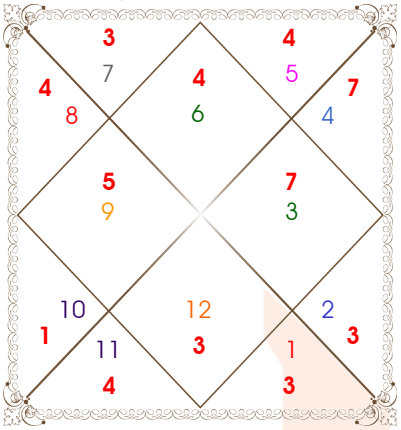

चंद्र का अष्टकवर्ग

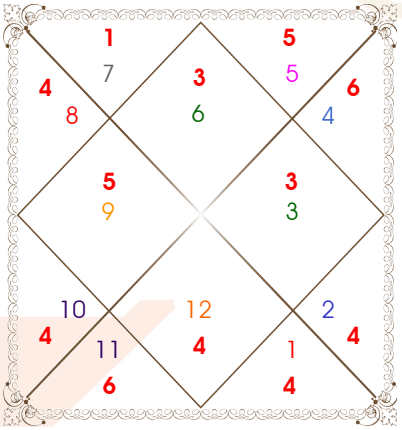

मंगल का अष्टकवर्ग

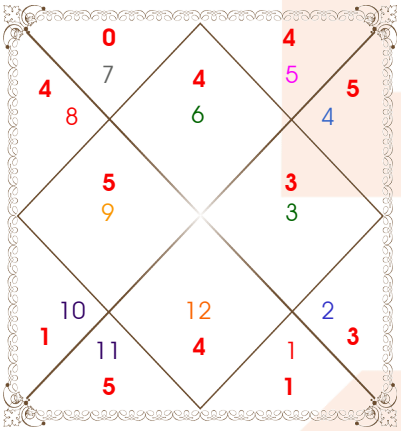

बुध का अष्टकवर्ग

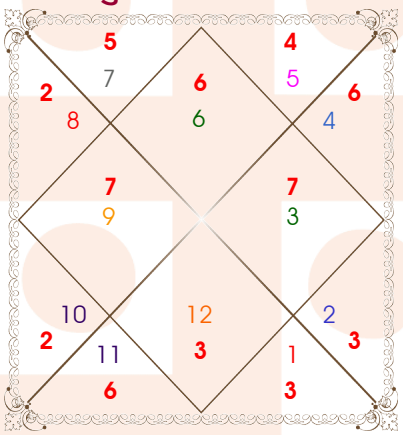

गुरू का अष्टकवर्ग

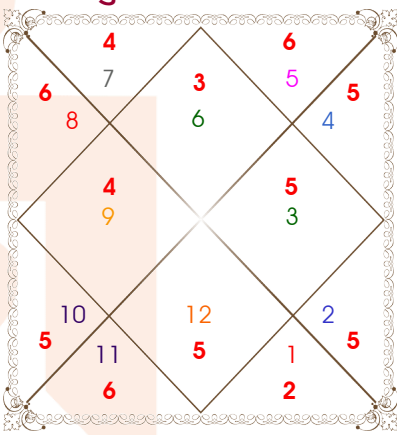

शुक्र का अष्टकवर्ग

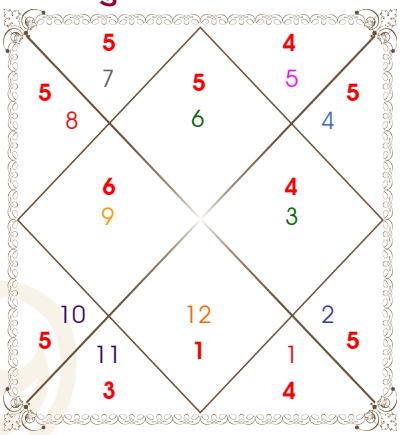

शनि का अष्टकवर्ग

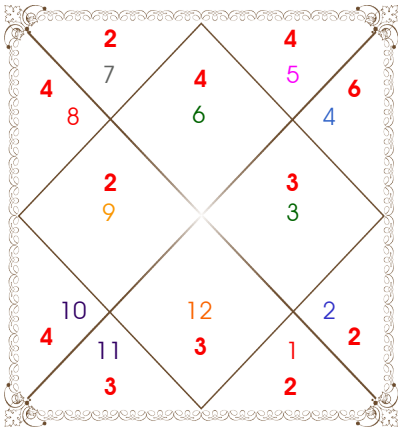

लग्न का अष्टकवर्ग

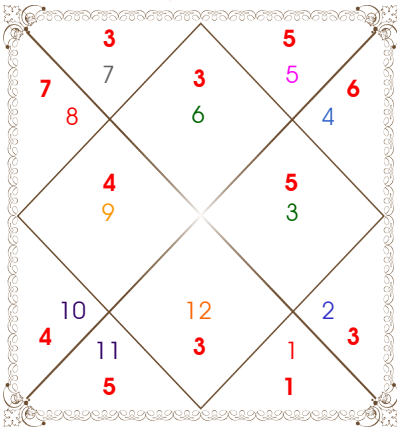

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

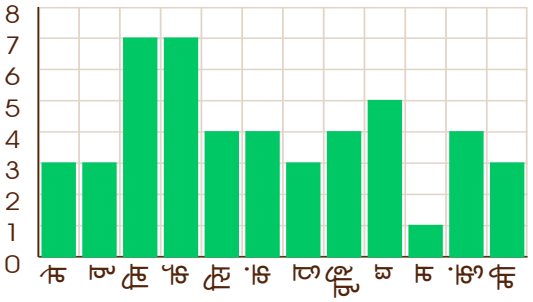

चन्द्र

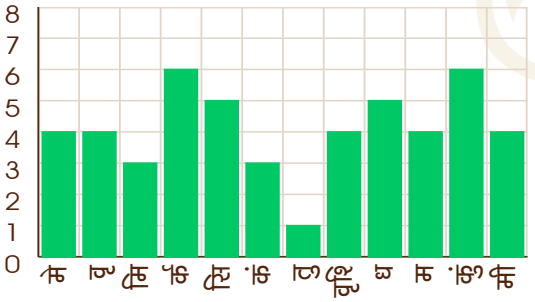

मंगल

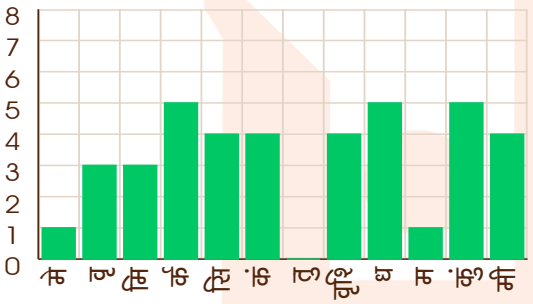

बुध

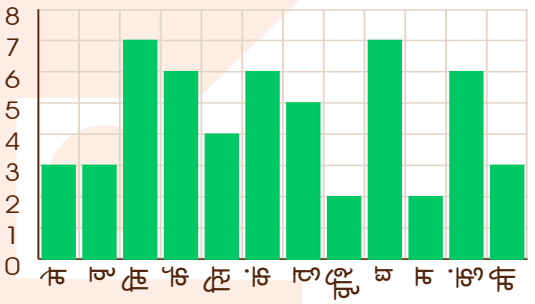

गुरु

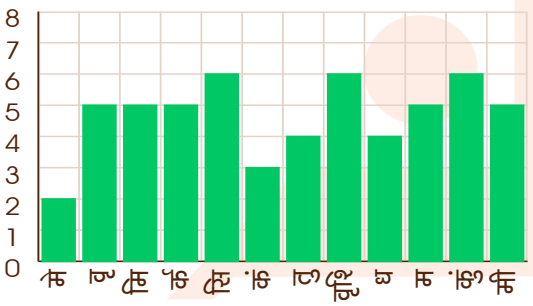

शुक्र

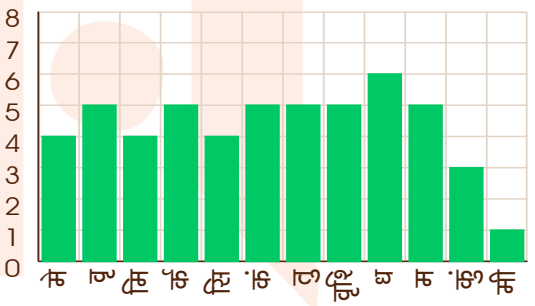

शनि

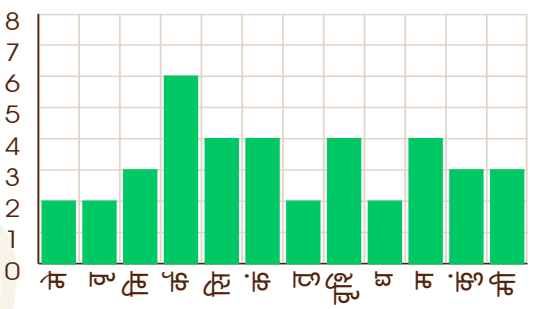

लग्न

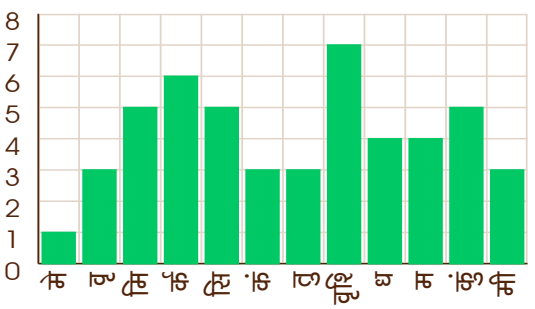

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

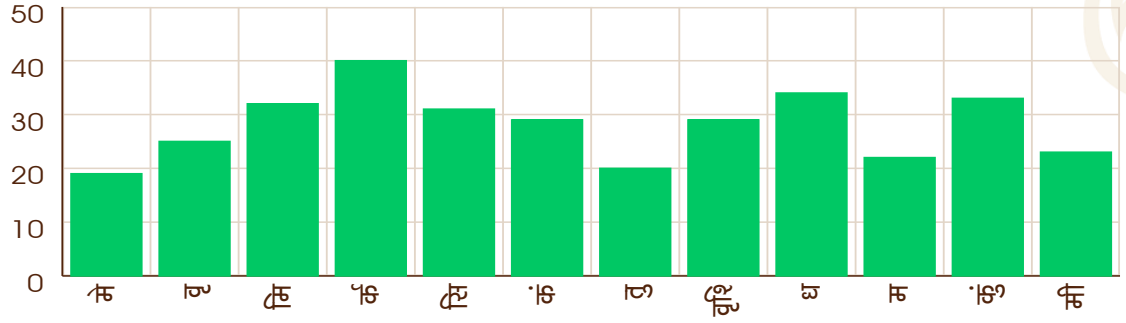

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

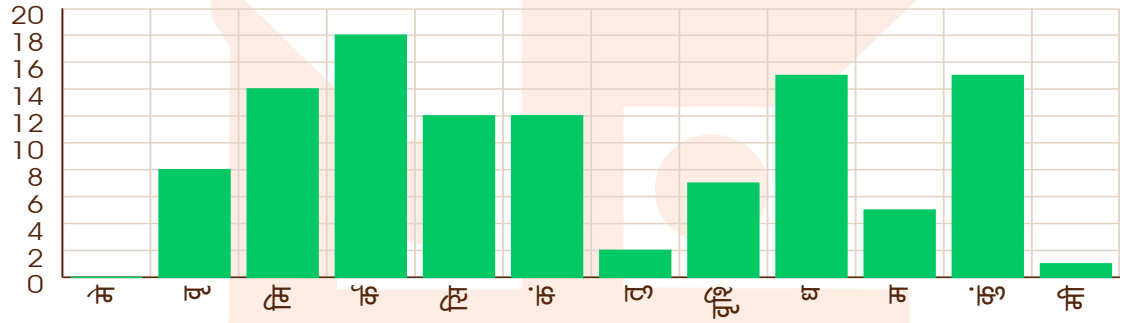

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

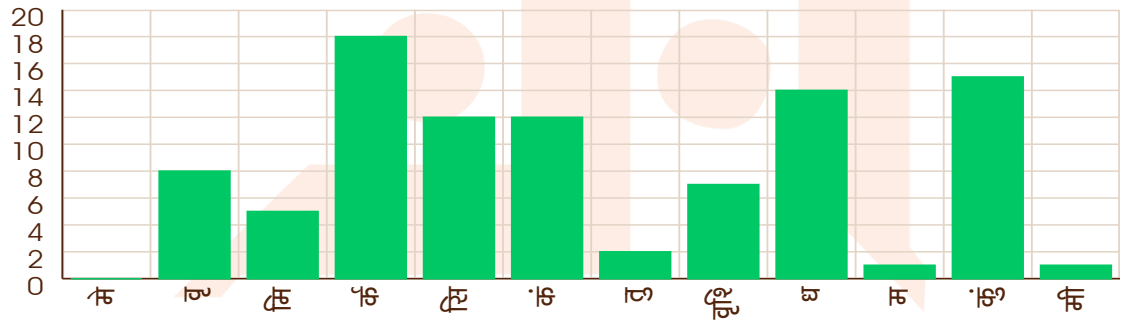

शोध्य पिंड

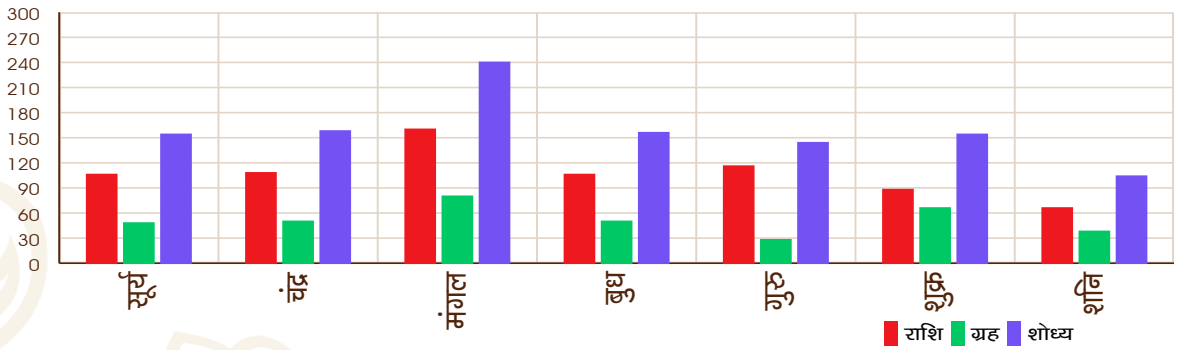

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 3 वर्ष 3 मास 27 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
03/11/2010		01/03/2014		01/03/2024		01/03/2031		01/03/2049	
01/03/2014		01/03/2024		01/03/2031		01/03/2049		01/03/2065	
	00/00/0000	चंद्र	31/12/2014	मंगल	28/07/2024	राहु	12/11/2033	गुरु	19/04/2051
	00/00/0000	मंगल	01/08/2015	राहु	15/08/2025	गुरु	06/04/2036	शनि	30/10/2053
	00/00/0000	राहु	29/01/2017	गुरु	22/07/2026	शनि	11/02/2039	बुध	05/02/2056
	03/11/2010	गुरु	31/05/2018	शनि	31/08/2027	बुध	31/08/2041	केतु	11/01/2057
गुरु	06/01/2011	शनि	31/12/2019	बुध	27/08/2028	केतु	18/09/2042	शुक्र	12/09/2059
शनि	19/12/2011	बुध	31/05/2021	केतु	23/01/2029	शुक्र	18/09/2045	सूर्य	30/06/2060
बुध	24/10/2012	केतु	30/12/2021	शुक्र	26/03/2030	सूर्य	13/08/2046	चंद्र	30/10/2061
केतु	01/03/2013	शुक्र	31/08/2023	सूर्य	31/07/2030	चंद्र	11/02/2048	मंगल	06/10/2062
शुक्र	01/03/2014	सूर्य	01/03/2024	चंद्र	01/03/2031	मंगल	01/03/2049	राहु	01/03/2065

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
01/03/2065		01/03/2084		02/03/2101		02/03/2108		02/03/2128	
01/03/2084		02/03/2101		02/03/2108		02/03/2128		00/00/0000	
शनि	04/03/2068	बुध	28/07/2086	केतु	29/07/2101	शुक्र	02/07/2111	सूर्य	19/06/2128
बुध	12/11/2070	केतु	26/07/2087	शुक्र	28/09/2102	सूर्य	01/07/2112	चंद्र	19/12/2128
केतु	22/12/2071	शुक्र	25/05/2090	सूर्य	03/02/2103	चंद्र	02/03/2114	मंगल	26/04/2129
शुक्र	20/02/2075	सूर्य	01/04/2091	चंद्र	04/09/2103	मंगल	02/05/2115	राहु	20/03/2130
सूर्य	02/02/2076	चंद्र	30/08/2092	मंगल	31/01/2104	राहु	02/05/2118	गुरु	04/11/2130
चंद्र	03/09/2077	मंगल	27/08/2093	राहु	18/02/2105	गुरु	31/12/2120		00/00/0000
मंगल	12/10/2078	राहु	16/03/2096	गुरु	25/01/2106	शनि	02/03/2124		00/00/0000
राहु	18/08/2081	गुरु	22/06/2098	शनि	05/03/2107	बुध	01/01/2127		00/00/0000
गुरु	01/03/2084	शनि	02/03/2101	बुध	02/03/2108	केतु	02/03/2128		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 3 वर्ष 3 मा 25 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र	
03/11/2010		06/01/2011		19/12/2011		24/10/2012		01/03/2013	
06/01/2011		19/12/2011		24/10/2012		01/03/2013		01/03/2014	
	00/00/0000	शनि	02/03/2011	बुध	01/02/2012	केतु	01/11/2012	शुक्र	01/05/2013
	00/00/0000	बुध	20/04/2011	केतु	19/02/2012	शुक्र	22/11/2012	सूर्य	19/05/2013
	00/00/0000	केतु	10/05/2011	शुक्र	10/04/2012	सूर्य	28/11/2012	चंद्र	18/06/2013
	00/00/0000	शुक्र	07/07/2011	सूर्य	26/04/2012	चंद्र	09/12/2012	मंगल	10/07/2013
	00/00/0000	सूर्य	24/07/2011	चंद्र	22/05/2012	मंगल	16/12/2012	राहु	03/09/2013
	03/11/2010	चंद्र	22/08/2011	मंगल	09/06/2012	राहु	05/01/2013	गुरु	21/10/2013
चंद्र	06/11/2010	मंगल	11/09/2011	राहु	26/07/2012	गुरु	22/01/2013	शनि	18/12/2013
मंगल	23/11/2010	राहु	02/11/2011	गुरु	05/09/2012	शनि	11/02/2013	बुध	08/02/2014
राहु	06/01/2011	गुरु	19/12/2011	शनि	24/10/2012	बुध	01/03/2013	केतु	01/03/2014

चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि	
01/03/2014		31/12/2014		01/08/2015		29/01/2017		31/05/2018	
31/12/2014		01/08/2015		29/01/2017		31/05/2018		31/12/2019	
चंद्र	27/03/2014	मंगल	12/01/2015	राहु	22/10/2015	गुरु	04/04/2017	शनि	31/08/2018
मंगल	13/04/2014	राहु	13/02/2015	गुरु	03/01/2016	शनि	21/06/2017	बुध	21/11/2018
राहु	29/05/2014	गुरु	13/03/2015	शनि	30/03/2016	बुध	29/08/2017	केतु	25/12/2018
गुरु	09/07/2014	शनि	16/04/2015	बुध	15/06/2016	केतु	26/09/2017	शुक्र	31/03/2019
शनि	26/08/2014	बुध	16/05/2015	केतु	17/07/2016	शुक्र	16/12/2017	सूर्य	29/04/2019
बुध	08/10/2014	केतु	29/05/2015	शुक्र	16/10/2016	सूर्य	09/01/2018	चंद्र	16/06/2019
केतु	26/10/2014	शुक्र	03/07/2015	सूर्य	13/11/2016	चंद्र	19/02/2018	मंगल	20/07/2019
शुक्र	15/12/2014	सूर्य	14/07/2015	चंद्र	29/12/2016	मंगल	19/03/2018	राहु	15/10/2019
सूर्य	31/12/2014	चंद्र	01/08/2015	मंगल	29/01/2017	राहु	31/05/2018	गुरु	31/12/2019

चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल	
31/12/2019		31/05/2021		30/12/2021		31/08/2023		01/03/2024	
31/05/2021		30/12/2021		31/08/2023		01/03/2024		28/07/2024	
बुध	13/03/2020	केतु	13/06/2021	शुक्र	11/04/2022	सूर्य	09/09/2023	मंगल	09/03/2024
केतु	12/04/2020	शुक्र	18/07/2021	सूर्य	11/05/2022	चंद्र	24/09/2023	राहु	01/04/2024
शुक्र	08/07/2020	सूर्य	29/07/2021	चंद्र	01/07/2022	मंगल	05/10/2023	गुरु	21/04/2024
सूर्य	02/08/2020	चंद्र	16/08/2021	मंगल	05/08/2022	राहु	01/11/2023	शनि	14/05/2024
चंद्र	15/09/2020	मंगल	28/08/2021	राहु	05/11/2022	गुरु	26/11/2023	बुध	04/06/2024
मंगल	15/10/2020	राहु	29/09/2021	गुरु	25/01/2023	शनि	25/12/2023	केतु	13/06/2024
राहु	31/12/2020	गुरु	27/10/2021	शनि	01/05/2023	बुध	20/01/2024	शुक्र	08/07/2024
गुरु	10/03/2021	शनि	30/11/2021	बुध	27/07/2023	केतु	30/01/2024	सूर्य	15/07/2024
शनि	31/05/2021	बुध	30/12/2021	केतु	31/08/2023	शुक्र	01/03/2024	चंद्र	28/07/2024

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु	
28/07/2024		15/08/2025		22/07/2026		31/08/2027		27/08/2028	
15/08/2025		22/07/2026		31/08/2027		27/08/2028		23/01/2029	
राहु	23/09/2024	गुरु	30/09/2025	शनि	24/09/2026	बुध	21/10/2027	केतु	05/09/2028
गुरु	13/11/2024	शनि	23/11/2025	बुध	21/11/2026	केतु	11/11/2027	शुक्र	30/09/2028
शनि	13/01/2025	बुध	10/01/2026	केतु	14/12/2026	शुक्र	11/01/2028	सूर्य	07/10/2028
बुध	09/03/2025	केतु	30/01/2026	शुक्र	20/02/2027	सूर्य	29/01/2028	चंद्र	20/10/2028
केतु	31/03/2025	शुक्र	28/03/2026	सूर्य	12/03/2027	चंद्र	28/02/2028	मंगल	28/10/2028
शुक्र	03/06/2025	सूर्य	14/04/2026	चंद्र	15/04/2027	मंगल	20/03/2028	राहु	20/11/2028
सूर्य	22/06/2025	चंद्र	12/05/2026	मंगल	08/05/2027	राहु	14/05/2028	गुरु	10/12/2028
चंद्र	24/07/2025	मंगल	01/06/2026	राहु	08/07/2027	गुरु	01/07/2028	शनि	02/01/2029
मंगल	15/08/2025	राहु	22/07/2026	गुरु	31/08/2027	शनि	27/08/2028	बुध	23/01/2029

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु	
23/01/2029		26/03/2030		31/07/2030		01/03/2031		12/11/2033	
26/03/2030		31/07/2030		01/03/2031		12/11/2033		06/04/2036	
शुक्र	04/04/2029	सूर्य	01/04/2030	चंद्र	18/08/2030	राहु	27/07/2031	गुरु	08/03/2034
सूर्य	26/04/2029	चंद्र	12/04/2030	मंगल	31/08/2030	गुरु	06/12/2031	शनि	25/07/2034
चंद्र	31/05/2029	मंगल	19/04/2030	राहु	01/10/2030	शनि	10/05/2032	बुध	26/11/2034
मंगल	25/06/2029	राहु	08/05/2030	गुरु	30/10/2030	बुध	27/09/2032	केतु	17/01/2035
राहु	28/08/2029	गुरु	25/05/2030	शनि	03/12/2030	केतु	23/11/2032	शुक्र	12/06/2035
गुरु	24/10/2029	शनि	14/06/2030	बुध	02/01/2031	शुक्र	07/05/2033	सूर्य	26/07/2035
शनि	30/12/2029	बुध	03/07/2030	केतु	14/01/2031	सूर्य	25/06/2033	चंद्र	07/10/2035
बुध	01/03/2030	केतु	10/07/2030	शुक्र	19/02/2031	चंद्र	15/09/2033	मंगल	27/11/2035
केतु	26/03/2030	शुक्र	31/07/2030	सूर्य	01/03/2031	मंगल	12/11/2033	राहु	06/04/2036

राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य	
06/04/2036		11/02/2039		31/08/2041		18/09/2042		18/09/2045	
11/02/2039		31/08/2041		18/09/2042		18/09/2045		13/08/2046	
शनि	18/09/2036	बुध	23/06/2039	केतु	22/09/2041	शुक्र	20/03/2043	सूर्य	04/10/2045
बुध	12/02/2037	केतु	16/08/2039	शुक्र	25/11/2041	सूर्य	13/05/2043	चंद्र	01/11/2045
केतु	14/04/2037	शुक्र	19/01/2040	सूर्य	14/12/2041	चंद्र	13/08/2043	मंगल	20/11/2045
शुक्र	05/10/2037	सूर्य	05/03/2040	चंद्र	15/01/2042	मंगल	16/10/2043	राहु	08/01/2046
सूर्य	26/11/2037	चंद्र	22/05/2040	मंगल	06/02/2042	राहु	28/03/2044	गुरु	21/02/2046
चंद्र	20/02/2038	मंगल	15/07/2040	राहु	05/04/2042	गुरु	21/08/2044	शनि	14/04/2046
मंगल	22/04/2038	राहु	02/12/2040	गुरु	26/05/2042	शनि	11/02/2045	बुध	31/05/2046
राहु	25/09/2038	गुरु	05/04/2041	शनि	26/07/2042	बुध	16/07/2045	केतु	19/06/2046
गुरु	11/02/2039	शनि	31/08/2041	बुध	18/09/2042	केतु	18/09/2045	शुक्र	13/08/2046

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
13/08/2046		11/02/2048		01/03/2049		19/04/2051		30/10/2053	
11/02/2048		01/03/2049		19/04/2051		30/10/2053		05/02/2056	
चंद्र	27/09/2046	मंगल	05/03/2048	गुरु	13/06/2049	शनि	13/09/2051	बुध	25/02/2054
मंगल	29/10/2046	राहु	01/05/2048	शनि	14/10/2049	बुध	22/01/2052	केतु	14/04/2054
राहु	19/01/2047	गुरु	21/06/2048	बुध	02/02/2050	केतु	16/03/2052	शुक्र	30/08/2054
गुरु	02/04/2047	शनि	21/08/2048	केतु	19/03/2050	शुक्र	17/08/2052	सूर्य	10/10/2054
शनि	28/06/2047	बुध	14/10/2048	शुक्र	27/07/2050	सूर्य	02/10/2052	चंद्र	18/12/2054
बुध	14/09/2047	केतु	06/11/2048	सूर्य	04/09/2050	चंद्र	18/12/2052	मंगल	05/02/2055
केतु	16/10/2047	शुक्र	09/01/2049	चंद्र	08/11/2050	मंगल	10/02/2053	राहु	09/06/2055
शुक्र	15/01/2048	सूर्य	28/01/2049	मंगल	23/12/2050	राहु	29/06/2053	गुरु	27/09/2055
सूर्य	11/02/2048	चंद्र	01/03/2049	राहु	19/04/2051	गुरु	30/10/2053	शनि	05/02/2056

गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल	
05/02/2056		11/01/2057		12/09/2059		30/06/2060		30/10/2061	
11/01/2057		12/09/2059		30/06/2060		30/10/2061		06/10/2062	
केतु	25/02/2056	शुक्र	23/06/2057	सूर्य	27/09/2059	चंद्र	10/08/2060	मंगल	19/11/2061
शुक्र	22/04/2056	सूर्य	10/08/2057	चंद्र	21/10/2059	मंगल	07/09/2060	राहु	09/01/2062
सूर्य	09/05/2056	चंद्र	30/10/2057	मंगल	07/11/2059	राहु	19/11/2060	गुरु	24/02/2062
चंद्र	06/06/2056	मंगल	26/12/2057	राहु	21/12/2059	गुरु	23/01/2061	शनि	19/04/2062
मंगल	26/06/2056	राहु	21/05/2058	गुरु	29/01/2060	शनि	10/04/2061	बुध	06/06/2062
राहु	16/08/2056	गुरु	28/09/2058	शनि	15/03/2060	बुध	18/06/2061	केतु	26/06/2062
गुरु	01/10/2056	शनि	01/03/2059	बुध	26/04/2060	केतु	17/07/2061	शुक्र	22/08/2062
शनि	24/11/2056	बुध	17/07/2059	केतु	13/05/2060	शुक्र	06/10/2061	सूर्य	08/09/2062
बुध	11/01/2057	केतु	12/09/2059	शुक्र	30/06/2060	सूर्य	30/10/2061	चंद्र	06/10/2062

गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र	
06/10/2062		01/03/2065		04/03/2068		12/11/2070		22/12/2071	
01/03/2065		04/03/2068		12/11/2070		22/12/2071		20/02/2075	
राहु	15/02/2063	शनि	22/08/2065	बुध	21/07/2068	केतु	05/12/2070	शुक्र	01/07/2072
गुरु	12/06/2063	बुध	25/01/2066	केतु	16/09/2068	शुक्र	11/02/2071	सूर्य	28/08/2072
शनि	28/10/2063	केतु	30/03/2066	शुक्र	27/02/2069	सूर्य	03/03/2071	चंद्र	03/12/2072
बुध	01/03/2064	शुक्र	29/09/2066	सूर्य	17/04/2069	चंद्र	06/04/2071	मंगल	08/02/2073
केतु	21/04/2064	सूर्य	23/11/2066	चंद्र	08/07/2069	मंगल	30/04/2071	राहु	01/08/2073
शुक्र	14/09/2064	चंद्र	22/02/2067	मंगल	04/09/2069	राहु	29/06/2071	गुरु	02/01/2074
सूर्य	28/10/2064	मंगल	27/04/2067	राहु	29/01/2070	गुरु	22/08/2071	शनि	04/07/2074
चंद्र	09/01/2065	राहु	09/10/2067	गुरु	09/06/2070	शनि	25/10/2071	बुध	15/12/2074
मंगल	01/03/2065	गुरु	04/03/2068	शनि	12/11/2070	बुध	22/12/2071	केतु	20/02/2075

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु	
20/02/2075		02/02/2076		03/09/2077		12/10/2078		18/08/2081	
02/02/2076		03/09/2077		12/10/2078		18/08/2081		01/03/2084	
सूर्य	10/03/2075	चंद्र	21/03/2076	मंगल	26/09/2077	राहु	18/03/2079	गुरु	20/12/2081
चंद्र	08/04/2075	मंगल	24/04/2076	राहु	26/11/2077	गुरु	03/08/2079	शनि	15/05/2082
मंगल	28/04/2075	राहु	20/07/2076	गुरु	19/01/2078	शनि	15/01/2080	बुध	23/09/2082
राहु	19/06/2075	गुरु	05/10/2076	शनि	24/03/2078	बुध	11/06/2080	केतु	16/11/2082
गुरु	04/08/2075	शनि	05/01/2077	बुध	20/05/2078	केतु	10/08/2080	शुक्र	20/04/2083
शनि	28/09/2075	बुध	28/03/2077	केतु	13/06/2078	शुक्र	31/01/2081	सूर्य	05/06/2083
बुध	16/11/2075	केतु	30/04/2077	शुक्र	19/08/2078	सूर्य	24/03/2081	चंद्र	21/08/2083
केतु	06/12/2075	शुक्र	05/08/2077	सूर्य	09/09/2078	चंद्र	19/06/2081	मंगल	14/10/2083
शुक्र	02/02/2076	सूर्य	03/09/2077	चंद्र	12/10/2078	मंगल	18/08/2081	राहु	01/03/2084

बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र	
01/03/2084		28/07/2086		26/07/2087		25/05/2090		01/04/2091	
28/07/2086		26/07/2087		25/05/2090		01/04/2091		30/08/2092	
बुध	03/07/2084	केतु	18/08/2086	शुक्र	14/01/2088	सूर्य	10/06/2090	चंद्र	14/05/2091
केतु	24/08/2084	शुक्र	18/10/2086	सूर्य	06/03/2088	चंद्र	06/07/2090	मंगल	13/06/2091
शुक्र	17/01/2085	सूर्य	05/11/2086	चंद्र	31/05/2088	मंगल	24/07/2090	राहु	30/08/2091
सूर्य	02/03/2085	चंद्र	05/12/2086	मंगल	30/07/2088	राहु	08/09/2090	गुरु	07/11/2091
चंद्र	14/05/2085	मंगल	26/12/2086	राहु	02/01/2089	गुरु	20/10/2090	शनि	28/01/2092
मंगल	05/07/2085	राहु	19/02/2087	गुरु	20/05/2089	शनि	08/12/2090	बुध	10/04/2092
राहु	14/11/2085	गुरु	08/04/2087	शनि	30/10/2089	बुध	21/01/2091	केतु	10/05/2092
गुरु	11/03/2086	शनि	04/06/2087	बुध	26/03/2090	केतु	08/02/2091	शुक्र	04/08/2092
शनि	28/07/2086	बुध	26/07/2087	केतु	25/05/2090	शुक्र	01/04/2091	सूर्य	30/08/2092

बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु	
30/08/2092		27/08/2093		16/03/2096		22/06/2098		02/03/2101	
27/08/2093		16/03/2096		22/06/2098		02/03/2101		29/07/2101	
मंगल	20/09/2092	राहु	14/01/2094	गुरु	04/07/2096	शनि	24/11/2098	केतु	11/03/2101
राहु	14/11/2092	गुरु	18/05/2094	शनि	12/11/2096	बुध	13/04/2099	शुक्र	04/04/2101
गुरु	01/01/2093	शनि	13/10/2094	बुध	10/03/2097	केतु	09/06/2099	सूर्य	12/04/2101
शनि	27/02/2093	बुध	22/02/2095	केतु	27/04/2097	शुक्र	20/11/2099	चंद्र	24/04/2101
बुध	20/04/2093	केतु	17/04/2095	शुक्र	12/09/2097	सूर्य	08/01/2100	मंगल	03/05/2101
केतु	11/05/2093	शुक्र	19/09/2095	सूर्य	23/10/2097	चंद्र	31/03/2100	राहु	25/05/2101
शुक्र	10/07/2093	सूर्य	05/11/2095	चंद्र	31/12/2097	मंगल	27/05/2100	गुरु	14/06/2101
सूर्य	28/07/2093	चंद्र	22/01/2096	मंगल	18/02/2098	राहु	22/10/2100	शनि	08/07/2101
चंद्र	27/08/2093	मंगल	16/03/2096	राहु	22/06/2098	गुरु	02/03/2101	बुध	29/07/2101

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शुक्र	
29/07/2101	
28/09/2102	
शुक्र	08/10/2101
सूर्य	29/10/2101
चंद्र	04/12/2101
मंगल	29/12/2101
राहु	03/03/2102
गुरु	28/04/2102
शनि	05/07/2102
बुध	03/09/2102
केतु	28/09/2102

केतु - सूर्य	
28/09/2102	
03/02/2103	
सूर्य	05/10/2102
चंद्र	15/10/2102
मंगल	23/10/2102
राहु	11/11/2102
गुरु	28/11/2102
शनि	18/12/2102
बुध	05/01/2103
केतु	13/01/2103
शुक्र	03/02/2103

केतु - चंद्र	
03/02/2103	
04/09/2103	
चंद्र	21/02/2103
मंगल	05/03/2103
राहु	06/04/2103
गुरु	05/05/2103
शनि	07/06/2103
बुध	07/07/2103
केतु	20/07/2103
शुक्र	24/08/2103
सूर्य	04/09/2103

केतु - मंगल	
04/09/2103	
31/01/2104	
मंगल	13/09/2103
राहु	05/10/2103
गुरु	25/10/2103
शनि	18/11/2103
बुध	09/12/2103
केतु	17/12/2103
शुक्र	11/01/2104
सूर्य	19/01/2104
चंद्र	31/01/2104

केतु - राहु	
31/01/2104	
18/02/2105	
राहु	29/03/2104
गुरु	19/05/2104
शनि	19/07/2104
बुध	11/09/2104
केतु	03/10/2104
शुक्र	06/12/2104
सूर्य	25/12/2104
चंद्र	26/01/2105
मंगल	18/02/2105

केतु - गुरु	
18/02/2105	
25/01/2106	
गुरु	04/04/2105
शनि	28/05/2105
बुध	15/07/2105
केतु	04/08/2105
शुक्र	30/09/2105
सूर्य	17/10/2105
चंद्र	15/11/2105
मंगल	05/12/2105
राहु	25/01/2106

केतु - शनि	
25/01/2106	
05/03/2107	
शनि	30/03/2106
बुध	26/05/2106
केतु	19/06/2106
शुक्र	25/08/2106
सूर्य	14/09/2106
चंद्र	18/10/2106
मंगल	11/11/2106
राहु	10/01/2107
गुरु	05/03/2107

केतु - बुध	
05/03/2107	
02/03/2108	
बुध	26/04/2107
केतु	17/05/2107
शुक्र	16/07/2107
सूर्य	03/08/2107
चंद्र	03/09/2107
मंगल	24/09/2107
राहु	17/11/2107
गुरु	04/01/2108
शनि	02/03/2108

शुक्र - शुक्र	
02/03/2108	
02/07/2111	
शुक्र	21/09/2108
सूर्य	20/11/2108
चंद्र	02/03/2109
मंगल	12/05/2109
राहु	11/11/2109
गुरु	22/04/2110
शनि	01/11/2110
बुध	22/04/2111
केतु	02/07/2111

शुक्र - सूर्य	
02/07/2111	
01/07/2112	
सूर्य	20/07/2111
चंद्र	20/08/2111
मंगल	10/09/2111
राहु	04/11/2111
गुरु	23/12/2111
शनि	18/02/2112
बुध	10/04/2112
केतु	02/05/2112
शुक्र	01/07/2112

शुक्र - चंद्र	
01/07/2112	
02/03/2114	
चंद्र	21/08/2112
मंगल	26/09/2112
राहु	26/12/2112
गुरु	17/03/2113
शनि	22/06/2113
बुध	16/09/2113
केतु	21/10/2113
शुक्र	31/01/2114
सूर्य	02/03/2114

शुक्र - मंगल	
02/03/2114	
02/05/2115	
मंगल	27/03/2114
राहु	30/05/2114
गुरु	26/07/2114
शनि	01/10/2114
बुध	01/12/2114
केतु	25/12/2114
शुक्र	06/03/2115
सूर्य	28/03/2115
चंद्र	02/05/2115

शुक्र - राहु	
02/05/2115	
02/05/2118	
राहु	14/10/2115
गुरु	08/03/2116
शनि	28/08/2116
बुध	30/01/2117
केतु	04/04/2117
शुक्र	04/10/2117
सूर्य	28/11/2117
चंद्र	27/02/2118
मंगल	02/05/2118

शुक्र - गुरु	
02/05/2118	
31/12/2120	
गुरु	09/09/2118
शनि	10/02/2119
बुध	28/06/2119
केतु	24/08/2119
शुक्र	02/02/2120
सूर्य	22/03/2120
चंद्र	11/06/2120
मंगल	07/08/2120
राहु	31/12/2120

शुक्र - शनि	
31/12/2120	
02/03/2124	
शनि	02/07/2121
बुध	13/12/2121
केतु	18/02/2122
शुक्र	30/08/2122
सूर्य	27/10/2122
चंद्र	31/01/2123
मंगल	09/04/2123
राहु	29/09/2123
गुरु	02/03/2124

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - गुरु - सूर्य	
28/03/2026 05:54	
14/04/2026 06:59	
सूर्य	29/03/2026 02:21
चंद्र	30/03/2026 12:27
मंगल	31/03/2026 12:19
राहु	03/04/2026 01:40
गुरु	05/04/2026 08:13
शनि	08/04/2026 00:59
बुध	10/04/2026 10:56
केतु	11/04/2026 10:48
शुक्र	14/04/2026 06:59

मंगल - गुरु - चंद्र	
14/04/2026 06:59	
12/05/2026 16:47	
चंद्र	16/04/2026 15:48
मंगल	18/04/2026 07:34
राहु	22/04/2026 13:50
गुरु	26/04/2026 08:45
शनि	30/04/2026 20:42
बुध	04/05/2026 21:17
केतु	06/05/2026 13:03
शुक्र	11/05/2026 06:41
सूर्य	12/05/2026 16:47

मंगल - गुरु - मंगल	
12/05/2026 16:47	
01/06/2026 14:02	
मंगल	13/05/2026 20:37
राहु	16/05/2026 20:13
गुरु	19/05/2026 11:51
शनि	22/05/2026 15:25
बुध	25/05/2026 11:01
केतु	26/05/2026 14:52
शुक्र	29/05/2026 22:24
सूर्य	30/05/2026 22:16
चंद्र	01/06/2026 14:02

मंगल - गुरु - राहु	
01/06/2026 14:02	
22/07/2026 17:17	
राहु	09/06/2026 06:08
गुरु	16/06/2026 01:46
शनि	24/06/2026 04:04
बुध	01/07/2026 09:56
केतु	04/07/2026 09:31
शुक्र	12/07/2026 22:04
सूर्य	15/07/2026 11:25
चंद्र	19/07/2026 17:42
मंगल	22/07/2026 17:17

मंगल - शनि - शनि	
22/07/2026 17:17	
24/09/2026 19:36	
शनि	01/08/2026 20:51
बुध	10/08/2026 22:46
केतु	14/08/2026 16:31
शुक्र	25/08/2026 08:54
सूर्य	28/08/2026 13:49
चंद्र	02/09/2026 22:00
मंगल	06/09/2026 15:44
राहु	16/09/2026 06:29
गुरु	24/09/2026 19:36

मंगल - शनि - बुध	
24/09/2026 19:36	
21/11/2026 03:59	
बुध	02/10/2026 22:35
केतु	06/10/2026 06:52
शुक्र	15/10/2026 20:16
सूर्य	18/10/2026 17:05
चंद्र	23/10/2026 11:47
मंगल	26/10/2026 20:04
राहु	04/11/2026 10:32
गुरु	12/11/2026 02:03
शनि	21/11/2026 03:59

मंगल - शनि - केतु	
21/11/2026 03:59	
14/12/2026 18:43	
केतु	22/11/2026 13:02
शुक्र	26/11/2026 11:30
सूर्य	27/11/2026 15:50
चंद्र	29/11/2026 15:04
मंगल	01/12/2026 00:07
राहु	04/12/2026 13:08
गुरु	07/12/2026 16:42
शनि	11/12/2026 10:26
बुध	14/12/2026 18:43

मंगल - शनि - शुक्र	
14/12/2026 18:43	
20/02/2027 06:00	
शुक्र	26/12/2026 00:36
सूर्य	29/12/2026 09:34
चंद्र	04/01/2027 00:30
मंगल	07/01/2027 22:58
राहु	18/01/2027 01:51
गुरु	27/01/2027 01:45
शनि	06/02/2027 18:09
बुध	16/02/2027 07:32
केतु	20/02/2027 06:00

मंगल - शनि - सूर्य	
20/02/2027 06:00	
12/03/2027 11:47	
सूर्य	21/02/2027 06:17
चंद्र	22/02/2027 22:46
मंगल	24/02/2027 03:06
राहु	27/02/2027 03:58
गुरु	01/03/2027 20:45
शनि	05/03/2027 01:40
बुध	07/03/2027 22:29
केतु	09/03/2027 02:49
शुक्र	12/03/2027 11:47

मंगल - शनि - चंद्र	
12/03/2027 11:47	
15/04/2027 05:25	
चंद्र	15/03/2027 07:15
मंगल	17/03/2027 06:29
राहु	22/03/2027 07:55
गुरु	26/03/2027 19:53
शनि	01/04/2027 04:04
बुध	05/04/2027 22:46
केतु	07/04/2027 22:00
शुक्र	13/04/2027 12:56
सूर्य	15/04/2027 05:25

मंगल - शनि - मंगल	
15/04/2027 05:25	
08/05/2027 20:10	
मंगल	16/04/2027 14:29
राहु	20/04/2027 03:29
गुरु	23/04/2027 07:03
शनि	27/04/2027 00:47
बुध	30/04/2027 09:05
केतु	01/05/2027 18:08
शुक्र	05/05/2027 16:36
सूर्य	06/05/2027 20:56
चंद्र	08/05/2027 20:10

मंगल - शनि - राहु	
08/05/2027 20:10	
08/07/2027 13:31	
राहु	17/05/2027 22:46
गुरु	26/05/2027 01:05
शनि	04/06/2027 15:50
बुध	13/06/2027 06:17
केतु	16/06/2027 19:18
शुक्र	26/06/2027 22:11
सूर्य	29/06/2027 23:03
चंद्र	05/07/2027 00:30
मंगल	08/07/2027 13:31

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - शनि - गुरु	
08/07/2027 13:31	
31/08/2027 12:56	
गुरु	15/07/2027 18:14
शनि	24/07/2027 07:21
बुध	31/07/2027 22:52
केतु	04/08/2027 02:26
शुक्र	13/08/2027 02:20
सूर्य	15/08/2027 19:06
चंद्र	20/08/2027 07:03
मंगल	23/08/2027 10:37
राहु	31/08/2027 12:56

मंगल - बुध - बुध	
31/08/2027 12:56	
21/10/2027 20:26	
बुध	07/09/2027 19:24
केतु	10/09/2027 19:14
शुक्र	19/09/2027 08:29
सूर्य	21/09/2027 22:03
चंद्र	26/09/2027 04:41
मंगल	29/09/2027 04:31
राहु	06/10/2027 21:15
गुरु	13/10/2027 17:27
शनि	21/10/2027 20:26

मंगल - बुध - केतु	
21/10/2027 20:26	
11/11/2027 23:31	
केतु	23/10/2027 02:01
शुक्र	26/10/2027 14:32
सूर्य	27/10/2027 15:53
चंद्र	29/10/2027 10:08
मंगल	30/10/2027 15:43
राहु	02/11/2027 19:47
गुरु	05/11/2027 15:24
शनि	08/11/2027 23:41
बुध	11/11/2027 23:31

मंगल - बुध - शुक्र	
11/11/2027 23:31	
11/01/2028 08:21	
शुक्र	22/11/2027 01:00
सूर्य	25/11/2027 01:26
चंद्र	30/11/2027 02:10
मंगल	03/12/2027 14:41
राहु	12/12/2027 16:00
गुरु	20/12/2027 17:11
शनि	30/12/2027 06:35
बुध	07/01/2028 19:50
केतु	11/01/2028 08:21

मंगल - बुध - सूर्य	
11/01/2028 08:21	
29/01/2028 11:00	
सूर्य	12/01/2028 06:05
चंद्र	13/01/2028 18:18
मंगल	14/01/2028 19:39
राहु	17/01/2028 12:51
गुरु	19/01/2028 22:48
शनि	22/01/2028 19:37
बुध	25/01/2028 09:12
केतु	26/01/2028 10:33
शुक्र	29/01/2028 11:00

मंगल - बुध - चंद्र	
29/01/2028 11:00	
28/02/2028 15:24	
चंद्र	31/01/2028 23:22
मंगल	02/02/2028 17:37
राहु	07/02/2028 06:17
गुरु	11/02/2028 06:52
शनि	16/02/2028 01:34
बुध	20/02/2028 08:12
केतु	22/02/2028 02:27
शुक्र	27/02/2028 03:11
सूर्य	28/02/2028 15:24

मंगल - बुध - मंगल	
28/02/2028 15:24	
20/03/2028 18:30	
मंगल	29/02/2028 20:59
राहु	04/03/2028 01:03
गुरु	06/03/2028 20:40
शनि	10/03/2028 04:57
बुध	13/03/2028 04:47
केतु	14/03/2028 10:22
शुक्र	17/03/2028 22:53
सूर्य	19/03/2028 00:14
चंद्र	20/03/2028 18:30

मंगल - बुध - राहु	
20/03/2028 18:30	
14/05/2028 02:26	
राहु	28/03/2028 22:05
गुरु	05/04/2028 03:57
शनि	13/04/2028 18:24
बुध	21/04/2028 11:08
केतु	24/04/2028 15:11
शुक्र	03/05/2028 16:31
सूर्य	06/05/2028 09:43
चंद्र	10/05/2028 22:22
मंगल	14/05/2028 02:26

मंगल - बुध - गुरु	
14/05/2028 02:26	
01/07/2028 09:30	
गुरु	20/05/2028 12:59
शनि	28/05/2028 04:30
बुध	04/06/2028 00:42
केतु	06/06/2028 20:19
शुक्र	14/06/2028 21:29
सूर्य	17/06/2028 07:26
चंद्र	21/06/2028 08:02
मंगल	24/06/2028 03:38
राहु	01/07/2028 09:30

मंगल - बुध - शनि	
01/07/2028 09:30	
27/08/2028 17:53	
शनि	10/07/2028 11:26
बुध	18/07/2028 14:25
केतु	21/07/2028 22:42
शुक्र	31/07/2028 12:06
सूर्य	03/08/2028 08:55
चंद्र	08/08/2028 03:37
मंगल	11/08/2028 11:54
राहु	20/08/2028 02:22
गुरु	27/08/2028 17:53

मंगल - केतु - केतु	
27/08/2028 17:53	
05/09/2028 10:41	
केतु	28/08/2028 06:04
शुक्र	29/08/2028 16:52
सूर्य	30/08/2028 03:18
चंद्र	30/08/2028 20:42
मंगल	31/08/2028 08:53
राहु	01/09/2028 16:12
गुरु	02/09/2028 20:03
शनि	04/09/2028 05:06
बुध	05/09/2028 10:41

मंगल - केतु - शुक्र	
05/09/2028 10:41	
30/09/2028 07:15	
शुक्र	09/09/2028 14:07
सूर्य	10/09/2028 19:56
चंद्र	12/09/2028 21:39
मंगल	14/09/2028 08:27
राहु	18/09/2028 01:57
गुरु	21/09/2028 09:29
शनि	25/09/2028 07:57
बुध	28/09/2028 20:27
केतु	30/09/2028 07:15

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - केतु - सूर्य	
30/09/2028 07:15	
07/10/2028 18:14	
सूर्य	30/09/2028 16:12
चंद्र	01/10/2028 07:07
मंगल	01/10/2028 17:34
राहु	02/10/2028 20:24
गुरु	03/10/2028 20:16
शनि	05/10/2028 00:36
बुध	06/10/2028 01:58
केतु	06/10/2028 12:24
शुक्र	07/10/2028 18:14

मंगल - केतु - चंद्र	
07/10/2028 18:14	
20/10/2028 04:31	
चंद्र	08/10/2028 19:05
मंगल	09/10/2028 12:29
राहु	11/10/2028 09:14
गुरु	13/10/2028 01:00
शनि	15/10/2028 00:14
बुध	16/10/2028 18:29
केतु	17/10/2028 11:53
शुक्र	19/10/2028 13:36
सूर्य	20/10/2028 04:31

मंगल - केतु - मंगल	
20/10/2028 04:31	
28/10/2028 21:19	
मंगल	20/10/2028 16:42
राहु	22/10/2028 00:01
गुरु	23/10/2028 03:51
शनि	24/10/2028 12:55
बुध	25/10/2028 18:30
केतु	26/10/2028 06:41
शुक्र	27/10/2028 17:29
सूर्य	28/10/2028 03:55
चंद्र	28/10/2028 21:19

मंगल - केतु - राहु	
28/10/2028 21:19	
20/11/2028 06:14	
राहु	01/11/2028 05:51
गुरु	04/11/2028 05:27
शनि	07/11/2028 18:27
बुध	10/11/2028 22:31
केतु	12/11/2028 05:50
शुक्र	15/11/2028 23:20
सूर्य	17/11/2028 02:10
चंद्र	18/11/2028 22:55
मंगल	20/11/2028 06:14

मंगल - केतु - गुरु	
20/11/2028 06:14	
10/12/2028 03:30	
गुरु	22/11/2028 21:52
शनि	26/11/2028 01:26
बुध	28/11/2028 21:03
केतु	30/11/2028 00:53
शुक्र	03/12/2028 08:26
सूर्य	04/12/2028 08:18
चंद्र	06/12/2028 00:04
मंगल	07/12/2028 03:54
राहु	10/12/2028 03:30

मंगल - केतु - शनि	
10/12/2028 03:30	
02/01/2029 18:15	
शनि	13/12/2028 21:14
बुध	17/12/2028 05:31
केतु	18/12/2028 14:35
शुक्र	22/12/2028 13:02
सूर्य	23/12/2028 17:23
चंद्र	25/12/2028 16:36
मंगल	27/12/2028 01:40
राहु	30/12/2028 14:41
गुरु	02/01/2029 18:15

मंगल - केतु - बुध	
02/01/2029 18:15	
23/01/2029 21:20	
बुध	05/01/2029 18:05
केतु	06/01/2029 23:40
शुक्र	10/01/2029 12:11
सूर्य	11/01/2029 13:32
चंद्र	13/01/2029 07:47
मंगल	14/01/2029 13:22
राहु	17/01/2029 17:26
गुरु	20/01/2029 13:03
शनि	23/01/2029 21:20

मंगल - शुक्र - शुक्र	
23/01/2029 21:20	
04/04/2029 21:50	
शुक्र	04/02/2029 17:25
सूर्य	08/02/2029 06:38
चंद्र	14/02/2029 04:41
मंगल	18/02/2029 08:07
राहु	28/02/2029 23:47
गुरु	10/03/2029 11:03
शनि	21/03/2029 16:56
बुध	31/03/2029 18:24
केतु	04/04/2029 21:50

मंगल - शुक्र - सूर्य	
04/04/2029 21:50	
26/04/2029 05:11	
सूर्य	05/04/2029 23:24
चंद्र	07/04/2029 18:01
मंगल	08/04/2029 23:50
राहु	12/04/2029 04:33
गुरु	15/04/2029 00:43
शनि	18/04/2029 09:41
बुध	21/04/2029 10:08
केतु	22/04/2029 15:57
शुक्र	26/04/2029 05:11

मंगल - शुक्र - चंद्र	
26/04/2029 05:11	
31/05/2029 17:26	
चंद्र	29/04/2029 04:12
मंगल	01/05/2029 05:55
राहु	06/05/2029 13:45
गुरु	11/05/2029 07:23
शनि	16/05/2029 22:20
बुध	21/05/2029 23:04
केतु	24/05/2029 00:47
शुक्र	29/05/2029 22:49
सूर्य	31/05/2029 17:26

मंगल - शुक्र - मंगल	
31/05/2029 17:26	
25/06/2029 14:00	
मंगल	02/06/2029 04:14
राहु	05/06/2029 21:43
गुरु	09/06/2029 05:16
शनि	13/06/2029 03:43
बुध	16/06/2029 16:14
केतु	18/06/2029 03:02
शुक्र	22/06/2029 06:28
सूर्य	23/06/2029 12:18
चंद्र	25/06/2029 14:00

मंगल - शुक्र - राहु	
25/06/2029 14:00	
28/08/2029 12:03	
राहु	05/07/2029 04:07
गुरु	13/07/2029 16:39
शनि	23/07/2029 19:33
बुध	01/08/2029 20:52
केतु	05/08/2029 14:21
शुक्र	16/08/2029 06:02
सूर्य	19/08/2029 10:44
चंद्र	24/08/2029 18:34
मंगल	28/08/2029 12:03

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - शुक्र - गुरु	
28/08/2029 12:03	
24/10/2029 07:39	
गुरु	05/09/2029 01:52
शनि	14/09/2029 01:46
बुध	22/09/2029 02:57
केतु	25/09/2029 10:30
शुक्र	04/10/2029 21:46
सूर्य	07/10/2029 17:56
चंद्र	12/10/2029 11:34
मंगल	15/10/2029 19:07
राहु	24/10/2029 07:39

मंगल - शुक्र - शनि	
24/10/2029 07:39	
30/12/2029 18:56	
शनि	04/11/2029 00:03
बुध	13/11/2029 13:26
केतु	17/11/2029 11:54
शुक्र	28/11/2029 17:47
सूर्य	02/12/2029 02:44
चंद्र	07/12/2029 17:41
मंगल	11/12/2029 16:08
राहु	21/12/2029 19:02
गुरु	30/12/2029 18:56

मंगल - शुक्र - बुध	
30/12/2029 18:56	
01/03/2030 03:45	
बुध	08/01/2030 08:11
केतु	11/01/2030 20:42
शुक्र	21/01/2030 22:10
सूर्य	24/01/2030 22:37
चंद्र	29/01/2030 23:21
मंगल	02/02/2030 11:52
राहु	11/02/2030 13:11
गुरु	19/02/2030 14:22
शनि	01/03/2030 03:45

मंगल - शुक्र - केतु	
01/03/2030 03:45	
26/03/2030 00:20	
केतु	02/03/2030 14:33
शुक्र	06/03/2030 17:59
सूर्य	07/03/2030 23:49
चंद्र	10/03/2030 01:32
मंगल	11/03/2030 12:20
राहु	15/03/2030 05:49
गुरु	18/03/2030 13:22
शनि	22/03/2030 11:49
बुध	26/03/2030 00:20

मंगल - सूर्य - सूर्य	
26/03/2030 00:20	
01/04/2030 09:44	
सूर्य	26/03/2030 08:00
चंद्र	26/03/2030 20:47
मंगल	27/03/2030 05:44
राहु	28/03/2030 04:45
गुरु	29/03/2030 01:12
शनि	30/03/2030 01:29
बुध	30/03/2030 23:13
केतु	31/03/2030 08:10
शुक्र	01/04/2030 09:44

मंगल - सूर्य - चंद्र	
01/04/2030 09:44	
12/04/2030 01:25	
चंद्र	02/04/2030 07:03
मंगल	02/04/2030 21:57
राहु	04/04/2030 12:19
गुरु	05/04/2030 22:24
शनि	07/04/2030 14:53
बुध	09/04/2030 03:06
केतु	09/04/2030 18:01
शुक्र	11/04/2030 12:38
सूर्य	12/04/2030 01:25

मंगल - सूर्य - मंगल	
12/04/2030 01:25	
19/04/2030 12:23	
मंगल	12/04/2030 11:51
राहु	13/04/2030 14:42
गुरु	14/04/2030 14:34
शनि	15/04/2030 18:54
बुध	16/04/2030 20:15
केतु	17/04/2030 06:42
शुक्र	18/04/2030 12:31
सूर्य	18/04/2030 21:28
चंद्र	19/04/2030 12:23

मंगल - सूर्य - राहु	
19/04/2030 12:23	
08/05/2030 16:36	
राहु	22/04/2030 09:25
गुरु	24/04/2030 22:47
शनि	27/04/2030 23:39
बुध	30/04/2030 16:51
केतु	01/05/2030 19:41
शुक्र	05/05/2030 00:23
सूर्य	05/05/2030 23:24
चंद्र	07/05/2030 13:45
मंगल	08/05/2030 16:36

मंगल - सूर्य - गुरु	
08/05/2030 16:36	
25/05/2030 17:41	
गुरु	10/05/2030 23:09
शनि	13/05/2030 15:55
बुध	16/05/2030 01:52
केतु	17/05/2030 01:44
शुक्र	19/05/2030 21:55
सूर्य	20/05/2030 18:22
चंद्र	22/05/2030 04:27
मंगल	23/05/2030 04:19
राहु	25/05/2030 17:41

मंगल - सूर्य - शनि	
25/05/2030 17:41	
14/06/2030 23:28	
शनि	28/05/2030 22:36
बुध	31/05/2030 19:25
केतु	01/06/2030 23:45
शुक्र	05/06/2030 08:43
सूर्य	06/06/2030 09:00
चंद्र	08/06/2030 01:29
मंगल	09/06/2030 05:49
राहु	12/06/2030 06:41
गुरु	14/06/2030 23:28

मंगल - सूर्य - बुध	
14/06/2030 23:28	
03/07/2030 02:07	
बुध	17/06/2030 13:02
केतु	18/06/2030 14:23
शुक्र	21/06/2030 14:50
सूर्य	22/06/2030 12:34
चंद्र	24/06/2030 00:47
मंगल	25/06/2030 02:08
राहु	27/06/2030 19:20
गुरु	30/06/2030 05:17
शनि	03/07/2030 02:07

मंगल - सूर्य - केतु	
03/07/2030 02:07	
10/07/2030 13:05	
केतु	03/07/2030 12:33
शुक्र	04/07/2030 18:23
सूर्य	05/07/2030 03:20
चंद्र	05/07/2030 18:14
मंगल	06/07/2030 04:41
राहु	07/07/2030 07:32
गुरु	08/07/2030 07:23
शनि	09/07/2030 11:44
बुध	10/07/2030 13:05

विंशोत्तरी दशा - प्राण

मंगल - गुरु - सूर्य - बुध	
08/04/2026 00:59	
10/04/2026 10:56	
बुध	08/04/2026 09:12
केतु	08/04/2026 12:35
शुक्र	08/04/2026 22:14
सूर्य	09/04/2026 01:08
चंद्र	09/04/2026 05:58
मंगल	09/04/2026 09:21
राहु	09/04/2026 18:02
गुरु	10/04/2026 01:46
शनि	10/04/2026 10:56

मंगल - गुरु - सूर्य - केतु	
10/04/2026 10:56	
11/04/2026 10:48	
केतु	10/04/2026 12:20
शुक्र	10/04/2026 16:18
सूर्य	10/04/2026 17:30
चंद्र	10/04/2026 19:29
मंगल	10/04/2026 20:53
राहु	11/04/2026 00:28
गुरु	11/04/2026 03:39
शनि	11/04/2026 07:25
बुध	11/04/2026 10:48

मंगल - गुरु - सूर्य - शुक्र	
11/04/2026 10:48	
14/04/2026 06:59	
शुक्र	11/04/2026 22:10
सूर्य	12/04/2026 01:34
चंद्र	12/04/2026 07:15
मंगल	12/04/2026 11:14
राहु	12/04/2026 21:28
गुरु	13/04/2026 06:33
शनि	13/04/2026 17:21
बुध	14/04/2026 03:00
केतु	14/04/2026 06:59

मंगल - गुरु - चंद्र - चंद्र	
14/04/2026 06:59	
16/04/2026 15:48	
चंद्र	14/04/2026 11:43
मंगल	14/04/2026 15:02
राहु	14/04/2026 23:33
गुरु	15/04/2026 07:08
शनि	15/04/2026 16:07
बुध	16/04/2026 00:10
केतु	16/04/2026 03:29
शुक्र	16/04/2026 12:57
सूर्य	16/04/2026 15:48

मंगल - गुरु - चंद्र - मंगल	
16/04/2026 15:48	
18/04/2026 07:34	
मंगल	16/04/2026 18:07
राहु	17/04/2026 00:05
गुरु	17/04/2026 05:23
शनि	17/04/2026 11:41
बुध	17/04/2026 17:19
केतु	17/04/2026 19:38
शुक्र	18/04/2026 02:16
सूर्य	18/04/2026 04:15
चंद्र	18/04/2026 07:34

मंगल - गुरु - चंद्र - राहु	
18/04/2026 07:34	
22/04/2026 13:50	
राहु	18/04/2026 22:55
गुरु	19/04/2026 12:33
शनि	20/04/2026 04:44
बुध	20/04/2026 19:14
केतु	21/04/2026 01:12
शुक्र	21/04/2026 18:14
सूर्य	21/04/2026 23:21
चंद्र	22/04/2026 07:52
मंगल	22/04/2026 13:50

मंगल - गुरु - चंद्र - गुरु	
22/04/2026 13:50	
26/04/2026 08:45	
गुरु	23/04/2026 01:58
शनि	23/04/2026 16:21
बुध	24/04/2026 05:14
केतु	24/04/2026 10:32
शुक्र	25/04/2026 01:41
सूर्य	25/04/2026 06:14
चंद्र	25/04/2026 13:48
मंगल	25/04/2026 19:07
राहु	26/04/2026 08:45

मंगल - गुरु - चंद्र - शनि	
26/04/2026 08:45	
30/04/2026 20:42	
शनि	27/04/2026 01:50
बुध	27/04/2026 17:08
केतु	27/04/2026 23:26
शुक्र	28/04/2026 17:25
सूर्य	28/04/2026 22:49
चंद्र	29/04/2026 07:49
मंगल	29/04/2026 14:07
राहु	30/04/2026 06:18
गुरु	30/04/2026 20:42

मंगल - गुरु - चंद्र - बुध	
30/04/2026 20:42	
04/05/2026 21:17	
बुध	01/05/2026 10:23
केतु	01/05/2026 16:01
शुक्र	02/05/2026 08:07
सूर्य	02/05/2026 12:57
चंद्र	02/05/2026 21:00
मंगल	03/05/2026 02:38
राहु	03/05/2026 17:07
गुरु	04/05/2026 06:00
शनि	04/05/2026 21:17

मंगल - गुरु - चंद्र - केतु	
04/05/2026 21:17	
06/05/2026 13:03	
केतु	04/05/2026 23:36
शुक्र	05/05/2026 06:14
सूर्य	05/05/2026 08:13
चंद्र	05/05/2026 11:32
मंगल	05/05/2026 13:51
राहु	05/05/2026 19:49
गुरु	06/05/2026 01:08
शनि	06/05/2026 07:25
बुध	06/05/2026 13:03

मंगल - गुरु - चंद्र - शुक्र	
06/05/2026 13:03	
11/05/2026 06:41	
शुक्र	07/05/2026 08:00
सूर्य	07/05/2026 13:41
चंद्र	07/05/2026 23:09
मंगल	08/05/2026 05:47
राहु	08/05/2026 22:49
गुरु	09/05/2026 13:58
शनि	10/05/2026 07:58
बुध	11/05/2026 00:04
केतु	11/05/2026 06:41

मंगल - गुरु - चंद्र - सूर्य	
11/05/2026 06:41	
12/05/2026 16:47	
सूर्य	11/05/2026 08:24
चंद्र	11/05/2026 11:14
मंगल	11/05/2026 13:14
राहु	11/05/2026 18:20
गुरु	11/05/2026 22:53
शनि	12/05/2026 04:17
बुध	12/05/2026 09:07
केतु	12/05/2026 11:06
शुक्र	12/05/2026 16:47

विंशोत्तरी दशा - प्राण

मंगल - गुरु - मंगल - मंगल	
12/05/2026 16:47	
13/05/2026 20:37	
मंगल	12/05/2026 18:24
राहु	12/05/2026 22:35
गुरु	13/05/2026 02:18
शनि	13/05/2026 06:42
बुध	13/05/2026 10:39
केतु	13/05/2026 12:16
शुक्र	13/05/2026 16:55
सूर्य	13/05/2026 18:18
चंद्र	13/05/2026 20:37

मंगल - गुरु - मंगल - राहु	
13/05/2026 20:37	
16/05/2026 20:13	
राहु	14/05/2026 07:22
गुरु	14/05/2026 16:54
शनि	15/05/2026 04:14
बुध	15/05/2026 14:23
केतु	15/05/2026 18:33
शुक्र	16/05/2026 06:29
सूर्य	16/05/2026 10:04
चंद्र	16/05/2026 16:02
मंगल	16/05/2026 20:13

मंगल - गुरु - मंगल - गुरु	
16/05/2026 20:13	
19/05/2026 11:51	
गुरु	17/05/2026 04:42
शनि	17/05/2026 14:46
बुध	17/05/2026 23:47
केतु	18/05/2026 03:30
शुक्र	18/05/2026 14:06
सूर्य	18/05/2026 17:17
चंद्र	18/05/2026 22:35
मंगल	19/05/2026 02:18
राहु	19/05/2026 11:51

मंगल - गुरु - मंगल - शनि	
19/05/2026 11:51	
22/05/2026 15:25	
शनि	19/05/2026 23:49
बुध	20/05/2026 10:31
केतु	20/05/2026 14:55
शुक्र	21/05/2026 03:31
सूर्य	21/05/2026 07:18
चंद्र	21/05/2026 13:36
मंगल	21/05/2026 18:00
राहु	22/05/2026 05:20
गुरु	22/05/2026 15:25

मंगल - गुरु - मंगल - बुध	
22/05/2026 15:25	
25/05/2026 11:01	
बुध	23/05/2026 00:59
केतु	23/05/2026 04:56
शुक्र	23/05/2026 16:12
सूर्य	23/05/2026 19:35
चंद्र	24/05/2026 01:13
मंगल	24/05/2026 05:10
राहु	24/05/2026 15:18
गुरु	25/05/2026 00:19
शनि	25/05/2026 11:01

मंगल - गुरु - मंगल - केतु	
25/05/2026 11:01	
26/05/2026 14:52	
केतु	25/05/2026 12:39
शुक्र	25/05/2026 17:17
सूर्य	25/05/2026 18:41
चंद्र	25/05/2026 21:00
मंगल	25/05/2026 22:37
राहु	26/05/2026 02:48
गुरु	26/05/2026 06:31
शनि	26/05/2026 10:55
बुध	26/05/2026 14:52

मंगल - गुरु - मंगल - शुक्र	
26/05/2026 14:52	
29/05/2026 22:24	
शुक्र	27/05/2026 04:07
सूर्य	27/05/2026 08:06
चंद्र	27/05/2026 14:44
मंगल	27/05/2026 19:22
राहु	28/05/2026 07:18
गुरु	28/05/2026 17:54
शनि	29/05/2026 06:30
बुध	29/05/2026 17:46
केतु	29/05/2026 22:24

मंगल - गुरु - मंगल - सूर्य	
29/05/2026 22:24	
30/05/2026 22:16	
सूर्य	29/05/2026 23:36
चंद्र	30/05/2026 01:35
मंगल	30/05/2026 02:59
राहु	30/05/2026 06:34
गुरु	30/05/2026 09:45
शनि	30/05/2026 13:31
बुध	30/05/2026 16:54
केतु	30/05/2026 18:18
शुक्र	30/05/2026 22:16

मंगल - गुरु - मंगल - चंद्र	
30/05/2026 22:16	
01/06/2026 14:02	
चंद्र	31/05/2026 01:35
मंगल	31/05/2026 03:54
राहु	31/05/2026 09:52
गुरु	31/05/2026 15:10
शनि	31/05/2026 21:28
बुध	01/06/2026 03:06
केतु	01/06/2026 05:25
शुक्र	01/06/2026 12:03
सूर्य	01/06/2026 14:02

मंगल - गुरु - राहु - राहु	
01/06/2026 14:02	
09/06/2026 06:08	
राहु	02/06/2026 17:39
गुरु	03/06/2026 18:12
शनि	04/06/2026 23:21
बुध	06/06/2026 01:25
केतु	06/06/2026 12:10
शुक्र	07/06/2026 18:51
सूर्य	08/06/2026 04:03
चंद्र	08/06/2026 19:23
मंगल	09/06/2026 06:08

मंगल - गुरु - राहु - गुरु	
09/06/2026 06:08	
16/06/2026 01:46	
गुरु	10/06/2026 03:57
शनि	11/06/2026 05:51
बुध	12/06/2026 05:02
केतु	12/06/2026 14:35
शुक्र	13/06/2026 17:51
सूर्य	14/06/2026 02:02
चंद्र	14/06/2026 15:40
मंगल	15/06/2026 01:13
राहु	16/06/2026 01:46

मंगल - गुरु - राहु - शनि	
16/06/2026 01:46	
24/06/2026 04:04	
शनि	17/06/2026 08:32
बुध	18/06/2026 12:03
केतु	18/06/2026 23:23
शुक्र	20/06/2026 07:46
सूर्य	20/06/2026 17:29
चंद्र	21/06/2026 09:41
मंगल	21/06/2026 21:01
राहु	23/06/2026 02:10
गुरु	24/06/2026 04:04

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 8 वर्ष 3 मास 22 दिन

केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष	
03/11/2010		25/02/2019		25/02/2035		25/02/2052		25/02/2070	
25/02/2019		25/02/2035		25/02/2052		25/02/2070		24/02/2081	
	00/00/0000	चंद्र	11/05/2021	बुध	23/08/2037	शुक्र	11/12/2054	सूर्य	13/03/2071
	00/00/0000	बुध	14/09/2023	शुक्र	12/04/2040	सूर्य	26/08/2056	मंगल	01/05/2072
	03/11/2010	शुक्र	09/03/2026	सूर्य	22/11/2041	मंगल	07/07/2058	गुरु	25/07/2073
शुक्र	07/09/2012	सूर्य	14/09/2027	मंगल	26/08/2043	गुरु	13/07/2060	शनि	22/11/2074
सूर्य	09/02/2014	मंगल	11/05/2029	गुरु	22/07/2045	शनि	14/09/2062	केतु	25/04/2076
मंगल	30/08/2015	गुरु	25/02/2031	शनि	11/08/2047	केतु	11/01/2065	चंद्र	31/10/2077
गुरु	05/05/2017	शनि	30/01/2033	केतु	22/10/2049	चंद्र	07/07/2067	बुध	12/06/2079
शनि	25/02/2019	केतु	25/02/2035	चंद्र	25/02/2052	बुध	25/02/2070	शुक्र	24/02/2081

मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष	
24/02/2081		24/02/2093		26/02/2106		26/02/2120	
24/02/2093		26/02/2106		26/02/2120		00/00/0000	
मंगल	24/05/2082	गुरु	10/08/2094	शनि	05/11/2107	केतु	04/02/2122
गुरु	27/09/2083	शनि	06/03/2096	केतु	27/08/2109	चंद्र	29/02/2124
शनि	09/03/2085	केतु	10/11/2097	चंद्र	02/08/2111	बुध	12/05/2126
केतु	27/09/2086	चंद्र	26/08/2099	बुध	21/08/2113	शुक्र	04/11/2126
चंद्र	23/05/2088	बुध	23/07/2101	शुक्र	23/10/2115		00/00/0000
बुध	25/02/2090	शुक्र	30/07/2103	सूर्य	19/02/2117		00/00/0000
शुक्र	06/01/2092	सूर्य	22/10/2104	मंगल	02/08/2118		00/00/0000
सूर्य	24/02/2093	मंगल	26/02/2106	गुरु	26/02/2120		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - मंगल		केतु - गुरु		केतु - शनि	
03/11/2010		07/09/2012		09/02/2014		30/08/2015		05/05/2017	
07/09/2012		09/02/2014		30/08/2015		05/05/2017		25/02/2019	
	03/11/2010	सूर्य	27/10/2012	मंगल	08/04/2014	गुरु	06/11/2015	शनि	23/07/2017
सूर्य	10/12/2010	मंगल	19/12/2012	गुरु	11/06/2014	शनि	20/01/2016	केतु	17/10/2017
मंगल	08/03/2011	गुरु	16/02/2013	शनि	18/08/2014	केतु	08/04/2016	चंद्र	16/01/2018
गुरु	11/06/2011	शनि	19/04/2013	केतु	31/10/2014	चंद्र	02/07/2016	बुध	23/04/2018
शनि	22/09/2011	केतु	25/06/2013	चंद्र	17/01/2015	बुध	30/09/2016	शुक्र	04/08/2018
केतु	09/01/2012	चंद्र	05/09/2013	बुध	10/04/2015	शुक्र	03/01/2017	सूर्य	05/10/2018
चंद्र	06/05/2012	बुध	20/11/2013	शुक्र	07/07/2015	सूर्य	02/03/2017	मंगल	13/12/2018
बुध	07/09/2012	शुक्र	09/02/2014	सूर्य	30/08/2015	मंगल	05/05/2017	गुरु	25/02/2019

चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल	
25/02/2019		11/05/2021		14/09/2023		09/03/2026		14/09/2027	
11/05/2021		14/09/2023		09/03/2026		14/09/2027		11/05/2029	
चंद्र	16/06/2019	बुध	13/09/2021	शुक्र	02/02/2024	सूर्य	01/05/2026	मंगल	16/11/2027
बुध	12/10/2019	शुक्र	24/01/2022	सूर्य	28/04/2024	मंगल	27/06/2026	गुरु	23/01/2028
शुक्र	14/02/2020	सूर्य	16/04/2022	मंगल	31/07/2024	गुरु	28/08/2026	शनि	05/04/2028
सूर्य	01/05/2020	मंगल	13/07/2022	गुरु	09/11/2024	शनि	03/11/2026	केतु	22/06/2028
मंगल	23/07/2020	गुरु	17/10/2022	शनि	27/02/2025	केतु	14/01/2027	चंद्र	13/09/2028
गुरु	21/10/2020	शनि	28/01/2023	केतु	24/06/2025	चंद्र	31/03/2027	बुध	11/12/2028
शनि	27/01/2021	केतु	19/05/2023	चंद्र	27/10/2025	बुध	20/06/2027	शुक्र	15/03/2029
केतु	11/05/2021	चंद्र	14/09/2023	बुध	09/03/2026	शुक्र	14/09/2027	सूर्य	11/05/2029

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र	
11/05/2029		25/02/2031		30/01/2033		25/02/2035		23/08/2037	
25/02/2031		30/01/2033		25/02/2035		23/08/2037		12/04/2040	
गुरु	23/07/2029	शनि	21/05/2031	केतु	08/05/2033	बुध	08/07/2035	शुक्र	19/01/2038
शनि	10/10/2029	केतु	20/08/2031	चंद्र	20/08/2033	शुक्र	26/11/2035	सूर्य	21/04/2038
केतु	03/01/2030	चंद्र	25/11/2031	बुध	09/12/2033	सूर्य	21/02/2036	मंगल	29/07/2038
चंद्र	03/04/2030	बुध	08/03/2032	शुक्र	05/04/2034	मंगल	25/05/2036	गुरु	14/11/2038
बुध	08/07/2030	शुक्र	25/06/2032	सूर्य	16/06/2034	गुरु	04/09/2036	शनि	11/03/2039
शुक्र	18/10/2030	सूर्य	31/08/2032	मंगल	02/09/2034	शनि	23/12/2036	केतु	13/07/2039
सूर्य	19/12/2030	मंगल	12/11/2032	गुरु	26/11/2034	केतु	19/04/2037	चंद्र	23/11/2039
मंगल	25/02/2031	गुरु	30/01/2033	शनि	25/02/2035	चंद्र	23/08/2037	बुध	12/04/2040

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - सूर्य		बुध - मंगल		बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु	
12/04/2040		22/11/2041		26/08/2043		22/07/2045		11/08/2047	
22/11/2041		26/08/2043		22/07/2045		11/08/2047		22/10/2049	
सूर्य	07/06/2040	मंगल	28/01/2042	गुरु	12/11/2043	शनि	21/10/2045	केतु	23/11/2047
मंगल	07/08/2040	गुरु	10/04/2042	शनि	04/02/2044	केतु	26/01/2046	चंद्र	12/03/2048
गुरु	12/10/2040	शनि	26/06/2042	केतु	04/05/2044	चंद्र	09/05/2046	बुध	08/07/2048
शनि	22/12/2040	केतु	17/09/2042	चंद्र	08/08/2044	बुध	27/08/2046	शुक्र	10/11/2048
केतु	08/03/2041	चंद्र	15/12/2042	बुध	18/11/2044	शुक्र	21/12/2046	सूर्य	25/01/2049
चंद्र	28/05/2041	बुध	19/03/2043	शुक्र	06/03/2045	सूर्य	02/03/2047	मंगल	18/04/2049
बुध	23/08/2041	शुक्र	27/06/2043	सूर्य	11/05/2045	मंगल	19/05/2047	गुरु	17/07/2049
शुक्र	22/11/2041	सूर्य	26/08/2043	मंगल	22/07/2045	गुरु	11/08/2047	शनि	22/10/2049

बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु	
22/10/2049		25/02/2052		11/12/2054		26/08/2056		07/07/2058	
25/02/2052		11/12/2054		26/08/2056		07/07/2058		13/07/2060	
चंद्र	17/02/2050	शुक्र	01/08/2052	सूर्य	08/02/2055	मंगल	04/11/2056	गुरु	27/09/2058
बुध	22/06/2050	सूर्य	06/11/2052	मंगल	14/04/2055	गुरु	19/01/2057	शनि	25/12/2058
शुक्र	02/11/2050	मंगल	20/02/2053	गुरु	23/06/2055	शनि	11/04/2057	केतु	31/03/2059
सूर्य	22/01/2051	गुरु	14/06/2053	शनि	06/09/2055	केतु	08/07/2057	चंद्र	10/07/2059
मंगल	21/04/2051	शनि	15/10/2053	केतु	26/11/2055	चंद्र	10/10/2057	बुध	26/10/2059
गुरु	26/07/2051	केतु	24/02/2054	चंद्र	20/02/2056	बुध	18/01/2058	शुक्र	18/02/2060
शनि	06/11/2051	चंद्र	15/07/2054	बुध	21/05/2056	शुक्र	03/05/2058	सूर्य	27/04/2060
केतु	25/02/2052	बुध	11/12/2054	शुक्र	26/08/2056	सूर्य	07/07/2058	मंगल	13/07/2060

शुक्र - शनि		शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य	
13/07/2060		14/09/2062		11/01/2065		07/07/2067		25/02/2070	
14/09/2062		11/01/2065		07/07/2067		25/02/2070		13/03/2071	
शनि	16/10/2060	केतु	02/01/2063	चंद्र	16/05/2065	बुध	25/11/2067	सूर्य	02/04/2070
केतु	27/01/2061	चंद्र	29/04/2063	बुध	26/09/2065	शुक्र	23/04/2068	मंगल	11/05/2070
चंद्र	16/05/2061	बुध	01/09/2063	शुक्र	14/02/2066	सूर्य	23/07/2068	गुरु	23/06/2070
बुध	10/09/2061	शुक्र	11/01/2064	सूर्य	11/05/2066	मंगल	31/10/2068	शनि	08/08/2070
शुक्र	11/01/2062	सूर्य	31/03/2064	मंगल	13/08/2066	गुरु	16/02/2069	केतु	26/09/2070
सूर्य	27/03/2062	मंगल	27/06/2064	गुरु	22/11/2066	शनि	12/06/2069	चंद्र	18/11/2070
मंगल	17/06/2062	गुरु	01/10/2064	शनि	12/03/2067	केतु	15/10/2069	बुध	12/01/2071
गुरु	14/09/2062	शनि	11/01/2065	केतु	07/07/2067	चंद्र	25/02/2070	शुक्र	13/03/2071

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - मंगल		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र	
13/03/2071		01/05/2072		25/07/2073		22/11/2074		25/04/2076	
01/05/2072		25/07/2073		22/11/2074		25/04/2076		31/10/2077	
मंगल	25/04/2071	गुरु	21/06/2072	शनि	22/09/2073	केतु	29/01/2075	चंद्र	10/07/2076
गुरु	10/06/2071	शनि	14/08/2072	केतु	24/11/2073	चंद्र	10/04/2075	बुध	30/09/2076
शनि	30/07/2071	केतु	11/10/2072	चंद्र	30/01/2074	बुध	25/06/2075	शुक्र	25/12/2076
केतु	22/09/2071	चंद्र	12/12/2072	बुध	11/04/2074	शुक्र	14/09/2075	सूर्य	15/02/2077
चंद्र	18/11/2071	बुध	16/02/2073	शुक्र	25/06/2074	सूर्य	02/11/2075	मंगल	13/04/2077
बुध	18/01/2072	शुक्र	27/04/2073	सूर्य	10/08/2074	मंगल	26/12/2075	गुरु	15/06/2077
शुक्र	23/03/2072	सूर्य	09/06/2073	मंगल	29/09/2074	गुरु	22/02/2076	शनि	20/08/2077
सूर्य	01/05/2072	मंगल	25/07/2073	गुरु	22/11/2074	शनि	25/04/2076	केतु	31/10/2077

सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
31/10/2077		12/06/2079		24/02/2081		24/05/2082		27/09/2083	
12/06/2079		24/02/2081		24/05/2082		27/09/2083		09/03/2085	
बुध	25/01/2078	शुक्र	17/09/2079	मंगल	12/04/2081	गुरु	18/07/2082	शनि	30/11/2083
शुक्र	27/04/2078	सूर्य	15/11/2079	गुरु	02/06/2081	शनि	15/09/2082	केतु	06/02/2084
सूर्य	22/06/2078	मंगल	18/01/2080	शनि	27/07/2081	केतु	18/11/2082	चंद्र	19/04/2084
मंगल	21/08/2078	गुरु	28/03/2080	केतु	23/09/2081	चंद्र	24/01/2083	बुध	06/07/2084
गुरु	26/10/2078	शनि	11/06/2080	चंद्र	25/11/2081	बुध	06/04/2083	शुक्र	26/09/2084
शनि	06/01/2079	केतु	31/08/2080	बुध	30/01/2082	शुक्र	22/06/2083	सूर्य	15/11/2084
केतु	23/03/2079	चंद्र	25/11/2080	शुक्र	11/04/2082	सूर्य	07/08/2083	मंगल	09/01/2085
चंद्र	12/06/2079	बुध	24/02/2081	सूर्य	24/05/2082	मंगल	27/09/2083	गुरु	09/03/2085

मंगल - केतु		मंगल - चंद्र		मंगल - बुध		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
09/03/2085		27/09/2086		23/05/2088		25/02/2090		06/01/2092	
27/09/2086		23/05/2088		25/02/2090		06/01/2092		24/02/2093	
केतु	21/05/2085	चंद्र	19/12/2086	बुध	25/08/2088	शुक्र	10/06/2090	सूर्य	14/02/2092
चंद्र	07/08/2085	बुध	18/03/2087	शुक्र	03/12/2088	सूर्य	14/08/2090	मंगल	28/03/2092
बुध	29/10/2085	शुक्र	19/06/2087	सूर्य	02/02/2089	मंगल	23/10/2090	गुरु	14/05/2092
शुक्र	25/01/2086	सूर्य	16/08/2087	मंगल	09/04/2089	गुरु	07/01/2091	शनि	03/07/2092
सूर्य	20/03/2086	मंगल	17/10/2087	गुरु	20/06/2089	शनि	30/03/2091	केतु	26/08/2092
मंगल	18/05/2086	गुरु	24/12/2087	शनि	06/09/2089	केतु	26/06/2091	चंद्र	22/10/2092
गुरु	20/07/2086	शनि	06/03/2088	केतु	28/11/2089	चंद्र	28/09/2091	बुध	22/12/2092
शनि	27/09/2086	केतु	23/05/2088	चंद्र	25/02/2090	बुध	06/01/2092	शुक्र	24/02/2093

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - केतु		गुरु - चंद्र		गुरु - बुध	
24/02/2093		10/08/2094		06/03/2096		10/11/2097		26/08/2099	
10/08/2094		06/03/2096		10/11/2097		26/08/2099		23/07/2101	
गुरु	25/04/2093	शनि	19/10/2094	केतु	24/05/2096	चंद्र	08/02/2098	बुध	06/12/2099
शनि	28/06/2093	केतु	01/01/2095	चंद्र	17/08/2096	बुध	15/05/2098	शुक्र	24/03/2100
केतु	05/09/2093	चंद्र	21/03/2095	बुध	15/11/2096	शुक्र	24/08/2098	सूर्य	29/05/2100
चंद्र	17/11/2093	बुध	13/06/2095	शुक्र	18/02/2097	सूर्य	26/10/2098	मंगल	09/08/2100
बुध	03/02/2094	शुक्र	10/09/2095	सूर्य	17/04/2097	मंगल	01/01/2099	गुरु	26/10/2100
शुक्र	27/04/2094	सूर्य	03/11/2095	मंगल	20/06/2097	गुरु	16/03/2099	शनि	18/01/2101
सूर्य	16/06/2094	मंगल	01/01/2096	गुरु	27/08/2097	शनि	03/06/2099	केतु	18/04/2101
मंगल	10/08/2094	गुरु	06/03/2096	शनि	10/11/2097	केतु	26/08/2099	चंद्र	23/07/2101

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल		शनि - शनि		शनि - केतु	
23/07/2101		30/07/2103		22/10/2104		26/02/2106		05/11/2107	
30/07/2103		22/10/2104		26/02/2106		05/11/2107		27/08/2109	
शुक्र	15/11/2101	सूर्य	11/09/2103	मंगल	12/12/2104	शनि	11/05/2106	केतु	29/01/2108
सूर्य	24/01/2102	मंगल	27/10/2103	गुरु	05/02/2105	केतु	30/07/2106	चंद्र	29/04/2108
मंगल	10/04/2102	गुरु	17/12/2103	शनि	06/04/2105	चंद्र	23/10/2106	बुध	04/08/2108
गुरु	01/07/2102	शनि	09/02/2104	केतु	08/06/2105	बुध	21/01/2107	शुक्र	15/11/2108
शनि	28/09/2102	केतु	07/04/2104	चंद्र	15/08/2105	शुक्र	27/04/2107	सूर्य	17/01/2109
केतु	02/01/2103	चंद्र	09/06/2104	बुध	26/10/2105	सूर्य	25/06/2107	मंगल	26/03/2109
चंद्र	13/04/2103	बुध	14/08/2104	शुक्र	10/01/2106	मंगल	28/08/2107	गुरु	08/06/2109
बुध	30/07/2103	शुक्र	22/10/2104	सूर्य	26/02/2106	गुरु	05/11/2107	शनि	27/08/2109

शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - मंगल	
27/08/2109		02/08/2111		21/08/2113		23/10/2115		19/02/2117	
02/08/2111		21/08/2113		23/10/2115		19/02/2117		02/08/2118	
चंद्र	02/12/2109	बुध	20/11/2111	शुक्र	22/12/2113	सूर्य	08/12/2115	मंगल	15/04/2117
बुध	16/03/2110	शुक्र	15/03/2112	सूर्य	07/03/2114	मंगल	27/01/2116	गुरु	13/06/2117
शुक्र	03/07/2110	सूर्य	25/05/2112	मंगल	28/05/2114	गुरु	22/03/2116	शनि	16/08/2117
सूर्य	08/09/2110	मंगल	11/08/2112	गुरु	25/08/2114	शनि	19/05/2116	केतु	23/10/2117
मंगल	20/11/2110	गुरु	03/11/2112	शनि	29/11/2114	केतु	21/07/2116	चंद्र	04/01/2118
गुरु	07/02/2111	शनि	01/02/2113	केतु	11/03/2115	चंद्र	26/09/2116	बुध	23/03/2118
शनि	03/05/2111	केतु	09/05/2113	चंद्र	29/06/2115	बुध	06/12/2116	शुक्र	13/06/2118
केतु	02/08/2111	चंद्र	21/08/2113	बुध	23/10/2115	शुक्र	19/02/2117	सूर्य	02/08/2118

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 2 वर्ष 2 मास 18 दिन

सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष	
03/11/2010		20/01/2013		21/09/2019		22/05/2024		22/05/2036	
20/01/2013		21/09/2019		22/05/2024		22/05/2036		21/01/2047	
	00/00/0000	चंद्र	11/08/2013	मंगल	30/12/2019	राहु	10/03/2026	गुरु	23/10/2037
	00/00/0000	मंगल	31/12/2013	राहु	10/09/2020	गुरु	16/10/2027	शनि	02/07/2039
	00/00/0000	राहु	01/01/2015	गुरु	26/04/2021	शनि	09/09/2029	बुध	04/01/2041
	03/11/2010	गुरु	21/11/2015	शनि	21/01/2022	बुध	23/05/2031	केतु	19/08/2041
गुरु	15/12/2010	शनि	11/12/2016	बुध	19/09/2022	केतु	02/02/2032	शुक्र	31/05/2043
शनि	04/08/2011	बुध	21/11/2017	केतु	27/12/2022	शुक्र	02/02/2034	सूर्य	12/12/2043
बुध	27/02/2012	केतु	12/04/2018	शुक्र	08/10/2023	सूर्य	09/09/2034	चंद्र	31/10/2044
केतु	22/05/2012	शुक्र	23/05/2019	सूर्य	01/01/2024	चंद्र	09/09/2035	मंगल	15/06/2045
शुक्र	20/01/2013	सूर्य	21/09/2019	चंद्र	22/05/2024	मंगल	22/05/2036	राहु	21/01/2047

शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष	
21/01/2047		21/09/2059		21/01/2071		21/09/2075		20/01/2089	
21/09/2059		21/01/2071		21/09/2075		20/01/2089		00/00/0000	
शनि	22/01/2049	बुध	30/04/2061	केतु	30/04/2071	शुक्र	11/12/2077	सूर्य	03/04/2089
बुध	09/11/2050	केतु	27/12/2061	शुक्र	08/02/2072	सूर्य	12/08/2078	चंद्र	03/08/2089
केतु	06/08/2051	शुक्र	17/11/2063	सूर्य	04/05/2072	चंद्र	21/09/2079	मंगल	27/10/2089
शुक्र	15/09/2053	सूर्य	11/06/2064	चंद्र	23/09/2072	मंगल	01/07/2080	राहु	04/06/2090
सूर्य	04/05/2054	चंद्र	22/05/2065	मंगल	31/12/2072	राहु	02/07/2082	गुरु	03/11/2090
चंद्र	25/05/2055	मंगल	19/01/2066	राहु	13/09/2073	गुरु	11/04/2084		00/00/0000
मंगल	19/02/2056	राहु	01/10/2067	गुरु	28/04/2074	शनि	22/05/2086		00/00/0000
राहु	12/01/2058	गुरु	05/04/2069	शनि	23/01/2075	बुध	11/04/2088		00/00/0000
गुरु	21/09/2059	शनि	21/01/2071	बुध	21/09/2075	केतु	20/01/2089		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र	
03/11/2010		15/12/2010		04/08/2011		27/02/2012		22/05/2012	
15/12/2010		04/08/2011		27/02/2012		22/05/2012		20/01/2013	
	00/00/0000	शनि	21/01/2011	बुध	02/09/2011	केतु	03/03/2012	शुक्र	01/07/2012
	00/00/0000	बुध	23/02/2011	केतु	14/09/2011	शुक्र	17/03/2012	सूर्य	14/07/2012
	00/00/0000	केतु	08/03/2011	शुक्र	19/10/2011	सूर्य	21/03/2012	चंद्र	03/08/2012
	00/00/0000	शुक्र	16/04/2011	सूर्य	29/10/2011	चंद्र	28/03/2012	मंगल	17/08/2012
	00/00/0000	सूर्य	27/04/2011	चंद्र	15/11/2011	मंगल	02/04/2012	राहु	23/09/2012
	03/11/2010	चंद्र	17/05/2011	मंगल	27/11/2011	राहु	15/04/2012	गुरु	25/10/2012
चंद्र	05/11/2010	मंगल	30/05/2011	राहु	28/12/2011	गुरु	26/04/2012	शनि	03/12/2012
मंगल	16/11/2010	राहु	04/07/2011	गुरु	25/01/2012	शनि	10/05/2012	बुध	06/01/2013
राहु	15/12/2010	गुरु	04/08/2011	शनि	27/02/2012	बुध	22/05/2012	केतु	20/01/2013

चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि	
20/01/2013		11/08/2013		31/12/2013		01/01/2015		21/11/2015	
11/08/2013		31/12/2013		01/01/2015		21/11/2015		11/12/2016	
चंद्र	06/02/2013	मंगल	20/08/2013	राहु	24/02/2014	गुरु	13/02/2015	शनि	21/01/2016
मंगल	18/02/2013	राहु	10/09/2013	गुरु	14/04/2014	शनि	05/04/2015	बुध	16/03/2016
राहु	21/03/2013	गुरु	29/09/2013	शनि	11/06/2014	बुध	21/05/2015	केतु	07/04/2016
गुरु	17/04/2013	शनि	21/10/2013	बुध	01/08/2014	केतु	09/06/2015	शुक्र	11/06/2016
शनि	19/05/2013	बुध	10/11/2013	केतु	23/08/2014	शुक्र	02/08/2015	सूर्य	30/06/2016
बुध	16/06/2013	केतु	19/11/2013	शुक्र	23/10/2014	सूर्य	19/08/2015	चंद्र	01/08/2016
केतु	28/06/2013	शुक्र	12/12/2013	सूर्य	10/11/2014	चंद्र	15/09/2015	मंगल	24/08/2016
शुक्र	01/08/2013	सूर्य	19/12/2013	चंद्र	10/12/2014	मंगल	04/10/2015	राहु	20/10/2016
सूर्य	11/08/2013	चंद्र	31/12/2013	मंगल	01/01/2015	राहु	21/11/2015	गुरु	11/12/2016

चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल	
11/12/2016		21/11/2017		12/04/2018		23/05/2019		21/09/2019	
21/11/2017		12/04/2018		23/05/2019		21/09/2019		30/12/2019	
बुध	29/01/2017	केतु	29/11/2017	शुक्र	18/06/2018	सूर्य	29/05/2019	मंगल	27/09/2019
केतु	18/02/2017	शुक्र	23/12/2017	सूर्य	09/07/2018	चंद्र	08/06/2019	राहु	12/10/2019
शुक्र	16/04/2017	सूर्य	30/12/2017	चंद्र	12/08/2018	मंगल	15/06/2019	गुरु	25/10/2019
सूर्य	03/05/2017	चंद्र	11/01/2018	मंगल	04/09/2018	राहु	03/07/2019	शनि	10/11/2019
चंद्र	01/06/2017	मंगल	19/01/2018	राहु	04/11/2018	गुरु	19/07/2019	बुध	24/11/2019
मंगल	21/06/2017	राहु	09/02/2018	गुरु	28/12/2018	शनि	08/08/2019	केतु	30/11/2019
राहु	12/08/2017	गुरु	28/02/2018	शनि	02/03/2019	बुध	25/08/2019	शुक्र	17/12/2019
गुरु	27/09/2017	शनि	23/03/2018	बुध	29/04/2019	केतु	01/09/2019	सूर्य	21/12/2019
शनि	21/11/2017	बुध	12/04/2018	केतु	23/05/2019	शुक्र	21/09/2019	चंद्र	30/12/2019

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु	
30/12/2019		10/09/2020		26/04/2021		21/01/2022		19/09/2022	
10/09/2020		26/04/2021		21/01/2022		19/09/2022		27/12/2022	
राहु	06/02/2020	गुरु	11/10/2020	शनि	07/06/2021	बुध	24/02/2022	केतु	25/09/2022
गुरु	11/03/2020	शनि	16/11/2020	बुध	16/07/2021	केतु	10/03/2022	शुक्र	11/10/2022
शनि	21/04/2020	बुध	18/12/2020	केतु	31/07/2021	शुक्र	19/04/2022	सूर्य	16/10/2022
बुध	27/05/2020	केतु	31/12/2020	शुक्र	14/09/2021	सूर्य	01/05/2022	चंद्र	25/10/2022
केतु	11/06/2020	शुक्र	07/02/2021	सूर्य	28/09/2021	चंद्र	21/05/2022	मंगल	30/10/2022
शुक्र	23/07/2020	सूर्य	18/02/2021	चंद्र	20/10/2021	मंगल	04/06/2022	राहु	14/11/2022
सूर्य	05/08/2020	चंद्र	09/03/2021	मंगल	05/11/2021	राहु	11/07/2022	गुरु	28/11/2022
चंद्र	27/08/2020	मंगल	23/03/2021	राहु	16/12/2021	गुरु	12/08/2022	शनि	13/12/2022
मंगल	10/09/2020	राहु	26/04/2021	गुरु	21/01/2022	शनि	19/09/2022	बुध	27/12/2022

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु	
27/12/2022		08/10/2023		01/01/2024		22/05/2024		10/03/2026	
08/10/2023		01/01/2024		22/05/2024		10/03/2026		16/10/2027	
शुक्र	13/02/2023	सूर्य	12/10/2023	चंद्र	13/01/2024	राहु	28/08/2024	गुरु	27/05/2026
सूर्य	27/02/2023	चंद्र	19/10/2023	मंगल	21/01/2024	गुरु	24/11/2024	शनि	28/08/2026
चंद्र	23/03/2023	मंगल	24/10/2023	राहु	11/02/2024	शनि	08/03/2025	बुध	19/11/2026
मंगल	08/04/2023	राहु	06/11/2023	गुरु	01/03/2024	बुध	09/06/2025	केतु	23/12/2026
राहु	21/05/2023	गुरु	17/11/2023	शनि	24/03/2024	केतु	18/07/2025	शुक्र	30/03/2027
गुरु	28/06/2023	शनि	01/12/2023	बुध	13/04/2024	शुक्र	04/11/2025	सूर्य	28/04/2027
शनि	12/08/2023	बुध	13/12/2023	केतु	21/04/2024	सूर्य	07/12/2025	चंद्र	16/06/2027
बुध	21/09/2023	केतु	18/12/2023	शुक्र	15/05/2024	चंद्र	31/01/2026	मंगल	20/07/2027
केतु	08/10/2023	शुक्र	01/01/2024	सूर्य	22/05/2024	मंगल	10/03/2026	राहु	16/10/2027

राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य	
16/10/2027		09/09/2029		23/05/2031		02/02/2032		02/02/2034	
09/09/2029		23/05/2031		02/02/2032		02/02/2034		09/09/2034	
शनि	03/02/2028	बुध	06/12/2029	केतु	07/06/2031	शुक्र	03/06/2032	सूर्य	13/02/2034
बुध	11/05/2028	केतु	11/01/2030	शुक्र	19/07/2031	सूर्य	10/07/2032	चंद्र	03/03/2034
केतु	20/06/2028	शुक्र	24/04/2030	सूर्य	01/08/2031	चंद्र	08/09/2032	मंगल	16/03/2034
शुक्र	14/10/2028	सूर्य	25/05/2030	चंद्र	22/08/2031	मंगल	21/10/2032	राहु	18/04/2034
सूर्य	18/11/2028	चंद्र	16/07/2030	मंगल	06/09/2031	राहु	08/02/2033	गुरु	17/05/2034
चंद्र	15/01/2029	मंगल	21/08/2030	राहु	14/10/2031	गुरु	16/05/2033	शनि	21/06/2034
मंगल	24/02/2029	राहु	22/11/2030	गुरु	18/11/2031	शनि	09/09/2033	बुध	22/07/2034
राहु	08/06/2029	गुरु	13/02/2031	शनि	28/12/2031	बुध	21/12/2033	केतु	03/08/2034
गुरु	09/09/2029	शनि	23/05/2031	बुध	02/02/2032	केतु	02/02/2034	शुक्र	09/09/2034

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
09/09/2034		09/09/2035		22/05/2036		23/10/2037		02/07/2039	
09/09/2035		22/05/2036		23/10/2037		02/07/2039		04/01/2041	
चंद्र	09/10/2034	मंगल	24/09/2035	गुरु	30/07/2036	शनि	29/01/2038	बुध	18/09/2039
मंगल	31/10/2034	राहु	01/11/2035	शनि	20/10/2036	बुध	26/04/2038	केतु	21/10/2039
राहु	24/12/2034	गुरु	06/12/2035	बुध	02/01/2037	केतु	01/06/2038	शुक्र	21/01/2040
गुरु	11/02/2035	शनि	15/01/2036	केतु	01/02/2037	शुक्र	12/09/2038	सूर्य	17/02/2040
शनि	10/04/2035	बुध	20/02/2036	शुक्र	29/04/2037	सूर्य	13/10/2038	चंद्र	03/04/2040
बुध	01/06/2035	केतु	06/03/2036	सूर्य	25/05/2037	चंद्र	03/12/2038	मंगल	05/05/2040
केतु	22/06/2035	शुक्र	18/04/2036	चंद्र	07/07/2037	मंगल	08/01/2039	राहु	27/07/2040
शुक्र	22/08/2035	सूर्य	01/05/2036	मंगल	06/08/2037	राहु	11/04/2039	गुरु	09/10/2040
सूर्य	09/09/2035	चंद्र	22/05/2036	राहु	23/10/2037	गुरु	02/07/2039	शनि	04/01/2041

गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल	
04/01/2041		19/08/2041		31/05/2043		12/12/2043		31/10/2044	
19/08/2041		31/05/2043		12/12/2043		31/10/2044		15/06/2045	
केतु	17/01/2041	शुक्र	06/12/2041	सूर्य	09/06/2043	चंद्र	08/01/2044	मंगल	13/11/2044
शुक्र	24/02/2041	सूर्य	07/01/2042	चंद्र	26/06/2043	मंगल	27/01/2044	राहु	18/12/2044
सूर्य	08/03/2041	चंद्र	02/03/2042	मंगल	07/07/2043	राहु	15/03/2044	गुरु	17/01/2045
चंद्र	27/03/2041	मंगल	09/04/2042	राहु	05/08/2043	गुरु	27/04/2044	शनि	22/02/2045
मंगल	09/04/2041	राहु	15/07/2042	गुरु	31/08/2043	शनि	18/06/2044	बुध	26/03/2045
राहु	13/05/2041	गुरु	10/10/2042	शनि	01/10/2043	बुध	03/08/2044	केतु	08/04/2045
गुरु	12/06/2041	शनि	21/01/2043	बुध	29/10/2043	केतु	22/08/2044	शुक्र	16/05/2045
शनि	18/07/2041	बुध	23/04/2043	केतु	09/11/2043	शुक्र	15/10/2044	सूर्य	28/05/2045
बुध	19/08/2041	केतु	31/05/2043	शुक्र	12/12/2043	सूर्य	31/10/2044	चंद्र	15/06/2045

गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र	
15/06/2045		21/01/2047		22/01/2049		09/11/2050		06/08/2051	
21/01/2047		22/01/2049		09/11/2050		06/08/2051		15/09/2053	
राहु	11/09/2045	शनि	17/05/2047	बुध	25/04/2049	केतु	25/11/2050	शुक्र	12/12/2051
गुरु	28/11/2045	बुध	29/08/2047	केतु	02/06/2049	शुक्र	09/01/2051	सूर्य	20/01/2052
शनि	01/03/2046	केतु	10/10/2047	शुक्र	20/09/2049	सूर्य	22/01/2051	चंद्र	24/03/2052
बुध	22/05/2046	शुक्र	09/02/2048	सूर्य	22/10/2049	चंद्र	14/02/2051	मंगल	08/05/2052
केतु	25/06/2046	सूर्य	17/03/2048	चंद्र	16/12/2049	मंगल	01/03/2051	राहु	01/09/2052
शुक्र	01/10/2046	चंद्र	17/05/2048	मंगल	23/01/2050	राहु	11/04/2051	गुरु	12/12/2052
सूर्य	30/10/2046	मंगल	29/06/2048	राहु	02/05/2050	गुरु	17/05/2051	शनि	14/04/2053
चंद्र	18/12/2046	राहु	17/10/2048	गुरु	28/07/2050	शनि	28/06/2051	बुध	01/08/2053
मंगल	21/01/2047	गुरु	22/01/2049	शनि	09/11/2050	बुध	06/08/2051	केतु	15/09/2053

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु	
15/09/2053		04/05/2054		25/05/2055		19/02/2056		12/01/2058	
04/05/2054		25/05/2055		19/02/2056		12/01/2058		21/09/2059	
सूर्य	26/09/2053	चंद्र	05/06/2054	मंगल	09/06/2055	राहु	02/06/2056	गुरु	05/04/2058
चंद्र	16/10/2053	मंगल	28/06/2054	राहु	20/07/2055	गुरु	02/09/2056	शनि	11/07/2058
मंगल	29/10/2053	राहु	25/08/2054	गुरु	25/08/2055	शनि	21/12/2056	बुध	07/10/2058
राहु	03/12/2053	गुरु	15/10/2054	शनि	07/10/2055	बुध	29/03/2057	केतु	12/11/2058
गुरु	03/01/2054	शनि	15/12/2054	बुध	14/11/2055	केतु	09/05/2057	शुक्र	23/02/2059
शनि	08/02/2054	बुध	08/02/2055	केतु	30/11/2055	शुक्र	01/09/2057	सूर्य	25/03/2059
बुध	13/03/2054	केतु	02/03/2055	शुक्र	14/01/2056	सूर्य	06/10/2057	चंद्र	16/05/2059
केतु	27/03/2054	शुक्र	05/05/2055	सूर्य	27/01/2056	चंद्र	03/12/2057	मंगल	21/06/2059
शुक्र	04/05/2054	सूर्य	25/05/2055	चंद्र	19/02/2056	मंगल	12/01/2058	राहु	21/09/2059

बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र	
21/09/2059		30/04/2061		27/12/2061		17/11/2063		11/06/2064	
30/04/2061		27/12/2061		17/11/2063		11/06/2064		22/05/2065	
बुध	13/12/2059	केतु	14/05/2061	शुक्र	21/04/2062	सूर्य	28/11/2063	चंद्र	10/07/2064
केतु	17/01/2060	शुक्र	23/06/2061	सूर्य	26/05/2062	चंद्र	15/12/2063	मंगल	30/07/2064
शुक्र	23/04/2060	सूर्य	05/07/2061	चंद्र	22/07/2062	मंगल	27/12/2063	राहु	20/09/2064
सूर्य	23/05/2060	चंद्र	25/07/2061	मंगल	31/08/2062	राहु	27/01/2064	गुरु	05/11/2064
चंद्र	11/07/2060	मंगल	08/08/2061	राहु	13/12/2062	गुरु	23/02/2064	शनि	29/12/2064
मंगल	14/08/2060	राहु	14/09/2061	गुरु	15/03/2063	शनि	27/03/2064	बुध	16/02/2065
राहु	10/11/2060	गुरु	16/10/2061	शनि	02/07/2063	बुध	26/04/2064	केतु	08/03/2065
गुरु	27/01/2061	शनि	23/11/2061	बुध	08/10/2063	केतु	08/05/2064	शुक्र	05/05/2065
शनि	30/04/2061	बुध	27/12/2061	केतु	17/11/2063	शुक्र	11/06/2064	सूर्य	22/05/2065

बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु	
22/05/2065		19/01/2066		01/10/2067		05/04/2069		21/01/2071	
19/01/2066		01/10/2067		05/04/2069		21/01/2071		30/04/2071	
मंगल	05/06/2065	राहु	22/04/2066	गुरु	14/12/2067	शनि	18/07/2069	केतु	27/01/2071
राहु	11/07/2065	गुरु	13/07/2066	शनि	10/03/2068	बुध	19/10/2069	शुक्र	12/02/2071
गुरु	13/08/2065	शनि	20/10/2066	बुध	28/05/2068	केतु	26/11/2069	सूर्य	17/02/2071
शनि	20/09/2065	बुध	16/01/2067	केतु	29/06/2068	शुक्र	16/03/2070	चंद्र	25/02/2071
बुध	24/10/2065	केतु	21/02/2067	शुक्र	29/09/2068	सूर्य	17/04/2070	मंगल	03/03/2071
केतु	07/11/2065	शुक्र	04/06/2067	सूर्य	26/10/2068	चंद्र	11/06/2070	राहु	18/03/2071
शुक्र	17/12/2065	सूर्य	06/07/2067	चंद्र	11/12/2068	मंगल	19/07/2070	गुरु	31/03/2071
सूर्य	29/12/2065	चंद्र	26/08/2067	मंगल	13/01/2069	राहु	25/10/2070	शनि	16/04/2071
चंद्र	19/01/2066	मंगल	01/10/2067	राहु	05/04/2069	गुरु	21/01/2071	बुध	30/04/2071

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु	
30/04/2071		08/02/2072		04/05/2072		23/09/2072		31/12/2072	
08/02/2072		04/05/2072		23/09/2072		31/12/2072		13/09/2073	
शुक्र	17/06/2071	सूर्य	13/02/2072	चंद्र	15/05/2072	मंगल	28/09/2072	राहु	07/02/2073
सूर्य	01/07/2071	चंद्र	20/02/2072	मंगल	24/05/2072	राहु	13/10/2072	गुरु	13/03/2073
चंद्र	25/07/2071	मंगल	25/02/2072	राहु	14/06/2072	गुरु	27/10/2072	शनि	23/04/2073
मंगल	10/08/2071	राहु	08/03/2072	गुरु	03/07/2072	शनि	11/11/2072	बुध	29/05/2073
राहु	22/09/2071	गुरु	20/03/2072	शनि	25/07/2072	बुध	25/11/2072	केतु	13/06/2073
गुरु	30/10/2071	शनि	02/04/2072	बुध	15/08/2072	केतु	01/12/2072	शुक्र	26/07/2073
शनि	14/12/2071	बुध	14/04/2072	केतु	23/08/2072	शुक्र	18/12/2072	सूर्य	08/08/2073
बुध	23/01/2072	केतु	19/04/2072	शुक्र	16/09/2072	सूर्य	23/12/2072	चंद्र	29/08/2073
केतु	08/02/2072	शुक्र	04/05/2072	सूर्य	23/09/2072	चंद्र	31/12/2072	मंगल	13/09/2073

केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
13/09/2073		28/04/2074		23/01/2075		21/09/2075		11/12/2077	
28/04/2074		23/01/2075		21/09/2075		11/12/2077		12/08/2078	
गुरु	13/10/2073	शनि	10/06/2074	बुध	26/02/2075	शुक्र	04/02/2076	सूर्य	23/12/2077
शनि	18/11/2073	बुध	18/07/2074	केतु	12/03/2075	सूर्य	15/03/2076	चंद्र	12/01/2078
बुध	20/12/2073	केतु	03/08/2074	शुक्र	21/04/2075	चंद्र	22/05/2076	मंगल	27/01/2078
केतु	02/01/2074	शुक्र	17/09/2074	सूर्य	03/05/2075	मंगल	08/07/2076	राहु	04/03/2078
शुक्र	09/02/2074	सूर्य	30/09/2074	चंद्र	24/05/2075	राहु	07/11/2076	गुरु	06/04/2078
सूर्य	21/02/2074	चंद्र	23/10/2074	मंगल	07/06/2075	गुरु	23/02/2077	शनि	14/05/2078
चंद्र	12/03/2074	मंगल	07/11/2074	राहु	13/07/2075	शनि	02/07/2077	बुध	18/06/2078
मंगल	25/03/2074	राहु	18/12/2074	गुरु	14/08/2075	बुध	25/10/2077	केतु	02/07/2078
राहु	28/04/2074	गुरु	23/01/2075	शनि	21/09/2075	केतु	11/12/2077	शुक्र	12/08/2078

शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि	
12/08/2078		21/09/2079		01/07/2080		02/07/2082		11/04/2084	
21/09/2079		01/07/2080		02/07/2082		11/04/2084		22/05/2086	
चंद्र	14/09/2078	मंगल	08/10/2079	राहु	19/10/2080	गुरु	27/09/2082	शनि	11/08/2084
मंगल	08/10/2078	राहु	20/11/2079	गुरु	24/01/2081	शनि	07/01/2083	बुध	29/11/2084
राहु	08/12/2078	गुरु	27/12/2079	शनि	20/05/2081	बुध	09/04/2083	केतु	13/01/2085
गुरु	31/01/2079	शनि	10/02/2080	बुध	01/09/2081	केतु	17/05/2083	शुक्र	21/05/2085
शनि	05/04/2079	बुध	22/03/2080	केतु	13/10/2081	शुक्र	02/09/2083	सूर्य	29/06/2085
बुध	02/06/2079	केतु	07/04/2080	शुक्र	12/02/2082	सूर्य	05/10/2083	चंद्र	01/09/2085
केतु	25/06/2079	शुक्र	25/05/2080	सूर्य	20/03/2082	चंद्र	28/11/2083	मंगल	16/10/2085
शुक्र	01/09/2079	सूर्य	08/06/2080	चंद्र	20/05/2082	मंगल	05/01/2084	राहु	09/02/2086
सूर्य	21/09/2079	चंद्र	01/07/2080	मंगल	02/07/2082	राहु	11/04/2084	गुरु	22/05/2086

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 2 वर्ष 0 मास 28 दिन

चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष	
03/11/2010		01/12/2012		01/12/2020		01/12/2037		01/12/2047	
01/12/2012		01/12/2020		01/12/2037		01/12/2047		01/12/2066	
	00/00/0000	मंगल	05/07/2013	बुध	05/08/2023	शनि	04/11/2038	गुरु	05/04/2051
	00/00/0000	बुध	08/10/2014	शनि	02/03/2025	गुरु	08/08/2040	राहु	15/05/2053
	00/00/0000	शनि	06/07/2015	गुरु	27/02/2028	राहु	18/09/2041	शुक्र	24/01/2057
	00/00/0000	गुरु	01/12/2016	राहु	17/01/2030	शुक्र	29/08/2043	सूर्य	13/02/2058
	00/00/0000	राहु	21/10/2017	शुक्र	09/05/2033	सूर्य	19/03/2044	चंद्र	04/10/2060
	03/11/2010	शुक्र	13/05/2019	सूर्य	19/04/2034	चंद्र	08/08/2045	मंगल	02/03/2062
शुक्र	31/01/2012	सूर्य	22/10/2019	चंद्र	28/08/2036	मंगल	06/05/2046	बुध	27/02/2065
सूर्य	01/12/2012	चंद्र	01/12/2020	मंगल	01/12/2037	बुध	01/12/2047	शनि	01/12/2066

राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष	
01/12/2066		01/12/2078		01/12/2099		02/12/2105	
01/12/2078		01/12/2099		02/12/2105		00/00/0000	
राहु	01/04/2068	शुक्र	01/01/2083	सूर्य	02/04/2100	चंद्र	02/01/2108
शुक्र	01/08/2070	सूर्य	02/03/2084	चंद्र	01/02/2101	मंगल	11/02/2109
सूर्य	02/04/2071	चंद्र	31/01/2087	मंगल	13/07/2101	बुध	23/06/2111
चंद्र	01/12/2072	मंगल	21/08/2088	बुध	23/06/2102	शनि	11/11/2112
मंगल	21/10/2073	बुध	12/12/2091	शनि	12/01/2103	गुरु	03/07/2115
बुध	11/09/2075	शनि	21/11/2093	गुरु	01/02/2104	राहु	03/03/2117
शनि	21/10/2076	गुरु	01/08/2097	राहु	02/10/2104	शुक्र	04/11/2118
गुरु	01/12/2078	राहु	01/12/2099	शुक्र	02/12/2105		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - बुध		मंगल - शनि	
03/11/2010		31/01/2012		01/12/2012		05/07/2013		08/10/2014	
31/01/2012		01/12/2012		05/07/2013		08/10/2014		06/07/2015	
	00/00/0000	सूर्य	17/02/2012	मंगल	17/12/2012	बुध	16/09/2013	शनि	02/11/2014
	00/00/0000	चंद्र	31/03/2012	बुध	20/01/2013	शनि	28/10/2013	गुरु	20/12/2014
	00/00/0000	मंगल	22/04/2012	शनि	09/02/2013	गुरु	17/01/2014	राहु	19/01/2015
	03/11/2010	बुध	09/06/2012	गुरु	19/03/2013	राहु	09/03/2014	शुक्र	12/03/2015
बुध	23/12/2010	शनि	07/07/2012	राहु	12/04/2013	शुक्र	07/06/2014	सूर्य	27/03/2015
शनि	01/04/2011	गुरु	30/08/2012	शुक्र	24/05/2013	सूर्य	02/07/2014	चंद्र	04/05/2015
गुरु	05/10/2011	राहु	03/10/2012	सूर्य	05/06/2013	चंद्र	04/09/2014	मंगल	24/05/2015
राहु	31/01/2012	शुक्र	01/12/2012	चंद्र	05/07/2013	मंगल	08/10/2014	बुध	06/07/2015

मंगल - गुरु		मंगल - राहु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
06/07/2015		01/12/2016		21/10/2017		13/05/2019		22/10/2019	
01/12/2016		21/10/2017		13/05/2019		22/10/2019		01/12/2020	
गुरु	04/10/2015	राहु	06/01/2017	शुक्र	09/02/2018	सूर्य	22/05/2019	चंद्र	17/12/2019
राहु	30/11/2015	शुक्र	10/03/2017	सूर्य	12/03/2018	चंद्र	13/06/2019	मंगल	16/01/2020
शुक्र	09/03/2016	सूर्य	28/03/2017	चंद्र	30/05/2018	मंगल	25/06/2019	बुध	20/03/2020
सूर्य	07/04/2016	चंद्र	12/05/2017	मंगल	11/07/2018	बुध	21/07/2019	शनि	27/04/2020
चंद्र	17/06/2016	मंगल	05/06/2017	बुध	09/10/2018	शनि	05/08/2019	गुरु	07/07/2020
मंगल	25/07/2016	बुध	26/07/2017	शनि	30/11/2018	गुरु	02/09/2019	राहु	21/08/2020
बुध	14/10/2016	शनि	25/08/2017	गुरु	10/03/2019	राहु	20/09/2019	शुक्र	08/11/2020
शनि	01/12/2016	गुरु	21/10/2017	राहु	13/05/2019	शुक्र	22/10/2019	सूर्य	01/12/2020

बुध - बुध		बुध - शनि		बुध - गुरु		बुध - राहु		बुध - शुक्र	
01/12/2020		05/08/2023		02/03/2025		27/02/2028		17/01/2030	
05/08/2023		02/03/2025		27/02/2028		17/01/2030		09/05/2033	
बुध	04/05/2021	शनि	27/09/2023	गुरु	10/09/2025	राहु	14/05/2028	शुक्र	09/09/2030
शनि	02/08/2021	गुरु	07/01/2024	राहु	10/01/2026	शुक्र	25/09/2028	सूर्य	15/11/2030
गुरु	21/01/2022	राहु	10/03/2024	शुक्र	10/08/2026	सूर्य	03/11/2028	चंद्र	02/05/2031
राहु	10/05/2022	शुक्र	30/06/2024	सूर्य	10/10/2026	चंद्र	06/02/2029	मंगल	30/07/2031
शुक्र	16/11/2022	सूर्य	01/08/2024	चंद्र	10/03/2027	मंगल	29/03/2029	बुध	05/02/2032
सूर्य	09/01/2023	चंद्र	20/10/2024	मंगल	30/05/2027	बुध	16/07/2029	शनि	27/05/2032
चंद्र	25/05/2023	मंगल	02/12/2024	बुध	18/11/2027	शनि	18/09/2029	गुरु	26/12/2032
मंगल	05/08/2023	बुध	02/03/2025	शनि	27/02/2028	गुरु	17/01/2030	राहु	09/05/2033

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		शनि - शनि		शनि - गुरु	
09/05/2033		19/04/2034		28/08/2036		01/12/2037		04/11/2038	
19/04/2034		28/08/2036		01/12/2037		04/11/2038		08/08/2040	
सूर्य	28/05/2033	चंद्र	16/08/2034	मंगल	01/10/2036	शनि	01/01/2038	गुरु	25/02/2039
चंद्र	15/07/2033	मंगल	19/10/2034	बुध	13/12/2036	गुरु	02/03/2038	राहु	08/05/2039
मंगल	09/08/2033	बुध	04/03/2035	शनि	24/01/2037	राहु	08/04/2038	शुक्र	10/09/2039
बुध	03/10/2033	शनि	23/05/2035	गुरु	15/04/2037	शुक्र	13/06/2038	सूर्य	15/10/2039
शनि	04/11/2033	गुरु	22/10/2035	राहु	05/06/2037	सूर्य	02/07/2038	चंद्र	13/01/2040
गुरु	03/01/2034	राहु	25/01/2036	शुक्र	03/09/2037	चंद्र	18/08/2038	मंगल	29/02/2040
राहु	11/02/2034	शुक्र	11/07/2036	सूर्य	28/09/2037	मंगल	12/09/2038	बुध	09/06/2040
शुक्र	19/04/2034	सूर्य	28/08/2036	चंद्र	01/12/2037	बुध	04/11/2038	शनि	08/08/2040

शनि - राहु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल	
08/08/2040		18/09/2041		29/08/2043		19/03/2044		08/08/2045	
18/09/2041		29/08/2043		19/03/2044		08/08/2045		06/05/2046	
राहु	22/09/2040	शुक्र	03/02/2042	सूर्य	09/09/2043	चंद्र	28/05/2044	मंगल	28/08/2045
शुक्र	10/12/2040	सूर्य	14/03/2042	चंद्र	07/10/2043	मंगल	05/07/2044	बुध	10/10/2045
सूर्य	01/01/2041	चंद्र	21/06/2042	मंगल	22/10/2043	बुध	23/09/2044	शनि	04/11/2045
चंद्र	27/02/2041	मंगल	12/08/2042	बुध	23/11/2043	शनि	09/11/2044	गुरु	21/12/2045
मंगल	29/03/2041	बुध	02/12/2042	शनि	12/12/2043	गुरु	06/02/2045	राहु	20/01/2046
बुध	01/06/2041	शनि	06/02/2043	गुरु	17/01/2044	राहु	03/04/2045	शुक्र	14/03/2046
शनि	08/07/2041	गुरु	11/06/2043	राहु	08/02/2044	शुक्र	11/07/2045	सूर्य	29/03/2046
गुरु	18/09/2041	राहु	29/08/2043	शुक्र	19/03/2044	सूर्य	08/08/2045	चंद्र	06/05/2046

शनि - बुध		गुरु - गुरु		गुरु - राहु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
06/05/2046		01/12/2047		05/04/2051		15/05/2053		24/01/2057	
01/12/2047		05/04/2051		15/05/2053		24/01/2057		13/02/2058	
बुध	04/08/2046	गुरु	03/07/2048	राहु	30/06/2051	शुक्र	02/02/2054	सूर्य	14/02/2057
शनि	26/09/2046	राहु	16/11/2048	शुक्र	27/11/2051	सूर्य	18/04/2054	चंद्र	09/04/2057
गुरु	05/01/2047	शुक्र	11/07/2049	सूर्य	09/01/2052	चंद्र	22/10/2054	मंगल	07/05/2057
राहु	10/03/2047	सूर्य	17/09/2049	चंद्र	25/04/2052	मंगल	30/01/2055	बुध	07/07/2057
शुक्र	30/06/2047	चंद्र	06/03/2050	मंगल	21/06/2052	बुध	31/08/2055	शनि	12/08/2057
सूर्य	01/08/2047	मंगल	04/06/2050	बुध	20/10/2052	शनि	03/01/2056	गुरु	19/10/2057
चंद्र	20/10/2047	बुध	13/12/2050	शनि	31/12/2052	गुरु	27/08/2056	राहु	30/11/2057
मंगल	01/12/2047	शनि	05/04/2051	गुरु	15/05/2053	राहु	24/01/2057	शुक्र	13/02/2058

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - चंद्र	
13/02/2058	
04/10/2060	
चंद्र	27/06/2058
मंगल	07/09/2058
बुध	05/02/2059
शनि	06/05/2059
गुरु	22/10/2059
राहु	06/02/2060
शुक्र	12/08/2060
सूर्य	04/10/2060

गुरु - मंगल	
04/10/2060	
02/03/2062	
मंगल	11/11/2060
बुध	31/01/2061
शनि	20/03/2061
गुरु	18/06/2061
राहु	14/08/2061
शुक्र	22/11/2061
सूर्य	21/12/2061
चंद्र	02/03/2062

गुरु - बुध	
02/03/2062	
27/02/2065	
बुध	21/08/2062
शनि	30/11/2062
गुरु	11/06/2063
राहु	10/10/2063
शुक्र	09/05/2064
सूर्य	09/07/2064
चंद्र	08/12/2064
मंगल	27/02/2065

गुरु - शनि	
27/02/2065	
01/12/2066	
शनि	27/04/2065
गुरु	18/08/2065
राहु	29/10/2065
शुक्र	03/03/2066
सूर्य	07/04/2066
चंद्र	06/07/2066
मंगल	22/08/2066
बुध	01/12/2066

राहु - राहु	
01/12/2066	
01/04/2068	
राहु	24/01/2067
शुक्र	29/04/2067
सूर्य	26/05/2067
चंद्र	02/08/2067
मंगल	07/09/2067
बुध	22/11/2067
शनि	07/01/2068
गुरु	01/04/2068

राहु - शुक्र	
01/04/2068	
01/08/2070	
शुक्र	14/09/2068
सूर्य	31/10/2068
चंद्र	27/02/2069
मंगल	01/05/2069
बुध	12/09/2069
शनि	30/11/2069
गुरु	29/04/2070
राहु	01/08/2070

राहु - सूर्य	
01/08/2070	
02/04/2071	
सूर्य	15/08/2070
चंद्र	18/09/2070
मंगल	06/10/2070
बुध	13/11/2070
शनि	06/12/2070
गुरु	18/01/2071
राहु	14/02/2071
शुक्र	02/04/2071

राहु - चंद्र	
02/04/2071	
01/12/2072	
चंद्र	26/06/2071
मंगल	10/08/2071
बुध	13/11/2071
शनि	09/01/2072
गुरु	25/04/2072
राहु	02/07/2072
शुक्र	28/10/2072
सूर्य	01/12/2072

राहु - मंगल	
01/12/2072	
21/10/2073	
मंगल	25/12/2072
बुध	14/02/2073
शनि	16/03/2073
गुरु	12/05/2073
राहु	17/06/2073
शुक्र	19/08/2073
सूर्य	06/09/2073
चंद्र	21/10/2073

राहु - बुध	
21/10/2073	
11/09/2075	
बुध	07/02/2074
शनि	12/04/2074
गुरु	11/08/2074
राहु	27/10/2074
शुक्र	10/03/2075
सूर्य	17/04/2075
चंद्र	22/07/2075
मंगल	11/09/2075

राहु - शनि	
11/09/2075	
21/10/2076	
शनि	19/10/2075
गुरु	29/12/2075
राहु	12/02/2076
शुक्र	01/05/2076
सूर्य	24/05/2076
चंद्र	19/07/2076
मंगल	18/08/2076
बुध	21/10/2076

राहु - गुरु	
21/10/2076	
01/12/2078	
गुरु	06/03/2077
राहु	30/05/2077
शुक्र	27/10/2077
सूर्य	09/12/2077
चंद्र	26/03/2078
मंगल	22/05/2078
बुध	21/09/2078
शनि	01/12/2078

शुक्र - शुक्र	
01/12/2078	
01/01/2083	
शुक्र	17/09/2079
सूर्य	09/12/2079
चंद्र	03/07/2080
मंगल	22/10/2080
बुध	13/06/2081
शनि	30/10/2081
गुरु	19/07/2082
राहु	01/01/2083

शुक्र - सूर्य	
01/01/2083	
02/03/2084	
सूर्य	24/01/2083
चंद्र	25/03/2083
मंगल	25/04/2083
बुध	01/07/2083
शनि	10/08/2083
गुरु	24/10/2083
राहु	10/12/2083
शुक्र	02/03/2084

शुक्र - चंद्र	
02/03/2084	
31/01/2087	
चंद्र	28/07/2084
मंगल	15/10/2084
बुध	31/03/2085
शनि	08/07/2085
गुरु	11/01/2086
राहु	10/05/2086
शुक्र	03/12/2086
सूर्य	31/01/2087

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - मंगल		शुक्र - बुध		शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु		शुक्र - राहु	
31/01/2087		21/08/2088		12/12/2091		21/11/2093		01/08/2097	
21/08/2088		12/12/2091		21/11/2093		01/08/2097		01/12/2099	
मंगल	14/03/2087	बुध	27/02/2089	शनि	15/02/2092	गुरु	16/07/2094	राहु	04/11/2097
बुध	12/06/2087	शनि	19/06/2089	गुरु	19/06/2092	राहु	13/12/2094	शुक्र	19/04/2098
शनि	03/08/2087	गुरु	18/01/2090	राहु	06/09/2092	शुक्र	02/09/2095	सूर्य	05/06/2098
गुरु	11/11/2087	राहु	01/06/2090	शुक्र	22/01/2093	सूर्य	16/11/2095	चंद्र	01/10/2098
राहु	13/01/2088	शुक्र	21/01/2091	सूर्य	03/03/2093	चंद्र	21/05/2096	मंगल	04/12/2098
शुक्र	03/05/2088	सूर्य	30/03/2091	चंद्र	09/06/2093	मंगल	29/08/2096	बुध	17/04/2099
सूर्य	03/06/2088	चंद्र	13/09/2091	मंगल	01/08/2093	बुध	29/03/2097	शनि	05/07/2099
चंद्र	21/08/2088	मंगल	12/12/2091	बुध	21/11/2093	शनि	01/08/2097	गुरु	01/12/2099

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध		सूर्य - शनि	
01/12/2099		02/04/2100		01/02/2101		13/07/2101		23/06/2102	
02/04/2100		01/02/2101		13/07/2101		23/06/2102		12/01/2103	
सूर्य	08/12/2099	चंद्र	15/05/2100	मंगल	13/02/2101	बुध	05/09/2101	शनि	12/07/2102
चंद्र	25/12/2099	मंगल	06/06/2100	बुध	10/03/2101	शनि	07/10/2101	गुरु	16/08/2102
मंगल	03/01/2100	बुध	24/07/2100	शनि	25/03/2101	गुरु	07/12/2101	राहु	08/09/2102
बुध	22/01/2100	शनि	21/08/2100	गुरु	23/04/2101	राहु	14/01/2102	शुक्र	17/10/2102
शनि	03/02/2100	गुरु	14/10/2100	राहु	11/05/2101	शुक्र	22/03/2102	सूर्य	29/10/2102
गुरु	24/02/2100	राहु	17/11/2100	शुक्र	11/06/2101	सूर्य	10/04/2102	चंद्र	26/11/2102
राहु	10/03/2100	शुक्र	15/01/2101	सूर्य	20/06/2101	चंद्र	28/05/2102	मंगल	11/12/2102
शुक्र	02/04/2100	सूर्य	01/02/2101	चंद्र	13/07/2101	मंगल	23/06/2102	बुध	12/01/2103

सूर्य - गुरु		सूर्य - राहु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
12/01/2103		01/02/2104		02/10/2104		02/12/2105		02/01/2108	
01/02/2104		02/10/2104		02/12/2105		02/01/2108		11/02/2109	
गुरु	21/03/2103	राहु	28/02/2104	शुक्र	24/12/2104	चंद्र	18/03/2106	मंगल	01/02/2108
राहु	02/05/2103	शुक्र	16/04/2104	सूर्य	16/01/2105	मंगल	13/05/2106	बुध	05/04/2108
शुक्र	16/07/2103	सूर्य	29/04/2104	चंद्र	17/03/2105	बुध	10/09/2106	शनि	12/05/2108
सूर्य	07/08/2103	चंद्र	02/06/2104	मंगल	17/04/2105	शनि	19/11/2106	गुरु	23/07/2108
चंद्र	29/09/2103	मंगल	20/06/2104	बुध	23/06/2105	गुरु	02/04/2107	राहु	06/09/2108
मंगल	28/10/2103	बुध	28/07/2104	शनि	02/08/2105	राहु	26/06/2107	शुक्र	24/11/2108
बुध	28/12/2103	शनि	20/08/2104	गुरु	16/10/2105	शुक्र	21/11/2107	सूर्य	16/12/2108
शनि	01/02/2104	गुरु	02/10/2104	राहु	02/12/2105	सूर्य	02/01/2108	चंद्र	11/02/2109

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : सिद्धा 3 वर्ष 10 मास 16 दिन

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
03/11/2010		20/09/2014		20/09/2022		20/09/2023		19/09/2025	
20/09/2014		20/09/2022		20/09/2023		19/09/2025		19/09/2028	
	00/00/0000	संक	30/06/2016	मंग	30/09/2022	पिंग	30/10/2023	धांय	20/12/2025
	00/00/0000	मंग	19/09/2016	पिंग	20/10/2022	धांय	30/12/2023	भ्राम	20/04/2026
	03/11/2010	पिंग	28/02/2017	धांय	19/11/2022	भ्राम	20/03/2024	भद्रि	20/09/2026
पिंग	21/03/2011	धांय	30/10/2017	भ्राम	30/12/2022	भद्रि	30/06/2024	उल्क	21/03/2027
धांय	20/10/2011	भ्राम	20/09/2018	भद्रि	19/02/2023	उल्क	30/10/2024	सिद्ध	20/10/2027
भ्राम	30/07/2012	भद्रि	30/10/2019	उल्क	21/04/2023	सिद्ध	21/03/2025	संक	20/06/2028
भद्रि	20/07/2013	उल्क	28/02/2021	सिद्ध	01/07/2023	संक	30/08/2025	मंग	20/07/2028
उल्क	20/09/2014	सिद्ध	20/09/2022	संक	20/09/2023	मंग	19/09/2025	पिंग	19/09/2028

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
19/09/2028		19/09/2032		19/09/2037		20/09/2043		20/09/2050	
19/09/2032		19/09/2037		20/09/2043		20/09/2050		20/09/2058	
भ्राम	28/02/2029	भद्रि	31/05/2033	उल्क	20/09/2038	सिद्ध	29/01/2045	संक	30/06/2052
भद्रि	19/09/2029	उल्क	31/03/2034	सिद्ध	20/11/2039	संक	20/08/2046	मंग	19/09/2052
उल्क	21/05/2030	सिद्ध	21/03/2035	संक	21/03/2041	मंग	30/10/2046	पिंग	28/02/2053
सिद्ध	01/03/2031	संक	30/04/2036	मंग	21/05/2041	पिंग	21/03/2047	धांय	30/10/2053
संक	20/01/2032	मंग	20/06/2036	पिंग	19/09/2041	धांय	20/10/2047	भ्राम	20/09/2054
मंग	29/02/2032	पिंग	29/09/2036	धांय	21/03/2042	भ्राम	30/07/2048	भद्रि	30/10/2055
पिंग	20/05/2032	धांय	28/02/2037	भ्राम	19/11/2042	भद्रि	20/07/2049	उल्क	28/02/2057
धांय	19/09/2032	भ्राम	19/09/2037	भद्रि	20/09/2043	उल्क	20/09/2050	सिद्ध	20/09/2058

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
20/09/2058		20/09/2059		19/09/2061		19/09/2064		19/09/2068	
20/09/2059		19/09/2061		19/09/2064		19/09/2068		19/09/2073	
मंग	30/09/2058	पिंग	30/10/2059	धांय	20/12/2061	भ्राम	28/02/2065	भद्रि	31/05/2069
पिंग	20/10/2058	धांय	30/12/2059	भ्राम	20/04/2062	भद्रि	19/09/2065	उल्क	31/03/2070
धांय	19/11/2058	भ्राम	20/03/2060	भद्रि	20/09/2062	उल्क	21/05/2066	सिद्ध	21/03/2071
भ्राम	30/12/2058	भद्रि	30/06/2060	उल्क	21/03/2063	सिद्ध	01/03/2067	संक	30/04/2072
भद्रि	19/02/2059	उल्क	30/10/2060	सिद्ध	20/10/2063	संक	20/01/2068	मंग	20/06/2072
उल्क	21/04/2059	सिद्ध	21/03/2061	संक	20/06/2064	मंग	29/02/2068	पिंग	29/09/2072
सिद्ध	01/07/2059	संक	30/08/2061	मंग	20/07/2064	पिंग	20/05/2068	धांय	28/02/2073
संक	20/09/2059	मंग	19/09/2061	पिंग	19/09/2064	धांय	19/09/2068	भ्राम	19/09/2073

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
19/09/2073		20/09/2079		20/09/2086		20/09/2094		20/09/2095	
20/09/2079		20/09/2086		20/09/2094		20/09/2095		19/09/2097	
उल्क	20/09/2074	सिद्ध	29/01/2081	संक	30/06/2088	मंग	30/09/2094	पिंग	30/10/2095
सिद्ध	20/11/2075	संक	20/08/2082	मंग	19/09/2088	पिंग	20/10/2094	धांय	30/12/2095
संक	21/03/2077	मंग	30/10/2082	पिंग	28/02/2089	धांय	19/11/2094	भ्राम	20/03/2096
मंग	21/05/2077	पिंग	21/03/2083	धांय	30/10/2089	भ्राम	30/12/2094	भद्रि	30/06/2096
पिंग	19/09/2077	धांय	20/10/2083	भ्राम	20/09/2090	भद्रि	19/02/2095	उल्क	30/10/2096
धांय	21/03/2078	भ्राम	30/07/2084	भद्रि	30/10/2091	उल्क	21/04/2095	सिद्ध	21/03/2097
भ्राम	19/11/2078	भद्रि	20/07/2085	उल्क	28/02/2093	सिद्ध	01/07/2095	संक	30/08/2097
भद्रि	20/09/2079	उल्क	20/09/2086	सिद्ध	20/09/2094	संक	20/09/2095	मंग	19/09/2097

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
19/09/2097		20/09/2100		20/09/2104		20/09/2109		21/09/2115	
20/09/2100		20/09/2104		20/09/2109		21/09/2115		00/00/0000	
धांय	20/12/2097	भ्राम	01/03/2101	भद्रि	01/06/2105	उल्क	21/09/2110	सिद्ध	30/01/2117
भ्राम	20/04/2098	भद्रि	20/09/2101	उल्क	01/04/2106	सिद्ध	21/11/2111	संक	21/08/2118
भद्रि	20/09/2098	उल्क	22/05/2102	सिद्ध	22/03/2107	संक	22/03/2113	मंग	31/10/2118
उल्क	21/03/2099	सिद्ध	02/03/2103	संक	01/05/2108	मंग	22/05/2113	पिंग	04/11/2118
सिद्ध	20/10/2099	संक	21/01/2104	मंग	21/06/2108	पिंग	20/09/2113		00/00/0000
संक	21/06/2100	मंग	01/03/2104	पिंग	30/09/2108	धांय	22/03/2114		00/00/0000
मंग	21/07/2100	पिंग	21/05/2104	धांय	01/03/2109	भ्राम	20/11/2114		00/00/0000
पिंग	20/09/2100	धांय	20/09/2104	भ्राम	20/09/2109	भद्रि	21/09/2115		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

धांय - भ्राम		धांय - भद्रि		धांय - उल्क		धांय - सिद्ध		धांय - संक	
20/12/2025		20/04/2026		20/09/2026		21/03/2027		20/10/2027	
20/04/2026		20/09/2026		21/03/2027		20/10/2027		20/06/2028	
भ्राम	02/01/2026	भद्रि	12/05/2026	उल्क	20/10/2026	सिद्ध	02/05/2027	संक	13/12/2027
भद्रि	19/01/2026	उल्क	06/06/2026	सिद्ध	25/11/2026	संक	18/06/2027	मंग	20/12/2027
उल्क	08/02/2026	सिद्ध	05/07/2026	संक	04/01/2027	मंग	24/06/2027	पिंग	03/01/2028
सिद्ध	04/03/2026	संक	08/08/2026	मंग	09/01/2027	पिंग	06/07/2027	धांय	23/01/2028
संक	31/03/2026	मंग	13/08/2026	पिंग	19/01/2027	धांय	23/07/2027	भ्राम	19/02/2028
मंग	03/04/2026	पिंग	21/08/2026	धांय	04/02/2027	भ्राम	16/08/2027	भद्रि	24/03/2028
पिंग	10/04/2026	धांय	03/09/2026	भ्राम	24/02/2027	भद्रि	15/09/2027	उल्क	03/05/2028
धांय	20/04/2026	भ्राम	20/09/2026	भद्रि	21/03/2027	उल्क	20/10/2027	सिद्ध	20/06/2028

धांय - मंग		धांय - पिंग		भ्राम - भ्राम		भ्राम - भद्रि		भ्राम - उल्क	
20/06/2028		20/07/2028		19/09/2028		28/02/2029		19/09/2029	
20/07/2028		19/09/2028		28/02/2029		19/09/2029		21/05/2030	
मंग	21/06/2028	पिंग	24/07/2028	भ्राम	07/10/2028	भद्रि	29/03/2029	उल्क	30/10/2029
पिंग	22/06/2028	धांय	29/07/2028	भद्रि	30/10/2028	उल्क	01/05/2029	सिद्ध	16/12/2029
धांय	25/06/2028	भ्राम	04/08/2028	उल्क	26/11/2028	सिद्ध	10/06/2029	संक	08/02/2030
भ्राम	28/06/2028	भद्रि	13/08/2028	सिद्ध	27/12/2028	संक	25/07/2029	मंग	15/02/2030
भद्रि	02/07/2028	उल्क	23/08/2028	संक	01/02/2029	मंग	31/07/2029	पिंग	01/03/2030
उल्क	08/07/2028	सिद्ध	04/09/2028	मंग	06/02/2029	पिंग	11/08/2029	धांय	21/03/2030
सिद्ध	13/07/2028	संक	17/09/2028	पिंग	15/02/2029	धांय	28/08/2029	भ्राम	17/04/2030
संक	20/07/2028	मंग	19/09/2028	धांय	28/02/2029	भ्राम	19/09/2029	भद्रि	21/05/2030

भ्राम - सिद्ध		भ्राम - संक		भ्राम - मंग		भ्राम - पिंग		भ्राम - धांय	
21/05/2030		01/03/2031		20/01/2032		29/02/2032		20/05/2032	
01/03/2031		20/01/2032		29/02/2032		20/05/2032		19/09/2032	
सिद्ध	15/07/2030	संक	12/05/2031	मंग	21/01/2032	पिंग	05/03/2032	धांय	30/05/2032
संक	16/09/2030	मंग	21/05/2031	पिंग	23/01/2032	धांय	11/03/2032	भ्राम	13/06/2032
मंग	24/09/2030	पिंग	08/06/2031	धांय	26/01/2032	भ्राम	20/03/2032	भद्रि	30/06/2032
पिंग	10/10/2030	धांय	05/07/2031	भ्राम	31/01/2032	भद्रि	01/04/2032	उल्क	20/07/2032
धांय	03/11/2030	भ्राम	10/08/2031	भद्रि	05/02/2032	उल्क	14/04/2032	सिद्ध	13/08/2032
भ्राम	04/12/2030	भद्रि	24/09/2031	उल्क	12/02/2032	सिद्ध	30/04/2032	संक	09/09/2032
भद्रि	13/01/2031	उल्क	17/11/2031	सिद्ध	20/02/2032	संक	18/05/2032	मंग	12/09/2032
उल्क	01/03/2031	सिद्ध	20/01/2032	संक	29/02/2032	मंग	20/05/2032	पिंग	19/09/2032

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

भद्रि - भद्रि		भद्रि - उल्क		भद्रि - सिद्ध		भद्रि - संक		भद्रि - मंग	
19/09/2032		31/05/2033		31/03/2034		21/03/2035		30/04/2036	
31/05/2033		31/03/2034		21/03/2035		30/04/2036		20/06/2036	
भद्रि	24/10/2032	उल्क	20/07/2033	सिद्ध	08/06/2034	संक	19/06/2035	मंग	01/05/2036
उल्क	06/12/2032	सिद्ध	18/09/2033	संक	26/08/2034	मंग	01/07/2035	पिंग	04/05/2036
सिद्ध	24/01/2033	संक	24/11/2033	मंग	05/09/2034	पिंग	23/07/2035	धांय	08/05/2036
संक	21/03/2033	मंग	03/12/2033	पिंग	25/09/2034	धांय	26/08/2035	भ्राम	14/05/2036
मंग	28/03/2033	पिंग	20/12/2033	धांय	24/10/2034	भ्राम	10/10/2035	भद्रि	21/05/2036
पिंग	11/04/2033	धांय	14/01/2034	भ्राम	03/12/2034	भद्रि	05/12/2035	उल्क	30/05/2036
धांय	03/05/2033	भ्राम	17/02/2034	भद्रि	21/01/2035	उल्क	11/02/2036	सिद्ध	08/06/2036
भ्राम	31/05/2033	भद्रि	31/03/2034	उल्क	21/03/2035	सिद्ध	30/04/2036	संक	20/06/2036

भद्रि - पिंग		भद्रि - धांय		भद्रि - भ्राम		उल्क - उल्क		उल्क - सिद्ध	
20/06/2036		29/09/2036		28/02/2037		19/09/2037		20/09/2038	
29/09/2036		28/02/2037		19/09/2037		20/09/2038		20/11/2039	
पिंग	25/06/2036	धांय	12/10/2036	भ्राम	23/03/2037	उल्क	19/11/2037	सिद्ध	11/12/2038
धांय	04/07/2036	भ्राम	29/10/2036	भद्रि	20/04/2037	सिद्ध	29/01/2038	संक	16/03/2039
भ्राम	15/07/2036	भद्रि	19/11/2036	उल्क	24/05/2037	संक	20/04/2038	मंग	28/03/2039
भद्रि	29/07/2036	उल्क	14/12/2036	सिद्ध	02/07/2037	मंग	01/05/2038	पिंग	21/04/2039
उल्क	15/08/2036	सिद्ध	13/01/2037	संक	17/08/2037	पिंग	21/05/2038	धांय	26/05/2039
सिद्ध	04/09/2036	संक	16/02/2037	मंग	22/08/2037	धांय	20/06/2038	भ्राम	12/07/2039
संक	26/09/2036	मंग	20/02/2037	पिंग	02/09/2037	भ्राम	31/07/2038	भद्रि	10/09/2039
मंग	29/09/2036	पिंग	28/02/2037	धांय	19/09/2037	भद्रि	20/09/2038	उल्क	20/11/2039

उल्क - संक		उल्क - मंग		उल्क - पिंग		उल्क - धांय		उल्क - भ्राम	
20/11/2039		21/03/2041		21/05/2041		19/09/2041		21/03/2042	
21/03/2041		21/05/2041		19/09/2041		21/03/2042		19/11/2042	
संक	07/03/2040	मंग	22/03/2041	पिंग	27/05/2041	धांय	05/10/2041	भ्राम	17/04/2042
मंग	20/03/2040	पिंग	26/03/2041	धांय	06/06/2041	भ्राम	25/10/2041	भद्रि	21/05/2042
पिंग	17/04/2040	धांय	31/03/2041	भ्राम	20/06/2041	भद्रि	19/11/2041	उल्क	30/06/2042
धांय	27/05/2040	भ्राम	07/04/2041	भद्रि	07/07/2041	उल्क	20/12/2041	सिद्ध	17/08/2042
भ्राम	20/07/2040	भद्रि	15/04/2041	उल्क	27/07/2041	सिद्ध	24/01/2042	संक	10/10/2042
भद्रि	26/09/2040	उल्क	25/04/2041	सिद्ध	20/08/2041	संक	06/03/2042	मंग	17/10/2042
उल्क	16/12/2040	सिद्ध	07/05/2041	संक	16/09/2041	मंग	11/03/2042	पिंग	30/10/2042
सिद्ध	21/03/2041	संक	21/05/2041	मंग	19/09/2041	पिंग	21/03/2042	धांय	19/11/2042

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : मेष 1 वर्ष 11 मास 23 दिन
कुल दशाकाल : 83 वर्ष
तिथि : उ०फाल्गुनी - 2 अपसव्य
देह : तुला जीव : कन्या

मेष 7 वर्ष		वृष 16 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष		वृष 16 वर्ष		मेष 7 वर्ष	
03/11/2010		26/10/2012		26/10/2028		27/10/2037		27/10/2053	
26/10/2012		26/10/2028		27/10/2037		27/10/2053		26/10/2060	
	00/00/0000	वृष	27/11/2015	मिथु	18/10/2029	वृष	26/11/2040	मेष	30/05/2054
	00/00/0000	मिथु	22/08/2017	वृष	14/07/2031	मेष	03/04/2042	धनु	03/04/2055
	00/00/0000	वृष	21/09/2020	मेष	16/04/2032	धनु	07/03/2044	मक	05/08/2055
	00/00/0000	मेष	27/01/2022	धनु	17/05/2033	मक	14/12/2044	कुंभ	06/12/2055
	03/11/2010	धनु	01/01/2024	मक	22/10/2033	कुंभ	21/09/2045	मीन	09/10/2056
धनु	21/04/2011	मक	09/10/2024	कुंभ	30/03/2034	मीन	27/08/2047	मेष	12/05/2057
मक	22/08/2011	कुंभ	17/07/2025	मीन	30/04/2035	मेष	31/12/2048	वृष	17/09/2058
कुंभ	23/12/2011	मीन	22/06/2027	मेष	01/02/2036	वृष	01/02/2052	मिथु	22/06/2059
मीन	26/10/2012	मेष	26/10/2028	वृष	27/10/2037	मिथु	27/10/2053	वृष	26/10/2060

धनु 10 वर्ष		मकर 4 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष		मीन 10 वर्ष		मेष 7 वर्ष	
26/10/2060		27/10/2070		27/10/2074		27/10/2078		26/10/2088	
27/10/2070		27/10/2074		27/10/2078		26/10/2088		00/00/0000	
धनु	09/01/2062	मक	05/01/2071	कुंभ	05/01/2075	मीन	10/01/2080	मेष	30/05/2089
मक	04/07/2062	कुंभ	17/03/2071	मीन	30/06/2075	मेष	13/11/2080	वृष	05/10/2090
कुंभ	28/12/2062	मीन	09/09/2071	मेष	01/11/2075	वृष	18/10/2082	मिथु	09/07/2091
मीन	12/03/2064	मेष	10/01/2072	वृष	08/08/2076	मिथु	18/11/2083	वृष	13/11/2092
मेष	14/01/2065	वृष	18/10/2072	मिथु	14/01/2077	वृष	22/10/2085	मेष	17/06/2093
वृष	19/12/2066	मिथु	25/03/2073	वृष	22/10/2077	मेष	26/08/2086	धनु	02/11/2093
मिथु	19/01/2068	वृष	01/01/2074	मेष	22/02/2078	धनु	09/11/2087		00/00/0000
वृष	23/12/2069	मेष	04/05/2074	धनु	17/08/2078	मक	03/05/2088		00/00/0000
मेष	27/10/2070	धनु	27/10/2074	मक	27/10/2078	कुंभ	26/10/2088		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

वृष - मीन		वृष - मेष		मिथु - मिथु		मिथु - वृष		मिथु - मेष	
17/07/2025		22/06/2027		26/10/2028		18/10/2029		14/07/2031	
22/06/2027		26/10/2028		18/10/2029		14/07/2031		16/04/2032	
मीन	10/10/2025	मेष	02/08/2027	मिथु	04/12/2028	वृष	17/02/2030	मेष	06/08/2031
मेष	09/12/2025	वृष	05/11/2027	वृष	11/02/2029	मेष	11/04/2030	धनु	08/09/2031
वृष	23/04/2026	मिथु	29/12/2027	मेष	13/03/2029	धनु	27/06/2030	मक	22/09/2031
मिथु	09/07/2026	वृष	02/04/2028	धनु	25/04/2029	मक	27/07/2030	कुंभ	05/10/2031
वृष	21/11/2026	मेष	13/05/2028	मक	12/05/2029	कुंभ	27/08/2030	मीन	07/11/2031
मेष	20/01/2027	धनु	12/07/2028	कुंभ	29/05/2029	मीन	11/11/2030	मेष	01/12/2031
धनु	15/04/2027	मक	04/08/2028	मीन	11/07/2029	मेष	04/01/2031	वृष	23/01/2032
मक	19/05/2027	कुंभ	28/08/2028	मेष	10/08/2029	वृष	06/05/2031	मिथु	22/02/2032
कुंभ	22/06/2027	मीन	26/10/2028	वृष	18/10/2029	मिथु	14/07/2031	वृष	16/04/2032

मिथु - धनु		मिथु - मक		मिथु - कुंभ		मिथु - मीन		मिथु - मेष	
16/04/2032		17/05/2033		22/10/2033		30/03/2034		30/04/2035	
17/05/2033		22/10/2033		30/03/2034		30/04/2035		01/02/2036	
धनु	02/06/2032	मक	24/05/2033	कुंभ	30/10/2033	मीन	16/05/2034	मेष	23/05/2035
मक	22/06/2032	कुंभ	01/06/2033	मीन	18/11/2033	मेष	19/06/2034	वृष	16/07/2035
कुंभ	11/07/2032	मीन	20/06/2033	मेष	01/12/2033	वृष	03/09/2034	मिथु	15/08/2035
मीन	27/08/2032	मेष	04/07/2033	वृष	01/01/2034	मिथु	16/10/2034	वृष	07/10/2035
मेष	30/09/2032	वृष	03/08/2033	मिथु	18/01/2034	वृष	31/12/2034	मेष	30/10/2035
वृष	15/12/2032	मिथु	20/08/2033	वृष	18/02/2034	मेष	03/02/2035	धनु	03/12/2035
मिथु	27/01/2033	वृष	20/09/2033	मेष	03/03/2034	धनु	23/03/2035	मक	16/12/2035
वृष	13/04/2033	मेष	03/10/2033	धनु	22/03/2034	मक	11/04/2035	कुंभ	30/12/2035
मेष	17/05/2033	धनु	22/10/2033	मक	30/03/2034	कुंभ	30/04/2035	मीन	01/02/2036

मिथु - वृष		वृष - वृष		वृष - मेष		वृष - धनु		वृष - मक	
01/02/2036		27/10/2037		26/11/2040		03/04/2042		07/03/2044	
27/10/2037		26/11/2040		03/04/2042		07/03/2044		14/12/2044	
वृष	02/06/2036	वृष	01/06/2038	मेष	07/01/2041	धनु	27/06/2042	मक	21/03/2044
मिथु	10/08/2036	मेष	04/09/2038	धनु	07/03/2041	मक	31/07/2042	कुंभ	03/04/2044
वृष	10/12/2036	धनु	18/01/2039	मक	31/03/2041	कुंभ	03/09/2042	मीन	07/05/2044
मेष	01/02/2037	मक	13/03/2039	कुंभ	24/04/2041	मीन	27/11/2042	मेष	31/05/2044
धनु	19/04/2037	कुंभ	06/05/2039	मीन	22/06/2041	मेष	25/01/2043	वृष	24/07/2044
मक	19/05/2037	मीन	19/09/2039	मेष	03/08/2041	वृष	10/06/2043	मिथु	24/08/2044
कुंभ	19/06/2037	मेष	23/12/2039	वृष	06/11/2041	मिथु	25/08/2043	वृष	17/10/2044
मीन	03/09/2037	वृष	27/07/2040	मिथु	29/12/2041	वृष	08/01/2044	मेष	10/11/2044
मेष	27/10/2037	मिथु	26/11/2040	वृष	03/04/2042	मेष	07/03/2044	धनु	14/12/2044

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

वृष - कुंभ		वृष - मीन		वृष - मेष		वृष - वृष		वृष - मिथु	
14/12/2044		21/09/2045		27/08/2047		31/12/2048		01/02/2052	
21/09/2045		27/08/2047		31/12/2048		01/02/2052		27/10/2053	
कुंभ	27/12/2044	मीन	15/12/2045	मेष	07/10/2047	वृष	06/08/2049	मिथु	10/04/2052
मीन	30/01/2045	मेष	13/02/2046	वृष	10/01/2048	मिथु	06/12/2049	वृष	10/08/2052
मेष	23/02/2045	वृष	28/06/2046	मिथु	04/03/2048	वृष	11/07/2050	मेष	02/10/2052
वृष	18/04/2045	मिथु	13/09/2046	वृष	07/06/2048	मेष	14/10/2050	धनु	18/12/2052
मिथु	19/05/2045	वृष	26/01/2047	मेष	18/07/2048	धनु	27/02/2051	मक	17/01/2053
वृष	12/07/2045	मेष	27/03/2047	धनु	16/09/2048	मक	22/04/2051	कुंभ	17/02/2053
मेष	05/08/2045	धनु	20/06/2047	मक	09/10/2048	कुंभ	15/06/2051	मीन	04/05/2053
धनु	08/09/2045	मक	24/07/2047	कुंभ	02/11/2048	मीन	29/10/2051	मेष	26/06/2053
मक	21/09/2045	कुंभ	27/08/2047	मीन	31/12/2048	मेष	01/02/2052	वृष	27/10/2053

मेष - मेष		मेष - धनु		मेष - मक		मेष - कुंभ		मेष - मीन	
27/10/2053		30/05/2054		03/04/2055		05/08/2055		06/12/2055	
30/05/2054		03/04/2055		05/08/2055		06/12/2055		09/10/2056	
मेष	14/11/2053	धनु	06/07/2054	मक	09/04/2055	कुंभ	10/08/2055	मीन	12/01/2056
धनु	10/12/2053	मक	21/07/2054	कुंभ	15/04/2055	मीन	25/08/2055	मेष	07/02/2056
मक	20/12/2053	कुंभ	05/08/2054	मीन	30/04/2055	मेष	05/09/2055	वृष	06/04/2056
कुंभ	31/12/2053	मीन	11/09/2054	मेष	10/05/2055	वृष	28/09/2055	मिथु	10/05/2056
मीन	26/01/2054	मेष	07/10/2054	वृष	03/06/2055	मिथु	12/10/2055	वृष	08/07/2056
मेष	13/02/2054	वृष	06/12/2054	मिथु	17/06/2055	वृष	05/11/2055	मेष	03/08/2056
वृष	26/03/2054	मिथु	08/01/2055	वृष	10/07/2055	मेष	15/11/2055	धनु	09/09/2056
मिथु	19/04/2054	वृष	08/03/2055	मेष	21/07/2055	धनु	30/11/2055	मक	24/09/2056
वृष	30/05/2054	मेष	03/04/2055	धनु	05/08/2055	मक	06/12/2055	कुंभ	09/10/2056

मेष - मेष		मेष - वृष		मेष - मिथु		मेष - वृष		धनु - धनु	
09/10/2056		12/05/2057		17/09/2058		22/06/2059		26/10/2060	
12/05/2057		17/09/2058		22/06/2059		26/10/2060		09/01/2062	
मेष	27/10/2056	वृष	15/08/2057	मिथु	17/10/2058	वृष	25/09/2059	धनु	18/12/2060
वृष	08/12/2056	मिथु	08/10/2057	वृष	10/12/2058	मेष	05/11/2059	मक	09/01/2061
मिथु	31/12/2056	वृष	11/01/2058	मेष	02/01/2059	धनु	03/01/2060	कुंभ	30/01/2061
वृष	10/02/2057	मेष	21/02/2058	धनु	05/02/2059	मक	27/01/2060	मीन	24/03/2061
मेष	01/03/2057	धनु	22/04/2058	मक	18/02/2059	कुंभ	20/02/2060	मेष	30/04/2061
धनु	27/03/2057	मक	16/05/2058	कुंभ	03/03/2059	मीन	19/04/2060	वृष	24/07/2061
मक	06/04/2057	कुंभ	08/06/2058	मीन	06/04/2059	मेष	31/05/2060	मिथु	10/09/2061
कुंभ	16/04/2057	मीन	07/08/2058	मेष	29/04/2059	वृष	03/09/2060	वृष	03/12/2061
मीन	12/05/2057	मेष	17/09/2058	वृष	22/06/2059	मिथु	26/10/2060	मेष	09/01/2062

चर दशा

भोग्य दशा काल : कन्या 11 वर्ष 0 मास 0 दिन

कन्या 11 वर्ष	
03/11/2010	
02/11/2021	
तुला	04/10/2011
वृश्चि	02/09/2012
धनु	03/08/2013
मक	04/07/2014
कुंभ	04/06/2015
मीन	04/05/2016
मेष	03/04/2017
वृष	04/03/2018
मिथु	02/02/2019
कर्क	03/01/2020
सिंह	03/12/2020
कन्या	02/11/2021

तुला 12 वर्ष	
02/11/2021	
02/11/2033	
वृश्चि	03/11/2022
धनु	03/11/2023
मक	02/11/2024
कुंभ	02/11/2025
मीन	03/11/2026
मेष	03/11/2027
वृष	02/11/2028
मिथु	02/11/2029
कर्क	03/11/2030
सिंह	03/11/2031
कन्या	02/11/2032
तुला	02/11/2033

वृश्चिक 7 वर्ष	
02/11/2033	
02/11/2040	
तुला	04/06/2034
कन्या	03/01/2035
सिंह	04/08/2035
कर्क	04/03/2036
मिथु	03/10/2036
वृष	04/05/2037
मेष	03/12/2037
मीन	04/07/2038
कुंभ	02/02/2039
मक	03/09/2039
धनु	03/04/2040
वृश्चि	02/11/2040

धनु 2 वर्ष	
02/11/2040	
03/11/2042	
वृश्चि	02/01/2041
तुला	04/03/2041
कन्या	04/05/2041
सिंह	04/07/2041
कर्क	03/09/2041
मिथु	02/11/2041
वृष	02/01/2042
मेष	04/03/2042
मीन	04/05/2042
कुंभ	04/07/2042
मक	03/09/2042
धनु	03/11/2042

मकर 4 वर्ष	
03/11/2042	
03/11/2046	
धनु	04/03/2043
वृश्चि	04/07/2043
तुला	03/11/2043
कन्या	04/03/2044
सिंह	03/07/2044
कर्क	02/11/2044
मिथु	04/03/2045
वृष	04/07/2045
मेष	02/11/2045
मीन	04/03/2046
कुंभ	04/07/2046
मक	03/11/2046

कुम्भ 5 वर्ष	
03/11/2046	
03/11/2051	
मीन	04/04/2047
मेष	03/09/2047
वृष	02/02/2048
मिथु	03/07/2048
कर्क	03/12/2048
सिंह	04/05/2049
कन्या	03/10/2049
तुला	04/03/2050
वृश्चि	03/08/2050
धनु	03/01/2051
मक	04/06/2051
कुंभ	03/11/2051

मीन 1 वर्ष	
03/11/2051	
02/11/2052	
मेष	03/12/2051
वृष	03/01/2052
मिथु	02/02/2052
कर्क	04/03/2052
सिंह	03/04/2052
कन्या	04/05/2052
तुला	03/06/2052
वृश्चि	03/07/2052
धनु	03/08/2052
मक	02/09/2052
कुंभ	03/10/2052
मीन	02/11/2052

मेष 7 वर्ष	
02/11/2052	
03/11/2059	
वृष	03/06/2053
मिथु	02/01/2054
कर्क	03/08/2054
सिंह	04/03/2055
कन्या	04/10/2055
तुला	04/05/2056
वृश्चि	03/12/2056
धनु	04/07/2057
मक	02/02/2058
कुंभ	03/09/2058
मीन	04/04/2059
मेष	03/11/2059

वृष 5 वर्ष	
03/11/2059	
02/11/2064	
मेष	03/04/2060
मीन	02/09/2060
कुंभ	02/02/2061
मक	04/07/2061
धनु	03/12/2061
वृश्चि	04/05/2062
तुला	03/10/2062
कन्या	04/03/2063
सिंह	04/08/2063
कर्क	03/01/2064
मिथु	03/06/2064
वृष	02/11/2064

मिथुन 4 वर्ष	
02/11/2064	
02/11/2068	
वृष	04/03/2065
मेष	04/07/2065
मीन	02/11/2065
कुंभ	04/03/2066
मक	04/07/2066
धनु	03/11/2066
वृश्चि	04/03/2067
तुला	04/07/2067
कन्या	03/11/2067
सिंह	04/03/2068
कर्क	03/07/2068
मिथु	02/11/2068

कर्क 10 वर्ष	
02/11/2068	
03/11/2078	
मिथु	03/09/2069
वृष	04/07/2070
मेष	04/05/2071
मीन	04/03/2072
कुंभ	02/01/2073
मक	02/11/2073
धनु	03/09/2074
वृश्चि	04/07/2075
तुला	04/05/2076
कन्या	04/03/2077
सिंह	02/01/2078
कर्क	03/11/2078

सिंह 10 वर्ष	
03/11/2078	
02/11/2088	
कन्या	03/09/2079
तुला	03/07/2080
वृश्चि	04/05/2081
धनु	04/03/2082
मक	03/01/2083
कुंभ	03/11/2083
मीन	02/09/2084
मेष	04/07/2085
वृष	04/05/2086
मिथु	04/03/2087
कर्क	03/01/2088
सिंह	02/11/2088

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

तुला - मीन		तुला - मेष		तुला - वृष		तुला - मिथु		तुला - कर्क	
02/11/2025		03/11/2026		03/11/2027		02/11/2028		02/11/2029	
03/11/2026		03/11/2027		02/11/2028		02/11/2029		03/11/2030	
मेष	03/12/2025	वृष	03/12/2026	मेष	03/12/2027	वृष	03/12/2028	मिथु	03/12/2029
वृष	02/01/2026	मिथु	03/01/2027	मीन	03/01/2028	मेष	02/01/2029	वृष	02/01/2030
मिथु	02/02/2026	कर्क	02/02/2027	कुंभ	02/02/2028	मीन	02/02/2029	मेष	02/02/2030
कर्क	04/03/2026	सिंह	04/03/2027	मक	04/03/2028	कुंभ	04/03/2029	मीन	04/03/2030
सिंह	04/04/2026	कन्या	04/04/2027	धनु	03/04/2028	मक	03/04/2029	कुंभ	04/04/2030
कन्या	04/05/2026	तुला	04/05/2027	वृश्चि	04/05/2028	धनु	04/05/2029	मक	04/05/2030
तुला	04/06/2026	वृश्चि	04/06/2027	तुला	03/06/2028	वृश्चि	03/06/2029	धनु	04/06/2030
वृश्चि	04/07/2026	धनु	04/07/2027	कन्या	03/07/2028	तुला	04/07/2029	वृश्चि	04/07/2030
धनु	03/08/2026	मक	04/08/2027	सिंह	03/08/2028	कन्या	03/08/2029	तुला	03/08/2030
मक	03/09/2026	कुंभ	03/09/2027	कर्क	02/09/2028	सिंह	03/09/2029	कन्या	03/09/2030
कुंभ	03/10/2026	मीन	04/10/2027	मिथु	03/10/2028	कर्क	03/10/2029	सिंह	03/10/2030
मीन	03/11/2026	मेष	03/11/2027	वृष	02/11/2028	मिथु	02/11/2029	कर्क	03/11/2030

तुला - सिंह		तुला - कन्या		तुला - तुला		वृश्चि - तुला		वृश्चि - कन्या	
03/11/2030		03/11/2031		02/11/2032		02/11/2033		04/06/2034	
03/11/2031		02/11/2032		02/11/2033		04/06/2034		03/01/2035	
कन्या	03/12/2030	तुला	03/12/2031	वृश्चि	03/12/2032	वृश्चि	20/11/2033	तुला	21/06/2034
तुला	03/01/2031	वृश्चि	03/01/2032	धनु	02/01/2033	धनु	08/12/2033	वृश्चि	09/07/2034
वृश्चि	02/02/2031	धनु	02/02/2032	मक	02/02/2033	मक	26/12/2033	धनु	27/07/2034
धनु	04/03/2031	मक	04/03/2032	कुंभ	04/03/2033	कुंभ	12/01/2034	मक	14/08/2034
मक	04/04/2031	कुंभ	03/04/2032	मीन	03/04/2033	मीन	30/01/2034	कुंभ	31/08/2034
कुंभ	04/05/2031	मीन	04/05/2032	मेष	04/05/2033	मेष	17/02/2034	मीन	18/09/2034
मीन	04/06/2031	मेष	03/06/2032	वृष	03/06/2033	वृष	07/03/2034	मेष	06/10/2034
मेष	04/07/2031	वृष	03/07/2032	मिथु	04/07/2033	मिथु	25/03/2034	वृष	24/10/2034
वृष	04/08/2031	मिथु	03/08/2032	कर्क	03/08/2033	कर्क	11/04/2034	मिथु	10/11/2034
मिथु	03/09/2031	कर्क	02/09/2032	सिंह	03/09/2033	सिंह	29/04/2034	कर्क	28/11/2034
कर्क	04/10/2031	सिंह	03/10/2032	कन्या	03/10/2033	कन्या	17/05/2034	सिंह	16/12/2034
सिंह	03/11/2031	कन्या	02/11/2032	तुला	02/11/2033	तुला	04/06/2034	कन्या	03/01/2035

वृश्चि - सिंह		वृश्चि - कर्क		वृश्चि - मिथु		वृश्चि - वृष		वृश्चि - मेष	
03/01/2035		04/08/2035		04/03/2036		03/10/2036		04/05/2037	
04/08/2035		04/03/2036		03/10/2036		04/05/2037		03/12/2037	
कन्या	20/01/2035	मिथु	21/08/2035	वृष	21/03/2036	मेष	21/10/2036	वृष	22/05/2037
तुला	07/02/2035	वृष	08/09/2035	मेष	08/04/2036	मीन	07/11/2036	मिथु	08/06/2037
वृश्चि	25/02/2035	मेष	26/09/2035	मीन	26/04/2036	कुंभ	25/11/2036	कर्क	26/06/2037
धनु	15/03/2035	मीन	14/10/2035	कुंभ	14/05/2036	मक	13/12/2036	सिंह	14/07/2037
मक	01/04/2035	कुंभ	31/10/2035	मक	31/05/2036	धनु	31/12/2036	कन्या	01/08/2037
कुंभ	19/04/2035	मक	18/11/2035	धनु	18/06/2036	वृश्चि	17/01/2037	तुला	18/08/2037
मीन	07/05/2035	धनु	06/12/2035	वृश्चि	06/07/2036	तुला	04/02/2037	वृश्चि	05/09/2037
मेष	25/05/2035	वृश्चि	24/12/2035	तुला	24/07/2036	कन्या	22/02/2037	धनु	23/09/2037
वृष	11/06/2035	तुला	10/01/2036	कन्या	11/08/2036	सिंह	12/03/2037	मक	11/10/2037
मिथु	29/06/2035	कन्या	28/01/2036	सिंह	28/08/2036	कर्क	29/03/2037	कुंभ	28/10/2037
कर्क	17/07/2035	सिंह	15/02/2036	कर्क	15/09/2036	मिथु	16/04/2037	मीन	15/11/2037
सिंह	04/08/2035	कर्क	04/03/2036	मिथु	03/10/2036	वृष	04/05/2037	मेष	03/12/2037

चर दशा - प्रत्यन्तर

वृश्चि - मीन		वृश्चि - कुंभ		वृश्चि - मक		वृश्चि - धनु		वृश्चि - वृश्चि	
03/12/2037		04/07/2038		02/02/2039		03/09/2039		03/04/2040	
04/07/2038		02/02/2039		03/09/2039		03/04/2040		02/11/2040	
मेष	21/12/2037	मीन	22/07/2038	धनु	20/02/2039	वृश्चि	21/09/2039	तुला	21/04/2040
वृष	07/01/2038	मेष	08/08/2038	वृश्चि	10/03/2039	तुला	09/10/2039	कन्या	09/05/2040
मिथु	25/01/2038	वृष	26/08/2038	तुला	27/03/2039	कन्या	26/10/2039	सिंह	26/05/2040
कर्क	12/02/2038	मिथु	13/09/2038	कन्या	14/04/2039	सिंह	13/11/2039	कर्क	13/06/2040
सिंह	02/03/2038	कर्क	01/10/2038	सिंह	02/05/2039	कर्क	01/12/2039	मिथु	01/07/2040
कन्या	19/03/2038	सिंह	19/10/2038	कर्क	20/05/2039	मिथु	19/12/2039	वृष	19/07/2040
तुला	06/04/2038	कन्या	05/11/2038	मिथु	06/06/2039	वृष	05/01/2040	मेष	05/08/2040
वृश्चि	24/04/2038	तुला	23/11/2038	वृष	24/06/2039	मेष	23/01/2040	मीन	23/08/2040
धनु	12/05/2038	वृश्चि	11/12/2038	मेष	12/07/2039	मीन	10/02/2040	कुंभ	10/09/2040
मक	29/05/2038	धनु	29/12/2038	मीन	30/07/2039	कुंभ	28/02/2040	मक	28/09/2040
कुंभ	16/06/2038	मक	15/01/2039	कुंभ	16/08/2039	मक	16/03/2040	धनु	15/10/2040
मीन	04/07/2038	कुंभ	02/02/2039	मक	03/09/2039	धनु	03/04/2040	वृश्चि	02/11/2040

धनु - वृश्चि		धनु - तुला		धनु - कन्या		धनु - सिंह		धनु - कर्क	
02/11/2040		02/01/2041		04/03/2041		04/05/2041		04/07/2041	
02/01/2041		04/03/2041		04/05/2041		04/07/2041		03/09/2041	
तुला	07/11/2040	वृश्चि	07/01/2041	तुला	09/03/2041	कन्या	09/05/2041	मिथु	09/07/2041
कन्या	12/11/2040	धनु	12/01/2041	वृश्चि	14/03/2041	तुला	14/05/2041	वृष	14/07/2041
सिंह	17/11/2040	मक	17/01/2041	धनु	19/03/2041	वृश्चि	19/05/2041	मेष	19/07/2041
कर्क	23/11/2040	कुंभ	22/01/2041	मक	24/03/2041	धनु	24/05/2041	मीन	24/07/2041
मिथु	28/11/2040	मीन	27/01/2041	कुंभ	29/03/2041	मक	29/05/2041	कुंभ	29/07/2041
वृष	03/12/2040	मेष	02/02/2041	मीन	03/04/2041	कुंभ	03/06/2041	मक	03/08/2041
मेष	08/12/2040	वृष	07/02/2041	मेष	08/04/2041	मीन	08/06/2041	धनु	08/08/2041
मीन	13/12/2040	मिथु	12/02/2041	वृष	14/04/2041	मेष	13/06/2041	वृश्चि	13/08/2041
कुंभ	18/12/2040	कर्क	17/02/2041	मिथु	19/04/2041	वृष	19/06/2041	तुला	18/08/2041
मक	23/12/2040	सिंह	22/02/2041	कर्क	24/04/2041	मिथु	24/06/2041	कन्या	23/08/2041
धनु	28/12/2040	कन्या	27/02/2041	सिंह	29/04/2041	कर्क	29/06/2041	सिंह	29/08/2041
वृश्चि	02/01/2041	तुला	04/03/2041	कन्या	04/05/2041	सिंह	04/07/2041	कर्क	03/09/2041

धनु - मिथु		धनु - वृष		धनु - मेष		धनु - मीन		धनु - कुंभ	
03/09/2041		02/11/2041		02/01/2042		04/03/2042		04/05/2042	
02/11/2041		02/01/2042		04/03/2042		04/05/2042		04/07/2042	
वृष	08/09/2041	मेष	08/11/2041	वृष	07/01/2042	मेष	09/03/2042	मीन	09/05/2042
मेष	13/09/2041	मीन	13/11/2041	मिथु	12/01/2042	वृष	14/03/2042	मेष	14/05/2042
मीन	18/09/2041	कुंभ	18/11/2041	कर्क	18/01/2042	मिथु	19/03/2042	वृष	19/05/2042
कुंभ	23/09/2041	मक	23/11/2041	सिंह	23/01/2042	कर्क	25/03/2042	मिथु	24/05/2042
मक	28/09/2041	धनु	28/11/2041	कन्या	28/01/2042	सिंह	30/03/2042	कर्क	29/05/2042
धनु	03/10/2041	वृश्चि	03/12/2041	तुला	02/02/2042	कन्या	04/04/2042	सिंह	04/06/2042
वृश्चि	08/10/2041	तुला	08/12/2041	वृश्चि	07/02/2042	तुला	09/04/2042	कन्या	09/06/2042
तुला	13/10/2041	कन्या	13/12/2041	धनु	12/02/2042	वृश्चि	14/04/2042	तुला	14/06/2042
कन्या	18/10/2041	सिंह	18/12/2041	मक	17/02/2042	धनु	19/04/2042	वृश्चि	19/06/2042
सिंह	23/10/2041	कर्क	23/12/2041	कुंभ	22/02/2042	मक	24/04/2042	धनु	24/06/2042
कर्क	28/10/2041	मिथु	28/12/2041	मीन	27/02/2042	कुंभ	29/04/2042	मक	29/06/2042
मिथु	02/11/2041	वृष	02/01/2042	मेष	04/03/2042	मीन	04/05/2042	कुंभ	04/07/2042

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	3
भाग्यांक	8
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 8
शत्रु अंक	1, 4,
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृष, मिथुन
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	धन, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	94%	धन, भाग्योदय
नीलम	शनि	80%	स्वास्थ्य, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
मोती	चंद्र	73%	स्वास्थ्य, धनार्जन
लहसुनिया	केतु	59%	व्यावसायिक उन्नति, धन
गोमेद	राहु	31%	ग्रह कलेश, शत्रु व रोग
पुखराज	गुरु	28%	शत्रु व रोग, ग्रह कलेश, दाम्पत्य कष्ट
माणिक्य	सूर्य	0%	धन हानि, व्यय
मूंगा	मंगल	0%	पराक्रम हानि, दुर्घटना

रत्न की शुभता

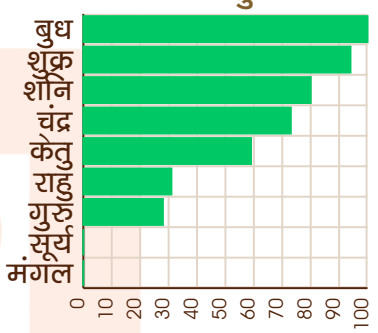

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	01/03/2014	22%	80%	0%	100%	41%	82%	67%	6%	44%
चंद्र	01/03/2024	9%	86%	0%	100%	28%	94%	80%	6%	44%
मंगल	01/03/2031	9%	80%	12%	94%	41%	94%	80%	6%	66%
राहु	01/03/2049	0%	61%	0%	100%	28%	100%	86%	53%	44%
गुरु	01/03/2065	9%	80%	0%	94%	52%	82%	80%	31%	59%
शनि	01/03/2084	0%	61%	0%	100%	28%	100%	92%	44%	44%
बुध	02/03/2101	9%	61%	0%	100%	28%	100%	80%	31%	59%
केतु	02/03/2108	0%	61%	0%	100%	28%	100%	67%	6%	72%
शुक्र	02/03/2128	0%	61%	0%	100%	28%	100%	86%	44%	66%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए पन्ना, हीरा व नीलम रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पन्ना आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

हीरा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए मोती एवं लहसुनिया रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

गोमेद व पुखराज रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

माणिक्य व मूंगा रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति

बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध द्वितीय भाव में स्थित है। इसलिए आपके लिए बुध रत्न पन्ना धारण करना उत्तम फलदायक रहेगा। पन्ना रत्न धारण करने से आपकी नियोजन क्षमता बेहतर होगी। आपकी कार्य योजनाएं सुव्यवस्थित होंगी। रत्न पन्ना आपकी वाकशक्ति, धन, विद्या, कुटुम्ब सुख की वृद्धि करेगा। सभा में अपनी बात कहने की योग्यता का विकास होगा। इसे धारण करने पर आप लोगों को अपनी बातों से प्रभावित करने में सफल हो पायेंगे। रत्न पन्ना आपको सुविचारक या वक्ता बनाने में सहयोग करेगा। बुद्धि से धनार्जन में पन्ना रत्न उपयोगी साबित होगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में बुध लग्नेश एवं दशमेश है। लग्नेश बुध की शुभता प्राप्ति के लिए आप पन्ना रत्न धारण कर सकते है। पन्ना रत्न आपको बौद्धिक क्षेत्रों से संबंधित कार्यक्षेत्र दे सकता है। रत्न शुभता से आपको आजीविका क्षेत्र में सुख-सम्मान की प्राप्ति हो सकती है। लग्नेश बुध रत्न आपकी विवेक योग्यता को बढ़ाएगा। पन्ने की शुभता से आप में व्यापारिक बुद्धि, लेखन योग्यता का विकास कर सकता है। पन्ना रत्न लग्नेश का रत्न होने के कारण अपनी शुभता से आपको स्वास्थ्य सुख भी प्रदान करेगा। जीवन को आरोग्य रखने में भी पन्ना रत्न आपके लिए शुभ फलदायी रत्न है। पन्ना रत्न आपको गणितीय कौशल भी देगा।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंड़ली में शुक्र दूसरे भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए उत्तम रहेगा। हीरा रत्न संयुक्त परिवार विचारधारा को बढ़ायेगा। हीरे की शक्तियों से आप अपने काम निकालने में सफल होंगे। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको व्यवसायिक कुशलता

देगा। यह रत्न आपको मधुरभाषी बनायेगा। सेवा क्षेत्रों में आपकी अभिरुचि बनेंगी। शुक्र रत्न हीरा आपके लिए धन और सम्मान प्रदायक भी है। हीरे रत्न की शुभता से आप धनवान, यशस्वी, साहसी एवं भाग्यवान होंगे।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शुक्र द्वितीय और नवम भाव के स्वामी है। लग्नेश बुध के मित्र व त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण आपके लिए विशेष शुभ हो गए है। शुक्र की शुभता में बढ़ोतरी करने के लिए आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। हीरा रत्न आपके लिए धन-धान्य, कुटुंब सुख, संचित धन एवं यश प्रदायक सिद्ध हो सकता है। भाग्य, धर्म व दूर स्थानों की यात्रा के लिए भी आप शुक्र रत्न हीरा अवश्य धारण करें। यह रत्न आपका भाग्योदय करेगा। हीरा रत्न धारण से आपकी उन्नति सहज हो सकती है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि लग्न भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। शनि रत्न नीलम आपकी परिश्रम क्षमता एवं कार्यकुशलता में वृद्धि करेगा। सरकारी पक्ष व पिता से सहयोग प्राप्त होगा। प्रथम भाव में स्थित शनि की दृष्टि तृतीय, सप्तम एवं दशम भाव पर आ रही है। शनि रत्न नीलम की शुभता से भाग्योदय, सम्मान एवं लाभ की प्राप्ति होगी। जीवन साथी से सहयोग प्राप्त होगा। भाई-बंधुओं से सुख-स्नेह प्राप्ति में भी यह रत्न सहयोग करेगा। नीलम रत्न आपके पुरुषार्थ भाव में वृद्धि कर रहे है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शनि पंचमेश और षष्ठेश है। शनि त्रिकोण भाव के स्वामी है और लग्नेश बुध के मित्र भी है। अतः नीलम रत्न आपके लिए अनुकूल और शुभ रत्न सिद्ध हो सकता है। नीलम रत्न धारण करने से आपकी संतान का स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। यह रत्न संतान सुख भी प्रदान कर सकता है। नीलम रत्न धारण से आपको विद्या ग्रहण या शैक्षिक क्षेत्र में शुभता प्राप्त हो सकती है। भूमि व संपति से लाभ पाने के लिए भी आप नीलम रत्न धारण कर सकते है। यह रत्न शत्रुओं पर विजय पाने में सहयोगी रत्न सिद्ध हो सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्रमा प्रथम भाव में स्थित है। इसलिए आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। चंद्र रत्न मोती धारण करने से आपके अपनी माता से संबंध मजबूत होंगे। मोती रत्न आपको मानसिक शांति देगा। इसके अलावा मोती रत्न आपको व्यवसायिक विवेकशीलता देकर आपके धन प्रवाह को अनुकूल बनाये रखेगा। सप्तम भाव में स्थित तुला राशि पर चन्द्र की दृष्टि होने के कारण आपका जीवनसाथी गुणवान, कला प्रेमी और कलाप्रेमी होगा। साथ ही यह मोती रत्न आपके वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाये रखने में सहयोग करेगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में चंद्र एकादशेश भाव के स्वामी है। आप चंद्र ग्रह की शुभता प्राप्ति के लिए मोती रत्न धारण कर सकते है। मोती रत्न धारण से आपको धन अर्जित करने के नवीन साधन प्राप्त हो सकते है। यह रत्न धन संचय में सहयोग सिद्ध हो सकता है। इसके साथ ही मोती रत्न आपके बड़े भाई से संबंधों में सुधार करेगा। आयु पर आने वाले असमय संकटों को भी टालने में मोती रत्न महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह रत्न आपको राजसिक जीवन प्राप्त करने में सहयोग कर सकता है। आय भाव के स्वामी चंद्र का रत्न मोती आपको धन और आय योग्यतानुसार देने में समर्थ है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं

२ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु ग्रह कर्म भाव में स्थित है। आपके लिए केतु रत्न लहसुनिया धारण करना शुभफलदायक रहेगा। लहसुनिया रत्न आपको आत्मज्ञानी और शिल्पकला का जानकार बना सकता है। रत्न शुभता से आप प्रतियोगियों को शांत रखने में सफल रहेंगे। इस रत्न को धारण करने के बाद आपका स्वभाव मिलनसार, प्रभावशाली और प्रशंसनीय बनेगा। केतु रत्न लहसुनिया आपको अत्यधिक यात्राएं देकर, यात्राओं से लाभ देगा। व्यर्थ के कार्यों में आपके श्रम को बचाएगा। रत्न शुभता से आप अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहेंगे।

केतु मिथुन राशि में स्थित है तथा इसका स्वामी बुध दूसरे भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने पर स्व-कुटुम्ब के सुखों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको जनता व सरकार से सम्मान दिलाएगा। यह रत्न आपको मिथ्या वाद से बचाएगा। साथ ही यह रत्न आपके स्वाभिमान को बढ़ाएगा। रत्न शुभता से जमीन जायदाद के संग्रह में आपको सहयोग प्राप्त होगा। रत्न प्रभाव से आपको धनोपार्जन में सफलता मिलेगी एवं यह रत्न आपको मधुर, सौम्य और प्रिय बोलने का गुण प्रदान करेगा, आपकी संग्रह शक्ति बढ़ाएगा। इसके साथ ही आपकी आर्थिक स्थिति भी बेहतर होगी। इस रत्न को धारण करने पर आपको उत्तम भोजन सेवन की प्राप्ति हो सकती है। परहित में ही आपको आनंद का अनुभव होगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु चतुर्थ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहू रत्न गोमेद धारण करने से आपके अपनी माता से वैचारिक मतभेद सामने आ सकते है। किसी प्राशासनिक व्यक्ति के द्वारा आपका अहित हो सकता है। चित्त में अस्थिरता और भ्रम की स्थिति बढ़ सकती है। गोमेद रत्न आपको देश की अपेक्षा प्रवास में अधिक रख सकता है। सभी सुख-सुविधाओं के होते हुए भी आपका मन दुःखी हो सकता है। रत्न प्रभाव से आप मानसिक अशांति का अनुभव करने लगेंगे। यह भी संभावित है कि विपरीत समय में जीवन साथी का सहयोग प्राप्त न हो पायें। गोमेद रत्न आपकी उन्नति की राहों में रुकावटें ला सकता है। समाज में आपको यथायोग्य सम्मान न मिलने से आपकी

भावनाएं आहत हो सकती है।

राहु धनु राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु छठे भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न आपको विशेष समय पर बौद्धिक योग्यता का सहयोग प्राप्त नहीं होने देगा। बुद्धि बल की कमी आपको शत्रु पक्ष से पराजय दे सकती है। रत्न प्रभाव से आप रोग, ऋण और शत्रुओं से पीड़ित होंगे। इसके कारण विशेष कार्य करने के अवसर अन्य किसी को प्राप्त हो सकते हैं। बड़े कार्यों में योग्यता दिखाने के अवसर आपको नहीं मिल पाएंगे। आपको कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपके रोगों में वृद्धि करेगा। कोर्ट कचहरी के मामलों में धन हानि होगी। इस रत्न को पहनने पर आपको विभिन्न षड्यंत्रों से निपटना पड़ेगा।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आप के रोगों, ऋण और शत्रुओं में वृद्धि हो सकती है। पुखराज रत्न आपकी शारीरिक प्रकृति को पीड़ित कर सकता है। विवेक, पराक्रम और उदारता भाव के लिए भी रत्न का सहयोग आपको प्राप्त नहीं हो पाएगा। पुखराज रत्न धारण करना आपके मामा और भाईयों के सुखों में कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपके काम समय पर पूरे नहीं हो पायेंगे। सेवकों के कारण कार्य विलंबित हो सकते है। न्याय प्रणाली पर आपकी आस्था कमजोर हो सकती है। आजीविका क्षेत्र में वरिष्ठजन आपको परेशानियां दे सकते हैं।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में गुरु चतुर्थेश और सप्तमेश है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर सुखों का ह्रास हो सकता है। आपको माता की सेवा के अवसर कम ही मिल पाएंगे। पुखराज रत्न आपको सरकारी नौकरी में बाधाएं दे सकता है। धन-धान्य और वाहन सुख में भी यह रत्न कमी कर रहा है। गुरु रत्न पुखराज आपकी तीर्थयात्राओं को सीमित कर सकता है। आपके द्वारा माता-पता को कष्ट हो सकता है। यह रत्न आपको इष्टमित्रों से दूर रख सकता है। रत्न प्रभाव से आपके वायु रोग प्रभावी हो सकते है। रत्न आपके धन में कमी कर सकता है। पुखराज रत्न पहनने पर आपको पराश्रय में रहना पड़ सकता है। इस रत्न को पहनने के बाद आपको शुभ कार्यों में सम्मिलित होने के अवसर कम ही मिल पाएंगे। आप पुखराज रत्न धारण कर गुरु ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य द्वितीय भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपका खान-पान प्रभावित होगा जिससे आपको अपच और उससे संबंधित कुछ अन्य रोग हो सकते है। माणिक्य रत्न के प्रभाव से आपको धन संचय में परेशानियां आ सकती है। तथा कुटुंब सौहार्द में कमी हो सकती है। यह रत्न आपकी आत्मनिर्भरता में कमी का कारण बन सकता है। हड्डियों से जुड़े रोगों का सामना आपको करना पड़ सकता है। तांबा, सोना एवं अन्य धातुओं के व्यापार क्षेत्र में आपको अनुकूल लाभ की कमी का सामना करना पड़ सकता है। सरकारी कर अधिक देना पड़

सकता है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में सूर्य द्वादश भाव के स्वामी है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको स्वास्थ्य सुख की कमी हो सकती है। यह रत्न आपके धन संचय में कमी करेगा। माणिक्य रत्न धारण से आपके व्ययों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको बन्धु विरोधी बना सकता है। रत्न प्रभाव से आप व्यापार क्षेत्र में विफल हो सकते है। माणिक्य रत्न धारण से आपमें धर्म कार्यो में श्रद्धा से अधिक पाखंड भाव हो सकता है। यह रत्न विदेश में भाग्योदय में विलम्ब देगा। इस रत्न से आपकी दृष्टि मंद हो सकती है। यह रत्न आपके पिता का स्वास्थ्य पीड़ित कर पिता सुख में कमी करेगा। आप पिता के विरोधी हो सकते है। माणिक्य रत्न आपको विदेशगमन में धन का व्यय करा सकता है।

मूंगा

आपकी कुंड़ली में मंगल तीसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर रेल यात्राओं के दौरान आपका कर्मचारियों से लड़ाई झगड़ा हो सकता है। यह रत्न आपको असंतोष एवं तनाव दे सकता है। मूंगा रत्न प्रभाव से आपके पिता का स्वभाव क्रोधी एवं रुखा हो सकता है। आपको धनहानि और अलगाव का सामना करना पड़ सकता है। आपके पिता को मुकद्दमेबाजी और शत्रुओं से हानि के योग बन सकते है। यह रत्न आपके भाग्य में कुछ कमी कर सकता है। मूंगा रत्न आपको कानों या बाजुओं से संबंधित तकलीफें दे सकता है। अत्यधिक क्रोध के चलते आपके अपने मित्रों से संबंध खराब हो सकते है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में मंगल तृतीयेश एवं अष्टमेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर पराक्रम भाव आपके काम नहीं आ पाएगा। साहस और जोखिम से काम लेना आपके लिए लाभदायक नहीं रहेगा। मूंगा रत्न आपको शत्रुओं से पराजित करा सकता है। रत्न प्रभाव से आपमें स्वार्थ भावना प्रवेश कर सकती है। मूंगा रत्न आपको पैतृक सम्पति से वंचित कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपको घर का सुख प्राप्त नहीं हो पाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको कठिनता से धन प्राप्त होगा। स्पष्ट वक्ता होने के कारण आपको मित्रों में उचित सम्मान नहीं मिल पाएगा। यह रत्न आपको तार्किक बुद्धि देगा। रत्न प्रभाव से आप आलोचनात्मक लेखन की ओर आप अग्रसित हो सकते है। यह रत्न आपको नौकरी में शीघ्र बदलाव दे सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

मंगल
(01/03/2024 - 01/03/2031)

मंगल की दशा में आपका पन्ना, हीरा, मोती व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मूंगा, माणिक्य व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(01/03/2031 - 01/03/2049)

राहु की दशा में आपका पन्ना, हीरा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(01/03/2049 - 01/03/2065)

गुरु की दशा में आपका पन्ना, हीरा, मोती व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(01/03/2065 - 01/03/2084)

शनि की दशा में आपका पन्ना, हीरा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद, लहसुनिया व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(01/03/2084 - 02/03/2101)

बुध की दशा में आपका पन्ना, हीरा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(02/03/2101 - 02/03/2108)

केतु की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, नीलम व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और गोमेद, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(02/03/2108 - 02/03/2128)

शुक्र की दशा में आपका पन्ना, हीरा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

सूर्य - 01/03/2014

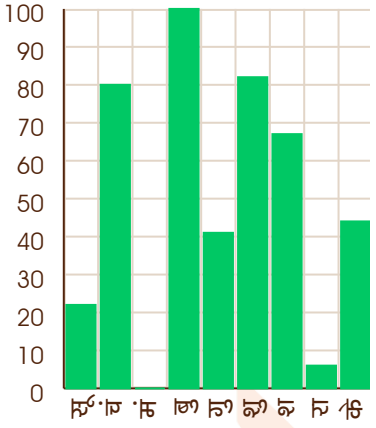

चन्द्र - 01/03/2024

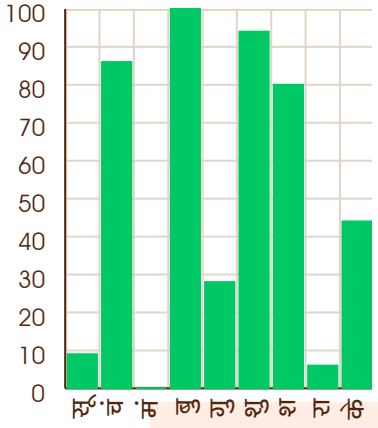

मंगल - 01/03/2031

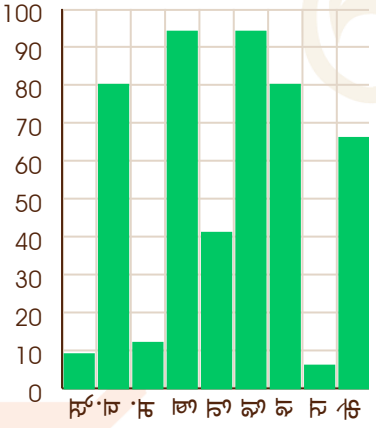

राहु - 01/03/2049

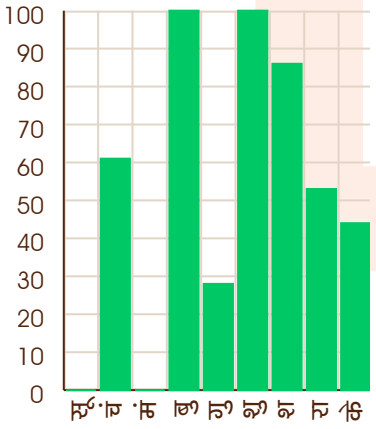

गुरु - 01/03/2065

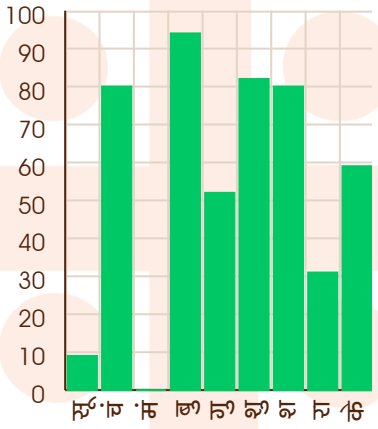

शनि - 01/03/2084

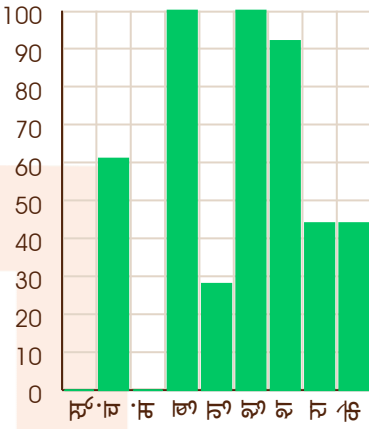

बुध - 02/03/2101

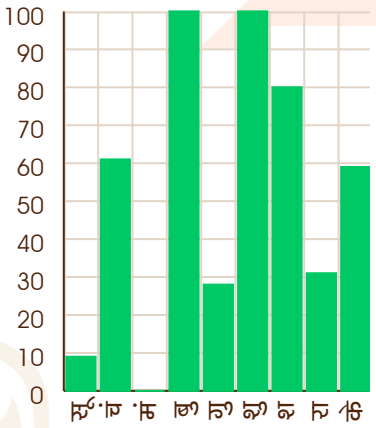

केतु - 02/03/2108

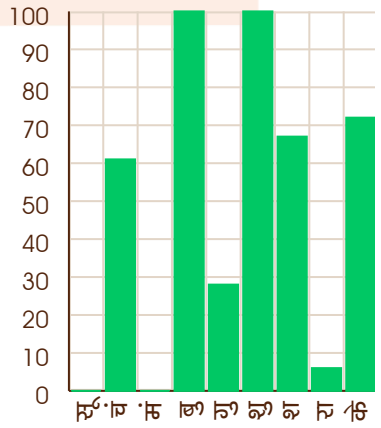

शुक्र - 02/03/2128

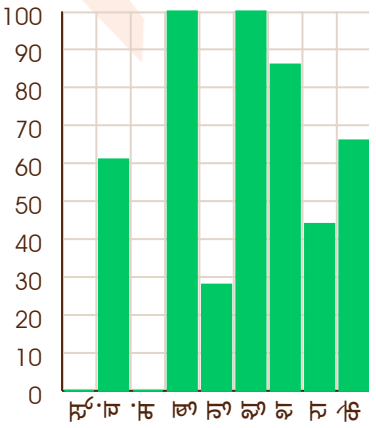

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - गोमेद

आपका जन्म कन्या राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह बुध होता है। गोमेद रत्न राहु ग्रह के लिये धारण किया जाता है जो शनि के समान होता है और शनि कन्या राशि के लग्न के जातकों के लिये कारक रत्न होता है। क्योंकि शनि की मकर राशि कन्या लग्न से पंचम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये पंचमेश का प्रबल होना बहुत अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि विद्या प्राप्ति के लिए किये गये प्रयास या कार्य के लिये पंचमेश का रत्न धारण करना श्रेष्ठ होता है साथ ही यह प्रेम संबंधों का भाव भी होता है। बुद्धि, बल का आकलन पंचम भाव से देखते हैं। संतान सुख से वंचित जातकों के लिए या संतान होने में देरी होने वाले जातकों के लिये पंचमेश का रत्न संतान सुख में वृद्धि करता है।

अतः कन्या राशि के लग्न वाले जातकों को गोमेद रत्न धारण करके राहु या शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को संतान, बुद्धि, प्रेम संबंध व विद्या से संबंधित सभी लाभ मिलेंगे और जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी राहु या शनि न्याय व आध्यात्म का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को आत्मिक बल की प्राप्ति तथा अपने अधीनस्थ कर्मचारी व सेवकों का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को सेवकों की शुभ कामनाऐं भी प्राप्त होती हैं। राहु ग्रह मन की असमंजस स्थिति से दूर करता है। यह दादा-दादी का प्रतिनिधि ग्रह है। उनका आशीर्वाद प्राप्त होता है। जिसको त्वचा संबंधी रोग या कोढ़ जैसी बीमारी भी हो गयी हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा संशय की स्थिति में संशय से मुक्ति दिलाता है।

गोमेद को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है तथा राहु ग्रह शनि के समान माना जाता है। गोमेद राहु का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सांयकाल शनि की होरा में श्रेष्ठ होता है। गोमेद को यदि शनिवार के साथ-साथ राहु के नक्षत्र अर्थात् आर्द्रा, स्वाती और शतभिषा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

गोमेद को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, राहु के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

राहु का मंत्र - ऊँ रां राहुवे नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि राहु से संबंधित पदार्थ जैसे काले तिल, सरसों का तेल, सवा मीटर नीले कपड़े का दान करें तो गोमेद की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन राहु का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और सरस्वती जी की आराधना करें तो यह गोमेद की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रतिदिन प्रातःकाल कबूतरों को दाना, चीरियों को आटा व मछलियों को आटे की गोली खिलायें तो और अधिक शुभकारी होगा।

कन्या लग्न वाले जातक यदि गोमेद की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं संतान सुख से परिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली कन्या लग्न की है। कन्या लग्न पर बुध का प्रभाव होने से आप अत्यंत बुद्धिमान होते हैं। आपका व्यक्तित्व ऐसा होता है कि कोई भी सहजता से आपकी ओर आकर्षित हो जाता है। आपका मस्तिष्क अत्यंत रचनात्मक होता है। पृथ्वी तत्त्व होने से जिस प्रकार पृथ्वी सभी को धारण करती है उसी प्रकार आपके अन्दर भी सहनशीलता कूट-कूट कर भरी होती है। वायु प्रकृति होने से आप स्वयं को हर परिस्थिति में ढाल लेते हैं। सभी को माफ करने का स्वभाव, विपरीत परिस्थितियों में धैर्य रखना एवं समस्याओं का समाधान निकालना की क्षमता आपको विशिष्ठ व्यक्तित्व बनाता है। लग्नेश बुध के कारण भाषा पर अच्छी पकड़ एवं वाणी की कुशलता तथा किसी भी बात का तर्कपूर्ण तथ्य आप चाहते हैं।

कुंडली का 6, 8 व 12 वां भाव त्रिक भाव होने के कारण विशेष अशुभता लिए होते हैं। आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्टेश शनि है, अष्टमेश व तृतीयेश मंगल तथा द्वादशेश सूर्य हैं। इन भावों की अशुभता आपके जीवन में रोग, ऋण, शत्रु, आयु, बाधाएं, शोक, स्वास्थ्य हानि, अस्पताल, कोर्ट-कचहरी, जेल, व्यय और हानियों का विश्लेषण किया जाता है। त्रिक भाव के स्वामी जिस भाव में जाते हैं, उसके शुभ फलों का कुछ न कुछ नाश अवश्य करते है। जिसके फलस्वरूप आपको मानसिक, सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ता हैं। 6, 8 व 12 भावों में से 8 वां भाव सबसे अधिक दुष्ट/अशुभ होता हैं।

आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्टेश शनि है, पंचमेश- षष्ठेश शनि आपको विद्या, बुद्धि, विवेक, वाणी, संतान, भय, ऋण, रोग, पाप कर्म, संघर्ष, कष्ट, परिश्रम, धैर्य, मामा व ननिहाल पक्ष के लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता हैं।

अष्टमेश व तृतीयेश मंगल आपके पराक्रम, पुरुषार्थ में कमी करता हैं, साथ ही बाहुबल, भाई-बहन के सुखों में कमी, अस्पताल, पुलिस-कोर्ट कचहरी के मामले परेशानियों का कारण बन सकते हैं।

द्वादशेश सूर्य, द्वादश भाव का स्वामी सूर्य नेत्र रोग, व्यय, हानि, सरकारी दंड, कारागार, सम्बन्ध विच्छेद का कारक बन सकता हैं।

गुरु आपके छठे भाव में है, गुरु की यह स्थिति आपको शत्रुओं की अधिकता, शत्रुविजयी, धन संचयी, पदवृद्धि, बुद्धिमान, विचारवान, भाग्यवान और आध्यात्मिक भाव प्रदान कर रहा हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 3, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती द्वितीय ढैया	03/11/2010-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती प्रथम ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती द्वितीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढेसाती तृतीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------

तृतीय चक्रः

साढेसाती द्वितीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
साढेसाती प्रथम ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	स्वास्थ्य
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	धन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	सुख
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	दुर्घटना
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	व्यय

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है। यह भाव पराक्रम मित्र एवं भाई बहनों का प्रतिनिधि भाव है तथा मंगल इनका कारक है जिससे तृतीय भाव में मंगल की स्थिति प्रायः शुभ मानी जाती है। अतः इसके प्रभाव से आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्य कलापों को निर्भय होकर सम्पन्न करेंगी तथा इनमें आपको समय समय पर उचित सफलता भी प्राप्त होगी। साथ ही भाई बहनों से भी आपको आवश्यक सुख एवं सहयोग मिलेगा तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप संचार साधनों को भी अर्जित करेंगी।

कुंडली में तृतीयस्थ मंगल की चतुर्थ दृष्टि षष्ठ भाव पर पड़ेगी। इसके प्रभाव से शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ ही प्रतियोगी परीक्षाओं मुकद्दमों या चुनाव आदि में आपको जीवन में सामान्यतया सफलताएं मिलती रहेंगी साथ ही इच्छित मात्रा में धनऐश्वर्य की भी प्राप्ति होगी। परन्तु पित गर्मी या रक्त विकार आदि से आप यदा कदा शारीरिक कष्ट की अनुभूति कर सकती हैं। नवम भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से धर्म एवं धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में ही रहेगी तथा भाग्य की अपेक्षा आप कर्म करने पर अधिक विश्वास करेंगी। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप स्वपराक्रम एवं योग्यता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगी यद्यपि इनमें आपको न्यूनाधिक समस्याओं एवं व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु अन्ततोगत्वा आप अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल रहेंगी। पिता के स्वास्थ्य की दृष्टि से यह स्थिति मध्यम रहेगी परन्तु समाज में वे एक आदरणीय पुरुष होंगे तथा सभी लोग उनसे प्रभावित रहेंगे।

इस प्रकार मंगल की इस स्थिति के प्रभाव से आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुख शान्ति से परिपूर्ण रहेगा तथा परिवार का यथोचित पालन करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ

ही पारिवारिक जनों से आपको यथोचित सहयोग एवं प्रोत्साहन मिलता रहेगा। जिससे उत्साह पूर्वक आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगी।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शंखपाल नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी दुःखमय हो जाता है। माता-पिता एवं पारिवारिक सदस्य से कभी-कभी जातक नुकसान प्राप्त करता है। विद्याध्ययन में थोड़ी बहुत बाधा आती है। नौकर चाकर सवारी आदि से भी जातक को कोई न कोई चिन्ता परेशानी घेरे रहती है।

इस योग के कारण जमीन-जायदाद, चल-अचल, घर-द्वार सम्बन्धी वस्तुओं पर कभी-कभी थोड़ा बहुत परेशानी आती रहती है। जातक अनेक कामों को एक साथ करता है। पर कोई भी काम प्रायः पूरा नहीं होता है।

इस योग के प्रभाव से जातक के शरीर में कभी कोई रोग व्याधि घेर लेती है। जिसमें सामान्य से थोड़ा विशेष खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। अर्थात नाजुक हो जाती है और कालान्तर में पुनः आर्थिक स्थिति सामान्य हो जाती है।

इसके प्रभाव से जातक को बेवजह चिन्ता-परेशानी ग्रसित कर लेती है। कार्यारम्भ में अनेक प्रकार के व्यवधान उपस्थित हो जाते हैं। जो कालान्तर में वे व्यवधान स्वतः नष्ट हो जाते हैं। जातक कितना भी परिश्रम कर ले पर सुख प्राप्ति में बाधा व संघर्ष की स्थिति बनी रहती है। इस योग के प्रभाव से व्यवसाय के क्षेत्र में जातक को सफलता मिलती है और राजनीति एवं नौकरी में सफलता प्राप्त होती है और सामाजिक मान सम्मान भी प्राप्त होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक

करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।

11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक तीन होने से अंक ज्योतिष के आधार पर आपका मूलांक तीन होता है। मूलांक तीन का स्वामी बृहस्पति ग्रह है। बृहस्पति या गुरु ग्रह के प्रभाववश आप अनुशासन के मामले में काफी कठोर रहेंगी तथा अपने अधिनस्थों से सख्ती से कार्य लेंगी। काम में ढील या शिथिलता बर्दाश्त नहीं करेंगी। इस कारण कभी कभी आपके मातहत ही आपसे शत्रुता करने लगेंगे।

आप एक महत्वाकांक्षी महिला होंगी और दूसरों पर शासन करने की आपकी सहज इच्छा रहेगी। गुरु ग्रह के प्रभाववश आपकी विचारधारा धार्मिक रहेगी तथा विद्या, अध्ययन, अध्यापन, बौद्धिक स्तर के कार्य तथा धर्म-कर्म के क्षेत्र में आपको अच्छी उपलब्धियाँ एवं ख्याति प्राप्त होगी। मानसिक रूप से आप काफी संतुलित एवं विकसित महिला होंगी तथा किसी भी विषय को समझने की आप में विशेष क्षमता रहेगी। तर्क एवं ज्ञान शक्ति आपकी अच्छी रहेगी। आप मन से किसी का भी अहित नहीं करेंगी और दूसरों की भलाई करने में भी अपना समय देती रहेंगी।

दान-पुण्य के कार्य भी आप काफी करेंगी। सामाजिक स्थिति आपकी काफी अच्छी रहेगी। समाज में आप अग्रणी एवं मुखिया पद का निर्वहन करना अधिक पसन्द करेंगी। दूसरों को सच्ची सलाह देना आप अपना धर्म समझेंगी। स्वभाव से आप शान्त, कोमल हृदय, मृदुवाणी एवं सत्यवक्ता होंगी। सत्य के मार्ग पर आप चलते हुये कष्टों को भी सहन करेंगी एवं अन्त में विजयश्री को प्राप्त करेंगी। स्वास्थ्य आपका साधारणतः अनुकूल ही रहेगा। लेकिन कभी-कभी मंदाग्नि, जठराग्नि, उदर विकार इत्यादि रोगों का सामना करना पड़ेगा।

भाग्यांक आठ का स्वामी शनि ग्रह को माना गया है। शनि ग्रह अति धीमा होने से तीस वर्ष में एक राशिपथ भ्रमणचक्र पूर्ण करता है। इसके प्रभाव से आपका भाग्योदय भी धीरे-धीरे होगा। आप भले ही कितनी भी गरीबी में उत्पन्न हुई हों आपका भाग्य सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ता चला जायेगा। इस मध्य रुकावटें भी आयेंगी, जिन्हें आप धैर्य एवं अपने श्रम से पार कर लेंगी। आलस्य एवं निराशा आपकी तरक्की की बाधाऐं रहेंगी। इन पर विजय प्राप्त करना आपकी सबसे बड़ी उपलब्धि होगी।

आप अपने कार्यक्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण उपलब्धियों को प्राप्त करेंगी। आपकी सभी सफलताएं विध्नों से युक्त होते हुये भी आप आसानी से अपनी तरक्की के रास्ते स्वयं निर्मित कर लेंगी। आपका भाग्योदय 35 वर्ष की अवस्था के पश्चात ही होगा। बचपन की अपेक्षा मध्य तथा अन्तिम अवस्था आपके भाग्योदय में विशेष सहायक होगी। अन्तिम अवस्था आपकी अच्छी रहेगी एवं धन सम्पत्ति का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी।

आपका मूलांक 3 है तथा आपका भाग्यांक 8 है। मूलांक 3 का स्वामी गुरु तथा भाग्यांक 8 का स्वामी शनि है। मूलांक 3 और भाग्यांक 8 के बीच शत्रु संबंध है। इसके प्रभाववश कभी आपका मूलांक साथ देगा, तो कभी आपका भाग्यांक साथ देगा और कभी-कभी इन दोनों अंकों से कुछ शुभ-अशुभ घटनाएं घटित होंगी। साधारणतः, शनि-गुरु के प्रभाववश,

रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आप योग्य महिला होते हुए भी आपकी तरक्की धीरे-धीरे होगी। भले ही आप गरीब घर में पैदा हुई हों, लेकिन प्रौढ़ावस्था तक पहुंचते-पहुंचते आप काफी स्थायी धन-संपदा एकत्रित कर लेंगी। आपके विचारों में गहराई रहेगी एवं जो भी कार्य आप करेंगी, उसको स्थायित्व देने की आपकी पूरी-पूरी कोशिश रहेगी। असफलताओं को आप आसानी से सहन नहीं कर पाएंगी, लेकिन उनसे सीख अवश्य प्राप्त करेंगी। अपने कार्यक्षेत्र में आपका एक ही लक्ष्य रहेगा, कि आप हमेशा सफल रहें और दूसरे लोग आपका गुणगान करें। सामाजिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में आप एक प्रगतिशील रुढ़िवादी, आधुनिक महिला के रूप में ख्याति अर्जित करेंगी। आपका कार्यक्षेत्र कैसा भी हो, आपको अपनी मेहनत पर विश्वास रहेगा एवं नीचे से ऊपर की ओर उठ कर ऊंचाइयों को प्राप्त करने में आप सक्षम रहेंगी।

आपका भाग्योदय 26 वर्ष की अवस्था से प्रारंम्भ हो कर 35 वर्ष पर विशेष उन्नति प्राप्त करेगा तथा 44 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 3 की मित्रता 6 एवं 9 से है तथा भाग्यांक 8 की मित्रता 1 एवं 4 से है। अतः आपके जीवन में 1, 3, 4, 6, 8, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से शत्रु संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के शुभ फलों में थोड़ी-बहुत न्यूनता आएगी। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्ही अंकों की तारीख, मास, वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगी, तो पाएंगी कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष, या दिन घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, मार्च, अप्रैल, जून, अगस्त, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 3, 4, 6, 8, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71

9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

सूर्य 21 नवंबर से 20 दिसंबर तक धनु राशि में एवं 19 फरवरी से 20 मार्च तक मीन राशि में तथा 21 जून से 20 जुलाई तक कर्क राशि में पाश्चात्य मत से रहता है। भारतीय मत से यह 15 दिसंबर से 13 जनवरी तक धनु में एवं 14 मार्च से 12 अप्रैल तक मीन राशि में तथा 16 जुलाई से 16 अगस्त तक कर्क राशि में रहता है। धनु एवं मीन राशियां गुरु का स्वस्थान अथवा अपना घर है। कर्क राशि गुरु का उच्च स्थान है। अतः उपर्युक्त समय में मूलांक तीन प्रभावियों के लिए सबसे अधिक प्रभावकारी एवं लाभप्रद समय रहता है। इस काल में कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य इत्यादि करना आपके लिए विशेष योगकारक रहेगा।

अनुकूल दिवस

गुरुवार, शुक्रवार, मंगलवार के दिन आपके लिए विशेष शुभ फलदायक रहेंगे। यदि आपकी अनुकूल तारीखों में से ही किसी तारीख को गुरुवार, शुक्रवार, मंगलवार पड़ रहा हो तो ऐसा दिन आपके लिए अधिक अनुकूल तथा श्रेष्ठ फलदायक होगा।

शुभ तारीखें

किसी भी अंग्रेजी माह की 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखें किसी भी नये कार्य को प्रारंभ करने, महत्वपूर्ण या विशिष्ट व्यक्तियों से मिलने, पत्र इत्यादि लिखने हेतु शुभ रहेंगी। अतः यदि आप उपर्युक्त तारीखों में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य करती हैं तो शीघ्र सफलता मिलेगी।

अशुभ तारीखें

आपको किसी भी अंग्रेजी माह की 4, 8, 13, 17, 22, 26 एवं 31 तारीखें प्रतिकूल हो सकती हैं। अतः कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, उपर्युक्त तारीखों में संपन्न करना आपके लिए अहितकर रहेगा।

मित्रता या साझेदारी

आप ऐसे व्यक्तियों से मित्रता या साझेदारी स्थापित करें, जिनका जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24 27 एवं 30 तारीखों में, अथवा 15 दिसंबर से 13 जनवरी, 13 मार्च से 13 अप्रैल एवं 16 जुलाई से 16 अगस्त के बीच हुआ हो। ऐसे व्यक्ति आपके लिए अनुकूल सहयोगी तथा विश्वासपात्र सिद्ध होंगे। इस प्रकार के व्यक्तियों से आपकी मित्रता स्थायी एवं दीर्घ रहेगी तथा वे रोजगार, व्यवसाय, साझेदारी आदि में सहायक रहेंगे।

प्रेम संबंध एवं विवाह

आपको विवाह या प्रेम संबंध स्थापित करते समय यह देखना लाभप्रद रहेगा कि उस महिला का मूलांक 3,6 या 9 हो अथवा ऐसी महिला का जन्म किसी भी अंग्रेजी मास की

3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 या 30 तारीख को हुआ हो। इन दिनांकों में जन्मी स्त्रियां आपके लिए विशेष फलदायी और अच्छा साथ निभाने वाली रहेंगी।

अनुकूल रंग

आपके लिए अनुकूल रंग हल्का गुलाबी, चमकीला गुलाबी है। गुलाबी भी पूरा गुलाबी नहीं, बल्कि हल्का गुलाबी होना चाहिए। अतः आप ड्रॉइंग रूम के पर्दे, चादर, तकिये, बिछावन आदि इसी रंग के लें। हो सके तो इस रंग का रुमाल तो हर समय रखें। स्वास्थ्य की क्षीणता के समय भी आप हो सके तो इसी रंग के वस्त्र पहनें, जिससे आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपके लिए ऐसे मकान में रहना शुभ रहेगा जिसका मूलांक या नामांक 3 हो। ईशान कोण दिशा आपके लिए हमेशा शुभ रहेगी। अतः आप शहर की ईशान कोण दिशा में अपना निवास बना सकते हैं। इस दिशा में रोजगार-व्यापार संबंधी कार्य करना शुभ रहेगा। पहनने के वस्त्रों का चुनाव करते समय भूरा, पीला, सुनहरी रंगों के होने से आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा और यदि आप दीवारें, पर्दे, फर्नीचर का रंग भी ऐसा ही रखें तो आपके पारिवारिक वातावरण में खुशहाली आएगी।

शुभ वाहन नं

अगर आप यात्रा के दौरान कमरा इत्यादि बुक करवाते हैं, तो आपको चाहिए की कमरे का नंबर आपके मूलांक या मूलांक के मित्र अंक से मेल करने वाले अंकों का रहे। आपका मूलांक 3 है। मूलांक के मित्र अंक 6, 9 रहेंगे। आपके कमरे का नंबर 102= 3 इत्यादि होना चाहिए और यदि आप वाहन आदि का पंजीकरण इत्यादि करवाते हैं, तब उसके लिए भी शुभ अंक 5232 =3 रहेंगे। आपके लिए यही अंक यात्रा के वाहन के रहेंगे, तो आपकी यात्रा सुखमय कहलाएगी।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको चर्म रोग, दाद, खाज, खुजली, प्रमेह, ज़हरवाद, पित्त प्रकोप, शूल रोग, स्नायु निर्बलता, मानसिक उद्वेग, गुप्तेंद्रिय शैथिल्य, भोग के प्रति अरुचि, रक्त दोष जैसे रोग होंगे। रोग अशुभता कष्ट और विपत्ति के समय आपको विष्णु उपासना, पूर्णिमा व्रत, सत्यनारायण व्रत कथा श्रवण करना चाहिए।

व्यवसाय

वस्त्र उद्योग, ढाबे, रेस्टोरेंट, होटल, पान की दुकान, अध्यापन, उपदेशक, व्याख्याता, प्राध्यापक, राजदूत, मंत्री, कानून के सलाहकार, वकील, न्यायाधीश, सचिव, दूत कार्य, क्लर्क, चिकित्सा कार्य, बैंकिंग के कार्य, दलाल, आढ़त, विज्ञापनकर्ता, अभिनेता, सेल्समैन, टाइपिस्ट, स्टेनो, जल जहाज में कार्यकर्ता, पुलिस विभाग, दर्शनशास्त्री, प्रबंधक एवं जलीय व्यापार।

व्रतोपवास

बृहस्पतिवार को बृहस्पति अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। बृहस्पतिवार को पीले वस्त्र धारण कर व्रत करें। पीला भोजन ग्रहण करें एवं पीले पदार्थों का दान करें। यह व्रत तीन वर्ष, एक वर्ष या सोलह बृहस्पतिवारों को करें। यथाशक्ति पुत्रजीवी की माला पर गुरु मंत्र का जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

पुखराज आपके लिए मुख्य रत्न है। यदि पुखराज न मिले तब आप सुनेला, टाईगर आई, पीला हकीक धारण कर सकते हैं। इसे आप सोने की अंगूठी में चार से पांच रत्ती का बनवा कर दायें हाथ की तर्जनी उंगली को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप बृहस्पति ग्रह की उपासना करें अथवा विष्णु भगवान की आराधना करें। भगवान विष्णु के द्वादशाक्षरी मंत्र "ओम् नमो भगवते वासुदेवाय" का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा पूर्णमासी के दिन सत्यनारायण कथा का श्रवण करेंगे तो इस क्रिया को करने पर आप विभिन्न रोगों और समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवान विष्णु के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए गुरु के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु गुरु के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

गुरु गायत्री मंत्र - ऊँ अंगिरसाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप गुरु का ध्यान करें, मन में गुरु की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ गुरु को अनुकूल बनाने हेतु गुरु के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सौ आठ माला का हैं। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।। जप संख्या 10000।।

वनस्पति धारण

आप गुरुवार के दिन एक इंच लंबी नारंगी या केले की जड़ ला कर, पीले धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या स्वर्ण या पीतल के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे गुरु ग्रह के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक गुरुवार को एक बाल्टी या बर्तन में मुलेठी, सफेद सरसों तथा मालती के फूल आदि औषधियों का चूर्ण कर पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ गुरु के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आप कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध इन सबको मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

गुरु की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को गुरु के पदार्थ, पीला वस्त्र, सोना, हल्दी, घृत, पीले पुष्प, पीला अन्न, पुखराज, अश्व, पुस्तक, मधु, लवण, शर्करा, भूमि, छत्र आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

गुरु को अनुकूल बनाये रखने हेतु गुरु यंत्र को भोज पत्र पर अष्ट गंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में गुरुवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म चित्रा नक्षत्र के द्वितीय चरण में कन्या लग्नोदय काल हुआ था। लग्नोदय के साथ-साथ कन्या का नवमांश एवं वृषम (राशि) लग्न का भी उदय आपके जन्मकाल ही हुआ था। कन्या तथा वृष राशि के संयोजन से यह स्पष्ट हो रहा है कि यह सभी संयोग आपके अनुकूल है। आपके जन्म का प्रभाव यह भी निश्चित करता है कि आपकी अभिलाषा के अनुरूप आपका जीवन आरामदेह, फलदायी एवं आनन्द प्रियता के साथ व्यतीत हो सकता है।

आपका व्यक्तित्व आकर्षक है। आपकी उन्नत और चौड़ी ललाट तथा प्रभावशाली आंखे आपको सुव्यवस्थित बनाएंगी तथा आपके सम्पर्क में आनेवाले सभी प्राणी आपको एवं आपके व्यक्तित्व को पसंद करंगे।

आप व्यक्तिगत रूप से साहसी एवं व्यवहारिक महिला हैं। आप शक्ति संपन्न तथा सामुदायिक भावना की प्राणी हैं। आप किसी भी प्रकार के आयोजनों का दायित्व ग्रहण कर, उस कार्यक्रम अर्थात् योजना को पूर्ण सफल बना सकती हैं। आप में इतनी क्षमता विद्यमान है कि आप बड़ी उपलब्धि प्राप्त करेंगी, परन्तु आप किसी भी वस्तु को सुरक्षित रखने के योग्य नहीं हैं क्योंकि आप मात्र एक अति शक्ति सम्पन्न व्यक्ति ही नहीं बल्कि आप महान खर्चीली अर्थात् धन को (नाश) अपव्यय करने वाली प्राणी हैं। आप सदैव प्रभावशाली तरीके से किसी भी आयोजनों में सम्मिलित होकर मुफ्त में विशिष्टता प्राप्त करती हो। आप स्वयं के लिए तथा अपने परिवारिक सदस्यों के लिए अपने ढंग से वस्त्राभूषणादि पर बहुत खर्च करोगी। सम्प्रति आप ऐसा चाहती है कि हर परिस्थिति में अधिक से अधिक बहुत व्यय करें जो सामान्य जीवन के लिए उपयुक्त हैं।

तथापि आपमें एक छोटी सी नकारात्मक भावना विद्यमान है तथा यदा कदा आप सहजता पूर्वक इसे सहज समझ लेती हो। जब इस के संबंध में सावधानी बरतना अपेक्षित हो जाता है तो इस विषय को स्थगित कर देती हैं। आपको अपनी अकर्मण्यता वाली मुद्रा का परित्याग करना होगा। तब ही आप अपने कार्य व्यवसाय के संबंध में एकाग्रता प्राप्त कर सकेंगी। यह आपके लिए उच्चतम लाभजनक स्थिति प्रमाणित होगी। विशेषतः आपके जीवन का 33 वें से 38 वें वर्ष तक आपको सफलता की पराकाष्ठा तक पहुंच सकते हैं।

आप उच्चकोटि की धार्मिक प्राणी हैं। आप पराविज्ञान एवं ज्योतिष विज्ञान का ज्ञान प्राप्त करने के प्रति रूचिवान तथा आकर्षित है। आपकी धारणा परोपकारी कार्य के सम्पादन संबंध में तथा पिछड़े लोगों तथा दुर्बल श्रेणी के व्यक्तियों को मदद करने की रहती है।

आपके संबंध में गम्भीर रूप से विचारणीय है कि आप समसामयिकी अनुकूल व्यंग विनोद प्रिय वार्त्तालाप करके जन सामान्य के द्वारा उच्च मूल्यांकित की जाती हैं। अर्थोपार्जन के लिए आप निश्चित दिशा सुनिश्चित कर चुकी हैं। आप सदैव अपने पति एवं सन्तान से युक्त सुखद घरेलू जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगी।

आपके लिए उपयुक्त व्यवसायों में अच्छी प्रकार व्यवहारणीय धन्धा यथा खेल-कूद की सामग्री, मोटर पार्ट्स के अतिरिक्त पार्ट्स का व्यवसाय करना उत्तम होगा। पार्टनरशिप के व्यवसाय हेतु बुद्धिमान व्यक्ति के साथ संबंधित होकर वस्त्र विक्रय तथा आभूषण रत्नादि का धन्धा भी अनुकूल हो सकता है। यदि आप कोई नौकरी करना चाहती हैं तो चिकित्सक, अभियंता, वैज्ञानिक एवं रत्नाकर की सेवा धन्धा प्रारंभ कर सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य निःसन्देह अति उत्तम रहेगा। परन्तु कुछ वर्षों के पश्चात् शरीर का वाह्य सतह अन्य प्रकार के रोगादि से प्रभावित हो सकता हैं। आप किडनी या मूत्रासय रोग से भी ग्रसित न होवें। अस्तु इन संभावित रोगादि के प्रकोप से सर्तक रहे।

आपके लिए साप्ताहिक वारों में भाग्यशाली दिन बुधवार तथा शुक्रवार है। परन्तु आपको रविवार, गुरूवार, मंगलवार एवं सोमवार के दिनों का परित्याग करना चाहिए क्योंकि ये चारों दिन आपके लिए अनुकूल नही है। शनिवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

आपके लिए भाग्यशाली रंग पीला, सफेद, सूआपंखी एवं हरा रंग उत्तम है। इसके अतिरिक्त रंग लाल, काला एवं नीला रंग त्याजनीय है। आपके लिए अंकों में 2, 3, 5, 6 एवं 7 अंक आपके लिए लाभप्रद है। परन्तु अंक 1 एवं 8 अंक हानिकारक है।

ग्रह फल

सूर्य

द्वितीय भाव में सूर्य हो तो जातक भाग्यवान्, सम्पत्तिवान्, मुखरोगी, झगड़ालू, नेत्रकर्णदन्तरोगी, राजभीरु, घरेलू जीवन दुःखी एवं स्त्री के लिए कुटुम्बियों से झगड़ने वाला होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं उनकी आयु भी दीर्घ होगी। आपको वे सर्वदा विशेष स्नेह प्रदान करेंगे। साथ ही महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपको उनसे आर्थिक सहयोग भी प्रायः मिलता रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प तनाव दृष्टिगोचर होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए ही रहेगा कुछ समय उपरान्त स्वतः सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही सुख दुःख में आप उनकी आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान होता है।

कन्या राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर, रूपवान, धनी ईमानदार, मधुरभाषी, सदाचारी, धीर, विद्वान, सुखी, सुन्दर वक्ता अधिक कन्या सन्तान वाला, ज्योतिष एवं कला प्रेमी होता है।

आप के जन्म समय में चन्द्रमा लग्न में विद्यमान हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से उन्हें लम्बी आयु की प्राप्ति होगी। आपके जन्म के उपरान्त वे धन सम्पत्ति को भी प्राप्त करने में सफल होगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह एवं वात्सल्य रहेगा तथा जीवन के सभी शुभ एवं महत्व पूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप के परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं मतभेदों की प्रायः अल्पता ही रहेगी।

आप भी उनके प्रति मन में पूर्ण सम्मान तथा आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए प्रायः तत्पर रहेंगी। इससे आप लोगों का एक दूसरे के प्रति विश्वास आदि में वृद्धि होगी जिससे आजीवन मधुर संबंध बने रहेंगे। इससे आप परस्पर सहयोग भाव से जीवन में प्रसन्नता की प्राप्ति करेंगी।

मंगल

तृतीयभाव में मंगल हो तो जातक कटुभाष, भ्रतृकष्टकारक, प्रदीप्त जठराग्निवाला, बलवान्, बन्धुहीन, सर्वगुणी, साहसी, धैर्यवान् प्रसिद्ध एवं शूरवीर होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म के समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा शक्त, साहस एवं पराक्रम का भाव उनमें विद्यमान रहेगा। साथ ही यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में समस्त शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख के समय में भी आप उनसे पूर्ण सहायता प्राप्त करेंगी।

आप भी उनके प्रति हमेशा स्नेह का भाव रखेंगी एवं उनकी अवसरानुकूल सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें तनिक कटुता या तनाव भी आयेगा लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वयं ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप उनके सुख दुःख की सहयोगी रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग देती रहेंगी।

बुध

द्वितीयभाव में बुध हो तो जातक सुखी, सुन्दर, वक्ता, साहसी, सत्कार्यकारक, संही, दलाल या वकील का पेशा करने वाला, मिष्टाभभोजी, गुणी एवं मितव्ययी होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

कुम्भ राशि में गुरु होतो जातक विद्वान परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचार करने वाला डरपोक प्रवासी, कपटी एवं रोगी होता है।

शुक्र

द्वितीयभाव में शुक्र हो तो जातक भाग्यवान्, साहसी, समयज्ञ, मिष्टान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, दीर्घजीवी, कवि, कुटुम्बयुक्त, सुखी एवं धनवान् होता है।

तुला राशि में शुक्र हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

कन्या राशि में शनि हो तो जातक मितभाषी, परोपकारी, लेखक, कवि, सम्पादक, धनवान्, बलवान्, निश्चित कार्य कर्त्ता, ईर्ष्यायलु स्वभाव, असभ्य, निर्बलस्वास्थ्य एवं पुराने विचारों वाला होता है।

राहु

चतुर्थभाव में राहु हो तो जातक असन्तोषी, दुखी, अल्पभाषी, मिथ्याचारी, उदरव्याधियुक्त, कपटी, मातृक्लेशयुक्त एवं कूर होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

केतु

दशम भाव में केतु हो तो जातक अभिमानी, परिश्रमशील मूर्ख, पितृद्वेषी, दुर्भागी, संन्यास लेना एवं योगी होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। सामान्यतया कन्या लग्न में उत्पन्न जातक अध्ययनशील प्रवृति के होते हैं तथा विभिन्न विषयों के ज्ञानार्जन में ये तत्पर रहते हैं। सदगुणों से ये सम्पन्न रहते हैं। ये जातक सौभाग्य से युक्त रहते हैं तथा सांसारिक शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में इनको अल्प परिश्रम से ही सफलता प्राप्त हो जाती है जिससे इनके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहते हैं तथा जीवन में इच्छित धनैश्वर्य एवं सुख संसाधनों को अर्जित करते हैं फलतः इनका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होता है। समाज में ये सम्माननीय तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति होते हैं। राजनीति में इनकी रूचि अल्प ही रहती है परन्तु अपनी तीक्ष्ण बुद्धि के कारण प्रशासनिक कार्यों में सहयोग प्रदान करते रहते हैं क्योंकि ये कठिन से कठिन समस्या का समाधान करने में समर्थ रहते हैं। साथ ही भावुकता की भी इनमें न्यूनता रहती है तथा समस्त कार्य बुद्धि से संचालित होते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे। अध्ययन के प्रति आपकी रूचि होगी फलतः कला संगीत एवं लेखन आदि कार्यों में परिश्रमपूर्वक सफलता प्राप्त करेंगी। आप एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा जीवन में सर्वत्र उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे। यदि आप नौकरी या कोई कार्य नहीं करती है तो उपरोक्त योग आपके पति पर घटित होंगे।

आपकी बुद्धि अत्यंत ही तीव्र होगी तथा गूढ़ विचारों या समस्याओं को सुलझाने में समर्थ होंगी। जीवन में भावुकता से आप कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगी तथा अत्यंत ही सोच विचारकर अपने कार्यों को पूर्ण करेंगी।

लग्न में शनि की स्थिति के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। साथ ही आकर्षक स्वरूप एवं व्यक्तित्व से भी युक्त रहेंगी। अपने संभाषण में आप मधुर एवं अल्प शब्दों का प्रयोग करेंगी। धनैश्वर्य से आप सुसम्पन्न होंगी तथा सांसारिक एवं भौतिक सुखों का उपभोग करने में समर्थ होंगी। लेखन या सम्पादन संबंधी कार्यों से आपको अतिरिक्त लाभ उन्नति एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही आप प्रायःस्थिर एवं स्थाई कार्य करना पसन्द करेंगी।

आपके प्रवृति परोपकारी होगी तथा अवसरानुकूल अन्य जनों की सेवा सहायता तथा परोपकार संबंधी कार्यों में तन मन धन से अपना सहयोग प्रदान करेंगी। आप सत्कर्मों को सम्पन्न करेंगी तथा पुत्र संतति से आपको प्रसिद्धि प्राप्त होगी। साथ ही विदुषी चतुर एवं विचारक के रूप में भी आपको समाज में ख्याति तथा प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त नैतिक मूल्यों का अनुपालन करने में भी तत्पर रहेंगी।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा अवश्य रहेगी परन्तु धार्मिक कृत्यों तथा अनुष्ठानों को अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगी। शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी को पराजित करने में समर्थ होंगी तथा वे आपसे प्रभावित होंगे। मित्र वर्ग में आप एक आदरणीय महिला होंगी तथा उनसे आपको पूर्ण लाभ एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। इस प्रकार आप अपनी विद्वता बुद्धिमता परिश्रम एवं पराक्रम

से जीवन में वांछित सफलताओं को प्राप्त करेंगी तथा समस्त भौतिक सुखों का उपभोग करते हुए अपने जीवन को व्यतीत करेंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में तुला राशि उदित हुई है जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आपका पारिवारिक जीवन सुख शान्ति एवं समृद्धि से युक्त रहेगा तथा सभी पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे तथा एक दूसरे को अपना पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। आपकी वाणी अत्यंत ही मधुर एवं प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगी तथा अपने वाक्चातुर्य से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सिद्ध करने में भी सम्पन्न रहेंगी। इसके साथ ही प्रौढ़ावस्था में आप अल्प मात्रा में नेत्र संबंधी कष्ट की भी अनुभूति कर सकती हैं।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा धार्मिक तथा शुभ एवं मांगलिक कार्यो को समय समय पर सम्पन्न करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त अन्य उत्सवों की भी प्रिय होंगी तथा ऐसे उत्सवों के आयोजन भी समय समय पर होते रहेंगे। जीवन में आपको पैतृक सम्पति भी अर्जित होगी। साथ ही अपने परिश्रम पराक्रम एवं सौभाग्य से भी वांछित मात्रा में धनऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करने में सफल रहेंगी। परिवार को सुख सुविधा तथा प्रसन्नता प्रदान करना आपका मूल उददे्श्य रहेगा। समाज में आप एक आदरणीया महिला होंगी तथा सौभाग्य से अपना जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगी। साथ ही व्यापार संबंधी लाभ भी समय समय पर होता रहेगा।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में वृश्चिक राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति प्रबल रहेगी तथा किसी भी वस्तु को आप चिर काल तक नहीं भूलेंगे। आप एक आत्म विश्वासी, साहसी तथा पराक्रमी महिला होंगी तथा अपने इन्हीं गुणों से सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगी तथा इनमें आपको इच्छित सफलता भी प्राप्त होगी। मंगल के प्रभाव से आपकी निर्णय लेने की शक्ति दृढ़ रहेगी तथा मस्तिष्क भी हमेशा सक्रिय एवं सजग रहेगा।

जीवन में भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगी तथा उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। साथ ही आप भी उनका पूरा ध्यान रखेंगी एवं सुख दुख में उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके प्रति वे हमेशा आज्ञाकारी, विश्वसनीय तथा कर्तव्य परायण रहेंगे। अतः पारिवारिक शान्ति तथा समृद्धि के लिए उनकी गलतियों को भी क्षमा कर देंगी। साथ ही जमीन जायदाद आदि से भी युक्त रहेंगी एवं इससे आपको प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होगा। आप परेशानी, क्रोधावस्था तथा अनावश्यक वादविवाद आदि में अप्रिय स्थिति से बचने में समर्थ रहेंगी। अपनी नेतृत्व प्रतिभा तथा अन्य गुणों से समाज में आप एक गणमान्य महिला होंगी। आधुनिक संचार संबंधी महत्वपूर्ण उपकरण यथा टेलीफोन, टेलीविजन तथा वाहन आदि से आप युक्त रहेंगी तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगी । यदा कदा संगीत के प्रति भी आप रुचिशीलता का प्रदर्शन करेंगी । दूर समीप की यात्राओं से भी आपको लाभ होगा। इसके अतिरिक्त आप पराक्रमी कार्यो को सम्पन्न करेंगी तथा अन्य जनों से यदा कदा विवाद भी होगा अतः सतर्क रहें।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति हैं तथा राहु भी नीचराशि में चतुर्थभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से मध्यावस्था तक आप सांसारिक एवं भौतिक सुखों का अल्प मात्रा में ही उपभोग करेंगी। लेकिन आप एक परिश्रमी एवं बुद्धिमान महिला हैं। अतः आपको निराश नहीं होना चाहिए तथा उचित समय की बिना किसी तनाव के प्रतीक्षा करनी चाहिए।

जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति भी आप स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से ही अर्जित करेंगी तथा मध्यावस्था के बाद ही अपनी सम्पत्ति से किंचित सन्तुष्टि की अनुभूति कर सकती है। नाना या नानी से आपको न्यूनाधिक मात्रा में चल या अचल सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। इसके अतिरिक्त आपको विवादित सम्पत्ति का उपयोग नहीं करना चाहिए अन्यथा इससे आपके लिए काफी परेशानियां उत्पन्न हो सकती है।

आपको प्रारंभ में मध्यम गृह की प्राप्ति होगी परंतु मध्यावस्था के बाद आप आधुनिक गृह में निवास करेंगी जो आधुनिक सुख सुविधाओं से युक्त होगा। इसकी सुन्दरता एवं आकर्षण को बनाएं रखने में निरंतर तत्पर होंगी। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा परंतु पड़ोसियों से संबंधों में मधुरता कमी ही होगी। आपका वाहन सुख भी मध्यम होगा परंतु मध्यावस्था में इसमें वृद्धि होगी।

आपकी माता जी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं भौतिकवादी विचारों की महिला होंगी तथा अपनी व्यवहार कुशलता से सबको प्रभावित तथा प्रसन्न करने में समर्थ होंगी। आप के प्रति यद्यपि उनका पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा उन्नति में भी महत्व पूर्ण योगदान होगा परंतु आप लोगों के आपस में काफी मतभेद रहेंगी जिससे संबंधों में मधुरता कम ही होगी।

विद्याध्ययन के प्रति यद्यपि प्रारंभ में आप काफी रूचिशील होंगी परंतु बड़ी कक्षाओं में आप काफी परिश्रम से ही सफलताएं अर्जित करने में समर्थ होंगी। अतः स्नातक परीक्षा आप अत्यधिक परिश्रम से ही उतीर्ण कर पाएंगी। यदि आप शिक्षा के क्षेत्र में तकनीकी पाठ्यक्रम का अध्ययन करें तो इसमें आपको अल्प परिश्रम से ही काफी सफलता मिलेगी तथा आप में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी जिससे भविष्य उज्ज्वल होगा।

नैसर्गिक पापीग्रह राहु की नीचराशि में चतुर्थभाव में स्थिति के प्रभाव से युवावस्था के बाद आपको रक्त चाप या हृदय संबंधी परेशानियों से कष्ट की अनुभूति होगी। अतः यदि आप प्रारंभ से ही उचित खान-पान रखें तथा रक्त एवं हृदय को प्रभावित करने वाले द्रव्यों का उपयोग न करें तो ऐसी समस्याओं से आप न्यूनाधिक रूप से सुरक्षित होंगी तथा सामान्य जीवन प्रसनता पूर्वक व्यतीत होगा।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा अपने समस्त कार्यो को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। आपकी बुद्धिमता से अन्य लोग भी आपसे प्रभावित होंगे तथा वांछित सम्मान प्रदान करेंगे। आप शीघ्रनिर्णय लेने तथा कठिन से कठिन समस्या को आसानी से सुलझाने में भी आप समर्थ होंगी। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म शास्त्र आदि में आपकी रूचि होगी तथा परिश्रम पूर्वक इनके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगी। विज्ञान, गणित या ज्योतिष के क्षेत्र में भी आपकी रूचि होगी एवं इनके ज्ञानार्जन में आप पूर्ण परिश्रम करेंगी। इससे आपकी विद्वता में वृद्धि होगी तथा सामाजिक प्रतिष्ठा भी बढेगी।

शनि की राशि के पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रूचि होगी। आप मनोरंजन एवं आत्म सन्तुष्टि के लिए ऐसे सम्बन्धों को स्थापित करेंगी। आपके प्रेम में मर्यादा तथा नैतिकता का भाव बना रहेगा तथा एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक आकर्षण की प्रबलता होगी। अतः ऐसे सम्बन्धों की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है। इससे आपका दाम्पत्य जीवन सुखी होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर सन्तति की प्राप्ति होगी तथा सन्तति में कन्या सन्तति की अधिकता होगी। आपके बच्चे बुद्धिमान, गुणवान एवं चतुर होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनके आज्ञापालन में सदैव तत्पर रहेंगे। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को माता-पिता की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर सद्भाव एवं विश्वास बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति बच्चों का विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान माता के माध्यम से ही करना पसन्द करेंगे लेकिन दोनों के प्रति सम्मान बराबर होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में माता-पिता की तन-मन-धन से सेवा करेंगे तथा आपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली मानी जायेंगी।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी सन्तति प्रतिभाशाली होगी तथा प्रारम्भ से ही शिक्षा के क्षेत्र में नवीन उपलब्धियां अर्जित करेंगी। आप भी बच्चों की शिक्षा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा उन्हें आधुनिक संस्थाओं में पढ़ाएंगी। अतः आपके परिश्रम एवं बच्चों की लगन से वे अपनी आजीविका क्षेत्र में वांछित सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। वे अपने उत्तम कार्य-कलापों तथा व्यवहार से अन्य जनों को प्रभावित तथा प्रसन्न रखेंगे तथा उनसे वांछित स्नेह एवं सम्मान अर्जित करेंगे। अतः बच्चों की ओर से आप सुखी रहेंगी।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा आयु भी दीर्घ होगी। आप एक दयालु प्रवृत्ति की महिला होंगी परन्तु यदा वार्तालाप में कठोर शब्दों का प्रयोग कर सकती है इससे कई लोग आपसे विरोध की भावना रखेंगे। साथ ही लोग आपके वैभव एवं खुशाहली से ईर्ष्या के कारण भी आपसे शत्रुता का भाव रखेंगे। यद्यपि आप एक सम्मानीया महिला होंगी तथापि आपका विरोधी पक्ष भी प्रबल रहेगा। आप अपने पारिवारिक सदस्यों पर अत्यधिक व्यय करेंगी। अतः इसी परिपेक्ष्य में आपको ऋण आदि भी लेना पड़ सकता है। इसके भुगतान में विलम्ब के कारण ऋणदाता द्वारा आपके सम्मान में हानि की संभावना हो सकती है लेकिन अपनी प्रतिभा तथा अधिकार के बल पर आप इन समस्याओं का सामना एवं समाधान करने में समर्थ रहेंगी।

आपका सेवक वर्ग आज्ञाकारी रहेगा तथा पूर्ण ईमानदारी से आपकी सेवा करने में तत्पर रहेंगे। अपने कार्य से वे आपको सन्तुष्ट रखेंगे लेकिन यदा कदा इनसे मान हानि की भी संभावना रहेगी अतः इनसे व्यक्तिगत कलह तथा कीमती वस्तुओं को हमेशा दूर रखना चाहिए। मुकद्दमे आदि कार्यो के प्रति आप लापरवाह रहेंगी परन्तु आपको ऐसे मामलों का सावधानी एवं सतर्कता पूर्वक अवलोकन करना चाहिए तथा अपने व्यापारिक तथा अन्य हिसाब को सही रखना चाहिए। यदि आप इस प्रकार से नियमानुसार कार्य सम्पन्न करती रहें तो आपको किसी भी क्षेत्र में कोई विशेष परेशानी नहीं होगी। साथ ही फौजदारी मुकद्दमे में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है।

मामा मामियों से आपके संबंध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे। प्रत्यक्ष रूप से तो आपके प्रति वे सदभावना का प्रदर्शन करेंगे परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से उनकी आपके सहयोग आदि में कोई भी रूचि नहीं रहेगी। अतः संबंधों में मधुरता रखने के लिए बुद्धिमता का प्रयोग करना चाहिए। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में आप गुर्दे तथा उदर संबन्धी परेशानी की अनुभूति कर सकती है। अतः युवावस्था में खान पान संबंधी परहेज अवश्य रखें।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है सामान्यतया सप्तम भाव में मीन राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील वात कफ प्रकृति वाला आस्तिक एवं धनवान होता है साथ ही स्वभाव से वह शांत, कर्तव्यपरायण एवं सांसारिक कार्यो में दक्ष होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति सुशील एवं शांत स्वभाव के होंगे। सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करने में वह बुद्धिमता का प्रर्दशन करेंगे। जिससे शीर्घ ही कार्य में सफलता प्राप्त होगी। बुध के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी रहेगा।

आपके पति का वर्ण गौरवर्ण होगा तथा कद भी सामान्य रहेगा साथ ही शारीरिक संरचना उनकी आकर्षक होगी तथा शरीर में पुष्टता बनी रहेगी जिससे उनके व्यक्तित्व एवं सौन्दर्य के आकर्षण में वृद्धि होगी। कला एवं संगीत में उनकी रूचि होगी तथा इस पर अपना समय भी व्यतीत करेंगे इसके अतिरिक्त भौतिक एवं संदर वस्तुओं के प्रति भी उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा।

आपका विवाह विज्ञापन के द्वारा सम्पन्न होगा। आप स्वेच्छा से प्रेम विवाह भी सम्पन्न कर सकती हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी होगा एवं एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं सम्मान की भावना रहेगी। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यो को एक दूसरे की सलाह तथा सहमति से सम्पन्न करेंगे आपके पति के स्वभाव में सौम्यता रहेगी। जिससे संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार में सम्पन्न होगा तथा विवाह में मायके से आपको प्रचुर मात्रा में दहेज के रूप में धन सम्पति की प्राप्ति होगी एवं अन्यत्र से भी बहुमूल्य उपकरण तथा वस्तुएं उपहार में मिलेंगी। सास ससुर के साथ आपके औपचारिक संबंध बने रहेंगे।

सास ससुर के प्रति आपके पति का सेवा भाव रहेगा। तथा वह सुख दुख में उनका यथोचित ध्यान रखेंगे। साले एवं सालियों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखने में समर्थ रहेंगे।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी तथा लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रश्क्त होंगे।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपकी आध्यत्म ज्यौतिष या तंत्र मंत्र के प्रति विशेष रूचि नहीं रहेगी। इसका मुख्य कारण यह होगा कि आप अपने कार्य क्षेत्र में पूर्ण व्यस्त रहेंगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने कार्यो को सम्पन्न करेंगी तथा भाग्य की अपेक्षा कर्म पर ही अधिक विश्वास करेंगी। इस प्रकार व्यस्तता तथा तत्परता के कारण आपके पास समय का अभाव रहेगा। यदि आपके पास समय बचे तो आप अन्यत्र उसका सदुपयोग करना पसन्द करेंगी लेकिन आध्यात्म संबन्धी प्रवचनों का आप यदा कदा श्रवण कर सकती हैं। जीवन में आपको पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होगी तथा विस्तृत जमीन जायदाद की स्वामिनी बनेंगी। यदि आप इसका विक्रय भी करेंगी तो इससे आपको वांछित कीमत मिलेगी। इसकी कीमतों में निरन्तर वृद्धि के कारण इसे इच्छित कीमत पर बेचकर वांछित धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा ससुराल में किसी प्रकार की कमी नहीं होगी तथा सर्वप्रकार के सुख संसाधनों से वे युक्त रहेंगे। बीमा आदि करने से भी आपको इच्छित लाभ होगा। अतः समय समय पर आप अपना तथा महत्वपूर्ण वस्तुओं का मकान या अन्य का बीमा करवाती रहें। आपकी कुंडली में घर में चोरी आदि की समस्याएं अल्प रहेंगी तथापि सुरक्षा वश आपको बहुमूल्य वस्तुओं को सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए लेकिन दुर्घटना आदि के प्रति आपको पूर्ण रूप से सचेत रहना चाहिए अन्यथा न्यूनाधिक रूप से ऐसी घटना जीवन में घट सकती है लेकिन उससे कोई विशेष हानि नहीं होगी। आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा सामान्यतया अपना सांसारिक जीवन सुख पूर्वक ही व्यतीत करेंगी।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप धार्मिक प्रवृति की महिला होंगी तथा यह गुण आपको पैतृक एवं पारिवारिक संस्कारों से प्राप्त होगा। धार्मिक कार्य कलापों को आप श्रद्धा पूर्वक सम्पन्न करेंगी तथा दैनिक पूजा या पाठ आदि में भी तत्पर रहेंगी। यद्यपि युवावस्था में दैनिक पूजा या ध्यान करने में असमर्थ सी रहेंगी परन्तु ईश्वर के प्रति आपकी पूर्ण आस्था विद्यमान रहेगी। साथ ही आध्यात्मिक तथा ध्यान योग के प्रति भी रूचिशील रहेंगी तथा उपरोक्त विषयों के ग्रंथों का रूचि पूर्वक अध्ययन करेंगी। आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति भी प्रबल रहेगी तथा ज्यौतिष आदि शास्त्रों के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा इनका न्यूनाधिक ज्ञानार्जन में भी रूचिशील रहेंगी इसके अतिरिक्त आपके पूर्वाभास तथा भविष्य वाणियां भी सत्य सिद्ध होंगी।

उच्च शिक्षा प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगी तथा इसके द्वारा समाज में इच्छित मान सम्मान तथा प्रसिद्धि प्राप्त होगी। साथ ही तीर्थ स्थानों की भी आप यात्रा करेंगी जिससे आपको ज्ञान तथा लाभ अर्जित होगा। वैदिक साहित्य में भी आपकी रूचि रहेगी तथा वृद्धावस्था में अपना अधिकांश समय भगवत भजन में व्यतीत करेंगी आप अपने परिश्रम एवं सौभाग्य से वैभवशाली जीवन व्यतीत करने में भी समर्थ रहेंगी।

पौत्रों के द्वारा आपको इच्छित सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। साथ ही अपने पूर्व जन्म के पुण्यों के द्वारा इस जीवन में सुख एवं वैभव अर्जित करेंगी। इसके अतिरिक्त आप दीनों की सहायता करने वाली, दानी, सर्व अलंकरों से युक्त तथा अतिथि सेवा में तत्पर रहकर धार्मिक प्रवृति का अनुपालन करती हुई अपने जीवन को आनन्द पूर्वक व्यतीत करेंगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। साथ ही केतु भी नीचस्थ होकर दशम भाव में ही स्थित है। मिथुन राशि एवं केतु दोनों वायुतत्व प्रधान है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया के साथ साथ श्रमसाध्य में होगा लेकिन इसमें उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। साथ ही सामयिक परिवर्तन की भी आप इच्छा करेंगी। जिससे लाभ के साथ साथ यदा कदा परेशानी भी हो सकती है। अतः परिवर्तन बुद्धिमता पूर्वक करने चाहिए। इसके अतिरिक्त आप स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय को प्राथमिकता देंगी।

केतु की दशमभावस्थ स्थिति के प्रभाव से आजीविका की दृष्टि से आपके लिए वायुसेना, एयर लाइंस, रासायनिक क्षेत्र, खनिज एवं खान विभाग, कृषि विभाग एवं राजनीति का क्षेत्र उत्तम एवं अनुकूल रहेगा। यदि आप इन क्षेत्रों में अपनी आजीविका को प्रारंभ करेंगी तो इनमें आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको चाहिए कि यत्नपूर्वक इन्हीं क्षेत्रों एवं विभागों में आपने कार्य का चयन करें।

व्यापार में आपको लोहे का कार्य, कलात्मक वस्तुएं चित्रकारी का कार्य, खेती, बागवानी, एयर ट्रेवल एजेंसी, पेट्रोल पम्प, खाद्य पदार्थों के व्यापार से आपको वांछित लाभ एवं धन अर्जित होगा तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी। साथ ही आयात निर्यात संबंधी कार्य से भी आप इच्छित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगी।

दशम भाव में मिथुन राशि में केतु के प्रभाव से जीवन में आपको मान प्रतिष्ठा एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी अधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में समर्थ होंगी। साथ ही अपने क्षेत्र में आप एक सम्मानीय महिला मानी जाएंगी। इससे आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा लोग आपके प्रभाव को हार्दिक रूप से स्वीकार करेंगे। आपकी प्रसिद्धि भी समाज में व्याप्त होगी। लेकिन इसमें आपको किंचित विलम्ब एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ सकता है। अतः निराश नहीं होना चाहिए तथा परिश्रम एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए।

आपके पिता तेजस्वी बुद्धिमान एवं शिक्षित व्यक्ति होंगे परन्तु उनमें पराक्रम तथा क्रोध के भाव की प्रबलता हो सकती है लेकिन समाज में उनका पूर्ण प्रभाव होगा तथा सभी लोग उन्हें वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनमें पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा उच्च शिक्षा प्रदान करने की समुचित व्यवस्था करेंगे। आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति तथा सफलता में उनका पूर्ण सहयोग होगा तथा इसमें उनके प्रभाव से आपको काफी सफलता मिलेगी। साथ ही आप भी अपने कार्य कलापों से पिता के मान सम्मान में वृद्धि करेंगी। लेकिन नैसर्गिक पापी ग्रह केतु के प्रभाव से आपसी संबंधों में मधुरता कम ही होगी तथा मतभेद अधिक होंगे। साथ ही शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में एक दूसरे का सहयोग अल्प मात्रा में ही लेंगे। अतः संबंधों में मधुरता के लिए आपको ऐसी परिस्थितियों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप अपने परिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में समर्थ रहेंगी तथा अन्य क्षेत्रों में भी सौभाग्यशाली रहेंगी। माता के द्वारा आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित मात्रा में धन लाभ प्राप्त करेंगी या वे किसी उद्यम आदि में आपको किसी प्रकार का सहयोग प्रदान कर सकती है। साथ ही आप जल से उत्पन्न पदार्थो के द्वारा यथा रत्न या वस्त्र आदि के व्यापार अथवा कार्य से धनार्जन करेंगी। यदि आप कार्यरत नहीं है तो उपरोक्त आय स्रोतों से आपके पति लाभ अर्जित करेंगे। इस प्रकार स्वपरिश्रम एवं सौभाग्य से अपनी आकाक्षांओं तथा इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ होंगी।

आपकी कुंडली के अनुसार ज्येष्ठ भाइयों की अपेक्षा बहिनों से आपको इच्छित सहयोग लाभ एवं स्नेह की प्राप्ति होगी साथ ही माताजी से भी आप वांछित स्नेह एवं सुख की प्राप्ति होगी। आपकी मित्रता का क्षेत्र विस्तृत रहेगा तथा मित्र मंडली में आदरणीया रहेंगी। आपके सभी मित्र गुणवान शिक्षित तथा बुद्धिमान होंगे। अवस्था के साथ साथ सभी सामाजिक जनों एवं मित्रों के प्रति आपके मन स्नेह एवं अपनत्व की भावना उत्पन्न होगी तथा उन सबकी सेवा एवं सहायता के लिए तत्पर रहेंगी। परिवार के प्रति आपके मन में पूर्ण आकर्षण रहेगा तथा अपने अधिकाशं समय को पारिवारिक जनों के मध्य ही व्यतीत करेंगी। साथ ही अपने क्षेत्र एवं समाज में आपकी प्रसिद्धि रहेगी। जीवन में आपको कोई विशिष्ट सामाजिक सम्मान भी प्राप्त होगा। इस प्रकार आपका सामान्य जीवन सपरिवार सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आपकी कार्य क्षेत्र की उन्नति में सुदृढ़ता रहेगी तथा भूमि से उत्पन्न उत्पादों के द्वारा आपको वांछित लाभ होगा। आप शीघ्रातिशीघ्र धनवान होने की कामना करेंगी। अतः इस उददेश्य की पूर्ति के लिए आप अथक परिश्रम करेंगी। आर्थिक क्षेत्र में आप अत्यंत ही सतर्कता का परिचय देंगी तथा पैसा कहां से आकर कहां जा रहा है इसका आपको पूर्ण ध्यान रहेगा। साथ ही अत्यधिक सोच विचारकर आप व्यय करेंगी इस प्रवृति से आप पूंजी निवेश में अधिक धन लगाएंगी जिससे अनुकूल बचत भी बनी रहेगी। आप मध्यमवस्था तक समाज के समक्ष अपने आपको एक धनवान महिला के रूप में स्थापित करने में समर्थ रहेंगी।

आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी एवं बैंक में आपका स्थान सम्मानीय रहेगा। आपके पास सामान्यतया कोई व्यसन नहीं होंगे तथा शौक भी विशेष नहीं रहेगा। अतः आपका व्यय उचित एवं अनुकूल मात्रा में होगा जिससे आर्थिक बचत बनी रहेगी। परिवार के प्रति आप अपनी पूर्ण जिम्मेवारी निभाएंगी तथा उनकी सुख सुविधाओं के लिए समय समय पर आवश्यक व्यय करती रहेगी साथ ही बच्चों के रहन सहन, खान पान तथा अन्य स्तर में भी वृद्धि करने में तत्पर रहेंगी।

आपको यात्रा करना रूचिकर लगेगा वैसे आपकी प्रवृति भ्रमण प्रिय रहेगी आपकी यात्राएं व्यवसाय या कार्य क्षेत्र से संबंधित रहेगी। साथ ही यदा कदा भ्रमण या दर्शनीय स्थानों की सैर के लिए भी यात्रा करेंगी। इसके अतिरिक्त जीवन में एक बार आपकी अवश्य ही विदेश यात्रा होगी जिसके प्रभाव से आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी तथा सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

नक्षत्रफल

आप उतराफाल्गुनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि कन्या तथा राशि स्वामी बुध होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी नाड़ी आद्य, वर्ण वैश्य, गण मनुष्य, वर्ग श्वान तथा योनि गौ होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके राशि नाम का आधाक्षर "टो" से प्रारम्भ होगा।

आपका मन स्वभाव से ही दया एवं करूणा के भाव से परिपूर्ण रहेगा तथा दीन दुःखियों के प्रति आप हमेशा दयालुता का व्यवहार करेंगी। साथ ही अपनी दानशील प्रवृति के कारण समय समय पर दान भी देती रहेंगी। आपका चाल चलन उत्तम एवं प्रशंसनीय रहेगा। आप अपनी सुशीलता तथा कोमल स्वभाव के कारण समाज में लोकप्रिय रहेंगी तथा उचित मान सम्मान तथा आदर प्राप्त करेंगी। आप राज्य या सेना में किसी उच्चपद को भी सुशोभित करने में सक्षम रहेंगी। समाज के अन्य जनों से आप के मित्रतापूर्ण तथा मधुर संबंध रहेंगे साथ ही आप धैर्य के गुण से भी सुसम्पन्न रहेंगी।

दाता दयालु सुतरां सुशीलो विशालकीर्तिर्नृपते प्रधानः।
धीरोऽत्यन्तमृदुर्नरः स्याच्चेदुत्तराफाल्गुनिका प्रसूतौ।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, दयालु, शीलवान, कीर्तिवान राजमंत्री, स्वभाव से कोमल तथा धैर्यधारण करने वाला होता है।

आप अपने जीवन में समस्त सुखसंसाधनों का उपभोग करके प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी तथा समाज से यथोचित आदर सत्कार प्राप्त करेंगी। अन्यजनों द्वारा उपकृत होने पर आप उनके प्रति पूर्ण कृतज्ञता का भाव प्रकट करेंगी। कृतघ्नता का भाव आप में नहीं रहेगा। साथ ही आप एक उच्चकोटि की विदुषी भी हो सकती हैं।

भोगी चोत्तरफाल्गुनीभजनितो कृतज्ञः सुधीः।।
जातकपरिजातः

अर्थात उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक भोगी सम्माननीय, कृतज्ञ तथा विद्वान होता है।

समाज के सभी वर्गो में आप समान रूप से प्रिय रहेंगी। आप भी सभी वर्गो के हित कार्यों के लिए हमेशा तत्पर रहेंगी तथा उन्हे अपना तन, मन, धन से सहयोग अर्पण करेंगी। इसके अतिरिक्त आप अपनी विद्या द्वारा धनार्जन करके जीविका का अर्जन करेंगी।

सुभगो विद्याप्तधनो भोगी सुखभागद्वितीयफाल्गुन्यां।
बृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक सर्वप्रिय, विद्या से धन प्राप्त करने वाला, भोगी तथा सुखी होता है।

आप सुख एवं दुख को समान रूप से सहन करने में समर्थ रहेंगी। सुख में अनावश्यक प्रसन्नता तथा दुःख में अनावश्यक शोक करना आपको पसन्द नहीं होगा। आप साहसी तथा वीरता के गुणों से युक्त होंगी अतः जीवन पथ को साहस पूर्वक प्राप्त करेंगी। साथ ही आप अत्यन्त ही प्रिय वाणी बोलने वाली होंगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित तथा प्रसन्न रहेंगे। निशाने बाजी की कला में भी आप निपुण रहेंगी तथा अपने अच्छे व्यवहार तथा कार्यों से समाज में सभी लोगों की प्रिय होंगी।

दान्तः शूरो मृदुर्वक्ता धनुर्वेदार्थ पण्डितः।
उत्तराफाल्गुनी जातो महायोद्धा जनप्रियः।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक सहनशील वीर तथा मधुर बोलने वाला, धनुष बाण विद्या में निपुण, महायोद्धा तथा सर्वसाधारण का प्रिय होता है।

आप इन्द्रियों पर संयम प्राप्त करने में पूर्ण सफलता प्राप्त करेंगी। आप शान्तचित्त से युक्त महिला होंगी तथा सभी लोग आपसे मधुर संबंधों के उत्सुक रहेंगे। आप तीव्र बुद्धि से भी युक्त रहेंगी तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे।

दान्तः शान्तो मृदुर्वक्ता धनुर्वेदस्य पारगः।
उत्तराफाल्गुनिजातो महाबुद्धिर्जनः प्रियः।।
जातकदीपिका

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक इन्द्रियों को वश में करने वाला, शान्त स्वभाव से युक्त, मधुर बोलने वाला, धनुर्वेद में पारंगत, महान बुद्धिमान तथा जनता का प्रिय होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्णपाद में उत्पन्न जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता हैं। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद विशेष अशुभ नहीं रहेगा। अपितु आपके लिए अधिकांश रूप से शुभ ही रहेगा। अतः आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय एवं आकर्षक रहेगा। आप उदार स्वभाव की महिला होंगी तथा सभी लोगों के प्रति आपके मन में दया का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में सर्वप्रकार के सुख तथा धन सम्पत्ति से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगी। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।आप एक चतुर तथा

बुद्धिमता महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्यों को चतुराई तथा बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। साथ ही विभिन्न प्रकार के सद्गुणों से भी आप सुशोभित रहेंगी।

कन्या राशि में जन्म लेने के कारण आपके हाथ दीर्घता से युक्त होंगे तथा शरीर के अन्य अंग नाक, कान, दांत तथा मुखमंडल सुन्दरता से सम्पन्न रहेंगे। आप एक उच्चकोटि की विदुषी होंगी तथा कई धार्मिक संस्थाओं की संचालिका भी बनेंगी। आप धर्म का यत्नपूर्वक पालन करने के लिए सर्वदा यत्नशील रहेंगी। आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर तथा प्रिय होगी जिससे अन्य जन आपसे प्रसन्न एवं प्रभावित रहेंगे। आप सत्यवादी होंगी तथा शुद्धता एवं पवित्रता के प्रति हमेशा सजग रहेंगी। धैर्य के भाव से भी आप युक्त रहेंगी एवं सभी सांसारिक कार्यकलापों को धैर्य एवं निष्ठापूर्वक सम्पन्न करेंगी। समाज में अन्य जनों की भलाई के कार्यों में भी आप तन, मन, धन से अपना सहयोग प्रदान करेंगी। स्वयं भी परोपकार के कार्यों के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आप दया तथा करूणा के भाव से पूर्ण सुसम्पन्न रहेंगी तथा समस्त जीवों तथा प्राणियों के प्रति अपनी इस भावना का प्रदर्शन आजीवन करती रहेंगी। देखने में आपका रूप एवं सौन्दर्य भी दर्शनीय रहेगा तथा सर्वप्रकार से सुखसम्पन्न रहेंगे। सन्तति संख्या में पुत्रों की संख्या पुत्रियों की संख्या से अल्प रहेगी।

स्त्रीलोलो लम्बबाहुर्ललिततनुमुखश्चारुदन्ताक्षिणिकर्णो।
विद्वानाचार्य धर्मा प्रियवचनयुतः सत्यशील प्रधानः।।
धीरः सत्वानुकम्पी परविषयरतः क्षान्तिसौभाग्यभागी।
कन्याप्रायप्रसूतिबहुसुतरहितः कन्यकायां शशाङ्कः।।
सारावली

आप लज्जा तथा आलस्य युक्त दृष्टि से युक्त होकर गमन करेंगी। साथ ही कन्धे तथा बाहुभाग भी शिथिलता को प्राप्त होंगे। आप जीवन में विविध प्रकार के भौतिक सुखों का आनन्द उठाने वाली सौभाग्यशाली महिला होंगी। आपका शरीर अत्यन्त ही कोमल रहेगा तथा कई कलाओं की आप ज्ञाता होंगी। साथ ही शास्त्रों के ज्ञान के प्रति भी आप रूचिशील रहेगी तथा ज्ञानार्जन करेंगी। आप अपने जीवन में किसी अन्य संबंधी या मित्र के धन एवं गृह आदि का उपभोग करने वाली होंगी। इसके अतिरिक्त आपकी घर की अपेक्षा अन्यत्र देश विदेश में निवास करने की प्रबल इच्छा रहेगी।

व्रीळामंथरचारुवीक्षणगतिः स्रस्तांसवाहुः सुखी।
श्लक्षणः सत्यरतः कलासुनिपुणः शास्त्रार्थविद्धार्मिकः।।
मेधावी सुरतप्रियः परगृहे वितैश्च संयुज्यते।
कन्यायां परदेशगः प्रियवचः कन्याप्रजोळल्पात्मजः।।
बृहज्जातकम्

आप अपने नाना प्रकार के क्रिया कलापों से अन्य जनों अपनी ओर आकर्षित करने में सफलता प्राप्त करेंगी। स्वभाव से आप अत्यन्त सरल तथा सुशील रहेंगी। आप प्रयत्न से हमेशा अच्छे कार्यों को ही सम्पन्न करेंगी। पापकर्मों की आप यत्न से उपेक्षा करेंगी। आप अत्यन्त ही भाग्यशाली होंगी तथा जीवन में अधिकांश सफलताएं भाग्यबल से ही प्राप्त करेंगी।

साथ ही संतति संख्या भी अल्प होगी।

युवतिगे शशिनि प्रमदाजनप्रबलकेलिबिलासकुतूहलैः।
विनयशील सुताजननोत्सवै सुविधिना सहितः पुभान।।
जातकाभरणम्

आपकी बुद्धि शुद्ध तथा सरलता से सम्पन्न होगी किसी प्रकार की चालाकी या दिखावा आपकी बुद्धि में नहीं रहेगा। आपकी प्रवृति लेखन कार्य की ओर भी अग्रसर रहेगी तथा काव्य लेखन में आप सफलता तथा यश भी प्राप्त कर सकेंगी। आप में चंचलता का अभाव रहेगा तथा शान्तचित से अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगी। परन्तु जीवन में कभी कभी आप आँखों से कष्ट प्राप्त कर सकती हैं। अपने श्रेष्ठ तथा गुरूजनों के प्रति आपके मन में पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा तथा उनके हित कार्यों को करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगी।

विमलमति सुशीलो लेखबुद्धिः कविश्च।
कृषिबलगुणशाली शान्तियुग्मः स्वभावः।।
भवति नयनरोगी धार्मिकः शीलयुक्तः।।
गुरूजन हितकर्ता कन्यका यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

आप विलासमय जीवन बिताने की शौकीन रहेंगी। अतः भौतिक सुख साधनों पर खूब व्यय करेंगी तथा उनका प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करेंगी। आप विद्वानों तथा सज्जन लोगों को हृदय से सम्मान प्रदान करेंगी तथा ये भी आपसे हमेशा प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे साथ ही दानशीलता की प्रवृति से भी आप सुशोभित रहेंगी। वैदिक धर्म का आप नियमानुसार पालन करेंगी तथा सज्जनों के प्रति आपके मन में प्यार तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। समाज में आप लोकप्रिय रहेंगी तथा संगीत एवं अभिनय का आपको अत्यन्त ही शौक रहेगा तथा अन्य मनोरंजन संबंधी कलाओं से भी आपके संबंध रहेंगे, परन्तु गृहस्थ से आपको कभी कभी कष्ट का भी अनुभव करना पड़ेगा।

विलासी सुजनाह्लादी सुभगो धर्मपूरितः।
दातादक्षः कविर्बुद्धि वेदमार्ग परायणः।।
सर्वलोकप्रियो नाट्यगान्धर्व व्यसने रतः।
प्रवासशीलः स्त्री दुखी कन्याजातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आपकी वाणी अत्यन्त ही श्रेष्ठ एवं प्रिय रहेगी। विद्या का आप अधिक मात्रा में अर्जन करेंगी अर्थात् विभिन्न प्रकार के शास्त्रों का आपको अच्छा ज्ञान रहेगा साथ ही आपका अन्य जनों से मधुर एवं कोमलतापूर्वक व्यवहार भी रहेगा जिससे सभी लोग आपकी प्रशंसा करेंगे। इसके अतिरिक्त आप समस्त जीवन धन एवं ऐश्वर्य का उपभोग करते हुए व्यतीत करेंगी।

कन्यास्थे विषयातुरो ललितवाग्मि विद्याधिको भोगवान।

जातकपरिजातः

मनुष्य गण में पैदा होने के कारण आप धार्मिकता की भावना से युक्त रहेंगी एवं ब्राहमण तथा देवताओं के प्रति पूर्ण श्रद्धा का भाव प्रदर्शित करेंगी। यदा कदा आप तुच्छ बातों पर अभिमानी प्रवृति का भी प्रदर्शन करेंगी। साथ ही आपका हृदय दया एवं करूणा के भाव से परिपूर्ण रहेगा एवं दीन दुखियों के प्रति आपके मन में सद्भावना व्याप्त रहेगी। बल का आप में अभाव नहीं रहेगा तथा कलाओं का भी आपको अच्छा ज्ञान रहेगा। आप बुद्धिमती होंगी तथा सम्पूर्ण शरीर कान्ति से सुशोभित रहेगा इसके अतिरिक्त आप बहुत से लोगों को सुख प्रदान करने वाली होंगी।

आप धन तथा सामाजिक मान सम्मान से सर्वदा सम्पन्न रहेगी। जीवन में आपको कभी भी इनका अभाव प्रतीत नहीं होगा। आपकी आँखें विशाल तथा शरीर गौरवर्ण का होगा। साथ ही आप निशानेबाजी की कला में भी निपुण रहेंगी तथा नगर या समाज के लोगों को प्रभावित करने में पूर्ण सफलता प्राप्त करेंगी।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

गो योनि में उत्पन्न होने के कारण आप पुरुष वर्ग के लिए अत्यन्त प्रिय रहेंगी तथा इनसे विशेष सहयोग प्राप्त करेंगी। आप मन में हमेशा उत्साह से सम्पन्न रहेंगी तथा अपने समस्त कार्यकलापों को उत्साहपूर्वक ही सम्पन्न करेंगी। वाद विवाद में आप अत्यन्त ही निपुण रहेंगी तथा अपने प्रभावी तर्कों से किसी को भी अपने समक्ष टिकने नहीं देंगी।

स्त्रीणां प्रियः सदोत्साही बहुवाक्य विशारदः।
स्वल्पायुश्चनरो जातः गो योनौ न सशंयः।।
मानसागरी

अर्थात गोयोनि में उत्पन्न जातक स्त्रियों का प्रिय, सदा उत्साह में रहनेवाला, वादविवाद में चतुर एवं अल्पायु होता है।

आप के जन्म समय में चन्द्रमा लग्न में विद्यमान हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से उन्हें लम्बी आयु की प्राप्ति होगी। आपके जन्म के उपरान्त वे धन सम्पत्ति को भी प्राप्त करने में सफल होगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह एवं वात्सल्य रहेगा तथा जीवन के सभी शुभ एवं महत्व पूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप के परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं

मतभेदों की प्रायः अल्पता ही रहेगी।

आप भी उनके प्रति मन में पूर्ण सम्मान तथा आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए प्रायः तत्पर रहेंगी। इससे आप लोगों का एक दूसरे के प्रति विश्वास आदि में वृद्धि होगी जिससे आजीवन मधुर संबंध बने रहेंगे। इससे आप परस्पर सहयोग भाव से जीवन में प्रसन्नता की प्राप्ति करेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं उनकी आयु भी दीर्घ होगी। आपको वे सर्वदा विशेष स्नेह प्रदान करेंगे। साथ ही महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपको उनसे आर्थिक सहयोग भी प्रायः मिलता रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प तनाव दृष्टिगोचर होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए ही रहेगा कुछ समय उपरान्त स्वतः सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही सुख दुःख में आप उनकी आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके जन्म के समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा शक्त, साहस एवं पराक्रम का भाव उनमें विद्यमान रहेगा। साथ ही यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में समस्त शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख के समय में भी आप उनसे पूर्ण सहायता प्राप्त करेंगी।

आप भी उनके प्रति हमेशा स्नेह का भाव रखेंगी एवं उनकी अवसरानुकूल सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें तनिक कटुता या तनाव भी आयेगा लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वयं ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप उनके सुख दुःख की सहयोगी रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग देती रहेंगी।

आपके लिए भाद्रपद मास, पंचमी, दशमी तथा पौर्णमासी तिथियाँ, श्रवण नक्षत्र, शुभ योग, कौलवकरण, शनिवार प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभफलदायक होंगे अतः आप 15 अगस्त से 14 सितम्बर के मध्य 5,10,15 तिथियों, श्रवण नक्षत्र, शुभयोग तथा कौलवकरण में कोई भी शुभकार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रय आदि अन्य शुभ कार्यों को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि का ही योग बनेगा। साथ ही शनिवार, प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभकार्यों में वर्जित रखें इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी पूर्ण रूप से ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मन में अशान्ति शरीर में व्याकुलता, व्यापार में हानि नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको

अपने इष्ट देव गणेश जी की पूजा करनी चाहिए तथा गणेश चतुर्थी एवं बुद्धवार के उपवास सम्पन्न करने चाहिए साथ ही सोना, पन्ना, हरा वस्त्र, मूँग की दाल, घृत आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अन्य अशुभ प्रभावों में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 17000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। ऐसा करने से आप शीघ्र ही अशुभ प्रभावों से मुक्त होंगी तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी। साथ ही अन्य लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं शीं बुधाय नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम

ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्त्री ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर गऊ शाला में 100 गायों को चारा खिलाएं (उसमें कोई भी गाए अंगहीन न हो) आदि।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से मुक्त है।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर

काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली के दूसरे खाने में सूर्य है। इसकी वजह से आप दानी, भरोसे से काम करने वाली होंगी। आप अपने पराक्रम से प्रगति करेंगी। स्वयं उन्नति कर दूसरों के लिए उन्नतिकारक होंगी। स्वयं पराक्रम से धन कमाने वाली, हुनर की कमाई से बरकत पाने वाली होंगी। आपको उत्तम सवारी का सुख मिलेगा। आपको तीनों लोकों में सुख प्राप्त होगा। धार्मिक कार्यों में मुखिया बनेंगी। धर्म मंदिर-धर्मशाला का निर्माण करवाएंगी। ससुराल एवं पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। माता-पिता/सास-ससुर सगे संबंधियों के लिए अनुकूल तथा परिवार के पुरुषों के लिए भारी होंगी। आपको सरकार से लाभ मिलेगा और सरकारी अधिकारियों से मान-सम्मान मिलेगा। आप बड़े कारोबार की मालकिन भी बन सकती हैं। सीता की तरह पति भक्त भी बनेंगी।

यदि आपने अपने रिश्तेदारों से जायदाद-धन आदि के लिये मुकद्दमें आदि किये, किसी दूसरे व्यक्ति का माल हड़प किया, सफेद वस्तुएं (चावल-चांदी दूध आदि) मुफ्त ली तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य का मंदे असर से आपके पति-प्रियतम तथा धन पर बुरा असर पड़ेगा। माता या मौसी पर भी अशुभ प्रभाव होगा। परिवार में पुरुषों की संख्या कम होगी। इस हालात में बहन, माता/सास, भाभी पर अशुभ असर पड़ सकता है। माता, ननद या पति की भाभी विधवा हो सकती है। अगर आप धन, स्त्री, जमीन के झगड़े करेंगी तो आपका कुल तक नष्ट हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. मुफ्त के माल पर नजर न रखें।
2. गिफ्ट या दान न लेवें।

उपाय :

1. नारियल का तेल सरसों या बादाम धर्म स्थान में देवें।
2. बुजुर्गी मकान में हैंड पंप लगावें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली के पहले खाने में चंद्रमा है। इसकी वजह से आपका जन्म आपके माता-पिता की तपस्या के बाद हुआ होगा या भगवान की मिन्नतें मांग-मांग कर या आपके जन्म से पहले कई भाइयों का जन्म हुआ होगा। आप सबको वशीभूत कर लेती हैं। आपका स्वभाव शांत और सुंदर होगा। सफेद कपड़े पहनने की शौकीन होंगी। आप विभिन्न भाषाओं की विद्वान होंगी। आपको पैतृक/ससुराल के मकान का सुख मिलेगा। आपको जीवन भर संपत्ति की कमी महसूस नहीं होगी। 28 वर्ष की उम्र में विवाह हो तो जीवन भर सुख

मिलेगा। पराई अमानत पास रह जायेगी जिससे अमीर हो जाएंगी। जब तक माता जीवित रहेंगी धन-दौलत का अभाव नहीं रहेगा। लंबी उम्र की मालकिन रहेंगी। राजदरबार में सम्मान मिलेगा। आपके जन्म के बाद पिता की माली-हालत अच्छी होगी। लम्बी आयु, कारोबार तथा धन लाभ के लिए शुभ होगा। बुढ़ापा उत्तम रहेगा। 24 या 27 साल की उम्र में अगर सफर करें तो सफर से वापस घर आकर मां/सास का आशीर्वाद लेने से माता/सास की आयु बढ़ेगी। 24 वर्ष की आयु से पहले मकान न बनावें।

यदि आपने 24 वर्ष आयु से पहले मकान बनाया होगा, 28 वर्ष आयु में विवाह किया और आपने नौकर से झगड़ा किया या गाय को कष्ट दिया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से पानी में डूबने का भय, मानसिक रोग, पुत्र सुख का अभाव, अति चिन्तित रहना, शारीरिक कमजोरी, आंख की पुतली खराब होना आदि परेशानियां हो सकती हैं। घर में बाग-बगीचा हो तो उजड़ा सा रहेगा, आपको दिल की बिमारियां हो सकती हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. माता/सास या बूढ़ी स्त्री से झगड़ा न करें।

उपाय :

1. चांदी के गिलास में दूध-पानी आदि पियें।
2. बट के वृक्ष को कभी-कभी पानी डालें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली के तीसरे खाने में मंगल पड़ा है। इसकी वजह से लाल किताब के अनुसार मंगल तीसरे खाने में हो तो महिला मांगलिक होती है। अतः आप मांगलिक महिला हैं। इस वजह से आप अपने लिए ख्याली पुलाव बनाएंगी और सब्ज बाग देखेंगी। दूसरों की सहायता करेंगी, नर्म स्वभाव रहेंगी। चक्रव्यूह भेदन की कला में चतुर होंगी। आपको पिता और ससुराल पक्ष से सहायता मिलेगी। आपको परिवार से अच्छा सहयोग प्राप्त होगा। आप अपनी शारीरिक और मानसिक योग्यता से जानी जायेंगी तथा आपको योग्यता प्रदर्शन करने का अच्छा मौका मिलेगा। आपको भाई-बहन का सुख मिलेगा। आपके दोस्त हमेशा मदद करेंगे। आपका विवाह अच्छे घर में होगा। माता-पिता/सास-ससुर का पूरा सुख मिलेगा।

यदि आपने परपुरुष से अनैतिक संबंध रखे, अकड़ा हुआ मिजाज रखा अधिक गुस्सा करने की आदत रखी, मांस-मदिरा के सेवन करने की आदत हुई, अय्याशी की तरफ आपका झुकाव रहा तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से आप अपने जीवन में चालबाजी और धोखेबाजी से काम निकालेंगी और आप बेकार की फोकी उम्मीदें भी रखेंगी। आपकी बर्बादी का कारण आपकी

अय्याशी हो सकती है। आप पर कर्ज का बोझ भी चढ़ सकता है। आपके घर में अचानक किसी की मौत भी हो सकती है। आपकी संतान की हालत मंदी हो सकती है। आपको मृत बच्चा पैदा हो या गर्भपात भी हो सकता है। घर में चोरी और नुकसान से होशियार रहें। आपके चाचा या भाई, औलाद से दुःखी हो सकते हैं। आपके भाई-बन्धु, मित्र आपके विनाश का कारण बनेंगे। लड़ाई-झगड़े से दूर रहें। लड़ाई-झगड़ा आपकी मौत का कारण बन सकता है। आपकी नेकी कोई भी याद नहीं रखेगा। खून खराब या पेट में रोग हो ऐसी आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. हाथी दांत न रखें।
2. दक्षिण दिशा के मुख्य द्वार वाले घर में रिहाईश न करें।

उपाय :

1. चांदी की बेजोड़ अंगूठी बायें हाथ में पहनें।
2. चांदी की बेजोड़ चूड़ी पर लाल रंग लगाकर बायें हाथ में पहनें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध दूसरे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से बहिनों में आप बड़ी होंगी। मेहनत से धन कमा कर, धनी होंगी। आप पति भक्त, स्वार्थी, पुत्र सुख से वंचित तथा संगीत प्रिय हैं। धन-दौलत के मामले में आपका ससुराल पक्ष निर्बल रहेगा। आपके जीवन में राजयोग प्राप्ति के शुभ योग हैं। आपका विचार अस्थिर होता है। आप कुछ देर बाद या बातों-बातों में अपना विचार बदल लिया करती हैं। आपको कन्या संतान से अधिक सुख प्राप्त होने की संभावना है। आप ज्ञानी और उपदेशिका भी हो सकती हैं। आप या आपके पिता-ससुर बहुत बड़े धनवान होंगे। आप स्वयं अपने भाग्य की निर्माणकर्त्ता हैं। आप स्वाभिमानी, परंतु संतान पक्ष से कमजोर होंगी। आपको राजपक्ष से लाभ होना संभाव्य है। आपकी आय अच्छी होगी। आप अपने जन्म स्थान से दूर निवास करेंगी। आप मतलब परस्त होंगी। आप हाजिर-जवाबी और उपयुक्त उत्तर देने वाली हैं। आप का स्वभाव योगी और राजा दोनों तरह का होगा। आपके संपर्क में जो आएगा वह लाभान्वित होगा।

यदि आपके परिवार में लड़कियां या औरतें अधिक होंगी, दुनियावी साधुओं के चक्कर में रहेंगी, तंबोला आदि खेलेंगी तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से पिता-ससुर सुख में अल्पता की आशंका है। आप पर लांछन लग सकता है या बदनामी भी हो सकती है। आप मांसाहारी होंगी तो यात्राएं बहुत होंगी। यात्रा से लाभ होने की उम्मीद कम है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. तोता, भेड़-बकरी न पालें।
2. धागा-ताबीज, जल-भभूती आदि से दूर रहें।

उपाय :
1. दूध-चावल धर्म स्थान में देवें।
2. फिटकरी से दांत साफ करें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में छठे खाने में वृहस्पति पड़ा है। इसकी वजह से गृहस्थ जीवन में भी आप साधू स्वभाव की होंगी। आपको कोई काम करने की अधिक जरूरत नहीं पड़ेगी। यदि पिता/ससुर दीर्घायु हुए तो आप धनवान बन जाएंगी। आपके पिता/ससुर स्वभाव से दानी होंगे। नगद धन की कमी महसूस नहीं होगी। आपके जीवन में कई चीज बिना मांगे या बिना मेहनत किए ही मिल जाएंगी। आपके ननिहाल खानदान के लोगों की आर्थिक हालत अच्छी होगी। आपके मामा खुशहाल होंगे। आपके जीवन में सुख-शांति तो रहेगी परंतु बहुत ठाठ-बाट नहीं रहेंगे। बुढ़ापे में आपको शुभ फल प्राप्त होंगे। पूजा-पाठ पर ज्यादा ध्यान देंगी। आपको पति का पूर्ण सुख मिलेगा। आपको अधिक समय तक नौकरी करनी पड़े, ऐसी आशंका है। आपके गुप्त दुश्मन नहीं होंगे। दुश्मन अगर हुए तो नष्ट हो जाएंगे अर्थात् आपको दुश्मनों पर जीत हासिल होगी। शरीर से निरोग रहेंगी।

यदि आपने कर्ज, दान-भिक्षा मांगना शुरु किया, हर समय व्यर्थ घूमती रहीं, मामा, ताया-चाचा से झगड़ा किया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से पिता/ससुर का सुख कम मिलेगा या 16 वर्ष की उम्र में ही परिवार का भार आप पर पड़ सकता है। पति की बेकद्री करने से अशुभ फल होगा। आपका जीवन अय्याशी या ऐशो इशरत के कारण बर्बाद हो सकता है। आपके पिता/ससुर, पुत्र और पुत्री के लिए ग्रह फल बहुत अच्छा नही है। आप साध्वी स्वभाव की मुफ्तखोर, रोगी और अय्याश होंगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. भीख न मांगें।
2. आवारा न घूमें।

उपाय :
1. धर्म मंदिर के पुजारी को वस्त्र दान देवें।
2. पीली चीजें धर्म स्थान में देवें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र दूसरे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से जीवन भर धन-संपत्ति, संतान सुख में वृद्धि होगी। आपको सभी पक्ष से शुभ फल प्राप्त होंगे। आप बहुत परिश्रमी होंगी। आपको भाई का सुख प्राप्त होगा। नौकरी-व्यापार ठीक से चलते रहेंगे। दिन दुगनी रात चौगुनी तरक्की होती रहेगी। आप सम्मानीय महिला होंगी। आप ईश्वर पर विश्वास करें तो आपकी सभी कामनाएं पूरी होंगी। पति का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। आपके जीवन के साठ साल की उम्र तक खूब आमदनी होगी। आप साधू-संतों की वेशभूषा पहन कर आशिकाना ख्याल की मालकिन होंगी। चारित्रिक सुधार के बावजूद आपका जीवन सफल रहेगा। आपके शत्रु आप से दबे रहेंगे। आपके भाई तथा लड़के की किस्मत अच्छी होगी। आपको दुनियाबी सहायता मिलेगी। आप प्रेम संबंध बड़ी होशियारी से करेंगी। आप कामयाब महबूबा होंगी।

यदि आपने शेरमुख घर में रिहाईश की, राग-रंग से नफरत रखी, आलू का व्यापार किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से घर में बीमारी लगी होगी। रक्तदोष एवं शुक्राणु दोष के कारण औलाद की पैदाइश में रुकावट हो सकती है। संतान जन्म में बाधा की आशंका हो तो (किसी वैद्य/हकीम की सलाह लेकर आयुर्वेद दवाईयों का प्रयोग करें)। आप किसी के साथ बुराई करें तो आत्मघात जैसा फल मिलेगा। दूसरे के बच्चे को गोद लेने पर अपनी संतान बाधा दूर हो जाएगी। बुराई करने पर आपके बच्चों पर गलत प्रभाव पड़ेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. पघुओं पर जुल्म न करें।
2. घेर मुख घर में रिहाइघ न करें।

उपाय :

1. आलू, घी या दही का दान करें।
2. बिना सींग की गाय की सेवा करें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में शनि पहले खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपके जन्म के बाद आपकी पैतृक संपत्ति और पिता का धन बढ़ेगा। आप इंजीनियर, डाक्टर बन सकती हैं। आप शक्की स्वभाव की होंगी। लोहा/लकड़ी और नमक, आग से संबंधित कामों से अधिक लाभ होगा। आपके धन में वृद्धि होगी। आपके माता-पिता/सास-ससुर को धन की कमी नहीं रहेगी। आपकी आयु पर कोई भी बुरा असर नही पड़ेगा।

यदि आपने झूठ बोला और बदनीयती रखी, व्यसनों में मदहोश रहीं, परपुरुष से अनैतिक संबंध रखे तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया

हो तो शनि के मंदे असर से आपकी शिक्षा भी अधूरी रह जाए या इच्छित शिक्षा नहीं मिले, ऐसी आशंका है। आप आलसी, अभावग्रस्त और अस्वस्थ रह सकती हैं। आपके पति, दौलत पर बुरा असर पड़ सकता है। आपको खानदानी या जद्दी काम में बरकत नहीं होगी। आप चोरी, झूठ या धोखाधड़ी करने में भी पीछे नही रहेंगी। शरीर पर अधिक बालों का होना निर्धनता का सूचक है। आप अगर सरकारी नौकरी करती हैं तो नौकरी का फल विशेष मंदा रहेगा। सरकार से बहुत अच्छे लाभ का योग नहीं है। पति को शारीरिक कष्ट हो सकता है। आपके साथ चोरी, धोखेबाजी, संतान को कष्ट या कुछ भी हो सकता है। माता/सास को कष्ट और आपको दुःखी होना पड़े ऐसी आशंका है। आपका कारोबार बिगड़ सकता है या पिता-ससुर के कारोबार का दिवाला भी निकल सकता है। भाग्य के बिगड़ने की आशंका है। आग से जलने का भय है। पेट में खराबी, विद्या अधूरी, धन की तंगी रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. विवाह या पुत्र जन्म आदि पर खुघी के समय ढोल-बाजे आदि न बजाएं।
2. शराब पीना, मांस खाना और इश्कबाजी से दूर रहें।

उपाय :

1. वीरान जगह में सुरमा दबायें (नौकरी-व्यापार में तरक्की के लिये)।
2. बंदर को गुड़ केला खिलायें (धन की तंगी के समय)।
3. वट वृक्ष की जड़ के दूध का तिलक करें (स्वास्थ्य खराब के समय)।

राहु

आपकी जन्मकुंडली में राहु चौथे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप सर्वगुण संपन्न, धनवान, और आयुवान होंगी। आप तीर्थ यात्रा करेंगी। आप एक भद्र महिला होंगी तथा अपना जीवन सुख से बितायेंगी। आप अपार धन-संपत्ति की मालकिन बनेंगी। आपको अपने सगे संबंधियों से भी धन-दौलत प्राप्त होगा। आप दूसरों की भलाई करेंगी आप भली महिलाओं की गिनती में गिनी जाएंगी। आप धर्मात्मा, वाहन सुख से युक्त होंगी। आप अपनी बहन और पुत्री पर धन खर्च करेंगी। आपको ससुराल से भी धनागम होता रहेगा। आपको सरकार पक्ष से पूरा लाभ होगा तथा अपने बुजुर्गों का घर भर देंगी। ससुराल में भी धन की वृद्धि होगी। आप के पास 24 वर्ष की उम्र के बाद धन एकत्र होगा, गरीबी दूर हो जाएगी और धन की वर्षा होगी। आपके पिता/ससुर और आपके पुत्र पर अच्छा असर पड़ेगा परंतु माता/सास के लिए अशुभ होगा। आपके पास भूमि, भवन, वाहन सभी प्रकार के सुख के साधन उपलब्ध होंगे। यदि आप सरकारी महकमे में कार्यरत होंगी तो सरकारी महकमे में बड़ी अफसर होकर अच्छा ओहदा प्राप्त करेंगी। आप जन्म भर सुखी रहेंगी। बंदूक-पिस्तौल आदि रखने का शौक होगा।

यदि आपने पाखाने की जगह बदली, घर की छत पर लकड़ी के कोयले रखे, सीढ़ियों के नीचे रसोई बनाई, पिता की आयु के पुरुषों से संबंध रखे तो आपका राहु मंदा हो

सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आपके जीवन का 34वां वर्ष कष्टकारी होगा। माता/सास को कष्ट की आशंका है। आप माता/सास का विरोध करेंगी। ससुराल-ननिहाल के लिये अशुभ रहेगा, राजदरबार में हानि, दो विवाह योग या पति के साथ परपुरुष से संबंध रहे, ऐसी शंका है। पर पुरुष पर धन बर्बाद करके अपना जीवन नष्ट कर लेंगी। आपको वाहन दुर्घटना का भय रहेगा। दिन में स्वप्न देखने वाली होंगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. पिता समान आयु के पुरुष से अवैध संबंध स्थापित न करें।
2. गंगा नदी में स्नान न करें।

उपाय :

1. घर पर गंगा जल से स्नान करें।
2. सूखा धनिया जल प्रवाह करें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली में केतु दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप धनवान, नौकर-चाकरों से युक्त, उत्तम सुख से परिपूर्ण तथा अपने पथ पर अग्रसर रहने वाली होंगी। आप इतने अच्छे मुकद्दर की हैं कि आप मिट्टी छुएं तो सोना हो जाता है। 24 वर्ष की उम्र के बाद संतान प्राप्ति योग होगा। आपकी कन्या संतान से सुख और पुत्र संतान से मध्यम सुख संभव है। आपको पुत्र का सुख प्राप्त होने की आशंका है। आप खेल जगत में विश्व प्रसिद्ध बन कर ख्याति प्राप्त कर सकती हैं। आपके धन में बढ़ोत्तरी होगी। निर्धनता कभी भी नहीं आएगी। आप शक्की स्वभाव की हैं। आपके जीवन में 48 वर्ष आयु तक समय तो मिला-जुला फल देगा। इसके बाद का समय बहुत ही शुभ और सुखकारक सिद्ध होगा। आपकी आर्थिक स्थिति पर कोई विशेष बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा। कुल मिला-जुला कर आपका जीवन सुखमय ही रहेगा।

यदि आपने अपने भाई से झगड़ा किया, परपुरुषों से अनैतिक संबंध रखे तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से आपका चाल-चलन ढीला हो तो पुत्रियां अधिक होने की संभावना रहती है। निःसंतान या संतान गोद लेने का योग होता है और जिससे आपको बहुत ही पीड़ा भोगनी पड़ सकती है। आपके भाई आपको गढ्ढे में धकेल सकते हैं या आपके धन का दुरुपयोग करेंगे। पराये पुरुष से संबंध आपके दांपत्य सुख में बाधा पहुंचा सकते हैं। आपके जीवन के लिए घातक और मौत का कारण सिद्ध हो सकते हैं। 48 वर्ष के लगभग पुत्र सुख मिले या माता/सास की आंखें खराब होने पर या माता/सास की मौत के बाद पुत्र जन्म हो ऐसी संभावना है। धन का अपव्यय या अवनति होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. कुत्तों से नफरत न करें।

उपाय :

1. मकान की नींव में चांदी के बर्तन में शहद भर कर रखें।
2. घर में चांदी के बर्तन में शहद भर कर रखें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु षष्ठ भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें पंचम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु दशम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि मेंएकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें द्वादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा परिणाम देने वाला रहेगा। इस वर्ष आप अपने कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। किसी अनुभवी व्यक्ति से मिलकर व्यापार में उन्नति के लिए कोई नई योजना बनाएंगे। दशमस्थ गुरु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नतिहो सकती है या इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

02 जून के बाद सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में बहुत अच्छा लाभ प्राप्त होगा। उच्च अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आप अपने व्यापार में अधिक सफलता प्राप्त करेंगे। आपकोजीवनसाथी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं, तो उसमें इच्छित लाभ प्राप्त होगा और अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन, रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम तो होता रहेगा। आप अपने भौतिक सुख सुबिधाओं पर अधिक खर्च करेंगे।

02 जून के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकारुका हुआ धन मिल सकता है साथ ही आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आप अपनी संचित पूंजी बढ़ाने के लिए निवेश भी करेंगे। भाई-बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर धन खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनिग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा।

02 जून के बाद आपको प्रेम प्रसंगो में भी सफलता प्राप्त होगी। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह हो जाएगा। यदि आप विवाहित हैं तो आपके जीवनसाथी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप सामाजिक कल्याण के

लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेगे। वे अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।02 जूनके बाद पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बने है। यदि आपका बच्चा विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भधान के लिए उत्तम समय है। 31 अक्टूबर के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। उस समय उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देने की जरूरत होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट नहींरहेंगे। वर्ष के पुर्वार्द्ध में लग्न स्थान पर शनि के दृष्टि प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। आलस्य, मानसिक चिंता इत्यादि छोटी-मोटी परेशानियां होती रहेंगीपरन्तु गुरु के गोचरोपरान्त सब कुछ अनुकूल हो जाएगा।

02 जून के बाद गुरु का गोचर शुभ स्थान में होने से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करेंगे। संतुलित आहार के साथ साथ नियमित व्यायाम भी करते रहेंगे। 31 अक्टूबर के बाद आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। छठे स्थान के राहु आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता दिलाएंगे। जो व्यक्ति नौकरी की तालाश में हैं उनको इस वर्ष नौकरी मिल जाएगी।

02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी और वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्य ार्थियो के लिए समय अच्छा है। तकनीकि शिक्षा के लिए भी वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। नवम स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी जन्म स्थल की यात्रा होगी। परिजनों साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का भी आनन्द प्राप्त करेंगे।

मई के बाद छोटी-मोटी यात्राएंहोती रहेंगी। द्वादश स्थान पर राहु एवं केतु ग्रह के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यो के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। 02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्राद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा। आप निःस्वार्थभाव से भगवान की पूजा व सत्कर्म करेंगे। 31 अक्टूबर के बाद दान पुण्य अधिक करेंगे।

- श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं। जिससे आपकी आर्थिक उन्नति व समाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- प्रत्येक दिन प्राणायाम करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में अर्जित करेंगी। अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं कई प्रकार से आप पीड़ित रहेगी। साथ ही शत्रु वर्ग भी इस समय प्रबल रहेगा जिससे समय समय पर आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होंगी अतः उनकी ओर से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेगी। फलतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगी। पारिवारिक जनों से भी आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा तनाव बना रहेगा। साथ ही व्यापार एवं कार्य क्षेत्र में भी हानि या मंदी भी आ सकती है। इस मास आपके स्थान परिर्वतन होने की भी संभावना रहेगी। सामाजिक जनों से भी आपके मधुर संबध नही रहेंगे एवं उनसे अनबन रहेगी फलतः समाज में सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शरीर में रोग तथा धन हानि की भी संभावना रहेगी।

साथ ही इस मास में आप गर्मी से उत्पन्न बीमारियों से कष्ट प्राप्त करेंगी तथा किसी कारण रक्त विकार भी हो सकता है। इसके अतिरिक्त इस समय आपको अग्नि के द्वारा भी धन हानि हो सकती है। अतः इस मास में सोच समझकर सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभ फलों को अधिक मात्रा में अर्जित करेंगी।अतः आपकी बुद्धि में वृद्धि होगी तथा आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता पूर्ण ढंग से सम्पन्न होंगे। इस मास में संतति पक्ष से आप सुख प्राप्त करेंगी तथा अन्य प्रकार से भी द्रव्य लाभ होगा। इस समय आपके प्रभुत्व एवं पराक्रम में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सम्पन्न हो जाएंगे साथ ही कोई शुभ समाचार भी आपको सुनने के लिए मिलेगा। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे।सरकार या उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगी तथा इनसे आपको वांछित लाभ भी प्राप्त होगा। इसके सअतिरिक्त समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी एवं आपके मन की इच्छाएं भी पूर्ण होगी जिससे आप शान्त एवं सन्तुष्ट रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति तथा पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगी। इस समय आप नवीन वस्त्रों की भी प्राप्ति करेंगी एवं स्वर्णादि के आभूषणों को अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इस प्रकार यह महीना आपके लिए अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला सिद्ध होगा तथा चारों तरफ से आपको खुशी प्राप्त होगी।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा फलतः आप शारीरिक रूप से दुर्बल रहेंगी साथ ही आपके शत्रु भी आपसे अधिक बलवान होंगे अतः उनकी ओर से भी आप भयभीत एवं चिन्तित रहेगी जिससे आप मानसिक रूप से बैचेन रहेंगी। इस समय आपके घर में कोई चोरी भी हो सकती है अतः इससे भी सावधान रहें। इस मास आपको अपने उच्चाधिकारी वर्ग की आज्ञा का पालन करना चाहिए तथा किसी भी प्रकार से उनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए अन्यथा आपको वे दण्डित भी कर सकते है। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस समय अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे। साथ ही अनावश्यक एवं अधिक मात्रा में धन का व्यय होगा जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर होगी। इस मास में आपका अपने संबधियों एवं मित्रों से तनाव रहेगा तथा समाज से आप अपने को उपेक्षित महसूस करेंगी। इसके अतिरिक्त आपकी आशाएं भी इस समय अल्प मात्रा में ही पूर्ण हो सकेंगी।

साथ ही इस मास में आप वायु रोगों से पीड़ित रहेंगी तथा किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगी जिससे आपकी प्रतिष्ठा प्रभावित होगी एवं बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इस समय अग्नि से भी आप धन हानि प्राप्त कर सकती है अतः सावधानी पूर्वक समय को व्यतीत करें।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप कष्ट एवं परेशानियां ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। अतः पति एवं बन्धु जनों से आप कष्ट प्राप्त करेंगी एवं दुश्मनों की ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी फलतः आपके मन में बैचेनी का भाव विद्यमान रहेगा। इस मास में आप उत्साह पूर्वक किसी भी कार्य को सम्पन्न करने में असफल रहेंगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आपको आर्थिक संकट से भी गुजरना पड़ेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा एवं मन में लोलुपता के भाव की वृद्धि होगी। अपने बन्धु एवं मित्रों से आपके संबधों में मधुरता नहीं रहेगी तथा परस्पर अनावश्यक वैमनस्य एवं तनाव का वातावरण रहेगा। साथ ही ऐसे समय में आपके मित्र भी शत्रु की तरह वर्ताव करेंगे। इसके अतिरिक्त सामाजिक जनों से भी वाद विवाद होते रहेंगे। अतः आप अत्यत ही अशान्ति की अनुभूति करेंगी।

साथ ही इस मास में आप वातोत्पन्न रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा इस समय किसी ऐसे कार्य को भी कर सकती हैं जिससे आपकी प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी तथा उसके लिए बाद में पश्चाताप करेंगी। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप किसी प्रकार की हानि प्राप्त कर सकती है अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

मई 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ फलों को प्राप्त करेंगी तथा मध्यम रूप से आपका यह समय व्यतीत होगा। इस समय आपके शत्रु बलवान रहेंगे अतः उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। साथ ही घर में चोरी आदि होने की भी संभावना रहेगी। इस मास में आपका

व्यय भी अधिक होगा फलतः आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा। साथ ही शारीरिक रूप से आप अस्वस्थ एवं परेशान रहेंगी जिससे शारीरिक बल में न्यूनता आएगी। इस प्रकार आप कई प्रकार से शारीरिक एवं मानसिक कष्ट प्राप्त करेंगी इस मास में आपकी दूर या समीप की यात्रा भी हो सकती है तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य विध्न बाधाओं के कारण पूर्ण रूप से सफल नहीं होंगे। इसके अतिरिक्त मुकद्दमे आदि में भी आपके धन का अपव्यय हो सकता है। अतः बुद्धिमता से अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में आप अशुभ फलों के साथ शुभ फल भी अर्जित करेंगी तथा इस समय पति एवं पुत्र से आप पूर्ण सहयोग तथा सुख प्राप्त करेंगी ।नवीन वस्त्र या आभूषण आदि की भी प्राप्ति हो सकेगी जिससे आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

जून 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा ही रहेगा तथा अशुभ फल अल्प मात्रा में ही घटित होंगे। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धन को अर्जित करेंगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा आपके उच्चाधिकारी भी आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस समय आप अपने घर में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकती है। संतति पक्ष से आप निश्चिंत रहेंगी तथा उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग मिलेगा। आपकी धार्मिक श्रद्धा में इस समय वृद्धि होगी एवं देवताओं तथा ब्राहमणों का आप हार्दिक पूजन तथा सम्मान करेंगी। साथ ही समाज में आपकी मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा दूर दूर तक आपका यश भी फैलेगा। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सफल होंगे जिससे आपकी भाग्योन्नति होगी। आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव रहेगा तथा यात्रा से आप लाभ अर्जित करेंगी। मित्रों एवं बन्धुओं से आप पूर्ण सहयोग एवं सम्मान प्राप्त करेंगी इसके अतिरिक्त समाज में आप सम्पन्न एवं प्रतिष्ठित महिला के रूप में जानी जाएंगी।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ इस मास में आपको अशुभ फलों की भी प्राप्ति होगी।अतः आप गर्मी या पित दोष के द्वारा शारीरिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा इस समय रूधिर विकार का योग भी बनता है अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें तथा शारीरिक सुरक्षा के प्रति सर्तक रहें।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला सिद्ध होगा। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा समाज में पूर्ण मान तथा प्रतिष्ठा भी प्राप्त करेंगी।साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा इनसे आप पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त करेंगी। अपने मित्रों एवं बन्धुजनों से आपके इस मास मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आप पूर्ण सुख तथा सहयोग भी अर्जित करेंगी। साथ ही इनके परोपकार संबधी कार्यो को करने में भी तत्पर रहेंगी आपके रूके हुए कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास

में सम्पन्न होंगे जिससे आप हार्दिक प्रसन्नता एवं सन्तुष्टि प्राप्त करेंगी। देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। संतति पक्ष से आप सुखी रहेंगी एवं बन्धु वर्ग से आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगी।

साथ ही इस मास में पति से आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा तथा आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी। आप इस समय धनार्जन करने में पूर्ण रूप से सफल रहेंगी तथा श्रद्धा पूर्वक धर्म का पालन करेंगी। इस प्रकार समाज में आपकी यश तथा प्रतिष्ठा में नित्य वृद्धि होती रहेगी।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगी। इस समय सौभाग्य से आप युक्त रहेंगी एवं पति से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप वांछित सहयोग तथा लाभार्जन करेंगी। आपका स्वास्थ्य इस समय उत्तम रहेगा तथा मन में भी पूर्ण शान्ति रहेगी। अध्ययन या ज्ञानार्जन में आप रूचिशील रहेंगी तथा इसमें सफलता भी प्राप्त करेंगी। मित्रों तथा बन्धुजनों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनके मध्य आप उचित सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगी तथा उनका पूर्ण सहयोग तथा सुख अर्जित करेंगी। इस मास में आप वांछित द्रव्यों को भी प्राप्त करेंगी जिससे प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। संतति पक्ष से भी आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा इसके अतिरिक्त आपकी अपूर्ण मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सहयोग एवं सुख प्राप्त करेंगी तथा उनसे आपको अपेक्षित सहयोग भी मिलता रहेगा। आपकी बुद्धि इस समय निर्मल रहेगी तथा उचित धन लाभ एवं सुखार्जन करने में आप सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त इस मास में धार्मिक उत्सव या कार्यक्रम का आयोजन भी कर सकती हैं।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ फल प्राप्त करेंगी अतः यह समय आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय आप व्यय अधिक मात्रा में करेंगी तथा दुष्ट मनुष्यों की संगति भी प्राप्त करेंगी इसलिए आपकी आर्थिक स्थिति भी कमजोर होगी फलतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेगी। आपका स्वास्थ्य भी इस मास में विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा शारीरिक बल में न्यूनता आएगी। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यधिक परिश्रम के बाद भी अल्प मात्रा में ही सफल होंगे। धर्म के प्रति आपके मन में उपेक्षा रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप उचित पूजन तथा सम्मान नहीं करेंगी। साथ ही अन्य प्रकार से भी हानि के योग बनेंगे। अपने मित्रों तथा संबधियों से आपके विशेष मधुर संबध नही रहेंगे तथा कार्य क्षेत्र में अनावश्यक बाधाएं आएंगी। इस समय शत्रु पक्ष के प्रबल होने से आप उनसे भय त्रस्त एवं चिन्तित रहेगी तथा जिस कार्य को प्रारंभ करेंगी उसमें असफलता ही प्राप्त होगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः पति तथा पुरूष वर्ग से आप सहयोग तथा लाभार्जन करने में सफल रहेंगी तथा बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी। इस समय उचित लाभ तथा सुखार्जन करने में भी आप सफल रहेंगी। इसके साथ ही समाज एवं सामाजिक जनों में आप की प्रतिष्ठा एवं यश व्याप्त रहेगा।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इससे आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मन से भी आप शान्त रहेंगी। इस समय आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप सफल रहेंगी। साथ ही आपके आय स्त्रोंतो में भी उन्नति तथा वृद्धि होगी। फलतः इस मास में आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। इसके साथ ही व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोंतो से भी लाभार्जन करेंगी। इस मास में आप भाग्योदय संबधी कार्य को सम्पन्न करेंगी जिससे आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी तथा रूके हुए शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सफल हो जाएंगे। अपने मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सुख तथा सहयोग भी अर्जित करेंगी।

इसके साथ ही इस मास में आपके श्रेष्ठ जन तथा उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे एवं आप उनसे पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगी। इस समय आजिविका संबधी कार्य में भी उन्नति होगी तथा दूर समीप की यात्रा भी कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त आप इस समय नवीन वस्त्रों तथा द्रव्यों को भी प्राप्त कर सकेंगी। अतः यह मास आप प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगी।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शान्ति एवं सुख पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी। अतः आप उत्साह एवं परिश्रम से धनार्जन करेंगी एवं अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में सफल रहेंगी।साथ ही समाज में आपकी मान एवं प्रतिष्ठा में भी पूर्ण वृद्धि होगी तथा बन्धु एवं मित्र वर्ग से भी आप वांछित सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगी तथा इनसे आपके संबध भी मधुर रहेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको आश्रय मिलेगा तथा उनसे पूर्ण सहयोग एवं लाभार्जन करेंगी। इस मास में आप मिष्ठान का उपभोग भी अधिक मात्रा में करेंगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं शारीरिक बल में भी वृद्धि होगी। साथ ही आपका शत्रु वर्ग भी इस समय आपसे पराजित एवं भयभीत रहेगा। इसके अतिरिक्त व्यापारादि कार्यों में भी आपको प्रचुर मात्रा में लाभर्जन होता रहेगा।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी एवं पुरूष वर्ग से आप उचित सहयोग एवं लाभ अर्जित करेंगी। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा एवं धर्म के प्रति भी आप श्रद्धा की भावना रखेंगी तथा समाज में भी आपका यश व्याप्त रहेगा।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों को प्राप्त करने में सफल रहेगी। इस समय आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा स्व पराक्रम से आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में सफल रहेंगी। साथ ही नाना प्रकार के सुखों का आप उपभोग करेंगी। इस समय सामाजिक जनों से आप मान सम्मान अर्जित करेंगी एवं आपका यश भी दूर दूर तक फैलेगा। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा सम्पन्न करेंगी। अन्य जनों के परोपकार संबधी कार्य भी आप इस मास सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। इस समय आप शरीर से पूर्ण स्वस्थ रहेंगी तथा आपके शारीरिक बल में भी पूर्ण वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त बन्धुजनों एवं मित्र जनों से भी अपेक्षित सहयोग तथा सुख अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा आपके मानसिक संकल्प भी पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप पति से वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी तथा अपनी बुद्धिमता से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को पूर्ण करने में सफल रहेंगी। इस समय आप किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकती है। अतः इस महीने को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगी।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं सप्तम भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष पंचम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः उत्तम रहेगा। आप कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। एकादशस्थ गुरु आपको सफलता के लक्ष्य तक अवश्य पहुचाएंगे। बड़े अधिकारियों या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा, जिसका लाभ उठा कर आप व्यापार में उन्नति करेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं, तो बहुत ज्यादा सफलता नहीं मिलेगी। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वालों का स्थान परिवर्तन हो सकता है।

जून के बाद आपका समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधी आपके कार्यों में रुकावटें उत्पन्नकरेंगे। सकारात्मक सोच व आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़े क्योंकि वर्षान्त में शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको अपने व्यापार व कार्यक्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके भाइयों का मुख्य योगदान होगा। कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन मिलने की सम्भावना है, परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय प्रभावित हो सकता है।

जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है। आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। भाईयों का सहयोग मिलता रहेगा। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि

होगी। सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

जून के बाद गूरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी व्यक्ति के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। एक दूसरे के प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न होगी। सहन शक्ति को बढ़ाएं और अपने वौद्धिक शक्ति के अनुसार निर्णय लें।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों कोस्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है तथा बच्चों की उन्नति में अवरोध पैदा होगा।

जून के बाद पंचमस्थ राहु के प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बढ़ सकती है। आपके बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे फलस्वरूप उसकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। इस समयान्तराल में गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। 26 नवम्बर के बाद आपके दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी उत्पन्न हो सकती है। अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है, परन्तु एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप जल्दी ही स्वस्थ भी हो जाएंगे।

26 जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है। उस समय मौसम जनित बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ रोग या मौसम सम्बन्धित बीमारियां घेर सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। 21 नवम्बर के बाद स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अनुकूल नहीं रहेगा। पंचमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी शिक्षा में रूकावट आ सकती है। आलस्य की भावना आपकी शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है।

26 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को अभी और इंतजार करना पड़ सकता है। 26 नवम्बर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय काफी अच्छा हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध मे छोटी यात्राएं तो होती रहेंगी, परन्तु 26 जून के बाद द्वादश स्थान के गुरु आप को विदेश यात्रा भी करा सकते है।

चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा के भक्ति या मन्त्र पाठ में रूचि लेंगे। सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे। 26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होने से दान-पुण्य की मनोभावना उत्पन्न होगी।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु या काला कम्बल दान करें।
- गरीबों को भोजन कराएं।

मासिक फलादेश

जनवरी 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी तथा शुभ फल अल्प मात्रा में ही होंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। इस मास में आपके शत्रु भी प्रबल रहेंगे अतः वे भी आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे जिससे आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। इससे आप मानसिक रूप से भी परेशान रहेंगी। इस समय आपके व्यापार या आजीविका संबधी कार्यो में मन्दी आ सकती है जिससे आर्थिक रूप से भी परेशानी होगी। साथ ही आपका कोई कार्य बन्द या परिर्वतन भी हो सकता है। समाज में दूसरे लोगों से आपके विवाद आदि भी होते रहेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि की भी संभावना होगी तथा शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न होगा।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप पति तथा पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी तथा इनकी ओर से पूर्ण सन्तुष्ट रहेंगी। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र तथा वस्तुएं भी प्राप्त कर सकती हैं। अतः यह मास आपके लिए सामान्य ही रहेगा।

फरवरी 2027 के लिए फलादेश

इस महीने में आपकी बुद्धि में निर्मलता रहेगी तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। इस समय आपको विभिन्न प्रकार के द्रव्य पदार्थो की प्राप्ति होगी तथा पुत्र से भी आप सुख तथा सहयोग अर्जित करेंगी। साथ ही ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि रहेगी। इस मास में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को सभी लोग मन से स्वीकार करेंगे। इस समय आपके कई शुभ कार्य सम्पन्न होंगे तथा दूर से शुभ समाचार भी प्राप्त करेंगी जिससे आपका मन प्रसन्न रहेगा। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा श्रद्धा पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। इसके साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप उचित लाभ अर्जित करने में सफल रहेगी। इस समय समाज में भी आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस प्रकार पूर्ण रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप वातोत्पन्न रोगों से पीड़ित रहेंगी तथा इस समय आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगी जिससे बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी धन हानि की संभावना रहेगी अतः सतर्कता पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें तथा शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

मार्च 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही प्राप्त करेंगी। अतः आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी इस समय आपके शत्रु भी प्रबल होंगे तथा आपके लिए अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न करेंगे जिससे आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। इस मास में आपके घर में चोरी भी हो सकती है अतः सतर्क रहना श्रेयकर रहेगा। साथ ही नौकरी या व्यापार में भी उच्चाधिकारी वर्ग की आज्ञा का पालन करने में तत्पर रहें अन्यथा आप किसी प्रकार से दण्डित भी हो सकती है। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक रूप से भी आप शिथिल रहेंगी। इसके साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगी जिससे आपकी प्रतिष्ठा में अल्पता आएगी।साथ ही मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके संबध अच्छे नहीं रहेंगे एवं आपकी आशाएं भी इस मास में कम ही पूर्ण होगी। अतः संयमपूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

साथ ही इस मास में आप वातजनित रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगी तथा किसी ऐसे कार्य को भी करने के लिए तत्पर होंगी जिसके लिए आपको बाद में पछताना पड़ेगा। इस समय अग्नि के द्वारा भी आपकी धन हानि हो सकती है अतः बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

अप्रैल 2027 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आप पति तथा बन्धुजनों से कष्ट प्राप्त करेंगी अथवा इनको किसी प्रकार का कष्ट हो सकता है। आपके शत्रु भी इस मास में बलवान रहेंगे फलतः आपके लिए वे समय समय पर समस्याएं उत्पन्न करेंगे जिससे आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। इस समय आप में लोलुपता के भाव की अधिकता रहेगी धन का व्यय भी अनावश्यक रूप से अधिक होगा जिससे आप आर्थिक दृष्टि से भी कमजोर होंगी। इस समय आपके मन में उत्साह के भाव की कमी स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होंगी। साथ ही शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा इससे आप दुर्बलता की अनुभूति भी करेंगी। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके परस्पर अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा ये सभी लोग ऐसे समय में शत्रुओं की तरह व्यवहार करेंगे जिससे आप मानसिक कष्ट प्राप्त करेंगी। साथ ही पारिवारिक तथा अन्य जनों से भी वाद विवाद होते रहेंगे। अतः संयम पूर्वक समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी अर्जित करेंगी। इससे आप पति एवं पुत्र से सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी तथा इनसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी। इसके अतिरिक्त इस मास में आप नवीन वस्त्र या आभूषणों आदि को भी प्राप्त करने में समर्थ हो सकेंगी।

मई 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी ।अतः आप शत्रु पक्ष

से चिन्तित एवं भयभीत रहेंगी तथा उनसे आप अनावश्यक कष्ट प्राप्त करेंगी। इस समय आपके घर में चोरी होने की भी संभावना रहेगी साथ ही धन का व्यय अधिक मात्रा में होगा जिससे आर्थिक रूप से भी आप कमजोर रहेंगी। इस समय शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में विध्न बाधाएं उत्पन्न होती रहेंगी तथा धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा भावना में न्यूनता आएगी अतः विधिपूर्वक आप धार्मिक वृतियों कापालन नहीं करेंगी आपका स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा जिससे शारीरिक बल में न्यूनता आएगी। इस मास में दूर की कोई यात्रा भी सम्पन्न कर सकते है। इसके अतिरिक्त सांसारिक कार्यो में भी आप कष्ट प्राप्त करेंगी तथा मुकद्दमे आदि में धन व्यय हो सकता है जिससे मानसिक रूप से आप अप्रसन्न तथा अशान्त रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित्तदोष से उत्पन्न रोग से पीड़ित रहेंगी तथा रक्त विकार होने की भी संभावना रहेगी। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी आप धन हानि प्राप्त कर सकती है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

जून 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही सुख एवं सौभाग्य प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनेगी। आपके उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में यथा समय सिद्ध होंगे। इस समय आप अपने घर में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकती है। संतति से भी आपको सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा साथ ही देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनकी पूजा तथा सेवा करने में तत्पर रहेंगी। इस मास में आपकी कीर्ति दूर दूर तक फैलेगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य यथा समय पूर्ण होंगे। आपकी बुद्धि भी इस समय निर्मल रहेगी तथा आप दूर समीप की किसी लाभदायक यात्रा को भी कर सकेंगी। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा परस्पर वांछित सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार समाज में सर्वत्र आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सहयोग तथा सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इस समय आप अपनी बुद्धि के द्वारा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी। इस प्रकार आप विविध सुखों का उपभोग करेंगी तथा समाज में आपके यश में भी वृद्धि होगी।

जुलाई 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने कार्य क्षेत्र में पूर्ण सफलता तथा धनार्जन करने में सफल रहेंगी तथा अपने वरिष्ठ सहयोगी एवं उच्चाधिकारी वर्ग को सन्तुष्ट तथा प्रभावित करने में सफल रहेंगी साथ ही पदोन्नति भी प्राप्त कर सकेंगी। बन्धु तथा मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आप पूर्ण सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी साथ ही उनकी भलाई के लिए कार्य करने में भी आप तत्पर रहेंगी। आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सफल होंगे अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा तथा उनकी पूजा तथा सेवा करने में तत्पर रहेंगी। इस मास

में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि भी फैलेगी एवं अन्य प्रकार से भी आप लाभ अर्जित करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त इस महीने में आप नवीन गृह या स्थान की प्राप्ति भी कर सकती हैं।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी एवं आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण इच्छाएं भी इस समय पूर्ण होंगी। इस प्रकार धन तथा सुख का उपभोग करते हुए प्रसन्नता पूर्वक आपका यह मास व्यतीत होगा।

अगस्त 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल प्राप्त करने में सफल रहेंगी।साथ ही पुरूष वर्ग से लाभार्जन तथा सहयोग अर्जित करने में भाग्यशाली रहेंगी। इस समय आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे तथा आपकी आर्थिक स्थिति में भी सुदृढ़ता आएगी फलतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्नता तथा शान्ति की अनुभूति करेंगी। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से समय समय पर आपको यथोचित लाभ होता रहेगा। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि उत्पन्न होगी। मित्र एवं बन्धु जनों से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सहयोग तथा लाभ भी होता रहेगा। आपको इच्छित द्रव्यों की प्राप्ति भी इस समय होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक आप इनका उपभोग करेंगी। संतति पक्ष से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी। इसके अतिरिक्त सामाजिक जनों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आपके रूके हुए कार्य भी इस मास में पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगी। आपकी बुद्धि में भी इस समय निर्मलता का भाव रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं सुख का आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में भी आप प्रवृत रहेगी तथा समाज में उचित सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगी।

सितम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ तथा अशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगी जिसमें अशुभ फल अधिक मात्रा में होंगे। अतः इस समय आप धन व्यय अधिक मात्रा में करेंगी तथा दुष्ट जनों की संगति भी प्राप्त होगी। साथ ही आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस मास में आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत ही परिश्रम एवं पराक्रम करने पर भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध हो सकेंगे फलतः मानसिक रूप से भी अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगी। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा। साथ ही अन्य प्रकार से भी धन की हानि होने की संभावना है। मित्रों एवं संबधियों से आपके संबध अच्छे नहीं रहेंगे न ही उनसे कोई विशेष सहयोग प्राप्त होगा। इस मास में आप जो भी कार्य प्रारंभ करेंगी उसमें अनावश्यक रूप से विध्न बाधाएं आएंगी तथा शत्रु पक्ष से भी इस समय आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपके महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सिद्ध नहीं होंगे।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी प्राप्त होंगे। इससे आप

श्रेष्ठजनों एवं उच्चाधिकारी वर्ग से लाभ एवं सहयोग अर्जित करेंगी तथा आपके कार्य क्षेत्र में भी विस्तार की संभावनाएं बनेगी। आप इस समय यात्रा भी कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्र या वस्तुओं को भी आप इस मास में अवश्य ही प्राप्त करेंगी।

अक्तूबर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं मन भी शान्त एवं सन्तुष्ट रहेगा। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा दुश्मनों को पराजित करने में सफल रहेंगी। साथ ही लाभ मार्ग भी प्रशस्त रहेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त अन्य स्त्रोतों से भी आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जन करने में सफल रहेंगी। इस मास में आपके भाग्योदय संबधी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे साथ ही कोई विलम्बित महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होगा जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति होगी। अपने बन्धु वर्ग तथा मित्रों से आपके घनिष्ठ संबध रहेंगे एवं उनसे आप यथोचित सुख एवं सहयोग भी प्राप्त करेंगी। साथ ही आपके सांसारिक कार्य भी इस मास में पूर्ण रूप से सम्पन्न होते रहेंगे। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेगा तथा उनसे आपको यथोचित सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होता रहेगा।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी तथा आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी एवं धन लाभ भी प्रचुर मात्रा में होता रहेगा। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा किसी धार्मिक उत्सव का भी आप इस समय आयोजन कर सकेंगी। इसके अतिरिक्त समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे।

नवम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास आप अति उत्साह से धनार्जन करने में सफल रहेंगी साथ ही समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी एवं यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा वे आपको सभी यथोचित आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही इनसे आप वांछित सुख एवं सहयोग भी प्राप्त करेंगी। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से इस मास में आपको आश्रय प्राप्त होगा जिससे आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को शीघ्र ही सम्पन्न करेंगी। आपका स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा रहेगा तथा शरीर के बल में वृद्धि होगी। साथ ही मिष्ठान का भी आप अधिक मात्रा में उपभोग करेंगी। इस मास में आपके शत्रु निर्बल रहेंगे अतः उनको पराजित करने में आप सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि से भी आप धन अर्जित करने में सफल रहेंगी।

साथ ही इस मास में पति या पुरूष वर्ग से आप वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगी।आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना बढ़ेगी एवं इस समय आप किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकती

हैं। इस प्रकार यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक सिद्ध होगा।

दिसम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस महीने में आप सामान्यतया शुभ फल ही प्राप्त करेंगी तथापि न्यूनाधिक अशुभ फल भी होते रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से धन अर्जित करेंगी तथा विविध प्रकार से सुखोपभोग करने में समर्थ रहेंगी। साथ ही समाज में आपके यश एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपको आदर प्रदान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। इस समय दूसरे लोगों की भलाई के कार्यो को करने में भी आप तत्पर रहेंगी परन्तु शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगी एवं अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सफल बनाने में समर्थ रहेगी। आपके मित्रों तथा बन्धुजनों से इस समय मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आप पूर्ण सहयोग तथा सुख भी अर्जित करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपके मानसिक संकल्प भी इस समय पूर्ण होंगे जिससे आप हृदय से प्रसन्न रहेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ आप यदाकदा अशुभ फल भी प्राप्त करेंगी।अतः आप गर्मी या पित्त दोष के द्वारा शारीरिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा किसी प्रकार से रूधिर विकार की भी संभावना रहेगी। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें तथा शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको व्यापार में बहुत लाभ मिलेगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। फरवरी के बाद आपके कार्य व्यवसाय में व्यवधान आ सकता है। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा।

24 जुलाई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलनी शुरु हो जाएगी। भाग्य अनुकूल होने के कारण आपको कार्यों में सफलता मिल सकती है। चतुर्थस्थ राहु के कारण नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके मनोनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

धन संपत्ति

फरवरी के बाद आर्थिक उन्नति के लिए समय उत्तम नहीं रहेगा। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। आय के सारे मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इन सब के बावजूद आपका पैसा भी खो सकता है। किसी को उधान पैसा न दें। बच्चों के स्वास्थ्य पर भी व्यय हो सकता है।

24 जुलाई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। रुका हुआ धन वापस मिल सकता है जिससे आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु होगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी धन व्यय करेंगे। चतुर्थस्थ राहु के कारण भौतिक सुख-सुविधाओं पर भी आपका खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में पारिवारिक माहौल उत्तम रहेगा परन्तु फरवरी के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके वैचारिक मतभेद होंगे। परिवार में एक-दूसरे के प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है।

24 जुलाई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का

विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।

संतान

पंचमस्थ राहु के प्रभाव से वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। वर्ष के प्रारम्भ से ही संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा जिससे उनकी शिक्षा भी प्रभावित हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित कोई लापरवाही न करें। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है।

24 जुलाई के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चे की शिक्षा के क्षेत्र में रूचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। यदि विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्नस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता में वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। फरवरी के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। द्वादशस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से स्वास्थ्य में अचानक उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। कफ, मधुमेह, पेट संबंधित एवं मौसमजनित बीमारियों के कारण ज्यादा परेशान हो सकते हैं। कभी कभी बीमारी नहीं होने के बावजूद बीमार जैसा अनुभव होगा।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान एवं दिनचर्या को सुधारें। आपकी धर्मपत्नी आपकी सेहत का पूरा ध्यान रखेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। फरवरी के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

24 जुलाई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढाई लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष काफी अच्छा है। फरवरी के बाद द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। जलीय क्षेत्र की यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

24 जुलाई के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यात्रा के दौरान या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है क्योंकि अष्टम स्थान में शनि का गोचर यात्रा में व्यवधान उत्पन्न करता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारंभ में लग्न, पंचम व नवम इन तीनों त्रिकोण भावों पर गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन तथा गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि कर्म अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से तन्त्र के प्रति आपका आकर्षण ज्यादा रहेगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं लग्न भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं लग्न भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष की शुरुआत कार्य व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगी। अष्टम स्थान के शनि व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार कार्य करते रहें।

25 अगस्त से समय काफी अनुकूल हो रहा है। कार्य व्यवसाय में आपका भाग्य साथ देगा। लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी। आय के स्रोतों में निरंतरता बनी रहेगी। मांगलिक कार्यों में भी आप व्यय करेंगे । चतुर्थस्थ राहु के कारण माता या आपके स्वास्थ्य पर भी व्यय हो सकता है। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पैतृक संपत्ति या स्थिर धन का लाभ हो सकता है।

25 अगस्त से 05 अक्टूबर तक समय काफी अच्छा रहेगा। इस समय के अंतराल आपके रुके हुए पैसे या फसे हुए पैसे मिलेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। सितम्बर के बाद कोई बड़ा निवेश न करें। विशेष कर जमीन जायदाद में। नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में परिवार में सदस्य संख्या में वद्धि होगी। आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। 29 मार्च से पारिवारिक माहौल बिगड़ सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ मानसिक मतभेद उत्पन्न होता रहेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते है।

25 अगस्त के बाद पारिवारिक वातावरण फिर से अनुकूल हो जाएगा और आपको परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का राहु माता के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। अतः उनके खान पान पर ध्यान दें। आप सामाजिक गतिविधियों में कम भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ से आप के बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। 29 मार्च के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। यदि विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि भर्गाधान के लिए उत्तम योग बना रही है। नवविवाहित महिलाओं के लिए संतानोत्पति का सुन्दर समय चल रहा है।

25 अगस्त के बाद संतान को उन्नति के अवसर मिलेंगे। मान-सम्मान प्राप्त करेंगे। संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में अष्टमस्थ शनि एवं लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित होता रहेगा। 29 मार्च के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में काफी सुधार आएगा। आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य रहेंगे।

05 अक्टूबर से फिर से स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। 29 मार्च के बाद व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय उत्तम रहेगा।

25 अगस्त से 05 अक्टूबर तक प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा। इस समय के अंतराल में आपको सफलता मिल सकता है। आपके लिए रोजगार के नये-नये अवसर भी मिलेंगे। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने करियर में सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर राहु की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में विदेश यात्रा हो सकते हैं। 29 मार्च के बाद नवम पर गुरु की दृष्टि के कारण आपके जन्म स्थल से दुर की लम्ब यात्रा हो सकती है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

25 अगस्त से आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 05 अक्टूबर के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 29 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी जिसके फलस्वरूप आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। 05 अक्टूबर के बाद नवमस्थ शनि के प्रभाव से धार्मिक यात्रा भी करेंगे। आपकी रुचि धार्मिक कार्यों के प्रति और बढ़ जाएगी।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें। शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमानजी को चोला चढ़ाएं।
- दुर्गाजी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि का राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यावसायिक जीवन में व्यवधान आ सकता है, परन्तु 17 अप्रैल के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। यह समय आपके व्यापार में कुछ बड़ी उपलब्धियां लेकर आएगा।

पूर्ण रूप से यह वर्ष आपके लिए हितकर ही रहेगा। कार्यस्थल में भी आपका प्रदर्शन अच्छा रहेगा। जो लोग रोजगार के लिए परेशान है उन्हें जल्द ही सुखद समाचार मिलेगा। 23 सितम्बर से आप अपने काम को लेकर उत्साहित रहेंगे और अपनी योजनाओं को पूरा करने के लिए अथक प्रयास व मेहनत करेंगे। इस समय के अंतराल में आपको मनचाहा परिणाम मिलेगा। आपको केवल अपनी एकाग्रता बनाए रखनी है और फिर देखिए यह साल आपके लिए कितना लाभदायक होता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम नहीं रहेगा। माता-पिता का स्वास्थ्य अनुकूल करने में आपका व्यय होगा परन्तु अप्रैल के बाद व्यापारिक अनुकूलता के चलते आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु हो जाएगा। भाग्य अनुकूल होने से आप बचत करने में भी सफल रहेंगे

गुरु एवं राहु की युति प्रभाव के चलते फरवरी से अप्रैल तक आप को बड़े निवेश या खरीदारी से बचना होगा। आने वाले महीनों में आपको निश्चित ही लाभ होगा। व्यवसायियों को व्यवसाय का विस्तार करने के लिए अवसर मिलेंगे। इस साल आप जमीन-जायदाद पर भी खर्च कर सकते हैं। यदि आप पिछले कई महीनों से घर लेने की सोच रहे हैं तो आप अपनी इस योजना को पूरा कर सकते हैं। 23 सितम्बर के बाद रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल जाएगी।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। आपके माता-पिता के लिए समय शुभ नहीं है। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। राहु ग्रह

का गोचर आपके भाईयों के लिए भी अच्छा नहीं है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ भी आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंगे।

01 मई से सामाजिक एवं पारिवारिक दोनों पक्षों के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे। आपकी सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। समाज उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

संतान

वर्षारम्भ से अप्रैल तक का समय संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं राहु ग्रह की युति आपकी संतान के लिए अच्छी नहीं है। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा या उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं।

मई से आपके बच्चों की उन्नति होगी और उनके साथ संबंधों में मधुरता आएगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। आपकी दूसरे संतान के लिए यह समय बहुत अच्छा नहीं है।

स्वास्थ्य

वर्ष की प्रारम्भिक तिमाही छोड़ दें तो पूरे वर्ष आप स्वस्थ रहेंगे। आप मानसिक और शारीरिक दोनों रूपों से स्वस्थ रहेंगे अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए आप नियमित रूप से व्यायाम या योगा करते रहेंगे जिससे आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता रहेगा।

कुछ समय ऐसा भी आएगा जब आप खुद को थका हुआ महसूस करेंगे किन्तु कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधित समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आप तनाव व चिंतामुक्त रहें। 23 सितम्बर के बाद अपने खान-पान पर अधिक ध्यान दें और आलस्य न करें। यह आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ में आपको गुप्त शत्रुओं का सामना करना पड़ सकता है। 17 अप्रैल के बाद भाग्य का सहयोग पूर्ण रूप से मिलने के फलस्वरूप प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

01 मई से विद्यार्थियों का नये तकनीकी विषय की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व टेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। गुरु ग्रह के प्रभाव से छोटी यात्राओं

के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक यात्रा भी करेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर भी सकता है। विदेश यात्रा के भी योग हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में घरेलू परेशानी के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपके दैनिक पूजा पाठ को भी प्रभावित कर सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि पर ज्यादा विश्वास करेंगे। तान्त्रिक क्रियाओं की सिद्ध के लिए आप साधना भी कर सकते हैं।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीब लोगों को बांट दें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में कुछ विशेष करेंगे जिससे आपके सहयोगी और अधिकारी भी प्रभावित होंगे। अपने दायित्वों का पूर्ण रूप से निर्वहन करेंगे। आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे। इस दौरान आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपनी योजना निर्धारित करनी होगी।

बेरोजगार युवकों को अड़चनों के बाद सफलता प्राप्त होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। 15 अक्टूबर के बाद आपको रोजगार सम्बंधित सुखद समाचार मिलने शुरु हो जाएंगे और आप अपने सपनों को साकार करने के लिए अपने लक्ष्य की तरफ पूर्ण विश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक तौर पर यह साल आपके लिए चुनौतियों के साथ अनेक लाभ भी लाएगा। हालाँकि जिस तरह के चपल और बुद्धिजीवी व्यक्ति आप है, इन चनौतियों को लाभकारी अवसरों में बदलना आपके लिए बड़ी बात नहीं होगी। 18 फरवरी के बाद आप भूमि, भवन एवं वाहनादि पर भी अच्छा निवेश करेंगे। इस समय के अंतराल में आप इस बात पर ध्यान दे सकते हैं कि भविष्य में किए जाने वाले निवेशों से लाभ किस प्रकार पाया जाए। एक सही योजना बना कर आप निवेश से लाभान्वित हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कोई खोया हुआ जरूरी दस्तावेज भी मिल सकता है। यदि ऋण के लिए आवेदन किया है तो वह भी बिना देरी के मंजूर हो जाएगा। हर प्रकार की आर्थिक परेशानियां तुरंत ही दूर हो जाएंगी। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से परिजनों के स्वास्थ्य के ऊपर भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष कम अनुकूल है। द्वितीय स्थान के मंगल पारिवारिक वातावरण में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे जिससे परिजनों के बीच सामंजस्य

बिठाने में कठिनाई पैदा होगी। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा। आपके पिता के लिए समय अनुकूल नहीं है।

गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए बहुत अच्छा रहेगा। परिवार में एक दूसरे के साथ भावनात्मक लगााव में वृद्धि होगी। आपकी माता के लिए समय काफी शुभ है। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से आपका सामाजिक स्तर बढ़ेगा। मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

संतान

वर्ष के शुरु में संतान के लिए समय अच्छा है। आप अपने बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

9 अगस्त के बाद आपकी दूसरी संतान के लिए समय अच्छा हो रहा है। उस समय बच्चों के साथ प्रेम समन्वय में बृद्धि होगी। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं। तो यह समय श्रेष्ठ है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल बना रहेगा। पूरा साल आप तंदरुस्त और सेहतमंद महसूस करेंगे। क्योंकि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलना एवं व्यायाम आदि।

यदि आलस्य ने आपके अन्दर घर बना लिया तो आपका स्वास्थ्य एक चिंताजनक विषय बन सकता है। इसलिए आपके लिए खास सलाह है कि आप एकाग्रता से अपने भीतर एक सशक्त भाव उत्पन्न करें और अपने स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान दें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। 18 फरवरी के बाद माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये सयम बहुत शुभ है।

विदेशी भाषा सीखने के लिए यह समय काफी शुभ है यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त करना चाहते हैं, तो नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ शनि के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी-लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। 18 फरवरी के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थार पर स्थानान्तरण होगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे या अपने परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है इस वाक्य को भी चरितार्थ करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दे एवं प्रणायाम करें।
- बुधवार के दिन चींटियों को दाना डालें एवं भूखे व्यक्तियों को खाना खिलाएं।
- नित्य हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं नवम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना बन रहीहै। 5 मार्च से कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा।राहु ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होने कारण आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं लेकिन आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी निदान निकाल लेंगे।

12 अगस्त से व्यावसायिक स्तर आपके लिए काफी हितकारी होने वाला है। आपको आपकी पिछली व्यावसायिक सफलताओं के लिए भी पुरुस्कृत किया जाएगा। साथ ही आपकी कड़ी मेहनत को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अन्दर गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ बहुत बढ़िया नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान के राहु आर्थिक उन्नति में रुकावटें डाल सकते हैं। आय की राह में रोड़ा खड़ा करसकते हैं। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीको पर अंकुश लगाएं। 5 मार्च के बाद आय भाव पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है।धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा।

12 अगस्त से आर्थिक स्थिति के लिए समय और बढ़िया हो रहा है। भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। चतुर्थस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आप के सामने कई लाभकारी सौदे आएंगे। इसका भरपूर लाभ उठाने के लिए आप सतर्क रहें।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा। इन सबके पीछे आपका ही महत्वपुर्ण योगदान

होगा क्योंकि आप भी बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो पारिवारिक जीवन के लिए हितकर होंगे। आपके माता पिता के लिए समय काफी शुभ है।

द्वितीयस्थ राहु के कारण आपके परिवार में किंचित परेशानी आ सकती है परन्तु आप उन नकारात्मक पस्थितियों को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके प्रेम संबंधो में मधुरता बढ़ेगी। बच्चों के साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। 23 अक्तूबर के बाद परिजनों के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे या घर परिवार में शुभ कृत्य का आयोजन होगा।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए सामान्य रहेगा। 5 मार्च के बाद शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रूचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो सबसे अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है।आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में व्यावसायिक व्यस्तता के कारण आप अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं देंगे परन्तु 5 मार्च से लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास करेगी। आप अपने दैनिक कार्यों में स्फुर्तिवान बने रहेंगे।

12 अगस्त से आप प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएंगे। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे। 23 अक्तूबर से आप अपनी दिनचर्या बहुत सशक्त रखेंगे और व्यायाम भी करेंगे जिससे अपने आपको आरोग्य व तंदरूस्त महसूस करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

इस वर्ष विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी ये समय बहुत शुभ है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी परीक्षा में सफल होंगे। जो व्यक्ति अपना व्यापार शुरू करना चाहते हैं। उनके लिए यह समय अनुकूल है।

शनि के गोचर के बाद बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलेगी। रोजगार के नये अवसर भी पैदा होंगे। व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में आपकी विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। 5 मार्च के

बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के चलते आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

23 अक्तूबर के बाद नौकरी वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके घर में धार्मिक व मांगलिक कार्य अधिक होते रहेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी।

- तांबे के लोटे से प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा चढ़ाएं एवं गणेश अथर्वशीर्ष का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष के प्रारम्भ के तीन माह श्रेष्ठ रहेंगे। आप अपने व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। अपने बौद्धिक बल के द्वारा व्यापार को एक अलग ही मुकाम पर ले जाएंगे। बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे। आपको पूर्ण विश्वास के साथ आगे की ओर कदम बढ़ाना है। 18 मार्च के बाद दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। परन्तु व्यापारिक व्यक्तियों के लिए यह समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा।

व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो आपका साझेदार धोखा दे सकता है। उसके साथ संबंध खराब हो सकते हैं। आप अपने अनुभवों से खुद का विकास करेंगे। आपका धैर्य ही आपको प्रगतिशील रहने के लिए प्रेरित करता रहेगा और आप हर समस्या का समाधान सूझ-बूझ से निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए उत्तम रहेगा। संचित धन में वृद्धि होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। नवीन संपत्ति खरीदने की दिशा में प्रयासरत रहेंगे। इसमें आपको सफलता भी मिलेगा। 18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपको क्रय-विक्रय के मामले में सावधान रहना चाहिए। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपका अनावश्यक खर्च बढ़ा सकती है।

8 अक्टूबर से मंगल ग्रह का गोचर आपके आय के स्रोत में बढोत्तरी करेगा। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलेंगे। कार्य व्यवसाय में भी आपको अच्छा लाभ मिलेगा। जिससे पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपका घरेलू माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होते रहेंगे। जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। आपके माता पिता का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। धर्मपत्नी के साथ वैचारिक मतभेद बना रहेगा। 18 मार्च के बाद द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह दृष्टि प्रभाव से परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। मातुल व ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

8 अक्टूबर के बाद आपके छोटे भाई-बहनों के लिए यह समय काफी शुभ हो रहा है। सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। लोग आपका सम्मान करेंगे।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ काफी शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे कुछ ऐसे काम करेंगे, जिससे आप उन पर अभिमान करेंगे। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। यदि आपके बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान मे उनका प्रवेश हो जाएगा।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से संतान संबंधित चिंताएं हो सकती हैं। पंचम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रतिकूल कर सकती है। जिससे कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। अतः उस समय अपने बच्चों के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप उनका तुला दान भी करा सकते हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक अनुकूलता बनाए रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। परन्तु 18 मार्च के बाद आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। लग्नस्थ राहु के कारण मानसिक अशान्ति व आलस्य की भावना उत्पन्न होती रहेगी। अपने खान-पान एवं दिनचर्या को सुदृढ़ रखें।

सारे ग्रह प्रतिकूल होने से आप अत्यधिक उद्वेग व मानसिक चिंता से ग्रस्त रहेंगे। शत्रुओं से सावधानी भी हितकारी रहेगी। मुख रोग, नेत्र विकार आपका शारीरिक कष्ट बढ़ा सकते हैं। अपने क्रोध, हठ, जिद व अहं भाव का त्याग करें। कार्य को स्वास्थ्य से अधिक अहमियत न दें। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को और उत्तम बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। व्यापारिक व्यक्ति इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तो अच्छा लाभ मिलेगा।

यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो 18 मार्च से समय आपके लिए काफी शुभ हो रहा है। विदेशी भाषा सीखने के लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

18 मार्च के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। यात्रा के अंतराल में किसी से मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। जैसे मन्दिर निर्माण में दान देना, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा करना, गरीबों की सहायता इत्यादि। तीर्थ स्थलों की यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे। परन्तु द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की दृष्टि होने के कारण आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधु, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- दुर्गा कवच का पाठ करें या दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसका पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं एकादश स्थान में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। परन्तु 28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से समय बहुत उत्तम हो रहा है। आप अपने परिश्रम की बदौलत व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। दशमस्थ शनि आपके अंदर काम करने का जुनून उत्पन्न करेगा। यही आपके व्यवसायिक उन्नति का कारण बनेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। आपको अधीनस्थ कर्मचारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा और बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे।

जुलाई के बाद समय और भी ज्यादा अनुकूल हो रहा है। व्यापारियों को उम्मीद से ज्यादा मुनाफा होने वाला है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। लक्ष्मी आपके द्वार पर दस्तक देगी। यदि आप ब्याज पर भी पैसे देते हैं तो भी अच्छा लाभ होने की संभावना है। इसके अतिरिक्त जो लोग शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हैं या इससे संबंधित क्षेत्र में उनका पैसा लगा है उनको भी बेहतर मुनाफा होगा।

धन संपत्ति

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो आपकी आर्थिक स्थिति बेहद ही शानदार रहने वाली है। इस सफर में आपको बहुत ही कम चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। जिन्दगी के इस सुनहरे पल का भरपूर आनंद लें और अपने कार्यों के प्रति दृढ़ संकल्पित रहें।

जुलाई के बाद एकादश स्थान के शनि धनागम में वृद्धि करते रहेंगे। यह समय आपके लिए उपलब्धियों से भरा रहेगा। नई संपत्ति में निवेश करेंगे। पुराने कर्ज से मुक्त होंगे एवं तरक्की के द्वार खुलेंगे। व्यावसायिक उन्नति के लिए भी आप धन निवेश करेंगे। घरेलू सुख-सुविधा पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का पूवार्द्ध मिला-जुला रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक माहौल में विषता की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। अतः आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। हालांकि द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि को दर्शाता है। मार्च के बाद मित्र व पत्नी के साथ संबंध बहुत ही मधुर होंगे। पति-पत्नी के बीच भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके भाई-बहनों के लिए बहुत ही शुभ है। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे, जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरु आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं।

28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। अतः उस के बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी। फिर भी अपने बच्चों के स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही न करें। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी शुभ है। उसका चौमुखी विकास होगा।

स्वास्थ्य

साल का पूर्वार्द्ध स्वास्थ्य के लिहाज से अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। लग्न स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी।

28 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि शारीरिक व्याधियों को दूर कर आरोग्यता प्रदान करेगी। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास होगा जिसके फलस्वरूप आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ्य महसूस करेंगे। फिर भी आपको अपने खान-पान पर संयम रखना चहिए। सूर्योदय से पहले उठ कर टहलना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकून बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। मार्च के बाद अध्ययन कार्यों में आपकी रूचि बढ़ेगी।

जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको जुलाई के बाद मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 28 मार्च से आप अपने जीवनसाथी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। व्यावसायिक यात्रा भी आपको लाभ देकर जाएगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा-पाठ भी प्रभावित हो सकता है। 28 मार्च के बाद धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी। मन्दिर जाना, ध्यान करना, पूजा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। ईश्वर के प्रति आपका लगाव और बढ़ेगा।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णुजी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं।
- गणेशजी के निम्न मन्त्र का पाठ करें-
  ॐ गं गणपतये नमः ।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि एकादश भाव में और सिंह राशि का राहु द्वादश भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष आप कुछ विशेष करने वाले हैं। पराक्रम के बल पर अपनी व्यापारिक स्थिति को सुदृढ़ बनाएंगे। कार्य व्यवसाय में मित्रों व परिजनों से खूब मदद मिलेगी। आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे। यदि साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए श्रेष्ठ है। कानून से जुड़े लोगों अच्छा लाभ मिलेगा। 6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

अप्रैल के बाद आपके कार्यों में गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। आपके विरोधी बढ़ेंगे जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। कार्यक्षेत्र में किसी से मतभेद हो सकता है। ऐसी स्थिति में आपको घबराना नहीं चाहिए और बड़े ही विवेक से काम लेना चाहिए, क्योंकि अन्त में सफलता आपको ही मिलने वाली है। अतः आत्मविश्वसा के साथ कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

आर्थिक स्थिति को देखें तो वर्ष के प्रारम्भ में ही आय के स्रोत सृजित होंगे। एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि आर्थिक उन्नति के लिए बहुत ही श्रेष्ठ है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल होंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आय कम एवं व्यय ज्यादा होने का योग बन रहा है। ऐसे में आपको अनावश्यक खर्च रोकना चाहिए। निवेश के मामले में सावधान रहें एवं जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा धन हानि हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक स्थिति में कुछ उतार-चढ़ाव होंगे। जीवनसाथी के साथ मधुर संबंध रहेंगे। भाईयों के साथ संबंध अच्छे रहेंगे, लेकिन माता के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। चिंता न करें इससे आपकी माता की भावनाएं आहत नहीं होंगी। रिश्तेदारों और चाहने वालों के साथ संबंध अच्छे रहेंगे।

गुरु ग्रह का गोचर आपके ससुराल वालों के साथ संबंध खराब कर सकता है जिसके कारण आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा या

विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्य के प्रति आप हमेशा तत्पर रहेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी। आपकी दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा। यदि दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके बच्चों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। उनको स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां आ सकती हैं। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना लाभप्रद रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम रहेगा। आप रोग मुक्त रहने वाले हैं। खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल बनाए रखेंगे। परन्तु 6 अप्रैल के बाद कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। यदि पहले से किसी बीमारी से परेशान हैं तो यह समय आपके लिए ज्यादा प्रभावित रहने वाला है।

द्वादशस्थ राहु के कारण आपके अंदर रोग-प्रतिरोधक शक्ति कम होगी। आप अपने आप को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफे बढ़ सकती हैं। तुला दान व अन्न दान करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष के प्रारम्भ में ही प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त करेंगे। एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से शत्रुओं पर आपका प्रभाव बढ़ेगा। आपके समस्त विरोधी शान्त होंगे। व्यावसायिक शिक्षा, औषधि क्षेत्र, कम्प्यूटर साईंस, सिविल सर्विसेज से जुड़ लोगों को सफलता मिलेगी।

6 अप्रैल के बाद समय कुछ खास अच्छा नहीं रहेगा। कुछ लोग आपके विरुद्ध षड्यंत्र भी बना सकते हैं। बेवजह आपके ऊपर आरोप भी लगाया जा सकता है, जिससे आप काफी तनाव महसूस करेंगे। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

विदेश यात्रा के लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है। द्वादश स्थान के राहु अचानक आपको विदेश यात्रा करा सकते हैं। ऑफिस व व्यवसाय से संबंधित छोटी-मोटी यात्राएं होती

रहेंगी। 6 अप्रैल के बाद जन्मभूमि की यात्रा करेंगे।

किसी भी प्रकार की यात्रा करते समय या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें नहीं तसे दुर्घटना हो सकती है। क्योंकि अष्टम स्थान का गुरु एवं द्वादश स्थान का राहु चोट चपेट का प्रबल योग बना रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यो के लिए बहुत ही शुभ है। ईश्वर की भक्ति में आपका अटूट विश्वास रहेगा। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी धार्मिक कार्यों में सम्मिलित होंगे। धर्म से जुड़े सभी पर्वो को हंसी खुशी मनाएंगे। 6 अप्रैल के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- गुरुवार के दिन केला गरीबों में दान करें एवं केले के वृक्ष की पूजा करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें। ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का प्रत्येक दिन पाठ करें।
- सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें और सूर्य नमस्कार करें आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहेगा।

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु अष्टम भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में एकादशस्थ शनि के प्रभाव से व्यापार में अच्छी सफलता मिलेगी, परन्तु गुरु एवं राहु ग्रह का गोचन प्रतिकूल होने के कारण कुछ विरोधी उत्पन्न हो सकते हैं। जो कि आपके कार्य व्यवसाय में कुछ व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए। जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें, गलत-सही का चुनाव करने के बाद ही निर्णय लें।

गैरकानूनी तरीकों से धन कमाने की कोशिश न करें, वरना सकारात्मक परिणामों की जगह आपको नकारात्मक परिणाम मिल सकते हैं और आप कानून की जद में आ सकते हैं। अर्जित की हुई संपत्ति को व्यर्थ में न गवाएँ। सभी प्रकार के वित्तीय मामलों में पारदर्शिता बरतें। अप्रैल के बाद समय अच्छा हो रहा है। फिर भी बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। अगस्त के बाद नौकरी वाले व्यक्तियों को अच्छी सफलता मिलेगी। कार्यस्थल पर मान-संमान व अधिकारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करे नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चो पर नियंत्रण रखें।

चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें। अप्रैल के बाद आपके बंद आय के आय के मार्ग खुलेंगे। बहुत दिनो से फंसे हुए व रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। 9 सितम्बर के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचल संपत्ति के साथ साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यो में आपका धन खर्च हो सकता है। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन खर्च कर सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा और घरेलू वातावरण भी अच्छा रहेगा। माता का पूर्ण सहयोग मिलेगा। परन्तु आपके बच्चों के स्वास्थ्य के लिए यह समय अच्छा नहीं है।

15 अप्रैल के बाद तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि के कारण सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में मान संमान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। आपको भाई-बहनो का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेगे। वो अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। अष्टमस्थ गुरु आपको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दे सकते हैं। ऐसे में उनके स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

अप्रैल के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उन्नति करेंगे। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव कि स्थिति बनी रहेगी। अष्टमस्थ गुरु एवं द्वादशस्थ राहु के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है नहीं तो आप बहुत ज्यादा बीमार हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में खान-पान के साथ दिनचर्या को भी अनुशासित बनाएं और समय समय पर डॉक्टर की सलाह लेना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

15 अप्रैल के बादे नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरु हो जाएगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। फिर भी सुबह-सुबह व्यायाम करना आपके लिए लाभदायक रहेगा। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष ठीक ठाक रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान के राहु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। 15 अप्रैल के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राओं के साथ साथ धार्मिक यात्राएं भी हो

सकती हैं।

इन यात्रा के अंतराल में किसी के साथ आपकी मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी। अगस्त के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानातरण आपके मनोनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं होता। अतः पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान में आपकी रुचि नहीं रहेगी। लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि के कारण मानसिक द्वन्दता बनी रहेगी, जिससे पूजा पाठ में आपका मन एकाग्र नहीं हो पाएगा। 15 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर धर्म स्थान में होगा। उस समय आपका मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता करेंगे। विशेष रूप से आप भगवान शिव जी की उपासना करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन की लड्डू दान करें।
- दुर्गा सप्तशति का नित्य पाठ करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।
- तुला दान करें व महामृत्युंजय मन्त्र का नित्य पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं नवम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में सफलता मिलेगी। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण वरिष्ठ व अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा। एकादश स्थान का राहु अचानक सफलता का मार्ग खोल सकता है, जिससे व्यापार में उन्नति मिल सकती है। अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा, जो आपके लिए अनुकूल रहेगा।

सितम्बर के बाद आपका समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। क्योंकि राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावटें डाल सकते हैं, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। अतः इस समय के अंतराल में आप बड़े विवेक से काम लें। व्यापार में किसी पर आंख बन्द कर विश्वास न करें नहीं तो हानि हो सकती है और कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह साल सामान्यतः अच्छा रहेगा। एकादशस्थ राहु के प्रभाव से अचानक धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। 26 अप्रैल के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभूषण इत्यादि की प्राप्ति होगी। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय करेंगे। यदि कोई बड़ा निवेश करना पड़े तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों कीा सलाह अवश्य लें।

शनि ग्रह का गोचर शुभ नहीं होने के कारण बीमारी इत्यादि में भी धन व्यय हो सकता है। सितम्बर के बाद अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है। अतः उस समय लेन देन के मामले में सावधान रहें। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके हक में नहीं होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। व्यावसायिक व्यस्तताओं के चलते घर में अधिक समय दे पाना मुश्किल हो सकता है। द्वितीय स्थान पर शनि की दृष्टि घर में कुछ विषम स्थितियां भी उत्पन्न कर सकती है। अतः अच्छा यही होगा कि विपरीत परिस्थितियों को झेलते समय आप अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें। परन्तु 26

अप्रैल के बाद से गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक शुभता के लिए बहुत ही बढ़िया है।

आपको परिवार में बुजुर्ग सदस्यों का सहयोग मिलेगा। परिवार के प्रति आपका भी आकर्षण बढ़ेगा। माता-पिता जी के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। आपके भाईयों की उन्नति होगी। सितम्बर के बाद सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। यह सब आपके अच्छे व्यक्तित्व के कारण होगा।

संतान

संतान के दृष्टि कोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि आपके बच्चों के लिए शुभ है। उन्नति के सारे मार्ग खुलेंगे और आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। प्रथम संतान के बारे में शुभ समाचार प्राप्त होंगे।

अप्रैल के बाद समय अच्छा नहीं रहेगा। अतः आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में व्यवधान आ सकता है। परन्तु 16 सितम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। यह समय गर्भाधान व संतानोत्पति के लिए श्रेष्ठ रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। लग्न स्थान में शुभ प्रभाव के कारण सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। परन्तु अप्रैल के बाद संक्रामक बीमारियों की चपेट में आ सकते हैं।

शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है। अत्यधिक आलस्यता के कारण आप स्वस्थ्य रहते हुए भी बीमार जैसा अनुभव करेंगे। यदि आपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो किसी बड़ी बीमारी की चपेट में आ सकते हैं। ऐसे स्थिति में आपको दवा से ज्यादा दुआ की आवश्यकता होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी रहेगी। शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपको प्रवेश मिल सकता है।

अप्रैल के बाद अत्यधिक भोजन एवं आलस्यता से बचें। विद्याध्ययन में एकाग्रता बढ़ाने के लिए गुरुवार के दिन उपवास करें। यदि आप व्यापारी हैं तो 19 अक्टूबर के बाद आपके व्यापार में व्यवधान आ सकता है। नौकरी वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आपकी विदेश यात्राएं होंगी। छोटी-मोटी यात्राओं के

साथ साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अत्यधिक लाभ मिलेगा। अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है।

यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि द्वादश स्थान का शनि यात्रा के अंतराल में दुघर्टना का भी योग बना रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्षारम्भ श्रेष्ठ है। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगा। दान पुण्य अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ध्यान व योग अधिक करेंगे। सितम्बर के बाद आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी। सत्संग व सत्कर्म अधिक करेंगे। भागवत कथा सुनना व सत्संग में जाना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- शनिवार के दिन काली वस्तु दान करें एवं शनि मन्त्र का जाप करें।
- तुला दान करें। (अपने बजन के बराबर अन्न दान करें।)
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना कर नित्य उसका दर्शन करें।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं द्वादश भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं एकादश में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से साल का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। नौकरी में परिवर्तन व व्यवसाय में व्यवधान आने की संभावना बन रही है। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण प्रत्यक्ष व गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। हार्डवेयर, ईधन व कानून से जुड़े लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। 11 मई के बाद समय किंचित अच्छा हो रहा है। यदि उस समय किसी के साथ मिलकर व्यापार करें तो कुछ सफलता मिल सकती है। फिर भी व्यवसाय/नौकरी व निवेश संबंधी मामलों में जल्दबाजी में जोखिम भरा निर्णय लेना घातक होगा।

अक्टूबर के बाद क्रय-विक्रय व खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को सावधान रहना चाहिए नहीं तो हानि हो सकती है। नौकरी करने वाले व्यक्तियां का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। धनागम तो होगा परन्तु व्यय अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपने भौतिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। द्वितीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपको अचल धन व रत्नादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। 11 मई के बाद आय के स्रोत बढ़ेंगे। रुके हुए व फंसे हुए पैसे वापस मिलेंगे।

अक्टूबर के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आर्थिक हानि का योग बना रहा है। इस समय आपको खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। अचानक परिवार में कुछ ऐसे खर्चे आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक कमी का एहसास हो सकता है। अतः इस समय के अंतराल में आपको सावधान रहना चाहिए।

घर-परिवार, समाज

द्वादश स्थान का शनि पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं है। घरेलू माहौल को अनुकूल बनाए रखने के लिए आप छोटी छोटी बातों पर ध्यान दें। दशम स्थान में राहु एवं गुरु की युति आपके माता-पिता जी के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है। परन्तु 11 मई से

समय शुभ हो रहा है। उस समय आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। आपके भाईयों की उन्नति होगी।

एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से मान संमान तथा पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, जिससे समाज में आपका यश सर्वत्र व्याप्त होगा। साथ ही किसी सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था से भी जुडेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। फलतः सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा आपको उचित सम्मान प्रदान करेंगे। अक्टूबर के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

संतान

राहु एवं गुरु का चण्डाल योग संतान के लिए बहुत अच्छा नही रहेंगे। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ने का प्रयास करेंगे। उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना लाभप्रद रहेगा। 11 मई के बाद यह योग समाप्त हो रहा है। गुरु ग्रह के शुभ होने के कारण आपके बच्चों की उन्नति होगी।

नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे। परन्तु अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में उन पर ज्यादा ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेंगे। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द, मानसिक चिंता एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। व्यापारिक कारणों या अपने निजी कारणों की वजह से मानसिक तनाव बढ़ सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप प्रभावित रह सकते हैं। आप को ऐसा लगेगा कि धीरे धीरे कमजोर होते जा रहे हैं।

11 मई के बाद आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ समझेंगे। खान पान पर ज्यादा ध्यान दें नहीं तो आपका मोटापा बढ़ सकता है। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्याग कर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

द्वादश स्थान में शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आलस्यता व दीर्घसूत्रता आपके उन्नति में बाधक बन सकती है। अतः समय का सदुपयोग के साथ मन को एकाग्र कर अपने लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

11 मई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल रहेगा। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज में प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हों उन्हें मनोनुकूल कॉलेज में दाखिला मिल

जाएगा। यदि गूढ़ विज्ञान और मनोविज्ञान में आपकी रुचि है तो उनके लिए समय अनुकूल है। अक्टूबर के बाद यदि शिक्षा के संदर्भ में कोई लुभावना प्रस्ताव मिल रहा है तो सावधान रहिए क्योंकि शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने कारण आपको धोखा मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान के शनि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

मई के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। व्यवसाय संबंधित यात्राएं भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ होगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। अक्टूबर के बाद समय प्रभावित हो रहा है। अतः यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधान रहें।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। कर्म को ही अपना धर्म मानेंगे और कर्म पर ज्यादा विश्वास करेंगे। गरीबों की सहायता करेंगे और उसके दुखों को दूर करने का पूर्ण प्रयास करेंगे। मई के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ेगा, जिससे आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। सुबह शाम मन्दिर जाना व पूजा पाठ करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- अमावस्या तिथि को विद्वान ब्राह्मण को भोजन कराएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें व मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें और सुबह सुबह उसका दर्शन करें।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ व्यावसायिक उन्नति के लिए अच्छा नहीं है। गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके प्रतिद्वंदी बढ़ेंगे तथा आपको किसी षड्यन्त्र में भी फंसा सकते हैं। परन्तु 2 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण आप सभी शत्रुओं को पीछे छोड़ कर सफलता के मार्ग पर अग्रसर होंगे। यदि आप साझेदारी में व्यापार कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। अनुभवी व वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा। जिसके प्रभाव से कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो 13 जुलाई के बाद समय प्रभावित हो रहा है। आपके बड़े अधिकारियों से वैचारिक मतभेद होने के कारण उन्नति रुक सकती है अथवा प्रतिकूल स्थान पर परिवर्तन भी हो सकता है। ऐसे प्रतिकूल समय में आपको बड़े ही विवेक से काम लेना चाहिए। 4 नवम्बर के बाद लोहा, तेल, कच्चे माल के कारखानों आदि से जुड़े लोगों के लिए समय विशेष लाभकरी रहेगा। व्यापार में उन्नति व आशा से अधिक लाभ की संभावना बढ़ेगी। आर्थिक लाभ होगा एवं कार्यों में वृद्धि होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण अनावश्यक खर्चे बढ़ेंगे, जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें। घर में रोग की अधिकता होगी जिसके निवारण में धन का व्यय होगा। रिश्तेदार व मित्रों के साथ पैसे का लेन देन न करें नहीं तो उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। 3 मार्च से 2 जून तक समय कुछ अच्छा हो रहा है। फिर निवेश के मामले में सावधान रहें क्योंकि द्वितीय स्थान में शनि ग्रह का गोचर शुभ नहीं है।

परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। आप व्यापारिक उन्नति के लिए बैंक से लोन भी ले सकते हैं । नई संपत्ति क्रय करने के लिए यह समय शुभ नहीं है। धन संपत्ति से जुड़े मामलों को कोर्ट कचहरी में ले जाने से बचें। नहीं तो आपका ज्यादा नुकसान होगा। 4 नवम्बर से समय आपके पक्ष में आ रहा है। उस समय आपके धनागम के स्रोत खुलेंगे और शेयर बाजार लॉटरी इत्यादि क्षेत्रों से धन लाभ हो

सकता है।

घर-परिवार, समाज

दाम्पत्य जीवन के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं है। जीवानसाथी के रूखे व्यवहार का सामना करना पड़ सकता है। अपने दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने के लिए अपने जीवनसाथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा। 5 अप्रैल के बाद समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। द्वितीय स्थान का शनि पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं होता। अतः परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है और उनके विरुद्ध जाना घातक भी हो सकता है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं।

समाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष समान्य रहेगा। 13 जुलाई के बाद भाईयों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। परन्तु आपके मातुल पक्ष के लोगों की उन्नति होगी। सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि आपकी धर्म पत्नी के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है। 4 नवम्बर से समय बहुत ही शुभ हो रहा है। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा पारिवारिक अनुकूलता प्राप्त होगा।

संतान

गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण बच्चों के लिए समय शुभ नहीं है। आपके बच्चे कुसंगति का शिकार हो सकते हैं। उनका रहन सहन व दिनचर्या भी खराब हो सकती है, जिससे उन्नति में व्यवधान आ सकती है। 3 मार्च को गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छा योग बना रहा है।

पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि संतान के लिए शुभ है। आपके बच्चे अपने योग्यता के बल पर उन्नति करेंगे तथा उनके बारे में शुभ सामाचार प्राप्त होंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। 2 जून से समय प्रभावित हो रहा है। परन्तु चिंता न करें क्योंकि 4 नवम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा। उसके बाद आपके बच्चे निर्विघ्नता पूर्वक उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी। चोट चपेट व वाहनादि से दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। स्वास्थ्य संबंधी कोई बड़ी समस्या भी हो सकती है। पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। सर्जरी आदि होने की भी संभावनाएं बनी हुई हैं। 3 मार्च से 2 जून तक का समय अच्छा रहेगा। आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। परन्तु उसके बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

अतः आपको समय-समय पर डॉक्टर की सलाह लेते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपको अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अपने खान पान का

विशेष ध्यान रखना होगा। जहां तक हो सके शुद्ध शाकाहारी भोजन ही करें। दाल, सब्जी, फल आदि का ही अधिक सेवन करें। 4 नवम्बर के बाद आपका स्वास्थ्य बिल्कुल अच्छा हो जाएगा तथा आप निरोगी काया के स्वामी होंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 3 मार्च से पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी है। यदि आप उच्च शिक्षा हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो 3 मार्च से 2 जून तक का समय बहुत ही शुभ है क्योंकि सफलता के सारे मार्ग आपके पक्ष में है। उसके बाद समय प्रभावित हो रहा है।

साल के उत्तरार्द्ध में उन्नति के मार्ग प्रभावित हो रहे हैं। आप अपने करियर में सफलता पाना चाहते हैं तो अथक परिश्रम करना पड़ेगा। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं। उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं। उनके लिए यह समय शुभ है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान के गुरु वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। 3 मार्च के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ भी मिलेगा।

5 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। जिससे आप मानसिक अशान्त रहेंगे। नवमस्थ राहु के कारण ज्यादातर यात्राएं आपकी अचानक ही होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। लग्न स्थान का शनि आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। परन्तु आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों की सहायता करना, भूखे को खाना खिलाना इत्यादि कर्मों को ही आप अपना धर्म समझेंगे। 4 नवम्बर के बाद आपका मन पूजा-पाठ के प्रति आकर्षित होगा। दैनिक पूजा-पाठ में सुधार होगा। परमात्मा की भक्ति व मन्त्र पाठ में ज्यादा रुचि लेंगे।

- वीरवार के दिन पीली वस्तु, केला या बेसन के लड्डू दान करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं प्रथम भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं प्रथम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं प्रथम भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में व्यापार में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। आपके प्रतिद्वंदी व्यवसाय में बाधा डालने की काशिश करेंगे, जिससे आपको मानसिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा। 6 अप्रैल से समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। आपकी सृजनात्मक क्षमता छुपी रहेगी और बुद्धि विवेक का भी ह्रास होगा। फलस्वरूप आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। आपको दूसरों के लिये भी काम करना पड़ सकता है। किसी भी व्यासायिक यात्रा को करने से पहले भली भांति जांच लें कि वह यात्रा आपके लिए लाभकारी है या नहीं।

वर्ष का उत्तरार्द्ध खनिज, खाद्य विभाग व रासायनिक विभागों में कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए शुभ है। नौकरी या व्यवसाय में अच्छा सुधार होगा। प्रभावशाली व्यक्तियों से आपके सम्पर्क बढेंगे। लेकिन कुछ कामों में आप अनुभवी लोगों की सलाह को भी नजरअंदाज कर सकते हैं और गलत निर्णय लेकर चिंताग्रस्त हो सकते हैं। सरकारी व्यक्ति की सहायता से भी आपके काम बनेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक स्थिति के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं है। आपके अनावश्यक खर्चे बढें .गे, जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। 6 अप्रैल के बाद घर परिवार में रोग व्याधियों की अधिकता होने से धन का अपव्यय अधिक होगा। पैसे का लेन देन करते समय कागजी कार्यवाही अवश्य करें। इस समय के अंतराल में अपने अनावश्यक खर्चों पर अंकुश लगाएं तथा जोखिम भरे कार्यो में निवेश न करें।

किसी नए काम को शुरु करने के लिए बडा निवेश करने से बचें अन्यथा धन हानि हो सकती है। लेकिन उत्तरार्द्ध में अचानक धन प्राप्ति के योग बन रहे हैं। इस अवधि में वसीयत प्राप्त होने की सम्भावना बन रही है। यदि आप जुआ, लॉटरी आदि के माध्यम से कमाई करते हैं तो इनमें बडा निवेश करने से बचें। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे। वर्षान्त आपके लिए काफी श्रेष्ठ है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति होगी।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों में यह वर्ष मिले जुले परिणाम देने वाला रहेगा। वर्ष के प्रथम पक्ष में परिवार का वातावरण भी उत्तम व मेल-जोल वाला रहेगा। परिवार के लोगों की इच्छाओं और आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। परिवार के सभी लोग आपका सम्मान और आदर करेंगे। 6 अप्रैल से समय किंचित प्रभावित होगा। नवम स्थान का राहु अचानक आपके पिताजी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है, जिसकी वजह से आप चिंतित रह सकते हैं। परिवार के कुछ सदस्यों का वर्ताव आपके प्रति रूखा या असहयोगात्मक रह सकता है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध परिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल रहेगा। परिवार में सुख और शान्ति का माहौल बनेगा। आप पारिवारिक सुख प्राप्त करेंगे। आपके अन्दर अहंकार युक्त भावनाएं पनप सकती हैं जिससे घर-परिवार में आपकी जनप्रियता घट सकती है। बेहतर होगा आप अपनी अन्तर्दृष्टि से स्वयं को परखें। जरूरत से ज्यादा तर्क-वितर्क करने से बचें अन्यथा परिवारीजनों को आपकी निष्ठा और आपके पारिवारिक स्नेह पर संदेह होने लगेगा।

संतान

नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होने के प्रबल योग बन रहे है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि बच्चों की उन्नति के सारे मार्ग खोल रही है। आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। संतान की उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे।

6 अप्रैल से 28 जून तक समय किंचित प्रभावित रहेगा, परन्तु उसके बाद समय फिर से उत्तम हो जाएगा तथा पूरा वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षान्त में आपके बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे तथा वे आपकी उम्मीदों से बढ़-चढ़ कर कार्य करेंगे, जिससे आपको उन पर गर्व होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा, परन्तु 6 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान का गुरु छोटी-मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी से गुजर रहे हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। हांलाकि 28 जून के बाद स्वास्थ्य में कुछ सुधार होना शुरु हो जाएगा।

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि बनी रहेगी। सभी महत्वपूर्ण कार्यों को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल बनाए रखने के लिए शुद्ध साकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता

है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय शुभ है। आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को सफलता मिलेगी।

अप्रैल से जून तक का समय नौकरी करने वालों के लिए अच्छा नहीं है। जून के बाद आपके मान-सम्मान में वृद्धि होगी। इजीनियरिंग व हार्डवेयर की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों को अधिक सफलता नहीं मिलेगी।

यात्रा-तबादला

6 अप्रैल के बाद द्वादशस्थ गुरु के कारण आपकी विदेश यात्रा होगी। सामुद्रिक यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है। सपरिवार किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

28 जून के बाद आपकी लम्बी यात्रा होगी। यह यात्रा आपके लिए बहुत ही सुखद व मनोरंजात्मक होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा पाठ के प्रति आपकी विशेष रुचि बढ़ेगी। ईश्वर के प्रति आप का अटुट विश्वास होगा। 6 अप्रैल के बाद दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। मन्दिर निमार्ण, गोशाला, अनाथाश्रम, वृद्धाश्रम इत्यादि स्थानों पर खुले हाथों से दान देंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे, जिससे परिवार की सुख, शान्ति, समृद्धि इत्यादि में वृद्धि होगी। धार्मिक कार्य कर आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगे। तीर्थ यात्रा व धार्मिक यात्रा भी अधिक होंगी।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित करें एवं नित्य उसका दर्शन करें।
- अपने बजन के बराबर अन्न दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके लगेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं या विरोधियों द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं जिससे आप मानसिक रूप से परेशान रहेंगे तथा चाह कर भी अपने शत्रुओं का मुकाबला नहीं कर पाएंगे। व्यापार में कोई बड़ा निर्णय लेने के लिए यह आवश्यक है कि आप पूरी जांच परख करके ही ऐसा करें, क्योंकि यह साल आपके के लिए अच्छा नहीं है। झूठी आशाओं पर निर्भर न रहें अधिक आत्मविश्वास आपको आपदग्रस्त कर सकता है।

6 मई से समय कुछ अच्छा हो रहा है। आपकी मान-मर्यादा में बढ़ोत्तरी होगी तथा सभी सहकर्मियों का अच्छा सहयोग भी मिलेगा। साझेदारी में कार्य करने वाले लोगों को इच्छित लाभ होगा। नौकरी करने वालों के लिए समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। वर्षान्त अधिक प्रतिकूल रहने वाला है, अतः कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें तथा किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास न करें।

धन संपत्ति

द्वितीयस्थ गुरु के कारण धनागम के स्रोत बढ़ेंगे, परन्तु राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने कारण कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अष्टमस्थ राहु एवं लग्नस्थ शनि के कारण धोखा या धन हानि के योग बन रहे हैं। आपको शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में वसीयत प्राप्ति से आपको धन लाभ हो सकता है अथवा किसी अप्रत्याशित जगह से अचानक धन की प्राप्ति हो सकती है। आप किसी धार्मिक कार्य में धन खर्च कर सकते हैं। परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों के हित में भी आप खर्च करेंगे। 26 सितम्बर के बाद किसी प्रकार का निवेश न करें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहने वाला है। परिवार के सभी सदस्य आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप अपने परिवार पर पूर्ण नियंत्रण रखेंगे तथा सभी परिवारीजनों का विशेष ख्याल भी रखेंगे। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके छोटे भाई

बहनों के लिए अच्छी नहीं है। 6 मई के बाद ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपसी मतभेद व तनाव हो सकता है।

26 सितम्बर के बाद पारिवारिक क्लेश होने की संभावना बन रही है। द्वितीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि परिवार में वैचारिक मतभेद उत्पन्न कर सकती है। इस समय के अंतराल में आपको बड़े विवेक से काम लेना होगा तथा अपनी धैर्यशक्ति बनाए रखनी होगी। समाजिक स्तर में कुछ कमी आ सकती है। अतः सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा। संतान आज्ञापालक भी होगी।

आप अपनी ओर से उनकी उन्नति हेतु यथोचित प्रबन्ध करेंगे और वे आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करेंगे। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह के प्रबल योग बन रहे हैं।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। यदि पहले से किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। चिकित्सकीय परामर्श लेते रहें एवं अपने खान-पान पर भी विशेष ध्यान दें। नहीं तो स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

6 मई के बाद आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा क्योंकि लग्न स्थान में गुरु ग्रह का गोचर सकारात्मक ऊर्जाओं की वृद्धि कर रहा है। जो आपके स्वास्थ्य के लिए बहुत ही शुभ है। वर्षान्त में आपका स्वास्थ्य फिर से खराब सकता है। अतः खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग के कारण होगा। घुटनों में दर्द व पैर में चोट लगने की पूर्ण संभावना बन रही है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो 6 मई के बाद समय अनुकूल हो रहा है।

इंजीनीयर, वकील, व कानून से जुड़े लोगों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी में अचानक पदोन्नति हो सकती है।

यात्रा-तबादला

वर्ष में छोटी-मोटी यात्राएं होंगी परन्तु 6 मई के बाद आप बड़ी यात्राओं का आनन्द

लेंगे, जिसमें व्यवसाय से संबंधित अधिक यात्राएं होंगी। धार्मिक यात्राओं का भी योग बन रहा है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। विदेश यात्रा के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्न स्थान के शनि धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करेंगे जिससे आप चाह कर भी कोई शुभ कार्य नहीं कर पायेंगे। आलस्य के कारण दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। 6 मई के बाद लग्न स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय अनुकूल हो रहा है। उस समय ईश्वर के प्रति आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा। दैनिक पूजा-पाठ में भी सुधार होगा। वर्षान्त में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ेगी। साधना व योग के लिए आप अधिक से अधिक समय निकालेंगे। सत्संग में जाना व गुरु वाणी सुनना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- श्रावण मास में शिवजी का रुद्राभिषेक व पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यापार में कुछ न कुछ परेशानियां आती रहेंगी। विरोधी तथा शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना होगा। गलत-सही का चुनाव करने के बाद ही निर्णय लें। हालांकि गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपको कुछ सकारात्मक परिणाम मिलेंगे। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। फिर भी व्यावसायिक मामलों में आपको बहुत सावधान रहना होगा।

यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो वर्ष का उत्तरार्द्ध ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। आपका साझेदार धोखा दे सकता है। अतः उसके साथ सभी कार्यों में पारदर्शिता रखने की कोशिश करें। राजनीति से जुड़े लोगों के लिए यह समय ज्यादा प्रतिकूल है। वर्षान्त में कोई नया कार्य व्यवसाय प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे कार्यों को ही सुचारु रूप से चलाते रहें।

धन संपत्ति

शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आर्थिक मामलों में अधिक सतर्कता बरतने की जरूरत है। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें। आपका कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने से के लिए वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें। जोखिम भरा निवेश करने से बचें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में राजनीति एवं भूमि से संबंधित काम करने वालों को वांछित लाभ मिल सकता है। अकस्मात् व गुप्त धन मिलने की संभावना बन रही है। बैंकिंग संस्थानों से कर्ज लेना चाहते हैं तो शीघ्र ही आपको लोन मिल जाएगा। सप्तमस्थ राहु के कारण पत्नी के स्वास्थ्य पर आपका अधिक व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान में शनि ग्रह का गोचर पारिवारिक मामलों के लिए अनुकूल नहीं है। परिवार से जुड़े हर मामलों में बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है। पारिवारिक सदस्यों के साथ कुछ तर्क-वितर्क होने की संभावना नजर आ रही है। हालांकि समझदारी से इसे टाला जा सकता है। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से

आपके छोटे भाई-बहनो के साथ संबंध अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में पारिवारिक समस्याएं कुछ कम होंगी। फिर आप पारिवारिक स्थिति को लेकर चिंचित रहेंगे। सप्तमस्थ राहु के कारण पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद होने की प्रबल संभावना है। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। पंचम स्थान पर शनि की दृष्टि आपके बच्चे को आलसी व बीमार बना सकती है, जिसके चलते उनको वांछित सफलता नहीं मिलेगी। परन्तु आपकी दूसरी संतान के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में संतान के लिए उच्च शिक्षा प्राप्ति के योग बने हुए हैं। उनका भाग्योदय होगा तथा व्यावसायिक उन्नति भी होगी तथा वे अपने प्रतिद्वंदियों से बेहतर कर सकने में सफल होंगे।

स्वास्थ्य

द्वितीयस्थ शनि के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेगा। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द, मानसिक चिंता एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकती है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए और तुरंत चिकित्सक से परामर्श लें। ऋतुजनित बीमारियों के कारण स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है विशेष कर सर्दी-जुकाम इत्यादि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

यदि कोई बीमारी पहले से चली आ रही है तो वह इस समय बढ़ सकती है, अतः पहले से ही सावधानी बरतें। वर्ष के उत्तरार्द्ध में राहु ग्रह के गोचर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। उस समय कोई लम्बी बीमारी हो सकती है। व्यापारिक कारणों या अपने निजी कारणों की वजह से मानसिक तनाव बढ़ सकता है। अतः स्वयं को संतुलित एवं नियमित रखें। तुला दान व महामृत्यंजय जाप आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परिक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तो उसमें सफलता मिल सकती है। मैकेनिकल इंजीनियर व हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वाले जातकों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध व्यावसायिक व्यक्तियों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है। मैनेजमेंट, प्रशासनिक शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी अधिक होंगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यावसायिक यात्राएं भी कराती रहेगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। धार्मिक यात्रा का सुन्दर योग बन रहा है।

चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं। यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधान रहें क्योंकि राहु एवं शनि दोनो ग्रहों का गोचर प्रतिकूल है। चोरी व दुर्घटना का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आपका मन धार्मिक कार्यों के प्रति विशेष आकर्षित रहेगा। घर में कोई मांगलिक या धार्मिक कार्य संपन्न होंगे। किसी तीर्थस्थान की यात्रा होगी। गुरु का आशीर्वाद व गुरु दीक्षा प्राप्त होगी।

शिवजी की उपासना करें एवं मृत्युंजय मंत्र का पाठ करें। मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं। आपके लिए अपने बड़े बुजुर्गों का आशीर्वाद प्राप्त करना एवं माता-पिता की सेवा करना लाभदायक रहेगा।

- मंगलवार का व्रत करें या हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रत्येक शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- दुर्गा सप्तशति का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। सभी व्यावसायिक मामलों में निर्णय सोच विचार ही लें। हालांकि आप कारोबार के मामले में काफी होशियार हैं फिर भी अपने स्तर पर पूरी एहतियात बरतें। किसी गैरकानूनी क्रिया-कलापो में शामिल न हों तथा कोई ऐसा कार्य न करें जिससे आपकी मानहानि हो। साझेदारी में कार्य करने वाले लोगों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। यदि आप अपनी पत्नी के साथ कार्य कर रहे हैं तो वांछित उन्नति नहीं मिलेगी।

नौकरीपेशा लोगों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। आपको खास मुनाफा होगा। यह मुनाफा आपको सैलरी में वृद्धि तथा नई नौकरी के मौके के रूप में मिल सकता है। आपके बड़े अधिकारी आपकी काफी मदद करेंगे। आपके काम की सराहना होगी। अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। अगस्त से सितम्बर तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा। अतः उस समय सावधान रहने की आवश्यकता है। ऐसा कोई कार्य न करें जिससे आपकी छवि खराब हो जाए तथा वरिष्ठजनों और सहकर्मियो के साथ आपके संबंध खराब हो जाएं।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति थोड़ी कमजोर रह सकती है। इसके लिए आपको थोड़ी सावधानी बरतनी होगी। आपकी जमापूंजी में कमी आ सकती है। इसलिए समझदारी के साथ पैसे खर्च करें तथा वित्तीय जोखिम उठाने से बचें। बिना लिखित प्रक्रिया पूरी किए बिना किसी को पैसे न दें और किसी पर भी आंख बन्द करके विश्वास न करें, अन्यथा बहुत सारी दिक्कतें हो सकती हैं।

सितम्बर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। चतुर्थस्थ गुरु के कारण अचल संपत्ति की प्राप्ति हो सकती है। अष्टम स्थान पर गुरु की दृष्टि पैतृक संपत्ति प्राप्त करा सकती है। यदि कोर्ट कचहरी में कोई मुकद्दमा चल रहा है तो उसमें भी अनुकूलता प्राप्त होगी। मांगलिक कार्यों में तथा धार्मिक कार्यों में आपके पैसे अधिक खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा।

माता के साथ आपके संबंध बेहतर रहेंगे तथा वे हर मोड़ पर आपकी मदद करेंगी। भाई-बहनों सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिससे में आपकी अहम भुमिका होगी। सप्तम स्थान का राहु आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा, जिससे समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। सामाजिक उन्नति या समाज कल्याण के लिए आप कोई संस्था बना सकते हैं, जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा और बढ़ेगी।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। अपने जीवन में उन्नति के लिए अथक मेहनत करेंगे। देर से ही सही लेकिन उनको परिश्रम का फल अवश्य मिलेगा। आपकी दूसरी संतान के लिए समय अच्छा नहीं है। अचानक उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी आ सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में स्वास्थ्य में सुधार व कार्यक्षमताओं की वृद्धि होगी। आपकी सन्तान इस वर्ष कोई नई सम्पत्ति या वाहन के क्रय में धन का निवेश कर सकती है। आपका दूसरी सन्तान से टकराव या वैचारिक मतभेद भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की बात करें तो यह वर्ष सामान्य रहेगा। द्वितीय स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्कता से ज्यादा चिंता न करें नहीं तो इसका नकारात्मक प्रभाव आपके शरीर पर पड़ेगा। मौसमजनित बीमारियों से आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि सरदर्द, मांसपेशियों, रक्त और लीवर से संबंधित दिक्कतें दे सकती है। आंखों का विशेष ध्यान रखें। समय समय पर शिकायत होने पर जांच कराते रहें। आपके आत्मविश्वास में कमी आ सकती है।

19 सितम्बर के बाद आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। फिर भी अपनी सेहत का विशेष ख्याल रखें। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करें तथा योगासन के साथ-साथ व्यायाम भी करते रहें। सुबह सुबह टहलना आपके लिए ज्यादा लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः आपको संघर्षात्मक परिस्थितियों में सफलता मिलेगी अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

वष के उत्तरार्द्ध में छात्रों को सफलता मिलने के पूर्ण आसार है। इसलिए दी गई

परीक्षाओं का परिणाम हितकारी होगा। दोस्तों का सहयोग मिलेगा। कला और सामाजिक कार्यों से जुड़े लोगों को अवश्य लाभ मिलेगा। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो 19 सितम्बर के बाद आपको इच्छित नौकरी मिल जाएगी।

यात्रा-तबादला

द्वादश पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। जलीय मार्ग से दर्शनीय स्थल की यात्रा अधिक करेंगे। यदि आप अपनी जन्मभूमि से दूर रहते हैं तो परिवार सहित अपनी जन्मभूमि की यात्रा भी कर सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में उच्चपद प्राप्ति व स्थानांतरण के योग बन रहे हैं। नौकरी व व्यापार के मामलों को लेकर अधिक यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन, पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे, जिसमें परिवार के सभी सदस्य शामिल होंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके धर्म कार्यों तथा आध्यात्मिक उन्नति व योग साधना के लिए उत्तम रहेगा। आपकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा, आस्था व भक्ति बढ़ती जाएगी। द्विज, देव, ब्राह्मण व ईष्ट देव की कृपा प्राप्त होगी। इस समय के अंतराल में आप कोई विशेष पूजा, अनुष्ठान, यज्ञ, हवन आदि संपन्न कराने में सफल होंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं तथा प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।
- प्रतिदिन चिड़ियों तथा चींटियों को दाना डालें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष अभिमन्त्रित कर सोमवार के दिन गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। व्यापारिक व्यक्तियों को इस वर्ष अच्छा लाभ मिलने वाला है। कुछ नए व्यापारिक भागीदार मिलेंगे, कारोबार का विस्तार होगा। व्यापार में पूंजी लगाने वाले कुछ नए लोग मिलेंगे। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधी मे कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उमीद ज्यादा है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा।

यदि आप नौकरी में हैं तो अच्छे परिणाम मिलेंगे तथा कार्यस्थल पर आपकी तारीफ होगी और मान सम्मान भी बढ़ेगा। नई और बेहतर नौकरी मिलने की प्रबल संभावना है। पदोन्नति के साथ-साथ अनुकूल स्थान पर परिवर्तन भी हो सकता है। षष्ठस्थ राहु के कारण नौकरी से संबंधित इच्छाएं पूर्ण होंगी।

धन संपत्ति

आर्थिक उन्नति के लिए यह वर्ष अनुकूल रहने वाला है। वर्ष के प्रारम्भ में ही आपको भूमि, भवन व वाहन सुख की प्राप्ति हो सकती है। 16 फरवरी के बाद एकादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपकी आर्थिक स्थिति में मददगार साबित होगी। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। आप अपने कार्यों के प्रति सजग रहेंगे। पैसे का आगमन निर्विवाद रूप से होता रहेगा। जमापूंजी में तेजी मे वृद्धि होगी।

छोटे भाई या मातुल पक्ष के लोगों से आपको ज्यादा लाभ होगा। संतान की शिक्षा पर व मांगलिक कार्यों में आप ज्याद खर्च करेंगे। पंचमस्थ गुरु के कारण शेयर बाजार से जुड़े लोगों को अच्छा मुनाफा होगा।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष आपका पारिवारिक जीवन उत्तम रहने वाला है। मित्रों के साथ किसी सामाजिक कार्यक्रम में शामिल हो सकते हैं। आपके भाईयों के लिए यह वर्ष बहुत ही श्रेष्ठ है। तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

माता-पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल तथा मातुल पक्ष के लोगों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

संतान

16 फरवरी के बाद समय आपके बच्चों के लिए अनुकूल हो रहा है। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने के प्रबल योग बन रहे हैं। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

पंचमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि के कारण आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। सफलता के मार्ग पर आगे बढेंगे। आपके बच्चे आपकी उम्मीदों से बढ़ कर उन्नति करेंगे और आप गर्व का अनुभव करेंगे। आपके प्रति उनके दिल में सम्मान का भाव बढ़ेगा तथा वे आपकी सभी आज्ञाओं का पालन करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। 16 फरवरी के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे जिसके फलस्वरूप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती भी है तो आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी से ग्रस्त हैं तो इस वर्ष उससे भी छुटकारा मिल सकता है।

यदि आपने खाने पीने पर ध्यान नहीं दिया तो आपका मोटापा बढ़ सकता है। क्योंकि वर्ष के उत्तरार्द्ध में मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्याग करें और स्फूर्ति के लिए व्यायाम करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

16 फरवरी के बाद छात्र वर्ग के लिए समय अनुकूल रहेगा। उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों को मनचाहे परिणाम मिलने की संभावना है। आपकी एकाग्रता में बढ़ोत्तरी होगी। आप विषयों को ज्यादा से ज्यादा पढ़ेंगे। इससे आपका अभ्यास पहले से बहुत अच्छा होगा एवं नतीजों में सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे। जो छात्र विदेश में जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, उनको नए अवसर मिलने की उम्मीद है। प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेने वालों के लिए समय अनुकूल है।

षष्ठस्थ राहु के कारण अचानक प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं। उनको करियर में सफलता मिलेगी। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको वांछित नौकरी की प्राप्ति होगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में विदेश यात्राओं का प्रबल योग बन रहा है। नौकरी करने वाले

व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा। तृतीयस्थ शनि के कारण आप छोटी -मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी करेंगे।

व्यावसायिक यात्राओं के साथ आपकी मनोरंजनात्मक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं से आपको लाभ भी मिलेगा। इस वर्ष आप धार्मिक यात्रा कर अत्यधिक पुर्ण्याजन करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे, जिसमें आपको धर्मपत्नी का पूर्ण सहयोग मिलेगा। 16 फरवरी के बाद आप पूजा पाठ में विशेष रूचि लेंगे। नियमित रूप से आप अपना दैनिक पूजा करते रहेंगे। आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मों पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथालय अथवा गरीब बच्चे की पढ़ाई लिखाई पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

- साधू, संन्यासी एवं गरीबों को भोजन कराएं।
- श्वेतार्क गणपति अपने पूजा घर में स्थापित करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- नौ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2045

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 15 जून तक राहु कुम्भ राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 2 मार्च को गुरू कुम्भ राशि एंव छठे भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत ही उत्तम रहने वाला है। कारोबारियों को इस समय अप्रत्याशित मुनाफा प्राप्त हो सकता है। आपके प्रतिद्वंदी आपकी नकल करने की कोशिश करेंगे, लेकिन वे पूरी तरह से विफल रहेंगे। छठे स्थान का राहु आपको शत्रुओं से भी लाभ प्राप्त करा सकता है। आपका मन उत्साह से पूर्ण रहेगा और कठिन से कठिन समस्या का सामना करने के लिए आप तत्पर रहेंगे। किसी भी काम को आप मन लगाकर करेंगे जिससे आपके बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न करेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध किंचित प्रभावित रहने वाला है। आप अपने परिश्रम के बल पर कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईओं का अनुभव करेंगे। कुछ कारणों को लेकर आपसे बड़े अधिकारी आपके लिए समस्या पैदा कर सकते हैं। लापरवाह और अति आत्मविश्वासी बिल्कुल न बनें। कार्य की अधिकता के कारण आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अपने कार्यों को तेजी से करें।

धन संपत्ति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहने वाली है। आमदनी के कई नये स्रोत मिलेंगे जिससे आपके संचित धन में तेजी से वृद्धि होगी। वर्षारम्भ में छठे स्थान का राहु अचानक कोई बड़ा लाभ करा सकता है। पिता एवं आपके बड़े भाईयों से भी धन लाभ होगा। शेयर बाजार, सट्टा व लॉटरी इत्यादि के माध्यम से आपको अच्छा लाभ मिलेगा, जिसके फलस्वरूप आप वांछित बचत करने में सफल रहेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध किंचित प्रभावित रहने वाला है। उस समय आपकी आर्थिक स्थिति थोड़ी कमजोर रह सकती है। अतः वित्तीय जोखिम उठाने से बचें। बिना लिखित प्रक्रिया के किसी को पैसे न दें और किसी पर भी आंख बन्दकर विश्वास न करें। जोखिम भरे कार्यों मे धन निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहने वाला है। परिवार के सभी सदस्यों के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा वे लोग हर मोड़ पर आपकी मदद करेंगे। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। यह समय आपके जीवनसाथी के लिए उत्तम रहेगा तथा भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में पंचम स्थान का राहु आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है।

सामाजिक रूप से यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। सामाजिक उन्नति या समाज कल्याण के लिए आप कोई संस्था बना सकते हैं। इस संस्था से बहुत सारे लोगों का कल्याण होगा, जिसका पूरा श्रेय आपको मिलेगा।

संतान

वर्ष का पूर्वार्द्ध संतान के लिए बहुत ही शुभ है। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान की प्राप्ति होगी। बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में वे अच्छी प्रगति करेंगे तथा पराक्रम में वृद्धि होगी।

15 जून के बाद आप संतान को लेकर चिंतित रहेंगे आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां हो सकती हैं। गर्भवती स्त्रियां सावधान रहें, गर्भपात की सम्भावना है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम रहने वाला है। आपका मन प्रसन्नचित्त बना रहेगा। धार्मिक कार्यों में मन लगेगा। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। मानसिक प्रसन्नता के साथ आपका समय व्यतित होगा तथा आप शारीरिक रूप से पूर्ण आरोग्य रहेंगे। 2 मार्च को गुरु ग्रह के गोचर के साथ आपका समय किंचित प्रभावित होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कुछ न कुछ शारीरिक कष्ट होता रहेगा। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि अचानक छोटी-मोटी बीमारियों से आपको परेशान कर सकती है। आंख, पेट, पाचन और नसों में परेशानी हो सकती है। इलाज के लिए आयुर्वेदिक दवा का सेवन करना फायदेमन्द हो सकता है। उचित आहार और नियमित व्यायाम करने से इन बीमरियों से बचा जा सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष बहुत ही श्रेष्ठ रहने वाला है। प्रतियोगिता परीक्षा में आपको वांछित सफलता मिलेगी। वर्ष के प्रारम्भ में विद्यार्थियों की अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ेगी तथा शिक्षा के क्षेत्र में कुछ विशेष उपलब्धी प्राप्त करेंगे। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको इच्छित नौकरी की प्राप्ति होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु आपकी शिक्षा-दीक्षा में रुकावट उत्पन्न कर सकता है तथा गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपके करियर में एकाग्रता नहीं रहेगी और आपका मन भी अशान्त रहा सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में आप छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राओं का भी आनन्द लेंगे। धार्मिक यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

2 मार्च के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपकी व्यावसायिक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं के दौरान आपके छोटी मोटी परेशानियां भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध आपके धर्म कार्यों तथा आध्यात्मिक उन्नति व योग साधना के लिए उत्तम रहेगा। आपकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा, आस्था व भक्ति बढ़ती जाएगी। द्विज, देव, ब्राह्मण व ईष्ट देव की कृपा प्राप्त होगी। आप कोई विशेष पूजा, अनुष्ठान, यज्ञ, हवन आदि संपन्न कराने में सफल होंगे। 15 जून के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। पंचम स्थान में राहु ग्रह का गोचर धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। इस समय आप मानसिक द्वंदता के कारण पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान नहीं कर पाएंगे। आपके दैनिक पूजा पाठ में भी कमी आएगी तथा आपके श्रद्धा व विश्वास में कमी आएंगी।

- प्रतिदिन दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- अपने पूजा घर में लड्डू गोपाल की स्थापना कर उनका पूजन करें।
- पांचमुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- मंगल
(01/03/2024 - 01/03/2031)

मंगल की महादशा 01/03/2024 को आरम्भ होगी और 01/03/2031 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्षों की होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल तृतीय भाव में स्थित है। नवम, दशम तथा षष्ठम भावों पर मंगल की दृष्टि हैं। इसके पूर्व चन्द्र की 10 वर्ष की दशा चल रही थी। आपको शत्रुओं पर विजय, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं, मातृ-पक्ष से लाभ आदि की संभावना है। मंगल की इस दशा के दौरान आपको शक्ति तथा ओज और भाइयों से सुख मिलेगा और जीवन में उन्नति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आप का स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आप में जीवन-शक्ति तथा ऊर्जा प्रचुर मात्रा में होगी और आप अत्यन्त उत्साही होंगे। आपमें पहल-शक्ति तथा साहस भी पर्याप्त होगा और आपको अपने लक्ष्य की प्राप्ति होगी। आपको सरदर्द, ज्वर, संक्रामण, पित्त-दोष अथवा गले से सम्बद्ध मौसमी बीमारियाँ हो सकती हैं। किन्तु, ये मामूली बीमारियाँ हैं। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ तथा व्यवसाय :

आप कठिन परिश्रम से अपने भविष्य का निर्माण स्वयं करेंगे। आप प्रगति करेंगे और आपकी कमाई अच्छी होगी। आपके प्रतिद्वन्दी आपके मार्ग में बाधाएँ खड़ी कर सकते हैं और आपके मातृ-पक्ष के सम्बन्धियों के लिए समय कष्टकर हो सकता है। आपके लिए अदालत के मामलों और मुकदमों का निपटारा करा लेना उचित होगा। अपनी जीविका के लिये यान्त्रिकी अभियंत्रण, सैन्य सेवाओं, चिकित्सा-कार्य, दन्तचिकित्सा-कार्य औद्योगिक-प्रतिष्ठानों में रोजगार आदि का चयन कर सकते हैं। लौह-इस्पात, खेल के सामान, ताम्बे, खनिज पदार्थों तथा दवाओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को लाभ होगा, उनकी पदोन्नति होगी, उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा और कार्य स्थान में वातावरण अनुकूल रहेगा। व्यवसाय व्यापार से जुड़े लोगों के व्यवसाय में उन्नति तथा आय और लाभ में वृद्धि होगी। आप अपने ही प्रयासों से बहुत प्रगति करेंगे।

वाहन, यात्राएँ, सम्पत्ति :

शुक्र की अन्तर्दशा के कारण आपको सुखों की प्राप्ति होगी। इस अन्तर्दशा के फलस्वरूप, सुख-आराम तथा वाहनों की प्राप्ति की सम्भावना है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आपको कुछ आर्थिक पुरस्कार प्राप्त होगा। गणित, विज्ञान, संचार-माध्यमों से सम्बद्ध विषय आदि में आपकी रुचि होगी। आप खेलों, वाद-विवादों (चर्चा-परिचर्चाओं) तथा बाहरी गतिविधियों में भाग लेंगे। आपको परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। आपके प्रतिद्वंद्वी आपको कड़ी टक्कर देंगे।

परिवार :

अपने बच्चों के साथ आपका संबंध उत्तम रहेगा। वे अपने कार्यों में बहुत अच्छा करेंगे, आपको उनसे सुख मिलेगा तथा आप गौरवान्वित महसूस करेंगे। आपके जीवन साथी को समृद्धि तथा सम्बन्धियों से सहायता की प्राप्ति और जीवन में उन्नति होगी। आपके साझेदार के साथ आपका सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपकी माता की यात्रा होगी और आध्यात्मिक कार्यों में व्यय होगा। आपके पिता को साझेदारी और यात्रा में लाभ होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को ख्याति, शक्ति तथा अधिकार की प्राप्ति होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को सफलता तथा सुख मिलेगा और निवेश में लाभ होगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपके मित्र बहुत अच्छे स्वभाव के होंगे जो आपकी बड़ी सहायता करेंगे और आपका उनके साथ समय सुखद बीतेगा।

अन्तर्दशा :

मंगल की मुख्य दशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति और भाई से सुख की प्राप्ति होगी और आपकी यात्राएँ होंगी। राहु के कारण कुछ समस्याएँ आएंगी। बृहस्पति की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको लाभ मिलेगा। लग्नेश शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको शक्ति, अधिकार, यश, ख्याति और समृद्धि की प्राप्ति होगी और आप यात्रा पर जाएंगे। बुध के कारण आपकी शिक्षा उत्तम होगी और जीवन में कुछ परिवर्तन होंगे। केतु की अन्तर्दशा कुछ समस्याएँ उत्पन्न करेगी। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप समृद्धि और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और सूर्य की अन्तर्दशा के के कारण साझेदारी में लाभ होगा। चन्द्र की अन्तर्दशा के कारण स्वास्थ्य कुछ खराब हो सकता है।

अंर्तदशा :- मंगल - गुरु
(15/08/2025 - 22/07/2026)

आपकी मंगल की महादशा 01/03/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 15/08/2025 को प्रारंभ होकर 22/07/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शत्रुओं से मुक्ति मिलेगी। कर्ज़ खत्म होगा। रोज़गार के मौके मिलेंगे। कार्यालय उत्तम होगा। चुनाव में सफल हो सकते हैं। मुकदमे में जीत होगी। ज्ञानार्जन में रुचि होगी, अध्यात्म में समय बिताएंगे। जनता से सम्मान मिलेगा। प्रोन्नति हो सकती है। वेतन बढ़ सकता है।

आपके जीवन साथी को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपके पिता कार्यक्षेत्र में तरक्की करेंगे। माता की यात्राएं होंगी, जीवनस्तर ऊंचा होगा, मित्र और धन नसीब होंगे। आपके भाई-बहन अचल संपत्ति क्रय करेंगे, घरेलू सुख रहेगा, मित्र मदद करेंगे।

आपकी संतान शिक्षा में प्रगति करेगी; वे घर में सुखी रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चपद प्राप्त करेंगे, कार्यो में सफलता मिलेगी। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के खर्चे बढ़ सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली व्याधि हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए ब्रह्माजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- मंगल - शनि
(22/07/2026 - 31/08/2027)

आपके लिए मंगल की महादशा 01/03/2024 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 22/07/2026 को प्रारंभ होकर 31/08/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में प्रोन्नति हो सकती है, सम्मान मिलेगा। व्यापार में लाभ होगा। विवाह हो सकता है। विदेश यात्रा संभव है। जिम्मेदारी बढ़ सकती है। समृद्धि बढ़ेगी। कार्यो में सफलता मिलेगी, उच्च पद प्राप्त होगा। गंभीर अध्ययन में व्यस्त रह सकते हैं। लेखन या शोध में मन लग सकता है।

आपके जीवनसाथी व्यापार में प्रगति करेंगे। आपके पिता जायदाद क्रय कर सकते हैं, उनकी प्रोन्नति होगी, सर्जनात्मक कार्य करेंगे। माता की समृद्धि में वृद्धि होगी। आपके भाई-बहन सफल होंगे, वे बुद्धिमानी से निवेश करेंगे और उनके प्रभावशाली मित्र होंगे।

आपकी संतान शिक्षा में परिश्रम करेगी; उन्हें उच्चशिक्षा में प्रवेश मिल सकता है।

अगर वे सेवारत हैं तो प्रसिद्धि और वांछित स्थान पर तबादले का योग है।

अगर आप सेवारत हैं तो अवांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। परामर्शदाता और व्यापारी धनी बनेंगे।

स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा रहेगा मगर सुस्ती और निराशा से बचें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनि महाराज की स्तुति करें।

अंर्तदशा :- मंगल - बुध
(31/08/2027 - 27/08/2028)

आपके लिए मंगल की महादशा 01/03/2024 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 31/08/2027 को प्रारंभ होकर 27/08/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में आपको कार्यों में सफलता मिलेगी। मित्र आपकी मदद करेंगे। परिवार में सुख रहेगा। मामापक्ष के लोग धनी बनेंगे। व्यापारिक, प्रशासनिक और संगठनात्मक कार्यों से लाभ होगा। सब सुख-सुविधाएं, उत्तम भोजन और वस्त्र उपलब्ध होंगे। संचार माध्यम से लाभ हो सकता है। उच्च पद मिल सकता है; कार्यों में सफलता मिलेगी। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे; अप्रत्याशित लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी को उच्चपद प्राप्त होगा। आपके पिता स्पर्धियों पर विजयी होंगे। माता को विभिन्न माध्यमों से धन प्राप्त होगा। भाई-बहनों को सफलता में बाधाएं आ सकती हैं मगर स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे। उनके बहुत से मित्र होंगे; अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी संतान विज्ञान, वाक्विद्या और व्यापार में प्रवीण होगी। परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे सेवारत हैं तो कार्यक्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारियों से लाभ होगा। परामर्शदाताओं को निवेश से लाभ होगा, जबकि व्यापारियों के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है।

अंर्तदशा :- मंगल - केतु
(27/08/2028 - 23/01/2029)

आपके लिए मंगल की महादशा 01/03/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 27/08/2028 को प्रारंभ होकर 23/01/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में आप नेता बनेंगे। चुनाव में या मुकदमे में जीत सकते हैं। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। प्रसिद्धि मिलेगी। अध्यात्म और दर्शन में रुचि हो सकती है। मितव्ययता द्वारा धन का संचय करेंगे। शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आप साहसी, लोकप्रिय और

बुद्धिमान होंगे। अचल संपत्ति, भूमि, वाहन आदि क्रय कर सकते हैं। प्रसन्नचित्त रहेंगे।

आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, परिवार में खुशी रहेगी। आपके पिता खुश रहेंगे, धनार्जन उत्तम होगा। आपकी माता को साझेदार के माध्यम से धनार्जन हो सकता है; यात्रा और धनलाभ का योग है। आपके भाई-बहनों के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकते हैं; साझेदार के माध्यम से धनलाभ होगा, खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी।

आपकी संतान स्पर्धियों पर विजय प्राप्त करेगी, वाक्चातुर्य और बहस में उत्तम होंगे, शिक्षा में नाम कमाएंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धन कमाएंगे, सफल रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाताओं को धन का लाभ होगा जबकि व्यापारियों को पहले किये निवेश से लाभ मिलेगा।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए कंबल, उड़द की दाल और सतनजा दान में दें।

अंर्तदशा :- मंगल - शुक्र
(23/01/2029 - 26/03/2030)

आपके लिए मंगल की महादशा 01/03/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 23/01/2029 को प्रारंभ होकर 26/03/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। उत्तम भोजन, वस्त्र, उपहार प्राप्त करेंगे। परिवार में समृद्धि बढ़ेगी। सुंदर आभूषण और वस्तुएं उपलब्ध रहेंगी। समाजसेवा में रुचि रहेगी। आपका व्यवहार मधुर होगा। वाहन सुख मिलेगा। विवाह से धन का लाभ होगा। प्रसन्नचित्त रहेंगे। साझेदार के माध्यम से या विरासत में अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे। आपके पिता को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। माता को मानसिक और घरेलू सुख रहेगा। भाई-बहन धन का संग्रह कर सकते हैं; कार्यक्षेत्र में स्थिति उत्तम रहेगी।

आपकी संतान प्रतिस्पर्धा में सफल होगी। अगर वे सेवारत हैं तो सम्मान में वृद्धि होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो जनसंपर्क में सफल होंगे। परामर्शदाताओं का सम्मान बढ़ेगा। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

सामान्यतः स्वास्थ्य उत्तम होगा। नेत्र और गले की मामूली शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए लक्ष्मीजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :– मंगल – सूर्य
(26/03/2030 - 31/07/2030)

आपकी मंगल की महादशा 01/03/2024 को प्रारंभ हो रही है । मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 26/03/2030 को प्रारंभ होकर 31/07/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आपको धन की प्राप्ति होगी। रुके हुए काम पूर्ण होंगे। प्रसन्नता मिलेगी। आपकी वाक्शक्ति उत्तम रहेगी; व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा। उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। धन की बचत कम होगी। धन कमाने के लिए परिश्रम करना होगा। धर्म, अध्यात्म और पराविद्या में रुचि होगी। कार्यों में सफलता मिलेगी मगर कुछ उतार-चढ़ाव रहेंगे।

आपके जीवनसाथी को धन, प्रसिद्धि और सम्मान प्राप्त होंगे। पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। माता को कार्यों में सफलता मिलेगी। भाई-बहनों को सम्मान और उच्चपद प्राप्त होंगे, धन कमाएंगे। आपकी संतान सम्मानित होगी। अगर वे सेवारत हैं तो धन, सफलता और प्रोन्नति का योग है।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकता है, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को लाभ होगा; कार्यक्षमता उत्तम रहेगी। व्यापारियों को लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नेत्रों का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य के गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :– मंगल – चन्द्र
(31/07/2030 - 01/03/2031)

आपके लिए मंगल की महादशा 01/03/2024 को प्रांरभ हुई और को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र अंतर्दशा 7 मास की होगी और 31/07/2030 को प्रारंभ होकर 01/03/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, प्रसन्नता और मस्तिष्क के रुझान का कारक है।

इस अवधि में आपका समय हंसी-खुशी के साथ बीतेगा। आप धन, सुविधाओं और विलास साधनों से युक्त रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। जीवन में उत्थान आएगा; जनता से संपर्क द्वारा धनागम होगा। चंद्र की सप्तम भाव पर दृष्टि के कारण विवाह, समाज में लोकप्रियता और सफलता संभव हैं। व्यापार, साझेदारी और जलीय पदार्थों से लाभ हो सकता है। विवाहित जीवन सुखी रहेगा और विवाह से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम होगा, धनी बनेंगे और साझेदारी से लाभ होगा। आपके पिता प्रसन्न रहेंगे, धनलाभ होगा, सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहेंगे। भाई-बहनों को कुछ धन का लाभ होगा, मानसिक संतुष्टि मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपकी माता को कार्यों में प्रशंसा मिलेगी, प्रसन्नता और घरेलू सुख का संकेत है।

महादशा :- राहु
(01/03/2031 - 01/03/2049)

राहु की महादशा 01/03/2031 को आरम्भ होकर 01/03/2049 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्म कुण्डली में राहु चतुर्थ भाव में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि दशम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको यश, ख्याति, जीविका में प्रगति और समृद्धि की प्राप्ति होगी। राहु की इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति और लाभ की प्राप्ति, अचल सम्पत्ति तथा सुख में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप शक्तिशाली होंगे। एक सन्तुलित जीवन के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मौसम में परिवर्तन के फलस्वरूप चर्मरोग, पाचन-समस्या, हृदय संबंधी समस्या, विषाणुजन्य संक्रामक रोग आदि हो सकता है। थोड़ी सावधानी से इन रोगों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। आपको सभी भौतिक सुख मिलेंगे। आपको माता से लाभ मिल सकता है। आपको जहाँ तक सम्भव हो सट्टे से बचना चाहिए। व्यावसायिक उपार्जन, व्यापार से आय अच्छी होगी। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि के क्षेत्र, विमान उड्डयन, विमान-चालन, कला, सम्पर्क-कार्य, कम्प्यूटर, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, व्यापार आदि का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, दवा, चमड़ा, एण्टी-बायोटिक दवा, प्लास्टिक, रबड़ आदि का व्यापार लाभप्रद हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों की आय में वृद्धि, सम्मान, वरिष्ठ कर्मचारियों के अनुग्रह तथा वांछित लक्ष्य की प्राप्ति होगी। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को साझेदारों से लाभ, व्यापार में सफलता, विदेश यात्रा, आय में वृद्धि और उपार्जन होगा। जीविका में प्राप्ति के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

इस दशा के दौरान आपको सभी भौतिक समृद्धि मिलेगी और सुखों में वृद्धि होगी। आप अपना आवास परिवर्तित कर सकते हैं। इस दशा में आपको चल सम्पत्ति, जमीन-जायदाद की प्राप्ति हो सकती है। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी व दूर की यात्रा होगी। छोटी यात्रा में सम्भावित नुकसान से बचने के लिए सावधानी बरतनी चाहिए।

शिक्षा :

आपकी बुनियादी शिक्षा उत्तम होगी। उच्च शिक्षा के लिए आप अपनी संस्था में परिवर्तन कर सकते हैं। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आप कठिन परिश्रम करेंगे। दशा की प्रगति के साथ स्थिति में सुधार आएगा। विज्ञान, कला, कम्प्यूटर-विज्ञान, व्यापार आदि में आपकी रुचि हो सकती है। आपकी इच्छा शक्ति मजबूत है, आप स्वभाव से स्वतंत्र हैं और अपनी शिक्षा में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपके बच्चों के जीवन में कुछ परिवर्तन होगा और उन्हें आपकी सहायता तथा मार्गदर्शन की आवश्यकता हो सकती है। आपका आपके जीवनसाथी के साथ संबंध सन्तोषजनक रहेगा। आपकी माता की सम्पत्ति में वृद्धि होगी, आर्थिक-समृद्धि की प्राप्ति होगी और उन्हें स्वास्थ्य के प्रति सावधानी बरतनी होगी। आपके पिता की यात्रा, अचानक लाभ की प्राप्ति तथा आध्यात्मिक विकास होगा। आपके छोटे भाई-बहनों को अचानक धन-लाभ और जीवन का सुख मिलेगा जबकि बड़े भाई-बहनों को प्रतिद्वंद्वियों पर विजय और भौतिक समृद्धि की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपको सुख, अचल सम्पत्ति की प्राप्ति तथा लाभ मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा भाग्यशाली सिद्ध होगी यद्यपि प्रतिद्वन्द्वियों के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। शनि की अन्तर्दशा कष्टकारक सिद्ध हो सकती है किन्तु, भौतिक कला व यात्रा का अवसर प्रदान करेगी। बुध की अन्तर्दशा छोटे भाई-बहनों के लिए सहायक होगी और इसके फलस्वरूप उनको यात्रा और व्यय होगा। केतु की अन्तर्दशा में कुछ समस्याएं हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर दशा के फलस्रूप लाभ और सम्पत्ति में वृद्धि होगी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के कारण पारिवारिक सुख मिलेगा और सम्पत्ति में वृद्धि होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी जबकि योगकारक मंगल के कारण सुख की प्राप्ति, बच्चे का जन्म और जीविका में प्रगति होगी।

अंर्तदशा :- राहु - राहु
(01/03/2031 - 12/11/2033)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 01/03/2031 को प्रारंभ होकर 01/03/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 01/03/2031 को प्रारंभ होकर 12/11/2033 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के दशम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विचलित, असंतुष्ट और अप्रसन्न हो सकते हैं। व्यवहार मूर्खतापूर्ण हो सकता है; धोखाधड़ी की भावना मन में आ सकती है। माता-पिता में से किसी एक से अलगाव हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

अंर्तदशा :- राहु - गुरु
(12/11/2033 - 06/04/2036)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 01/03/2031 को प्रारंभ होकर 01/03/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 12/11/2033 को प्रारंभ होकर 06/04/2036 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रूषा, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। छठे भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 10, 12, 2 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

यह अंतर्दशा आपके लिए अशुभ साबित हो सकती है। आप आलसी, भाग्यहीन और डरपोक हो सकते हैं। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मगर आप कुछ बेचैन रहेंगे। प्रत्येक व्यक्ति के साथ आवश्यकता से अधिक सावधानी से व्यवहार करेंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार के दिन प्रातःकाल पूजा-उपासना के बाद कच्चे दूध और गंगाजल से धोकर तर्जनी में धारण करें।

अंर्तदशा :- राहु - शनि
(06/04/2036 - 11/02/2039)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 01/03/2031 को प्रारंभ होकर 01/03/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 06/04/2036 को प्रारंभ होकर 11/02/2039 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

शनि को अशुभ ग्रह समझा जाता है। लग्न में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 3, 7, 10 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप अधार्मिक विचारों के हो सकते हैं। स्वास्थ्य निर्बल हो सकता है ; वायु से संबंधित व्याधियों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। उच्चाधिकारी आपसे रुष्ट हो सकते हैं, पद की हानि संभव है। प्रत्येक कदम सावधानी से रखना आवश्यक है।

अरिष्ट से बचाव के लिए :

- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं
- पीपल की जड़ में जल अर्पित करें
- भोजन की पहली रोटी गाय को दें

अंर्तदशा :- राहु - बुध
(11/02/2039 - 31/08/2041)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 01/03/2031 को प्रारंभ होकर 01/03/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 11/02/2039 को प्रारंभ होकर 31/08/2041 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है। द्वितीय भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के अष्टम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी आय अच्छी होगी, परिवार धनी बनेगा। उद्योग-व्यापार से संबंधित व्याख्यानों द्वारा धन कमा सकते हैं। धर्म में रुचि बढ़ेगी। दान-धर्म पर धन खर्च कर सकते हैं। धन अर्जित करने में चतुर होंगे और उसका संचय भी सावधानीपूर्वक करेंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए 6 रत्ती के पन्ने की सोने की अंगूठी दायें हाथ की मध्यमा उंगली में बुध के गायत्री मंत्र के जाप करते हुए बुधवार के दिन प्रातःकाल, गंगाजल और दूध से धोकर धारण करें।

अंर्तदशा :– राहु – केतु
(31/08/2041 - 18/09/2042)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 01/03/2031 को प्रारंभ होकर 01/03/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी जो आपके लिए 31/08/2041 को प्रारंभ होकर 18/09/2042 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान, जांघों का परिचायक है। दशम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

राहु और केतु छाया ग्रह हैं। इनकी स्वयं की कोई राशि नहीं होती। सामान्यतः इन्हें अशुभ समझा जाता है परंतु वास्तव में वे शुभ या अशुभ कुंडली में अपनी स्थिति के अनुसार होते हैं।

इस अवधि में आप साहसी, शक्तिशाली और प्रसिद्ध बनेंगे मगर पापकर्म में भी रुचि हो सकती है। इस कारण कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं। आप प्रसन्नचित्त और धार्मिक होंगे। तीर्थयात्राएं हो सकती हैं। समाजसेवा करेंगे, गरीबों की मदद करेंगे।

अरिष्ट से बचाव के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72,000 जाप करें।

अंर्तदशा :– राहु – शुक्र
(18/09/2042 - 18/09/2045)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 01/03/2031 को प्रारंभ होकर 01/03/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 18/09/2042 को प्रारंभ होकर 18/09/2045 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

शुक्र शुभ ग्रह है। द्वितीय भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के अष्टम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके व्यक्तित्व और सुंदरता में निखार आएगा, प्रसन्नचित्त रहेंगे, कार्यों में दक्ष होंगे। स्वादिष्ट भोजन ग्रहण करेंगे, वाहन सुख रहेगा। स्वास्थ्य उत्तम होगा, धनी बनेंगे। भोजन में संयम बरतना आवश्यक है, अन्यथा स्वास्थ्य बिगड़ सकता है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- लक्ष्मीजी की उपासना करें

• चींटियों को चीनी और आटा खिलाएं।
• कन्याओं को खीर खिलाएं

अंर्तदशा :– राहु – सूर्य
(18/09/2045 - 13/08/2046)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 01/03/2031 को प्रारंभ होकर 01/03/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 18/09/2045 को प्रारंभ होकर 13/08/2046 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। द्वितीय भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के अष्टम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है; इस कारण खर्चे बढ़ सकते हैं। अन्य कारणों से जैसे मुकदमेबाजी या सरकारी अधिकारियों से दुर्व्यवहार के कारण भी धन खर्च हो सकता है। अचल संपत्ति की हानि हो सकती है। यह अंतर्दशा अशुभ साबित हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य तांत्रिक मंत्र के 28000 जाप करें।

सूर्य के अन्य उपाय करना भी लाभदायक होगा।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2026

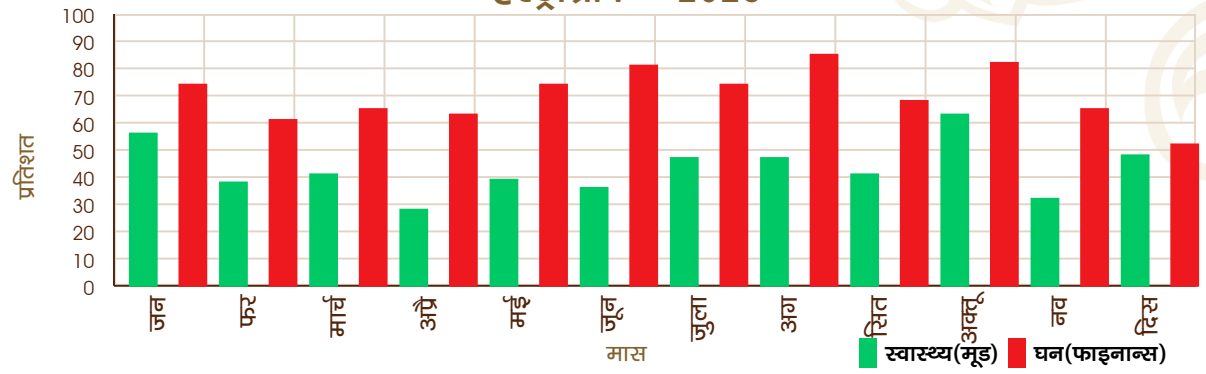

एस्ट्रोग्राफ - 2027

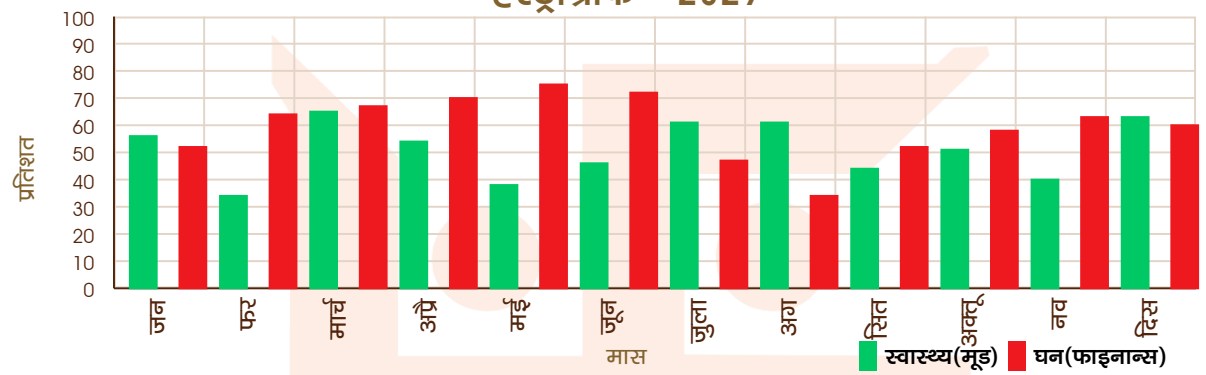

एस्ट्रोग्राफ - 2028

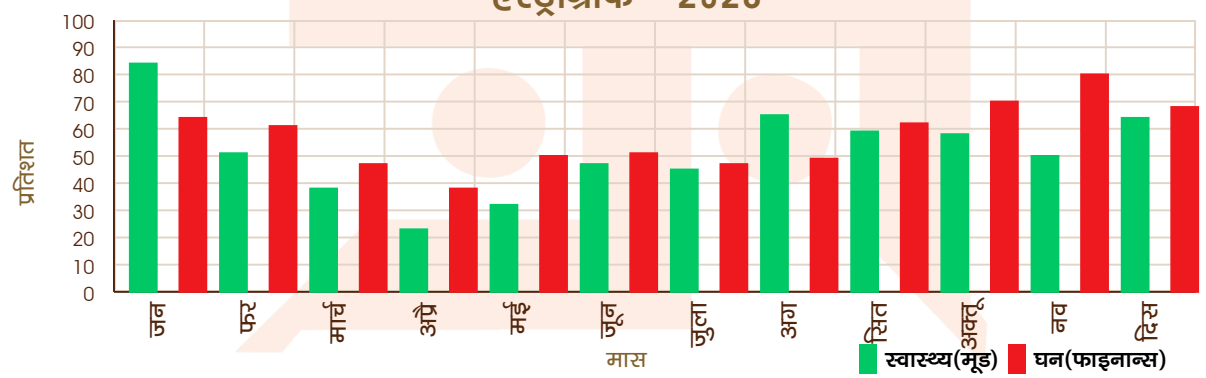

एस्ट्रोग्राफ - 2029

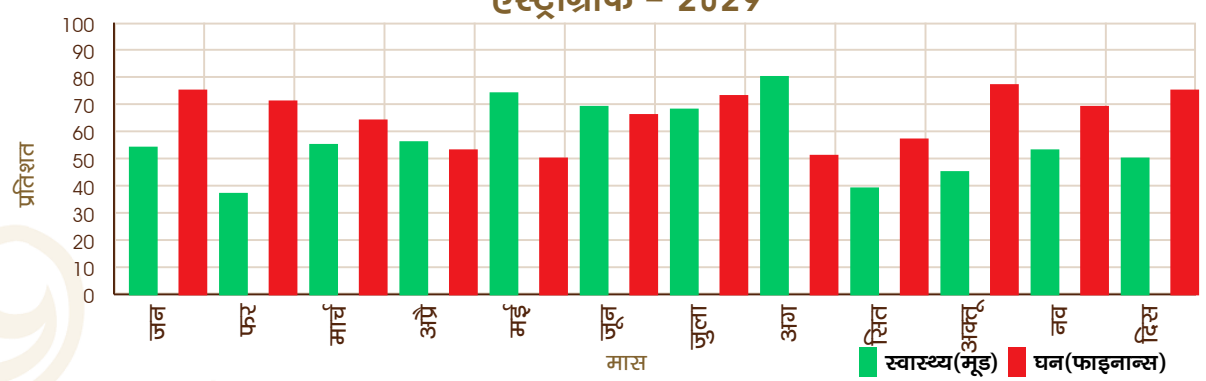

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

एस्ट्रोग्राफ - 2030

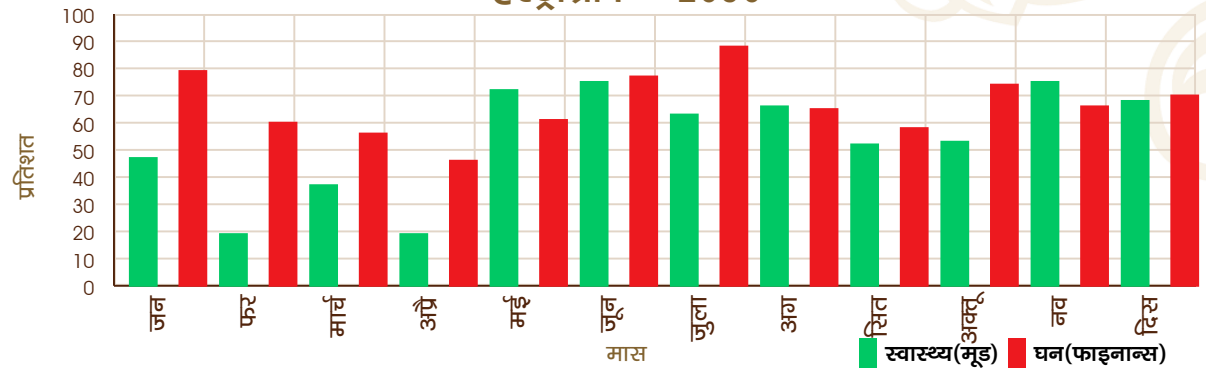

एस्ट्रोग्राफ - 2031

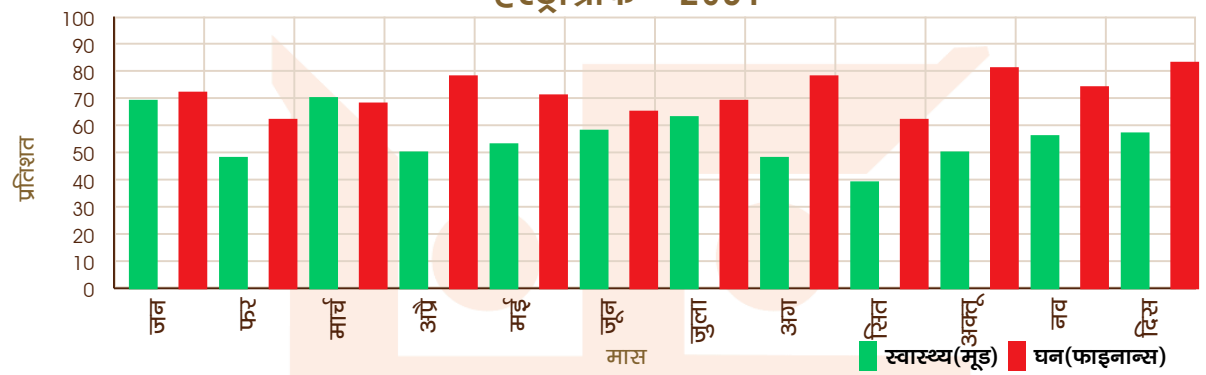

एस्ट्रोग्राफ - 2032

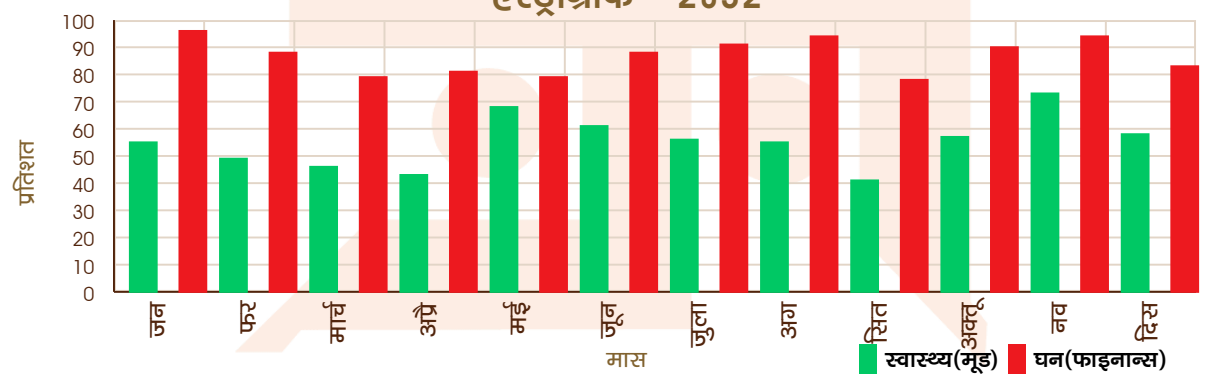

एस्ट्रोग्राफ - 2033

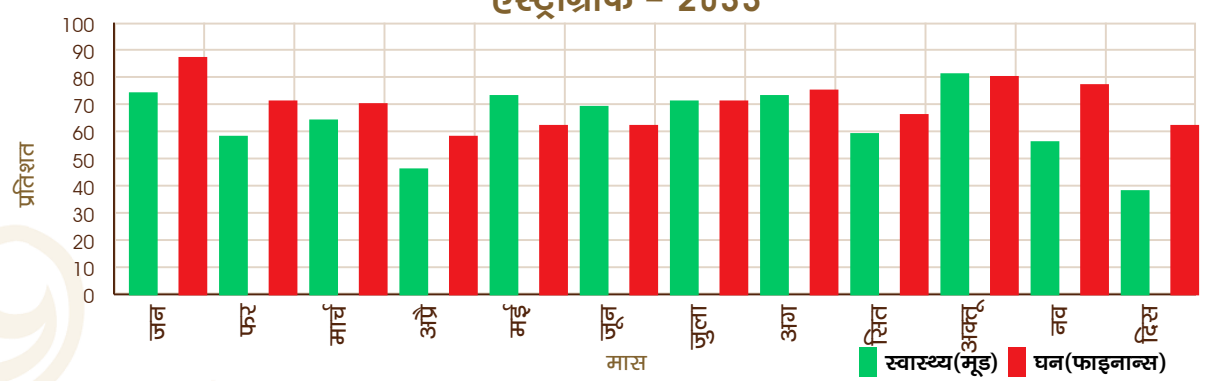

एस्ट्रोग्राफ - 2034

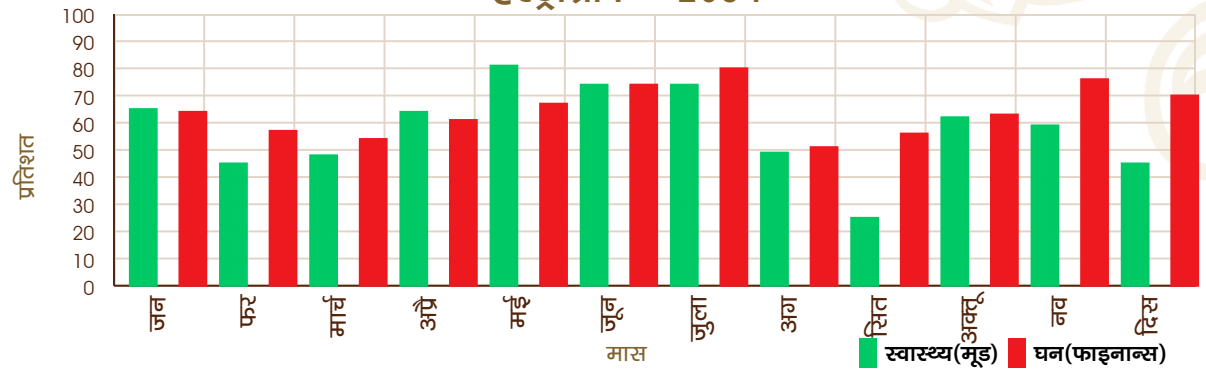

एस्ट्रोग्राफ - 2035

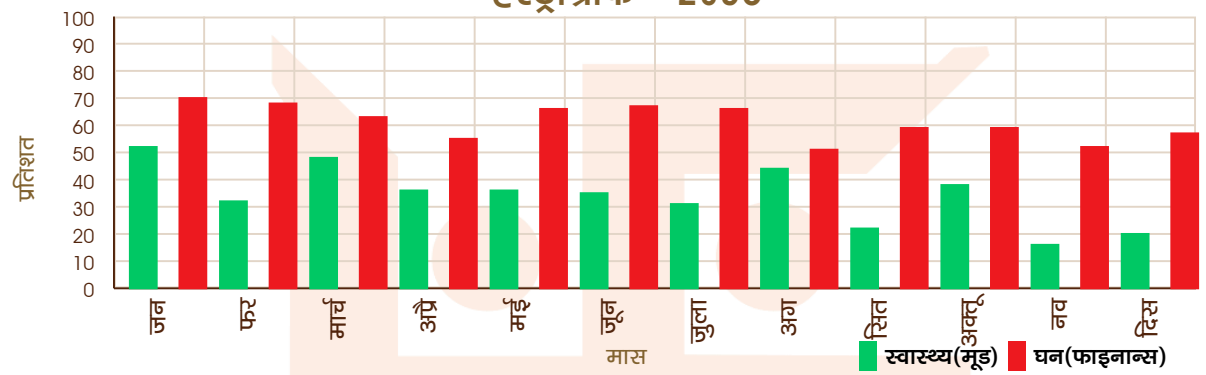

एस्ट्रोग्राफ - 2036

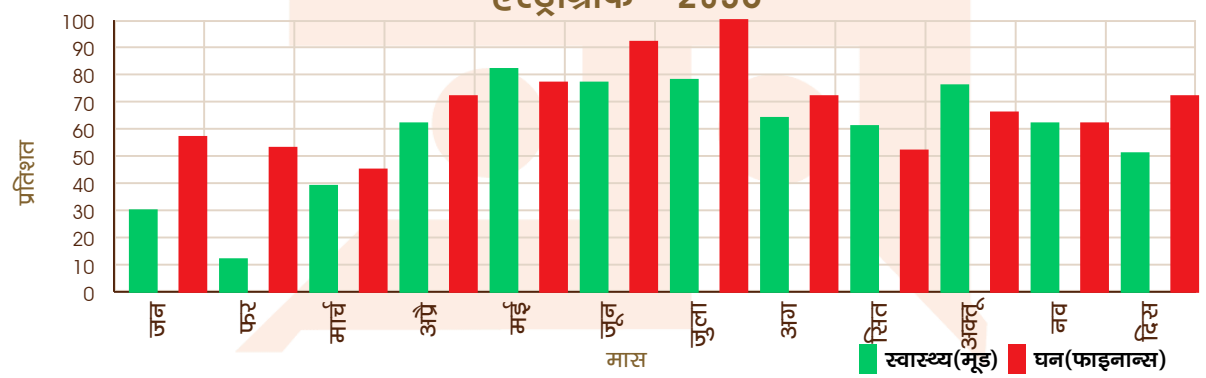

एस्ट्रोग्राफ - 2037

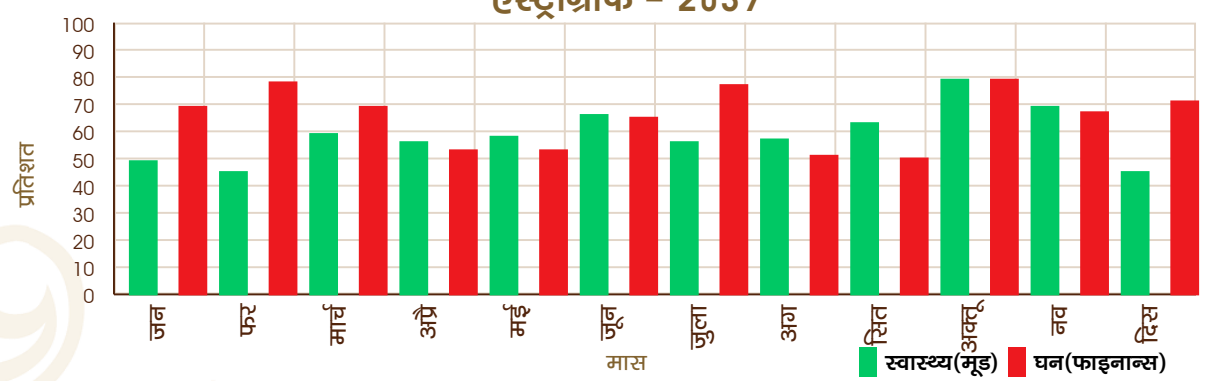

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

एस्ट्रोग्राफ - 2038

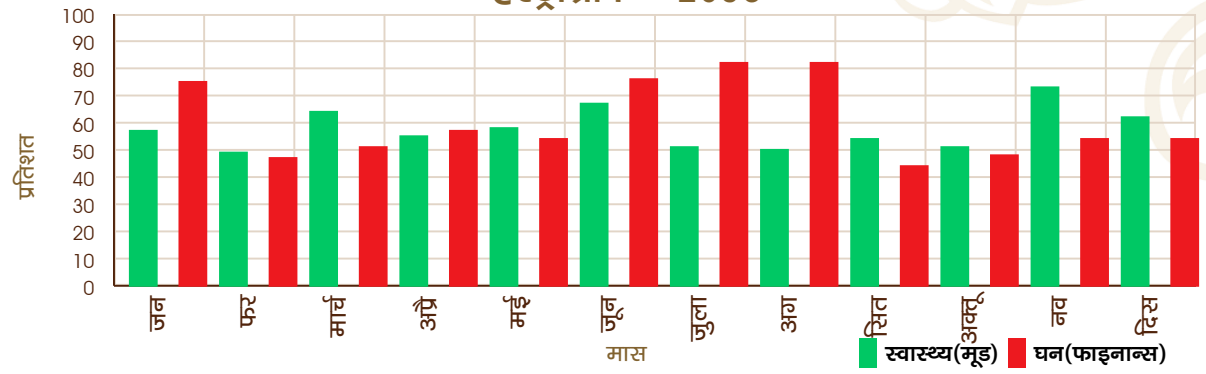

एस्ट्रोग्राफ - 2039

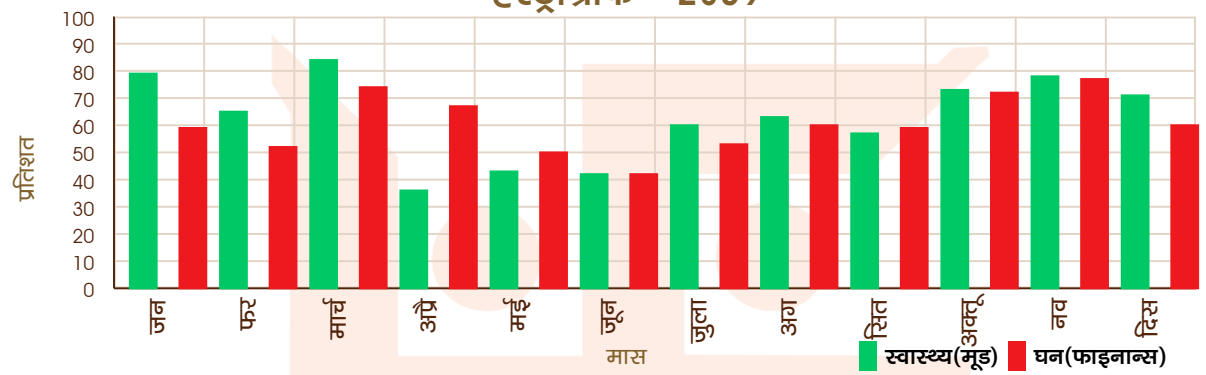

एस्ट्रोग्राफ - 2040

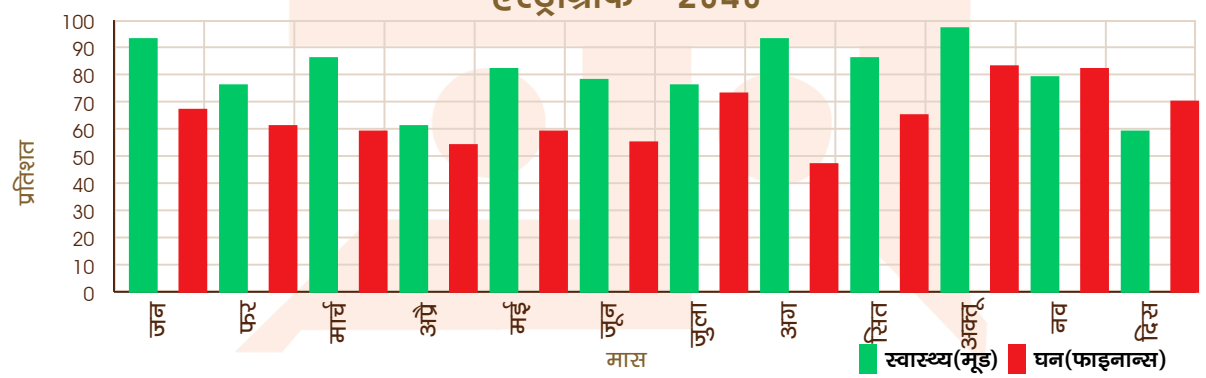

एस्ट्रोग्राफ - 2041

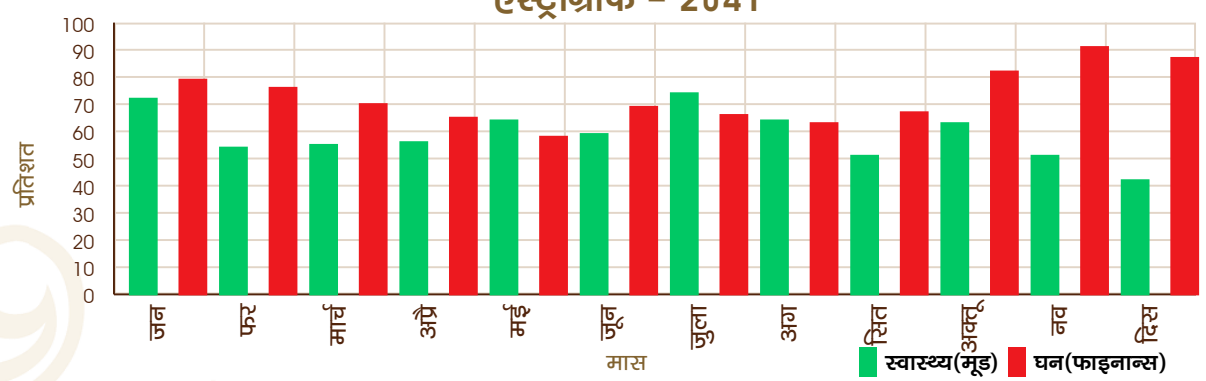

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

एस्ट्रोग्राफ - 2042

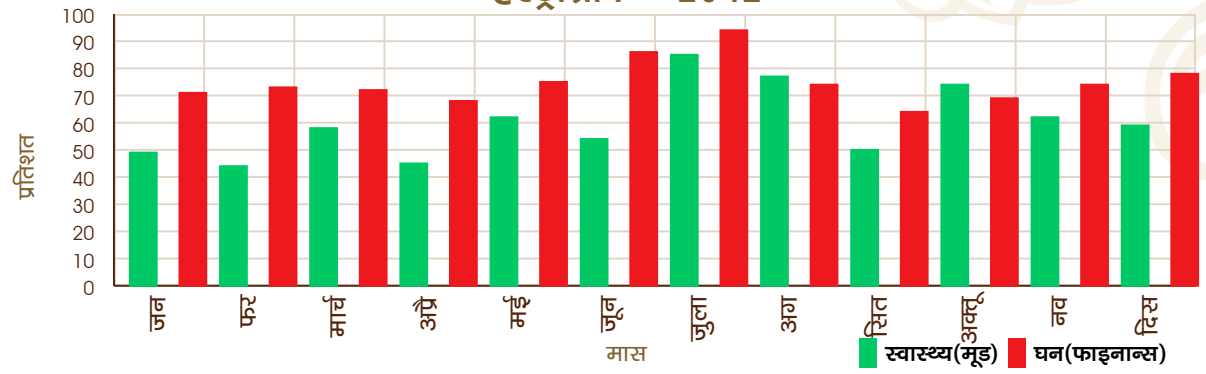

एस्ट्रोग्राफ - 2043

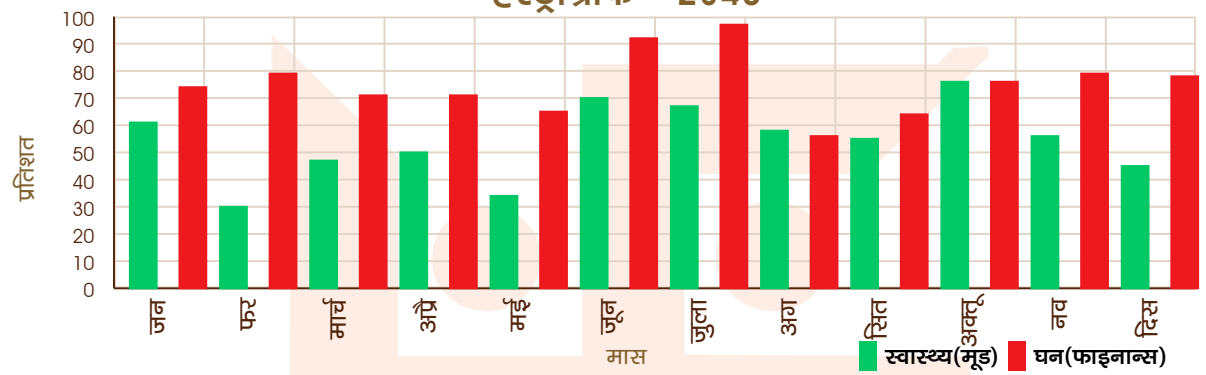

एस्ट्रोग्राफ - 2044

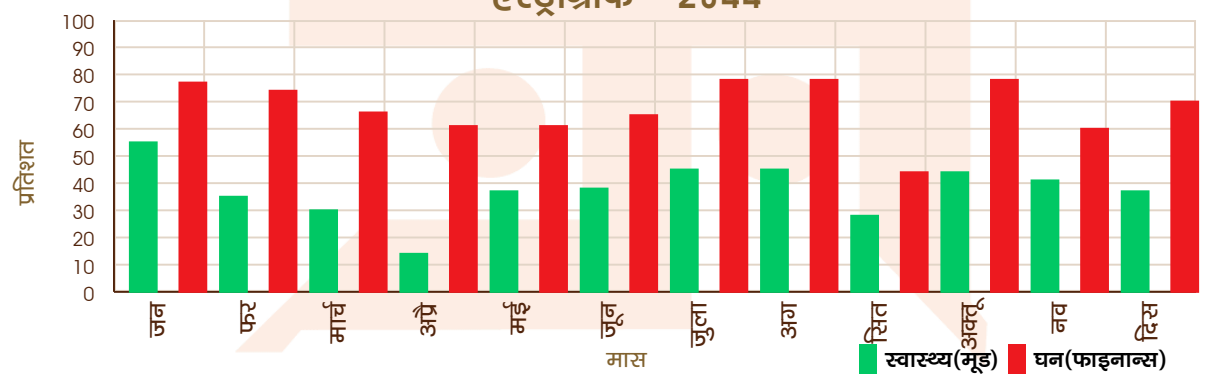

एस्ट्रोग्राफ - 2045

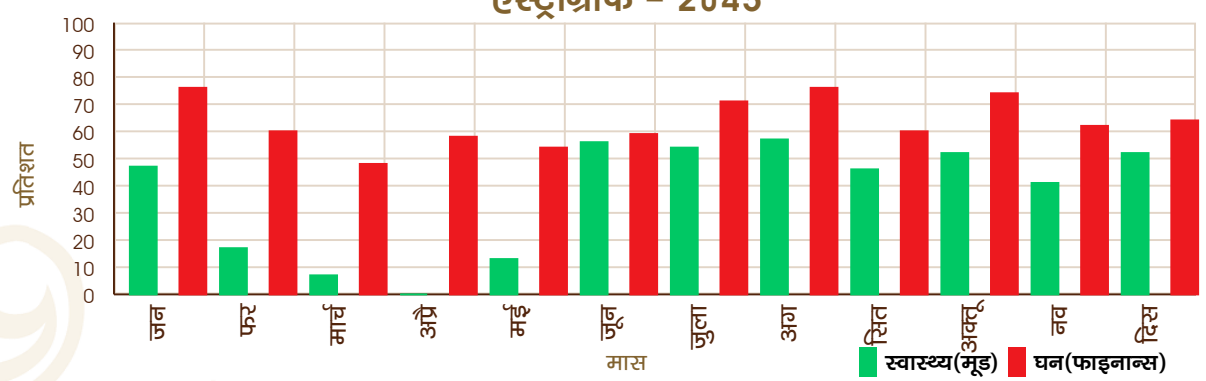

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

योग

शकट योग

जीवान्त्याष्टारिसंस्थे शशिनि तु शकटः।।
क्वचित्क्वचिद्भाग्यपरिच्युतः सन् पुनः पुनः सर्वमुपैति भाग्यम्।
लोकेऽप्रसिद्धोऽपरिहार्यमन्तः शल्यं प्रपन्नः शकटेऽतिःदुखी।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 14, 17 ।।

यदि पत्रिका में चंद्रमा से 6, 8 या 12 वें स्थान में बृहस्पति हो तो शकट योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप जन्मभर दुःखी रहना, जीवन व्यथित रहना, प्रसिद्धि प्राप्त करना, सामान्य जीवन व्यतीत करना, भाग्यहीनता तथा पुनः भाग्य प्राप्ति के योग बनेंगे।

पृथ्वीपति योग

पत्यौ कुटुम्बस्य तृतीयराशौ स्थिते यदा पुंग्रहसौम्यदृष्टे।
शुभ स्थिते खेचरनायके स्यात्स्वतुङ्गगे सर्वजनावनीशः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 3/श्लोक 17।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव का स्वामी तीसरे शुभ ग्रह तथा पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) से दृष्ट हो और शुभग्रह की राशि में या अपनी उच्च राशि में हो तो जातक पृथ्वी का राजा होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,गुरु,शुक्र योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कई देशों में सेवा करने वाले राष्ट्राध्यक्ष, राजदूत और उच्चस्तरीय राज्याधिकारी होंगे।

नौका योग

होरादिकष्टकेभ्यः सप्तर्क्षगतैः क्रमेण योगाः स्युः।
सलिलोपजीविविभवा बह्वाशाः ख्यातकीर्तयो हृष्टाः।
कृपणा बलिनो लुब्धा नौसम्भूताश्चलाः पुरुषाः ।।
।। सारावली ।। अ. 21/श्लोक 11, 21।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्न से सप्तम स्थान तक ही सातों ग्रह स्थित हों तो नौका योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र,मंगल,बुध,गुरु,शुक्र योग की संभावना : 45 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में नौकायोग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप जल द्वारा जीविका करके अधिक विभव तथा धन लाभ कर्त्ता, प्रसिद्ध, यशस्वी, आशावान, प्रसन्न चित्त, कृपण, बली, लालची और चंचल स्वभाव के प्राणी होंगे।

सुनफा योग

सुनफा रविरहितैः वित्तसंस्थैः कैरववनबान्धवाद्विहगैः।
श्रीमान् स्वबाहुविभवो बहुधर्मशीलः
शास्त्रार्थविद्बहुयशाः सुगुणाभिरामः।
शान्तः सुखी क्षितिपतिः सचिवोऽथ वा स्यात्।
सुतः पुमान् विपुलधीः सुनफाभिधाने।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 4।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य को छोड़कर चंद्रमा से धनभाव में कोई ग्रह हो तो सुनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप ल क्ष्मीवान्, अपने परिश्रम से धनार्जन करने वाले, धार्मिक, यशस्वी, गुणी, शान्तप्रिय, सुखी, राजा या मंत्री होंगे।

युद्ध कुशल एवं कलह प्रवीण योग

धैर्यान्वितो विक्रमराशिनाथसंयुक्तराश्यंशपतौ यदंशे ।
तदंशनाथे स्वगृहादिवर्गे युद्धे विदग्धः कलहप्रवीणः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-33 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश जिसकी राशि अंश में है, वह ग्रह अपने राश्यादि वर्ग में हो तो जातक धैर्यवान, युद्ध में चतुर और कलह करने में निपुण होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धैर्यधारण करने वाले, युद्ध में चतुर और कलह प्रिय प्राणी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कंठरोग योग

पापे तृतीये गलरोगमत्र वदन्ति मांद्यादियुते विशेषात् ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-47 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भाव में पाप ग्रह हो विशेषतः मांद्यंशादि युक्त हो तो

कंठरोग होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको कंठ रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-9 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,गुरु,शुक्र योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको

अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

एकपुत्र योग

पुत्रेशांशपतिः स्वभांशकगतो यद्येकपुत्रं वदेत् ।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-11 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम स्थान का स्वामी जिस नवांश में हो, उस नवांश का स्वामी निज नवांश में हो तो एक पुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको मात्र एक पुत्र का सुख प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

शिर मुख या गुल्म रोग योग

बलहीनेऽरिनाथे वा लग्नस्थे वा धरासुते।
मूर्धार्तिर्मुखरोगो वा गुल्मविद्रधिभाग्भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि-अ.-5/श्लो.-42 ।।

यदि जन्मकुंडली में षष्ठेश निर्बल हो या लग्नस्थ हो अथवा लग्न में मंगल हो तो शिर में पीड़ा या मुखरोग अथवा गुल्मरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शिर रोग, मुखरोग या गुल्म रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।
सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यिद उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप

मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध,शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-15 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विविवाह योग

कारके पापसंयुक्ते नीचराश्यंशकेऽपि वा ।
पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-19 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमभाव कारक ग्रह पाप युक्त हो अथवा नीचराशि नीचांशक में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य,केतु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दो जीवन साथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-62 ।।

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

धर्म के कारण धन व्यय योग

शुभेन कर्मनाथेन दृष्टे युक्ते व्ययेश्वरे ।
स्वोच्चामित्रस्ववर्गस्थ धर्ममूलाद्धनव्ययः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.8/व्ययभाव-8 ।।

यदि जन्मपत्रिकामें दशमेश शुभ ग्रह से व्ययेश दृष्ट युक्त हो तथा अपने उच्च, मित्र स्वराशिगतनवांशक में हो तो धर्म कार्य में धन का व्यय होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य योग की संभावना : 18 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धार्मिक कार्य में धन व्यय करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शुक्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शनि,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।